बापू का आशीर्वाद

सेवाग्राम

भाई सोहनलालजी,

आपकी कृति के गुणदोष बारेमें मैं क्या कहूं? काव्योंकी परीक्षा करनेकी मेरेमें कोई योग्यता नहीं पाता. मेरी स्तुतीमें जो काव्य लिखे गये हैं उस बारेमें मैं क्या कह सकता हूं? हां इतना मैं कह सकता हूं सही: आपने परिश्रम काफी उठाया है. कोई भी शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है.

१६-१०-४४ बापुके आशीर्वाद

सेवाग्राम

भाई सोहनलालजी,

आपकी कृति के गुण-दोष बारे में मैं क्या कहूँ ? काव्यों की परीक्षा करने की मेरे में कोई योग्यता नहीं पाता। मेरी स्तुती में जो काव्य लिखे गए हैं, उस बारे में मैं क्या कह सकता हूँ ? हाँ, इतना मैं कह सकता हूँ सही, आपने परिश्रम काफ़ी उठाया है। कोई भी शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है।

बापू के आशीर्वाद

१६—१०—४४

PREFACE

Sir Sarvapalli Radhakrishnan

We are living in an age similar to the one in which the Romans were at the time of the barbarian invasions. Tacitus in the Preface to his Histories *writes: "We are entering upon the history of a period rich in disasters, gloomy with wars, rent with seditions, and savage in its very hours of peace, there was defilement of sacred rites, adulteries in high places, the sea was crowded with exiles, island rocks drenched with murder. All was one delirium of hate and terror; slaves were bribed to betray their masters, freed men their patrons; he who had no enemy was destroyed by his friend." The real cause of the present chaotic condition of the world is a new paganism which has displaced the ancient religious cultures. The paganism which says not "Blessed are the meek for they shall inherit the earth", but "blessed are the strong for they possess the earth." The remedy for the present condition is a revival of the true spirit of religion. Gandhi appeals to us to adopt it. He proclaims that the law of love is not alien to human nature, that it will make for freedom and social progress, if we let love influence our social consciousness War is a crime. It is opposed to civilised life, it is unworthy of human beings. It is false to suggest that it is a blessing in disguise that it will help us to realise noble aims. Whatever good ends are aimed at by war, can be achieved by the application of peaceful methods. In a world sunk in savagery, Gandhiji stands up for the adoption of the spirit of true love.*

To India his message is the same. Our political freedom can be won not by catch words but by constructive work, by the development of the capacity to work together, face difficulties, and dispose of them in a spirit of charity and love. His name will continue to be honoured as long as civilisation lasts. This book is a collection of poems contributed by writers in different languages, paying their homage to the great personality of Mahatma Gandhi.

भूमिका

सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

बर्बरों के आक्रमणों के समय में जिसप्रकार रोमन रहते थे, आज हम उसी प्रकार के युग में रह रहे हैं। टेसीटस ने अपने 'इतिहासों' की भूमिका में लिखा है—'हम ऐसे ऐतिहासिक युग में प्रवेश कर रहे हैं, जो सर्वनाश से समृद्ध है, युद्धों से धूमिल है, विप्लवों से विदीर्ण है, और जब शान्ति स्थापित होना चाहिए, तभी अमानुषिकता से आक्रान्त है। उस समय पवित्र अनुष्ठान अपवित्र किए जाते थे, प्रतिष्ठित घरानों में व्यभिचार होते थे, देश-निर्वासितों से समुद्र भरा पड़ा था, और द्वीपों की गिरि-कन्दराएँ हत्याओं से रँगी पड़ी थीं। यह सभी कुछ घृणा और विभीषिका का सन्निपात था। स्वामियों और संरक्षकों को धोखा देने के लिए दस्यु और मुक्त-दासों को घूस दी जाती थी। जिसके कोई शत्रु न होता, उसे उसके मित्र ही वध कर डालते थे।' आज के संसार की अशान्ति का मूल कारण एक नई बर्बरता है, जिसने प्राचीन धार्मिक संस्कृतियों को पदच्युत कर दिया है। वह बर्बरता जो यह तो कहती नहीं कि 'भाग्यशाली तो वे हैं जो दीन हैं, क्योंकि पृथ्वी का उत्तराधिकार उन्हींका है'; बल्कि यह कहती है कि 'भाग्यशाली तो सशक्त हैं क्योंकि, धरती उनके अधिकार में है।' आज की इस परिस्थिति के उद्धार का उपाय एक ही है और वह यह कि धर्म की सची भावना का प्रवर्तन हो। गांधीजी इस धार्मिक भावना को ग्रहण करने के लिए हमें प्रेरणा देते हैं, इसीलिए वे हमें मान्य हैं। गांधीजी की घोषणा है कि प्रेम मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध नहीं, बल्कि, यदि हम अपनी सामाजिक चेतना के ऊपर प्रेम का प्रभाव पड़ने दें तो इसीसे हम स्वतंत्रता और सामाजिक उन्नति प्राप्त कर सकेंगे। युद्ध अपराध है। यह सभ्य-जीवन का विरोधी है। यह मानव को शोभा नहीं देता। यह कहना सरासर झूठ है कि युद्ध प्रच्छन्न वरदान है, और इससे हमारे उदात्त उद्देशों की पूर्त्ति होती है। जो उद्देश हम युद्ध के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं, वे तो शान्ति-मय साधनों से भी प्राप्त हो सकते हैं। बर्बरतापूर्ण संसार में गाधीजी ही सच्चे प्रेम के तत्व को ग्रहण करने में अग्रगण्य हैं।

भारतवर्ष के लिए उनका यही संदेश भी है। केवल कोरे नारे लगाने से नहीं, बल्कि, रचनात्मक कार्यक्रमों से, साथ मिलकर कार्य करने की शक्ति के विकास से, कठिनाइयों से लोहा लेने से, और जो सफलता हमें प्राप्त हो, उसे प्रेम-पूर्वक उदारता से आपस में बाँट देने ही से हमें राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है। जब तक सभ्यता का चिह्न संसार में रहेगा, गांधीजी का नाम आदर के साथ स्मरण किया जायगा।

यह ग्रन्थ उन्हीं महात्मा गांधी के महान व्यक्तित्व के प्रति विभिन्न भाषाओ के कवियों की काव्य-श्रद्धाजलि है।

ग्रन्थ के संरक्षक

श्री घनश्यामदास जी बिड़ला का वक्तव्य

गांधीजी की ७५वीं जन्मतिथि के उपलक्ष में तरह तरह के आयोजन हो रहे हैं। कस्तूरबा स्मारक निधि यह एक वृहत् आयोजन है। किन्तु द्विवेदीजी ने इस अभिनंदन-ग्रन्थ का संपादन करके इस अवसर पर गांधीजी के साहित्यिक-अभिनंदन के साथ साथ देशवासियों को भी एक नई कृति दी है। गांधीजी के प्रति भिन्न-भिन्न उपासकों की इसमें श्रद्धांजलि है। और सबसे बड़ी बात यह है कि इसकी सारी आय महादेव-स्मारक कोष में दी जायगी।

द्विवेदीजी का विचार है कि कुछ प्रतियाँ एक एक हज़ार में, कुछ पाँच-पाँच सौ में, कुछ एक एक सौ में बेची जायँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिनके पास शक्ति है, वे ऊँची क़ीमत देकर इस पुस्तक को खरीदेंगे, क्योंकि जहाँ इसके पाठक एक तरफ़ पवित्र साहित्य से उपवीत होंगे, दूसरी ओर महादेव भाई कोष को सहायता पहुँचाकर पुण्य-लाभ करेंगे।

महापुरुषों के तनिक से सम्पर्क से भी पुण्य की वृद्धि होती है। इसलिए, गांधीजी और महादेव भाई के सम्पर्क से इस ग्रंथ द्वारा जो कुछ पुण्यलाभ हो, उससे हमारा सबका कल्याण हो, ऐसी हम सब प्रार्थना करें।



स्वर्गीय महादेव देसाई

चित्रः 'हिन्दुस्तान टाइम्स'
के सौजन्य से ।

ग्रंथ के हितैषियों की सूची

जिन्होंने विशेष मूल्य में ग्रन्थ लेकर, श्री महादेव स्मारक-निधि की योजना सफल बनाई है—

१००१ रु०

श्री घनश्यामदास जी बिड़ला, कलकत्ता

५०१ रु०

सर्वश्री सर बद्रीदास गोयनका कलकत्ता, श्री मूलचन्द्र जी अग्रवाल, कलकत्ता, श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान कलकत्ता, श्री आर० के० भुवालका, कलकत्ता, भाई चिम्मनलाल बाड़िया कलकत्ता, श्री मोतीलालजी लाठ कलकत्ता, श्री रामेश्वरजी नेपाली कलकत्ता, श्री घनश्यामदासजी लाडेलका, कलकत्ता, श्री मोहनभाई, कलकत्ता, श्री भागीरथजी कनोड़िया, कलकत्ता।

१०१ रु०

सर्वश्री पंडित अमरनाथ जी झा, कुलपति, प्रयाग-विश्वविद्यालय, श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन, इलाहाबाद, श्री रमेशकुमार अवधेशकुमार, ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद, श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाला, दिल्ली, श्री महन्त शान्तानंदनाथजी हरिद्वार, श्री हीरालालजी खन्ना, प्रिंसिपल, सनातनधर्म कालेज कानपुर, श्री रामरतन गुप्त एम० एल० ए० (केन्द्रीय) कानपुर, सेठ अमरचंदजी उरई, श्री ओमवतीजी लाहौर, श्री यतीशप्रसाद पाठक, लाहौर, श्री चिमन भाई दादू भाई, गुजरात, श्री वल्लभदासजी मोदी, एडवोकेट बंबई, श्री एम० एम० रामाराव बंबई, श्री सुखबरन सुराना, चूरू, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, वर्धा, श्री बी० एन० व्यास, कलकत्ता, श्री राजा यादवेन्द्र दत्त दुबे, जौनपुर, श्री कृष्णचन्द्र ब्रजकिशोर बिन्दकी यू० पी०, सेठ राजाराम, बिन्दकी यू० पी०, श्री सरदार गुरुबख्शसिंह लखनऊ, श्री पोखरमल विश्वंभरदयाल, लखनऊ, श्री निर्मलचंद्र चतुर्वेदी एडवोकेट लखनऊ, श्री विष्णुनारायण भार्गव, लखनऊ, श्री राजराजेश्वर भार्गव, लखनऊ, श्री भृगुराज भार्गव, लखनऊ, श्री सोहनलाल द्विवेदी, लखनऊ।

शुभ कामनाएँ

पंडित अमरनाथजी झा

भारतवासियों की ईश्वर से प्रार्थना है कि महात्माजी शतायु हों, और "शतायुर्वै पुरुषः" वाक्य सिद्ध हो।

माननीय श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन

पूज्य महात्मा गांधी हमारे देश की अनुपम विभूति हैं। उनको पाकर हम अपनी दरिद्रता में भी भाग्यवान हैं। देश के हिन्दू-मुसलमान के, ब्राह्मण और हरिजन के, बड़े-छोटे सब अंशों के,—वह वास्तविक स्नेहपुञ्ज 'बापू' हैं। साधारण रीति से पचहत्तर वर्ष की आयु में मनुष्य क्षीणशक्ति हो जाता है, किन्तु अपने बापू की कल्पना हम सशक्त महारथी के रूप में करते हैं। उनकी बहुत आवश्यकता है। हमें इस आयु से सन्तोष नहीं। उनके १०० वर्ष पूरे होने की लालसा हमारे हृदय में भरी है।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ, हमारी इस लालसा का प्रतीक होगा। सोहनलालजी की यह संकलित कृति हिन्दी-साहित्य की मूल्यवान सम्पत्ति होगी।

माननीय श्री सम्पूर्णानन्दजी

मैं गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ के निकालने के प्रस्तव का स्वागत करता हूँ। गांधी जी के सम्बन्ध में बहुत-सा पद्यात्मक वाङ्मय जमा हो गया है। हम उसके किसी-किसी रत्नकरण को कभी-कभी देख भी लेते हैं। परन्तु, ऐसी रचनाओं के संग्रह का भविष्यत् में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से बहुत मूल्य होगा।

माननीय श्री गोपीनाथ बारदोलाई

मेरे लिए तो कोई भी कविता इतनी ऊँची नही हो सकती, जो महात्मा जी के अन्तर की सहृदयता को व्यक्त कर सके, न कोई ऐसी भाषा ही समृद्ध जान पड़ती है जो गांधी जी के जीवन की गरिमा को लिख सकें। हाँ, भाषा और छंद महात्मा जी को काव्य का आलंबन बनाकर अवश्य गौरवान्वित हो सकते हैं। परमात्मा करे, प्रत्येक वर्ष इस ग्रंथ को प्रकाशित करने के अनेक अवसर मिले।

सम्पादकीय

'गान्धी अभिनन्दन ग्रंथ' अपने पाठकों के हाथ में देते हुए हमें परम हर्ष हो रहा है।

इस ग्रंथ में अन्तर्प्रेरणा से लिखी हुई रचनायें ही संकलित की गई हैं, बहिर्प्रेरणा से लिखाकर नही। अतः, यह अपने सच्चे अर्थ में अभिनंदन-ग्रंथ है।

हमें यह लिखते हुए गर्व होता है कि संसार की किसी भी भाषा में ऐसा ग्रंथ आज तक नहीं प्रकाशित हुआ, जिसमें संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष के संबंध में इतनी भाषाओं के इतने कवियों की कविताएँ एक स्थान में संग्रहीत की गई हों।

यह सौभाग्य राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्राप्त हुआ है, अतः, यह प्रत्येक राष्ट्रभाषा-प्रेमी के गर्व का विषय है।

अनेक भाषाओं के प्रथम श्रेणी की एवं प्रतिनिधि कवियों की कवितायें इसमें प्रकाशित करने की हमें सफलता मिली है, इससे ग्रंथ का महत्त्व समझा जा सकता है।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस काव्य को देश के हृदय में स्थान मिलेगा, तथा श्रद्धा एवं अनुराग से पढ़ा जायेगा।

मराठी भाषा के 'तिळक' के ल के स्थान में 'ळ' प्रयुक्त किया गया है, दक्षिणी भाषाओं में भी। इसीप्रकार, तामिल भाषा के ऴ zha के उच्चारण के लिए ष के नीचे बिंदु लगाया गया है।

मूल और अनुवाद को हमने यथासाध्य शुद्ध तथा प्रामाणिक छापने का प्रयत्न किया है; किन्तु, जिसमें अनेक भाषायें छापी गई हों, उसमें कहीं भूल न रह गई हो, ऐसा असंभव है। अनुवाद कही विस्तार से है, कही भावानुवाद।

हम विशेष रूप से उन पत्र के व्यवस्थापकों एवं संपादकों को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने ग्रंथ की योजना को समय समय पर प्रकाशित करके हमारा हाथ बटाया है।

उन बन्धुओं तथा बहनों की प्रशंसा किन शब्दों में की जाय, जिन्होंने ऊँचे मूल्य में ग्रंथ लेकर श्री महादेव-स्मारक-निधि को सफल बनाया है।

अपने परमहितैषी श्री घनश्यामदासजी बिड़ला को धन्यवाद देने का मुझमें साहस नहीं। उनकी सद्भावना ही इसमें फलफूल रही है।

श्री भागीरथजी कनोड़िया तथा जिन अन्य मित्रों ने हमें इसकी योजना में किसी प्रकार भी सहायता दी है, हृदय से हम उनके कृतज्ञ हैं।

सोहनलाल द्विवेदी

संपादक-मंडल तथा परामर्श-दाता

अनुवादक-मंडल

कवि नामानुसार क्रम सूची

संस्कृत

संख्या		पृष्ठ
१ श्री विधुशेखर भट्टाचार्य	... ...	१
२ पंडित महादेव शास्त्री	... ...	२
३ पंडित गोपाल शास्त्री	... ..	३
४ श्री भट्ट मथुरानाथ शास्त्री	.. ...	३
५ ,, हरिदत्त शर्मा शास्त्री	... ...	४
६ ,, लक्ष्मीकान्त शास्त्री	... ...	४
७ ,, नारायण शास्त्री खिस्ते	... ...	५
८ ,, विंध्येश्वरीप्रसाद शास्त्री	... ...	५
९ श्रीमती क्षमाराव विदुषी	... ...	६
१० श्री ईशदत्त शास्त्री	... ...	७
११ ,, बादरायण	...	७
१२ ,, स्वामी भगवदाचार्य	... ...	८
१३ ,, भदन्त शान्ति भिक्षु	... ..	८

हिन्दी

१ श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	... ...	९
२ ,, पंडित सत्यनारायण कविरत्न	... ..	१०
३ ,, मुंशी अजमेरी	... ..	११
४ ,, पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय	... ..	१२
५ ,, मैथिलीशरण गुप्त	... ..	१३
६ ,, लोचनप्रसाद पांडेय	... ...	१३
७ ,, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी	.. .	१३
८ ,, माखनलाल चतुर्वेदी	... ...	१४
९ ,, पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	.. ...	१५
१० ,, सियारामशरण गुप्त	... ...	१६
११ ,, सुमित्रानंदन पंत	... ...	१७
१२ श्रीमती महादेवी वर्मा	... ...	१९
१३ ,, सुभद्राकुमारी चौहान	... ...	२१
१४ श्री डा० रामकुमार वर्मा	... .	२२
१५ ,, पं० उदयशंकर भट्ट	..	२५

संख्या		पृष्ठ
१६	श्री दुलारेलाल भार्गव	२४
१७	„ 'दिनकर'	२५
१८	श्रीमती तोरन देवी शुक्ल 'लली'	२६
१९	„ तारा पांडेय	२६
२०	श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२७
२१	„ 'केसरी'	३१
२२	„ गोपालसिंह 'नेपाली'	३२
२३	„ 'बच्चन'	३३
२४	„ ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी	३५
२५	„ अंचल	३८
२६	„ केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	३९
२७	„ कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह	४०
२८	„ विश्वनाथप्रसाद	४१
२९	„ पांडेय नर्मदेश्वरसहाय	४२
३०	„ राजेश्वर गुरु	४३
३१	„ कृष्णचंद्र शर्मा	४४
३२	„ निरंकार देव	४४
३३	„ श्रीमन्नारायण अग्रवाल	४५
३४	„ रामनाथ गुप्त	४५
३५	„ नरेशकुमार	४६
३६	„ रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'	४७
३७	„ राजीव सक्सेना	४८
३८	„ मोहन एल० गुप्त	४८
३९	„ रामदयाल पांडेय	४९
४०	„ सुधीन्द्र एम० ए०	५१
४१	„ 'रंग'	५२
४२	„ गंगाप्रसाद 'कौशल'	५३
४३	„ रामेश्वरप्रसाद बी० ए०, एल-एल० बी०	५४
४४	„ विश्वंभरनाथ	५५
४५	„ लक्ष्मीनारायण मिश्र	५७
६	„ रामावतार यादव 'शक्र'	५७
७	„ नरेन्द्र शर्मा	५८
४८	„ गोपीकृष्ण शर्मा	५८

संख्या				पृष्ठ
४६	श्री रामनरेश त्रिपाठी	...	...	५६
५०	,, सोहनलाल द्विवेदी	...	...	५६

उर्दू

१	श्री महाकवि 'अकबर'	...	...	६१
२	,, 'सीमाव' अकबराबादी	...	...	६१
३	,, अबू सईद बज़्मी	...	...	६२
४	,, रामलाल वर्मा	...	...	६३
५	,, गोपीनाथ 'अमन'	...	...	६५
६	,, 'नसीम' अमरोहवी	...	...	६६
७	,, मेहरलाल 'ज़िया'	...	...	६८
८	,, सलीम नाक़ी	...	...	६८
९	,, ब्रजकृष्ण गंजूर	...	...	७०
१०	,, 'बिस्मिल' इलाहाबादी	...	...	७१
११	,, मोहनलाल 'क़मर' अम्बाला	...	...	७२
१२	,, मनोहरलाल 'शबनम'	...	...	७३
१३	,, अवधकिशोरप्रसाद 'कुश्ता'	...	...	७४
१४	,, जगेश्वरप्रसाद 'ख़लिश' गया	...	...	७५
१५	,, साग़र निज़ामी	...	...	७६

बंगला

१	श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर	...	...	७७
२	,, सत्येन्द्रनाथ दत्त	...	...	७८
३	,, बुद्धदेव वसु	...	...	८५
४	,, मोहितलाल मजुमदार	...	...	८६
५	,, प्रभातमोहन बंद्योपाध्याय	...	...	८८
६	,, चपलाकान्त भट्टाचार्य्य	...	...	८९
७	,, यतीन्द्रमोहन बागची	...	...	९२
८	,, सजनीकान्त दास	...	...	९३
९	,, सावित्रीप्रसन्न चट्टोपाध्याय	...	...	९४
१०	,, निर्मलचन्द्र चट्टोपाध्याय	...	...	९५
११	,, विजयलाल चट्टोपाध्याय	...	...	९५
१२	,, विवेकानन्द मुखोपाध्याय	...	...	९६

गुजराती

१	श्री अरदेशर फरामजी खबरदार	...	...	९७
२	,, झवेरचन्द्र मेघाणी	...	...	१००

संख्या				पृष्ठ
३	श्री ज्योत्स्ना शुक्ल	...	...	१०१
४	,, सुंदरजी गो० बेटाई	...	...	१०२
५	,, स्नेहरश्मि	...	...	१०३
६	,, हरिहर प्रा० भट्ट	...	...	१०४
७	,, उमाशंकर जोशी	...	...	१०५
८	,, सुन्दरम्	...	...	१०७
९	,, ललित	...	...	१०९
१०	,, मस्तमयूर	...	...	११०
११	,, कोलक	...	...	११०

मराठी

१	श्री भास्कर रामचन्द्र तांबे	...	...	१११
२	,, डा० माधव ज्यूलियन् मा० त्रि० पटवर्धन		...	११२
३	,, साने गुरुजी	..	...	११४
४	,, आनन्दराव कृष्णाजी टेकाडे	...	...	११६
५	,, नारायण केशव बेहेरे	...	...	११९
६	,, विष्णु भिकाजी कोलते	...	...	१२०
७	,, प्रभाकर दिवाण	.	...	१२१
८	,, अज्ञात	...	...	१२२
९	,, विट्ठलराव घाटे	...	...	१२२
१०	,, ना० ग० जोशी	...	...	१२४
११	,, प्रभाकर माचवे	...	...	१२७
१२	,, डा० माधवगोपाल देशमुख	...	...	१२८

उड़िया

१	श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र	...	...	१२९
२	,, गुरुचरण परिजा	...	...	१३०
३	,, नित्यानन्द महापात्र	...	...	१३१

मैथिल

	श्री नर्मदेश्वर झा	...	...	१३४

राजस्थानी

१	श्री नाथूदान महियारिया	...	...	१३६
२	,, मातादीन भगेरिया	...	...	१३६

सिंधी

१	श्री किशनचंद तीरथदास खतरी 'बेवस'		...	१३७
२	,, श्रीकृष्ण कृपालानी	...	...	१३९

तामिल

संख्या			पृष्ठ
१ श्री सुब्रह्मण्य भारती	...	...	१४०
२ ,, रामलिंगम पिल्ले	...	...	१४१
३ ,, श्रीराम	...	...	१४२

तेलगू

१ श्री मंगिपूर पुरुषोत्तम शर्मा	...	...	१४३
२ ,, बसवरराजु अप्पाराव	...	...	१४३
३ ,, ऊ० कोंडय्या	...	...	१४४
४ ,, सीतारामांजनेय शास्त्री	...	...	१४४
५ ,, श्री	...	...	१४५

मलयालम

१ श्री नारायण राव वल्लतोल मेनन	...	...	१४६
२ ,, पालानारायण नायर	...	...	१४८

कन्नड़

१ श्री मारा शामण्ण	...	...	१४६
२ ,, ईश्वर सणकल्ल	...	...	१५१
३ ,, गोविंद पाई	...	...	१५२
४ ,, गोविंद	...	...	१५३

कनारसी

श्री सुरकुन्द अण्णाजी राव	...	१५४

चीनी

१ श्री उ शिओ लिङ्	...	...	१५५
२ ,, चुआङ् यूङ्	...	...	१५५

अंग्रेज़ी

१ श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर	...	...	१५७
२ श्रीमती सरोजिनी नायडू	...	...	१५८
३ श्री हुमायूँ कबीर	...	...	१५८
४ श्रीमती मेरी सीग्रीस्त	...	...	१६०
५ श्री बेंजिमिन कोलिन्स डडबरी	...	...	१६१
६ ,, हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	...	...	१६२
७ ,, एस० के० डूँगर जीनेट	...	...	१६२
८ ,, जीनेट टाम्पकिन्स	...	...	१६३
९ ,, एल० एन० साहू	...	...	१६४
१० ,, साधु टी० एल० वासवानी	...	...	१६५
११ ,, यान नागूची	...	...	१६७

आभार

श्री नंदलाल बोस, श्री रविशंकर रावल, श्री कनु देसाई, श्री कुमारिल स्वामी, श्रीमती महादेवी वर्मा तथा श्री कनु गांधी जैसे प्रख्यात कलाकारों ने अपने अमूल्य चित्रों को ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ देने की कृपा की है, एतदर्थ हम अनुगृहीत हैं।

बापू के चरणों में



शुभाकांक्षा

महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी महाराज

गांधी जीवै वर्ष शत,
देश होय स्वाधीन;
शांति स्थापन होय जग,
मारग चलै नवीन ।*

* New world order

महात्मा

महामहोपाध्यायः श्री विधुशेखर भट्टाचार्यः शान्तिनिकेतनम्

महत्त्वान्मनसो यत्त्वं महात्मेति न संशयः,
मनोवाक्कर्मणामैक्यादपि त्वं नो मतस्तथा।

स्थितप्रज्ञकथां शास्त्रे को नु नाम न बुध्यते!
स्थितप्रज्ञस्तु किं कश्चिद् दृश्यते सदृशस्त्वया!

बोधिसत्त्वकथा पुण्या बहूनां श्रुतिमागता,
साम्प्रतं बोधिसत्त्वस्तु परं त्वय्येव दृश्यते।

तत्किञ्चित्तपसस्तेजो यतः शक्रोऽपि कम्पते,
इति पौराणिकीं वार्तां जानन्ति बहवो जनाः।

सा शक्तिस्तपसः सत्या न वेति चेद् बुभुत्स्यते,
महात्मा सोऽयमस्माकं न कस्मात्तणमीक्ष्यते!

क्वासौ कौपीनसर्वस्वः महात्मा क्षीणविग्रहः,
विविधायुधसन्नद्ध आङ्ग्लराजः क्व वा पुनः।

निरन्तरं तथाप्यस्माद् बिभेत्येष महात्मनः,
सुगुप्तोप्याङ्ग्लभूपालः कम्पमानः पदे पदे।

यस्मिञ्जीवति विश्वस्य मङ्गलं विश्वतोमुखम्,
महात्मा श्रेयसे सोऽयं जीयाज्जीव्याच्च सन्ततम्!

संस्कृत

कुसुमाञ्जलिः

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः पं० महादेवः शास्त्री कवि-तार्किक-चक्रवर्ती,
काशी-विश्वविद्यालयः

कौटिल्यकाल-कलिते वलिते वलौघैर्दुष्कालदुष्कलनिगालितकालकूटे,
लोलेऽवले विलुलिताकुलितेऽजनामे कं सा निभालयतु लङ्घितराजलक्ष्मीः!

क्रूरं क्वणन्ति परितो निगडाः कराला आपादचूडमनिशं निविडं निबद्धाः,
यैर्घोरतामुपगतैर्निजराज्यपद्मा सद्मामलं किमपरं श्रयतां शरण्यम्!

या तादृशेऽपि सुकृताद्धबलावशेषे दिष्टे विशिष्टकुरुपाण्डवयुद्धभूमौ,
कृष्णेन बुद्धिबलसर्वविशेषभाजा नालम्बि नीतिरमला फलबीजलग्ना।

सत्ये वसीदति पराङ्मुखतामुपेते धर्मे दहत्यतिभरं पृथिवीं रणाग्नौ,
मानुष्यके सुलभसंशय-जीवनाप्ते तां दिव्यशक्तिमपरः क इहाविभर्तु!

सत्याग्रहेऽद्भुतपराक्रमशालिशस्त्रे तां शाश्वतीं सफलतां महतीं प्रपन्ने
साम्राज्यवैभवविधूननधामपुञ्जे गुञ्जन्तु कीर्तनवचांसि सतां महांसि।

शक्या न या कथमपि प्रतिहिंसितुं साऽहिंसा दृढा जयति कापि महाविभूतेः,
जागर्तिमात्मनि जयोर्जितदेशशक्तिमुज्जृम्भयन्नतिबलस्मय - घूर्णनीया।

स्वातन्त्र्यमूल्यमखिलं न ददाति यावत्तावन्नलभ्यमिदमर्चित मातृभूमेः
तत्प्राप्तये तनुमसौ तुलितो विभेत्र स्तुत्यः परामनुपयन् किल कोटिमस्याः।

गौराङ्गभूपबलिनो ननु दर्पमार्गः 'सन्त्यज्यतां भरतभूमिविहानघोपात्—
मा भैष्ट मोहनसमूहितमन्त्रवर्णादुच्चाटनादिह हितं विमृशन्तु सत्यम्।

सत्याग्रहव्रतधराय वराग्रचक्रहस्ताय पूर्णतपसे पर - दुःखिताय,
सम्मोहनाय बलिनां समशक्तिभाजां भक्तिः सदाभ्युदयतां ननु मोहनाय।

सत्यासक्तः सितात्मा कविकृतिनिपुणो वृत्तगोवर्धनश्रीः
कृत्वा चक्रं कराग्रे गतिविगतिजुषां नेत्रदानैक-शक्तः;
एको यः कर्मयोगी निखिलहितविधौ बद्धकक्ष्यः श्रितेशः
सोऽव्यादव्याजभव्यः सकलनरवरो मोहनो देशमेनम्।

शुभाभिनन्दनम्

दर्शन-केसरी पं० गोपालशास्त्री, काशी

पार्थं जगाद हरिरत्र विभूतिमान् यस्तेजोंऽश एव मम स ध्रुवमित्यवेहि,
तेनासि मोहन ! बुधैरभिनन्दनीयस्त्वत्पूजनं हि गुणपूजनमीश्वरस्य ।

स्पृश्यास्पृशि-व्यपगमादि समस्तमत्र स्वाराज्यसाधन-चतुर्दश-रत्नजातम्,
त्वं साम्प्रतं वितनुषे जनतासु तस्माद्रत्नाकरत्वमधिगच्छसि भो महात्मन् !

पाश्चात्यशासनविदूषित-भारतेऽस्मिन्नन्नादि-दुःख-बहुले बहुलोभयुक्तान्,
ताञ्छासकान् वदसि हातुमिमां धरां यत्तस्मात्त्वमेव समयज्ञ ! समर्चनीयः ।

त्वं विश्वनेतासि निजप्रभावान्नीतिस्त्वदीयैव बुधाभिनन्द्या,
कालः समायाति यतोऽचिरेण लोकाः समस्तास्तव मार्गगाः स्युः ।

सत्याग्रहं चक्रमहो दधानोऽप्यहिंसया त्वं कवचेन नद्धः,
सुसारथी राष्ट्रसभारथस्य कृष्णत्वमाविष्कुरुषे स्वकार्यात् ।

महात्मन् ! दीर्घायुर्भव नय नरांस्त्वं निजपथे
प्रतीच्यानां पाशं व्यपनय समन्तादपि भुवः ;
स्वतन्त्राः स्युः सर्वे जनपदभवा उद्यमपराः
न कश्चिद् देशः स्यादपरनृपवश्योऽद्य भुवने ।

गुणगौरवम्

साहित्याचार्यो भट्टमथुरानाथः शास्त्री कविरत्नम् 'मञ्जुनाथः', जयपुर

पूर्णः कर्णधार इव धीरं धुर्यकान्त्या लसन्
शमयति शान्त्या यो हि राजनीति - नौ-रवम्
भारतविभवकृते धार्मिक - युधि स्थिरोऽसौ
वशयति वक्रदलं चक्रमिव कौरवम् ।
मञ्जुनाऽथ माननीयमान्तरमहिम्ना सदा
श्लाघ्यन्ते द्रढिम्ना यं हि नृपमिव पौरवम्
धार्मिकधनिष्ठैर्मान्यमण्डलमहिष्ठैरपि
गीयते गरिष्ठैरद्य 'गान्धी' - गुणगौरवम् ।

श्री-गान्धि-स्तवः

साहित्यायुर्वेदाचार्यः श्री हरिदत्तः शर्मा शास्त्री, सप्ततीर्थः,
आगरा

गान्धिः शिवो दीन-जनैक-बन्धुः,
प्रगाढ़ - कारुण्य - जलैक - सिन्धुः ;
जीयात् समा नैतिक - विशताब्धुः,
शताप्लुतं तापस - चन्दिरेन्दुः ।
"स्वर्ग-निर्गत-निरर्गल-गङ्गा-तुङ्ग-भङ्गुर-तरङ्ग-सखानाम्,
केवलामृतमुचां वचनानां यस्य लास्य-गृहमास्य-सरोजम् ।"

सोऽयं महात्मा भुवनोपकारे,
दृढव्रती केन न माननीयः ;
विनाशयन्नन्ध-तमिस्र-तान्तिम्,
प्रभाकरः केन न वन्दनीयः ।
पञ्च-सप्तति-वर्षाणि यो ऽ ह्यासील्लोकहेतवे ,
तज्जीवनं शताब्दीयं प्रार्थयामो महेश्वरम् ।

नमस्कृतिः

विद्यावतंस-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न-श्री लक्ष्मीकान्तः
शास्त्री, लखनऊ

क्व निस्त्रिंशशीर्षप्रशासानुरक्तिः
असृक्पायिनी प्राज्यसाम्राज्यशक्तिः,
क्व कौपीनवासा अहिंसाप्रसक्तिः
जगन्मुक्तये बद्धकाराविभक्तिः,
परं यद्बलाद् वेपते राजचक्रम्,
नमस्कुर्महे तेजआनम्रशक्रम् ।
यदीय यशः सर्वतो दिक्पटेषु,
स्थितं प्रीणयत् स्वर्णतूलीं वरेषु,
निरस्त्रोपि जेता सशस्त्रान् रणेषु,
जनैरर्च्यमानो मनोमन्दिरेषु,
प्रसिद्धार्थसिद्धार्थसर्वस्वसिद्धिम्,
नमस्कुर्महे सत्यधाम्नः समृद्धिम् ।

पुष्पाञ्जलिः

श्री नारायणशास्त्री खिस्ते, काशी

येनापन्निस्तीर्णा वसुधा वसुधार्यंभीनेन
भारतभूतिलकायितसौभाग्यं तं नरं न को नन्देत्।
नवयुगनिर्माता यः प्रायश्चक्रं करे वहति,
स जयति मोहनरूपो महात्मशब्दोऽद्वितीयगो यस्य।

यः सांख्यपूरुष इव प्रकृतीरजाः स्वाः
स्वोपासनेन कुरुते बहुधा कृतार्थाः,
शान्तः स्वयं स्वरतिरेव पुनस्तटस्थ-
स्तस्मै नमोऽस्तु मुनये किल मोहनाय।

अभिनन्दनम्

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादः शास्त्री धर्माचार्यः, काशी

सत्यस्यैक - दृढव्रती नृपनयप्रज्ञान - निष्णातधी
रागद्वेषविहीन - निर्मलमतिः सत्कर्मवीरो यतिः;
स्वीयैर्विश्वजनीनसद्गुणचयैः शश्वत् सतां "मोहनो
दासो' मातृभुवश्चिरं विजयतां श्रीकर्मचन्द्रात्मजः।

प्रह्लादो नु भवान् हिरण्यकशिपोर्दुर्नीतिदावानलः
स्वास्थ्नामर्पयिता परोपकृतये किंवा दधीचिर्मुनिः;
बुद्धो वा करुणाकरो रिपुसुहृत् ख्रिस्तोऽथ शान्त्यम्बुधिः
सन्तस्त्वद्विषये निरन्तरमिमं सन्देहमातन्वते।

केचित् सत्यपराः परार्थमपरे सर्वस्वसंन्यासिनो
देशोद्धाररताः परे च कतिचित् कारुण्य-पूर्णाशयाः;
तत्त्वज्ञान - विदस्तथान्य इतरे शिक्षा - परिष्कारिण-
स्त्वादृक्संसुगुणाकरं नु जननी प्रासोष्ट नाऽन्या सुतम्।

रत्नानां जलधेर्विविच्य गणने व्योम्नस्तथा ज्योतिषां
शक्तः सन् भवतो गुणान् गणयितुं नेशः फणीशोऽपि च
इत्येवं मनसा विचिन्त्य विनयाद् विश्वेशमभ्यर्थये
दीर्घायुष्ट्व - मसौ ददातु भवते, धर्मे दृढत्वं तथा।

'भगवान् अवतीर्णः'

श्रीमती पंडिता क्षमाराव विदुषी

बहुवर्षाणि देशार्थे दीनपक्षावलम्बिना,
कृषकाणां सुमित्रेण कृतो येन महोद्यमः।

अपूर्व - कीर्तियुक्तस्य निःस्पृहस्यानहङ्कृतेः,
माहात्म्यमस्य भूपानां वैभवाच्च विशिष्यते।

वयमाङ्ग्लयुगे बद्धा भविष्यामोऽधिकाधिकम्,
विवशा दुर्बलाश्चेति बोधितं दूरदर्शिना।

स्वबान्धवानसौ पौरान्मोह - सुप्तानबोधयत्,
स्वधर्मः परमो धर्मो न त्याज्योऽयं विपद्यपि।

कर्षकाणां स्थितिं तेषां कष्टमूलं च वेदितुम्,
त्यक्तभोगो विपद्बन्धुर्ग्रामे ग्रामे चचार सः।

जीवन्तोऽपि न जीवन्ति परदास्य - धुरन्धराः,
पारतन्त्र्यमुदाराणां मरणादति रिच्यते।

अद्भुतं तस्य माहात्म्यं शास्ति यत्किल भारतम्,
विभूतिःकापि सा दिव्या न शक्तिः खलु मानुषी।

निक्षिप्तं विधिना तेजस्तस्मिन् गान्धौ महात्मनि,
जन्मभूमिं तमोग्रस्तां विद्योतयितुमात्मनः।

तस्मादधर्मनाशाय प्रशान्तेः स्थापनाय च,
गान्धिरूपेण भगवानवतीर्णः किमु स्वयम्!

भारतावनिरत्नाय सिद्धतुल्य - महात्मने,
गान्धिवंश - प्रदीपाय गीतिमेतां समर्पये।

जय जय !

श्री ईशदत्तः शास्त्री 'श्रीशः' साहित्य-दर्शनाचार्यः, काशी

जय जय युग-जागरण-विधायक !
मूर्त्त-भारत-स्वाभिमान जय कोटि-कोटि-जन-नायक !

जय हे मृदुल-मधुर, मङ्गलमय, मनुजमूर्तिधर ! निर्जर !
जय निश्छल, जय निर्मल, जय हे निर्मद, जय निर्मत्सर !
जय अजातशत्रो नवीन, जय वशीकरण-मधु-निर्झर !

स्मित-संवर्षण, भुवन-विभूषण, जय गीताया गायक !
जय जय युग-जागरण-विधायक !

ज्वाला-जुषां विजय-संजीवन, जाग्रत-जन-भय-भञ्जन !
ज्योतिर्मय, जय जगत्प्राण, जय जगद्वन्द्य, जन-रञ्जन !
जगतामेकमात्रजीवातो, जगती - गत - सुनिरञ्जन !

'जनताकृते जीव शरदां शतमार्य-धर्म-परिचायक' !
जय-जय युग-जागरण-विधायक !

स्वागतम्

श्री वादरायणः

(लन्दनस्थ-गोलमेज-परिषदः परावर्त्तनकाले)

श्रुत्वा त्वन्नवशान्तिमन्त्रमपरं निस्तब्धभूतं जगद्
हिंसास्त्राणि वृथेति सत्यमवनौ ज्ञातं च सर्वैर्जनैः ;
त्वं देवोऽसि समस्तमानवकुले त्वं सेवको वै परः
शब्दे या तव शक्तिरस्ति महती स्वातन्त्र्यदात्र्यस्तु सा ।

धन्योऽयं दिवसः प्रसन्नवदनाः सर्वे जना आगता
नार्यः कुङ्कुमवर्णयुक्तवसना अम्भोधितीरस्थिताः ;
बाला अत्र तव प्रभाव-करणैराकर्षिता मीलिता
हिंसाया जगदुद्धरन् जनगुरो प्रत्यागतः स्वस्ति ते ।

जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः

स्वामी श्रीभगवदाचार्यः

यः पारतन्त्र्यमखिलं सततं समूलं
श्रीभारतस्य च विलोपयितुं सयत्नः ;
कारागृहं परिपुनाति तु साम्प्रतं यो
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यद्दर्शनेन सहसा हृदयेषु नृणां
नित्यं समुल्लसति शान्तिमहापयोधिः ;
कौपीनमात्रपरिधान उदात्तचेता
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यस्यात्मशक्तिमनघां बहुलं च धैर्यं
बुद्धिं परां च दृढतां परमां च शान्तिम्
आश्रित्य भारतमचिन्त्यसमृद्धिमागा-
जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

यस्यैव बुद्धिमनुसृत्य च भारतीया
पारं व्रजेद्धि जनता परतन्त्रताब्धेः ।
मान्यः सतां जगति शश्वदजातशत्रु-
र्जीयाच्चिरं स इह भारतपारिजातः ।

गांधी सोऽयं जयतु—

श्री भदन्तशान्तिभिक्षुः, शान्तिनिकेतनम्

नान्यं दृष्ट्वा किमपि शरणं मानसे भीतभीता
दैन्यं नीता जननयनयोर्धूर्त - दुःशासनेन ;
पाञ्चालीव श्रयति जनिभूर्यं परित्राणहेतोः
पातुं लोकाञ्जगति स चिरं जीवतान्मोहनोऽयम् ।

धर्मे प्राहुर्यमिह सुगताः सर्वनिर्वैरभावं
तं संश्रित्याचरति विमलां संयतो योऽद्य चर्याम् ;
दुःखं सर्वं करुणहृदयः प्राणिनां हर्तुकामो
गान्धी सोऽयं जयतु भुवने बोधि-सत्त्वानुगामी ।

गांधी-गोविंद

महाकवि श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

जानि बल पौरुष विहीन दलहीन भयौ
आपने बिगाने हूँ कटाई जाति काँधी है।
कहै 'रतनाकर' यों मति गति साधी मची
जाकी क्रांति-वेग सों असांति महा आँधी है।
कुटिल कुचारी के निगीरन मुखारी पर
बक्र चाहि चक्र चरखे की फाल बाँधी है।
ग्रसित गुरंड-ग्राह आरत अथाह परे
भारत-गयंद को गोविंद भयो गाँधी है।

गांधी-गौरव

कविरत्न पं० सत्यनारायण

जय जय सद्गुन सदन अखिल भारत के प्यारे!
जय जगमधि अनवधि कीरति कल विमल उज्यारे!
जयति भुवन-विख्यात सहन प्रतिरोध सुमूरति!
सज्जन सम भ्रातृत्व शान्ति की सुखमय सूरति!
जय कर्मवीर त्यागी परम, आतप-त्यागि-विकास-कर!
जय यस-सुगंधि-वितरनकरन, गांधी मोहनदास वर!

जय परकाज निबाहन कृत बन्दीगृह पावन!
किन्तु, मुदित मन वही भाव मंजुल मनभावन!
मातृभक्त जातीय भाव-रक्षण के नेमी!
हिन्दी हिन्दू हिन्द देश के साँचे प्रेमी!
निज रिपुहू को अपराध नित, छमत न कछु शंका धरत!
नव नवनीत समान अस, मृदुल भाव जग-हिय हरत!

जयति तनय अरु दार सकल परिवार मोह तजि!
एकहि व्रत पावन साधारन ताहि रहे भजि!
जय स्वकार्य तत्परतारत अरु सहनशील अति!
उदाहरन करतव्य-परायनता के शुचमति!
जय देशभक्ति-आदर्श प्रिय, शुद्ध चरित अनुपम अमल!
जय जय जातीय तड़ाग के अभिनव अति कोमल कमल!

जय विपत्ति में धैर्य धरन अविकल अविचल मन!
दृढ व्रत शुच निष्कपट दीन दुखियन आश्वासन!
जय निस्स्वारथ दिव्य जोति पावन उज्जलतर!
परमारथ, प्रिय प्रेम-वेलि अलवेलि मनोहर!
तुमसे बस तुमहीं लसत, और कहा कहि चित भरैं!
सिवराज प्रतापऽरु मेज़िनी, किन-किन सों तुलना करैं!

यहि अवसर जो दियो आत्मबल को तुम परिचय,
लची निरंकुश शक्ति अई मुदमई सत्य जय।
जननी जन्मभूमि भाषा यह आज यथारथ,
पूत सपूत आप जैसो लहि परम कृतारथ!
लखि मोहन मुखचन्द तव, याके हृदय उमंग है!
त्रयताप हरत मनमुद भरत, लहरत भाव तरंग है!

स्वागतम्

श्री मुंशी अजमेरी

स्वागत हे शुचि, शुद्ध, सरल, महनीय महात्मा
भावमयी, भयहीन, भव्य भारत की आत्मा!
स्वागत मोहनदास, कर्मचन्दात्मज गान्धी,
विदित अहिंसा-व्रती, विश्व के अचरज गान्धी!

स्वागत हे श्रीरामचरण - पङ्कज - अनुरागी!
शुद्ध सतोगुण मूर्ति, तथा रज-तम के त्यागी!
स्वागत निज कर्तव्य कार्य के करनेवाले!
दलितोद्धारक भाव देश में भरनेवाले!

स्वागत हे संसार पूज्य, भारत के नेता!
जीव मात्र के मित्र, जगत भर के शुभचेता!
स्वागत शुचि सङ्कल्प, मनोबल-रूप तपस्वी,
तन-मन-धन देशार्थ समर्पक महा यशस्वी!

स्वागत हे सर्वोच्च धर्म के सच्चे ध्यानी!
कर्मवीर हे स्थितप्रज्ञ! गीता के ज्ञानी!
राजनीति जो रही सदा से छलिनी माया,
शुद्ध बना दी उसे पलट दी उसकी काया!

देव! दिव्य संदेश देश को दिया आपने,
अमृतोपम उपदेश देश को दिया आपने!
सत्याग्रह का शस्त्र देश को दिया आपने,
खादी का वर वस्त्र देश को दिया आपने!

किस प्रकार उपकार आपके गिन-बतलावें?
महिमा अमित-अपार, पार हम कैसे पावें?
विभु-विभूति हैं आप, उठाने हमको आये,
हम अजान थे, इसीलिए पहचान न पाये।

धीरे - धीरे किन्तु आपको जान रहे हम,
उर अन्तर उपदेश आपका मान रहे हम।
परिणत भी हम कार्य रूप में उसे करेंगे,
पराधीनता-पाश काट भवसिन्धु तरेंगे।

दिव्य दशमूर्त्ति

साहित्य-वाचस्पति श्री पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जय जय जयति लोकललाम !
सकल मगल धाम ।

भरत भू को देख अभिनव भाव से अभिभूत,
राममोहन रूप धर भ्रम-निधन-रत अविराम ।।

विविध नवल विचार विचलित युवक दल अवलोक,
रामकृष्ण स्वरूप में अवतरित बन विश्राम ।

विपुल आकुल बाल विधवा बहु विलाप विलोक,
विदित ईश्वरचन्द्र वपु धर स्ववश कृत विधि बाम ।

वेद विहित प्रथित सनातनधर्म मथित विचार,
दयानन्द शरीर धर शासन निरत बसुयाम ।

यतन प्राय समाज शोधन की बताई नीति,
बिहर रानाडे हृदय में विदित कर परिणाम ।

एकसत्ता मन्त्र से ही धर्म की ध्रुव शक्ति,
रामतीर्थ स्वरूप धर उर हार कर हरिनाम ।

दलित वंचित व्यथित महि में की अचिन्तित क्रान्ति,
बाल गंगाधर तिलक बनकर अलौकिक काम ।

राजनीति विधान की विधिहीनता को हीन,
गोखले गौरवित तन धर बिरच सित मनि श्याम ।

तिमिर पूरित भरत भू में ज्योति भर दी भूरि,
मदनमोहन मूर्त्ति धर बनकर भुवन-अभिराम ।

विविध बाधा मुक्तिपथ की शमन की रह शान्त,
मंजु मोहनचन्द में रमकर विहित संग्राम ।

मातृ महि हित रत करे हर हृदय कुत्सित भाव,
द्रवित उर 'हरिऔध' गुंफित दिव्य जन-गुणग्राम ।

नाना कार्य विधायिनी निपुणता नीतिज्ञता विज्ञता,
न्यारी जाति हितैषिता सबलता निर्भीकता दक्षता,
सच्ची सज्जनता स्वधर्म मतिता स्वच्छन्दता सत्यता,
दिव्यों की दश मूर्त्ति देशजन को देती रहे दिव्यता ।

महात्माजी के प्रति

श्री मैथिलीशरण गुप्त

तुम तो प्राण दे चुके बापू! स्वयं उन्हें साधारण जान,
कृपया कभी न करना अब फिर अपने दिए हुए का दान।
उन्हें न्यास सा रखना आगे!

अब उन पर अधिकार उन्हीं का, उनमें हैं जिनके भगवान!
लिया सँभाल उन्होंने जिनको किया शक्ति भर उनका मान!
और भाग्य हैं जिनके जागे!

जय गांधी

श्री लोचनप्रसाद पांडेय

आर्य! आपके यत्न से, भारत हो स्वाधीन।
शुभ स्वराज भोगें सभी, हों दुख दैन्य विहीन।
रामराज्य का दृश्य फिर, देखै भारतवर्ष।
कलियुग में फिर प्रकट हो, त्रेता का उत्कर्ष।
कृषक रहें ऋणमुक्त सब, हों शिक्षित सचरित्र।
प्रति गृह को पावन करे, देशी वस्त्र पवित्र।
देशभक्ति परिपूर्ण हो, जनता हृदय उदार।
लहै अहिंसा-धर्म में, शान्ति अखिल संसार।

भारत-सपूत

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, डी० एस-सी० प्रयाग विश्वविद्यालय

साबरमती के तट जाग्यो मंत्र साबर है
जाके ढिंग यंत्र हू न नैक चलि पावै है,
फूँकि कै बिदेसी-तंत्र, फूँकि के सुदेसी-मंत्र
यंत्रन की यंत्रणा सो देसहि बचावै है;
कर मैं न अस्त्र अरु धर मैं न वस्त्र पै
अशस्त्र देश हू को जो सुशस्त्रहि गहावै है,
ऐसो व्रतधारी, बलधारी, तपतेजधारी
भारत-सपूत देवदूतहि लजावै है।

निःशस्त्र सेनानी

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

(महात्माजी के दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह पर लिखित)

फिसलते काल-करों से शस्त्र, कराली कर लेती मुँह बन्द ;
पधारे ये प्यारे पद-पद्म, सलोनी वायु हुई स्वच्छन्द !
'क्लेश !'–यह निष्कर्मों का साथ, कभी पहुँचा देता है क्लेश ;
लेश भी कभी न की परवाह, जानते इसे स्वयम् सर्वेश ।

'देश !'–यह प्रियतम भारत देश, सदा पशु-बल से जो बेहाल ;
'वेश !'—यदि वृन्दावन मे रहे, कहा जावे प्यारा गोपाल ।
द्रौपदी भारत माँ का चीर, बढ़ाने दौड़े यह महराज ;
मान लें, तो पहनाने लगूँ, मोर-पंखों का प्यारा ताज !

उधर वे दुःशासन के बन्धु, युद्ध-भिक्षा की झोली हाथ ;
इधर ये धर्म-बन्धु नभ-सिन्धु, शस्त्र लो, कहते हैं—'दो साथ,'
लपकती हैं लाखों तलवार, मचा डालेंगी हाहाकार ;
मारने-मरने की मनुहार, खड़े हैं बलि-पशु सब तैयार ।

किन्तु क्या कहता है आकाश ! हृदय ! हुलसो सुन यह गुंजार ;
पलट जाये चाहे संसार, 'न लूँगा इन हाथों हथियार! '
'जाति !'–वह मज़दूरों की जाति, 'मार्ग !' यह काँटोंवाला सत्य ;
'रंग !' श्रम करते जो रह जाय, देख लो दुनिया भर के भृत्य ।

'कला !'–दुखियों की सुनकर तान, नृत्य का रंग-स्थल हो धूल ;
'टेक !'– अन्यायों का प्रतिकार, चढ़ाकर अपना जीवन-फूल ।
'क्रान्तिकर होंगे इसके भाव !' विश्व में इसे जानता कौन !
'कौन सी कठिनाई है !' यही, बोलते हैं ये भाषा मौन ।

'प्यार !' उन हथकड़ियों से और, कृष्ण के जन्मस्थल से प्यार !
'हार !'–कन्धों पर चुभती हुई, अनोखी ज़ंजीरें हैं हार !
'भार !'–कुछ नहीं रहा अब शेष, अखिल जगतीतल का उद्धार ।
'द्वार !' उस बड़े भवन का द्वार, विश्व की परम मुक्ति का द्वार ।

पूज्यतम कर्म-भूमि स्वच्छन्द, मची है उठ पड़ने की धूम ;
दहलता नभ-मंडल ब्रह्मांड, मुक्ति के फट पड़ने की धूम ।

हे क्षुरस्य धारा पथ-गामी !

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

हे विशुद्ध, हे पूर्ण बुद्ध, सुनिरुद्ध तृष्ण हे संन्यासी !
हे ज्वलन्त, हे सन्त, शान्त हे, हे अनन्त के अभ्यासी !!
मानवता की तुम प्रहेलिका, जगती के तुम अचरज हे !
हे विकास की विकट समस्या, श्रेष्ठज हे, जय अन्त्यज हे !!

योगयुक्त हे, शोकमुक्त हे, यशमुक्त हे बलिदानी !
हे अपमानित, हे सम्मानित, श्री गुरुदेव परमज्ञानी !
हे प्रलयंकर, हे शंकर, हे किंकर, हे निष्ठुर स्वामी !
परमसेव्य हे तुम चिर-सेवक, ओ कर्मठ, ओ निष्कामी !!

हे क्षुरस्य-धारा-पथ-गामी, हे जगमोहन, जय-जय हे !
युद्धवीर हे, रुद्धपीर हे, नीति-विदोहन जय-जय हे !
अनय विजय हे अभय-निलय हे, सदय हृदय पापक्षय हे !
हे कृतान्त से का कूट तुम, जीवन-दायक मधुपय हे !

धन्य हुई यह वसुधा वृद्धा, मानवता यह धन्य हुई !
तव विप्लवकारी प्रसाद से भय-भावना नगण्य हुई !!
ये मिट्टी के पुतले भी बढ़-बढ़ लड़ गढ़ चढ़ने दौड़े,
क्या ही फूँके प्राण कि इतने सदियों के बन्धन तोड़े !

आज उठी है अश्रुत स्वर-लहरी जगती के अम्बर में,
एक नवल उत्साह-वीचि फैली है सकल चराचर में।
आज शस्त्र-अस्त्रों की घातें खूब कुण्ठिता हुईं भली,
"अक्रोधेन जिनेक्रोधम्" की क्या ही चर्चा नई चली !

अहो, विश्व के हृदय-पटल को कम्पित कर देनेवाले !
अहो, कराल, मृदुलता से मानव-हिय भर देनेवाले।
आज अहिंसा सत्य, शान्ति की परिधि विश्वव्यापिनी बनी,
यह आकुंचित तटिनी जग-विप्लावक मन्दाकिनी बनी।

देव, तुम्हारे एक इशारे में है उथल-पुथल जग की,
उदधि-गँभीर कण्ठध्वनि में है आभा विप्लव के रँग की।
अस्थि-पुंज में यज्ञ-कुण्ड की ज्वालाएँ ये प्रकट रहीं,
ओ प्रचण्ड तापस, बस-बस, जग भस्मसात् होवे न कहीं !

पछत्तर वर्ष

श्री सियारामशरण गुप्त

ये पछत्तर वर्ष सुप्रभ, ये पछत्तर वर्ष,
पा गया है राष्ट्र का तारुण्य परमोत्कर्ष।
रात दिन प्रति प्रहर पल पल,
सतत गति में सतत उज्वल,
बढ़ रहे करने शतक्रतु योग का संस्पर्श,
यह महत्तर वर्ष नव नव, यह महत्तर हर्ष।

भिल गया है समय की प्रतिकूलता का रोष,
खिल गया है राष्ट्र-उर का अमल शतदल-कोष।
मरण - मूर्च्छा से सचेतन,
जागरण का उच्च केतन
उड़ उठा है सर्व-समुदय का लिये सन्तोष,
मिल गया है कण्ठ को जीवन जयी उद्घोष।

व्याप्त है सहार-विष से जब नभस्थल सर्व,
धन्य है तब यह हमारा अमर जीवन-पर्व।
पार कर आया गहन-घन,
दमन के दुर्लंघ्य गिरि-वन,
गगन की इस उच्चता मे रज्जु-बन्धन खर्व,
शस्त्र के भुजबल भुजङ्गम का गलित है गर्व।

झुक रहा है दूर तक जिसके लिए भवितव्य,
नमित हैं हम निकट मे श्रद्धा लिये निज नव्य।
भुवन हो प्रिय - प्रेम - दीक्षित,
शुचि अहिंसा में परीक्षित,
आज नव निर्वैर-पथ हो विश्व को गन्तव्य,
आज का आनन्द हो चिर काल का कर्तव्य॥

बापू के प्रति

युग प्रवर्तक कवि श्री सुमित्रानंदन पंत

तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन, हे अस्थि-शेष, तुम अस्थिहीन !
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण, हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव शून्य लीन ;
आधार अमर, होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन ।

तुम मांस, तुम्हीं हो रक्त-अस्थि, निर्मित जिससे नवयुग का तन ;
तुम धन्य ! तुम्हारा निःस्व त्याग है विश्वभोग का वर साधन !
इस भस्मकाय तन की रज से जग पूर्णकाम, नव जगजीवन ;
बीनेगा सत्य अहिंसा के तानो बानों से मानवपन !

सदियों का दैन्य तमिस्र तूम, धुन तुमने कात प्रकाश-सूत ;
हे नग्न ! नग्न-पशुता ढँक दी बुन नव संस्कृत मनुजत्व पूत !
जग पीड़ित छूतों से प्रभूत, छू अमृत-स्पर्श से हे अछूत !
तुमने पावनकर, मुक्त किए मृत संस्कृतियों के विकृत भूत !

सुख भोग खोजने आते सब, आए तुम करने सत्य खोज ;
जग की मिट्टी के पुतले जन, तुम आत्मा के, मन के मनोज ।
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर चेतना, अहिंसा नम्र ओज ;
पशुता का पंकज बना दिया तुमने मानवता का सरोज !

पशु बल की कारा से जग को दिखलाई आत्मा की विमुक्ति ;
विद्वेष, घृणा से मनुजो को, सिखलाई दुर्जय प्रेम-युक्ति ।
वर श्रमप्रसूति से की कृतार्थ तुमने विचार परिणीत उक्ति ;
विश्वानुरक्त हे अनासक्त ! सर्वस्व त्याग को बना भुक्ति ।

सहयोग मिला शासित जन को शासन का दुर्वह हरा भार ;
होकर निरस्त्र, सत्याग्रह से रोका मिथ्या का बलप्रहार ।
बहु भेद विग्रहों में खोई ली जीर्ण जाति, क्षय से उबार ;
तुमने प्रकाश को कह प्रकाश, औ' अंधकार को अंधकार !

उर के चरखे में कात सूक्ष्म युग-युग का विषय जनित-विषाद ;
गुंजित कर दिया गगन जग का, भर तुमने आत्मा का निनाद !
रँग-रँग खद्दर के सूत्रों में नवजीवन, आशा, स्पृहा, ह्लाद ;
मानवी-कला के सूत्रधार हर दिया यंत्र कौशल प्रवाद !

जड़वाद जर्जरित जग में तुम अवतरित हुए आत्मा महान !
यंत्राभिभूत युग में करने मानव जीवन, का परित्राण ।
बहु छाया - बिम्बों में खोया पाने व्यक्तित्व प्रकाशमान ;
फिर रक्तमांस प्रतिमाओं में फूँकने सत्य से अमर प्राण !

संसार छोड़कर ग्रहण किया नर जीवन का परमार्थ सार ;
अपवाद बने मानवता के, ध्रुवनियमों का करने प्रचार !
हो सार्वजनिकता जयी, अजित ! तुमने निजत्व निज दिया हार ;
लौकिकता को जीवित रखने तुम हुए अलौकिक, हे उदार !

मंगल शशि लोलुप मानव थे, विस्मित ब्रह्मांड परिधि विलोक ;
तुम केन्द्र खोजने आए तब सब में व्यापक गत राग शोक ।
पशु पक्षी पुष्पों से प्रेरित उद्दाम-काम जन - क्रान्ति रोक ;
जीवन इच्छा को आत्मा के वश में रख शासित किए लोक !

तुम विश्वमंच पर हुए उदित, बन जग जीवन के सूत्रधार ;
पट पर पट उठा दिए मन से, कर नर चरित्र का नवोद्धार ।
आत्मा को विषयाधार बना, दिशि पल के दृश्यों को सँवार ;
गा गा — एकोहं बहुस्याम, हर लिये भेद, भव भीति-भार !

एकता इष्ट निर्देश किया, जग खोज रहा था जब समता ;
अंतर शासन चिर रामराज्य, औ' बाह्य आत्महन अक्षमता ।
हो कर्मनिरत जन, रागविरत, रति विरति व्यतिक्रम भ्रम ममता ;
प्रतिक्रिया क्रिया, अवयव साधन, है सत्य सिद्धि गतियति क्षमता ।

साम्राज्यवाद का कंस, वंदिनी मानवता पशु बलाक्रांत ;
शृंखला दासता, प्रहरी बहु निर्मम शासन-पद शक्ति भ्रांत ।
कारागृह में दे दिव्य जन्म, मानव आत्मा को मुक्त, क्रांत ;
जन शोषण की बढ़ती यमुना तुमने की नतपद प्रणत शांत ।

कारा थी संस्कृति विगत भित्ति, बहु धर्म जाति गत रूपनाम ।
बंदीजग जीवन, भू विभक्त, विज्ञान मूढ़ जन प्रकृति-काम ;
आए तुम मुक्त पुरुष ! कहने— मिथ्या जड़ बंधन सत्य राम :
नानृतं जयति सत्यं मा भैः, जय ज्ञानज्योति ! तुमको प्रणाम !

प्रणाम

श्रीमती महादेवी वर्मा

हे धरा के अमर सुत ! तुमको अशेष प्रणाम !
जीवन के अजस्र प्रणाम !
मानव के अनन्त प्रणाम !

दो नयन तेरे, धरा के अखिल स्वप्नों के चितेरे,
तरल तारक की अमा में बन रहे शत-शत सबेरे,
पलक के युग शुक्ति-सम्पुट, मुक्ति-मुक्ता से भरे ये,
सजल चितवन में अजर आदर्श के अंकुर हरे ये,
विश्व जीवन के मुकुर दो तिल हुए अभिराम !
चल-क्षण के विराम ! प्रणाम !

वह प्रलय उद्दाम के हित अमिट बेला एक वाणी,
वर्णमाला मनुज के अधिकार की, भू की कहानी,
साधना-अक्षर, अचल विश्वास ध्वनि-सञ्चार जिसका,
मुक्त मानवता हुई है अर्थ का संसार जिसका,
जागरण का शंख-स्वन, वह स्नेह-वंशी-ग्राम !
स्वर-छान्द सुविशेष ! प्रणाम !

साँस का यह तन्तु है कल्याण का निःशेष लेखा,
घेरती है सत्य के शतरूप सीधी एक रेखा,
नापते विश्वास बढ-बढ़ लक्ष्य है अब दूर जितना !
तोलते हैं श्वास चिर संकल्प का पाथेय कितना,
साध कण-कण की सँभाले कम्प एक अकाम !
नित साकार श्रेय ! प्रणाम !

कर युगल, बिखरे तृणों की एकता के पाश जैसे,
हार के हित अर्गला, तप-त्याग के अधिवास जैसे,
मृत्तिका के नाल जिन पर खिल उठा अपवर्ग-शतदल,
शक्ति की पवि-लेखनी पर भाव की कृतियाँ सुकोमल,
दीप-लौ सी उँगलियाँ तम-भार लेतीं थाम !
नव आलोक लेख ! प्रणाम !

स्वर्ग ही के स्वप्न का लघु खण्ड चिर उज्ज्वल हृदय है,
काव्य करुणा का, धरा की कल्पना ही प्राणमय है,
ज्ञान की शत रश्मियों से विच्छुरित विद्युत-छटा सी,
वेदना जग की यहाँ है स्वाति की करुणा घटा सी,
टेक जीवन-राग की, उत्कर्ष का चिर याम।
दुख के दिव्य शिल्प! प्रणाम!

युग चरण, दिव औ' धरा की, प्रगति पथ में एक कृति है,
न्यास में यति है सृजन की, चाप अनुकूला नियति है,
अंक है रज अमरता के सन्धिपत्रों की कथायें,
मुक्त, गति में जय चली, पग से बँधी जग की व्यथायें,
यह अनन्त क्षितिज हुआ इनके लिए विश्राम।
संसृति सार्थवाह। प्रणाम!

शेष शोणित विन्दु, नत भू-भाल पर है दीप्त टीका,
यह शिरायें शीर्ण, रसमय कर रहीं स्पन्दन सभी का,
ये सृजन जीवी, वरण से मृत्यु के, कैसे बनी हैं?
चिर सजीव दधीचि! तेरी अस्थियाँ सञ्जीवनी हैं।
स्नेह की लिपियाँ, दलित की शक्तियाँ उद्दाम।
इच्छावद्ध मुक्त। प्रणाम!

चीरकर भू व्योम को, प्राचीर हों तम की शिलायें,
अग्निशर-सी ध्वंस की लहरें गला दें पथ दिशायें,
पग रहे सीमा, वने स्वर रागिनी सूने निलय की,
शपथ धरती की तुझे औ' आन है मानव-हृदय की,
यह विराग हुआ अमर अनुराग का परिणाम।
हे असि-धार पथिक। प्रणाम।

शुभ्र हिम-शतदल-किरीटिनि, किरण कोमल कुन्तला जो,
सरित तुंग तरंग मालिनि, मरुत-चञ्चल अञ्चला जो,
फेन-उज्ज्वल अतल सागर चरणपीठ जिसे मिला है,
आतपत्र रजत-कनक-नभ चलित रंगों से धुला है,
पा तुझे यह स्वर्ग की धात्री प्रसन्न प्रकाम!
मानववर। असंख्य प्रणाम।

लोहे को पानी कर देना !

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

जब जब भारत पर भीर पड़ी, असुरों का अत्याचार बढ़ा;
मानवता का अपमान हुआ, दानवता का परिवार बढ़ा।
तब तब हो करुणा से प्लावित करुणाकर ने अवतार लिया;
बनकर असहायों के सहाय दानव दल का संहार किया।

दुख के बादल हट गए, ज्ञान का चारो ओर प्रकाश दिखा;
कवि के उर में कविता जागी, ऋषि-मुनियों ने इतिहास लिखा।
जन-जन मे जागा भक्ति-भाव, दिशि-दिशि में गूँजा यशो गान;
मन-मन में पावन प्रीति जगी, घर-घर में थे सब पुण्यवान।

सतयुग बीता, त्रेता बीता—यश-सुरभि राम की फैलाता;
द्वापर भी आया, गया—कृष्ण की नीति-कुशलता दरशाता।
कलियुग आया—जाते जाते उसके गाँधी का युग आया;
गाँधी की महिमा फैल गई, जग ने गाँधी का गुण गाया।

कवि गद्गद् हो अपनी अपनी श्रद्धांजलियाँ भर भर लाए;
'रोमा रोलाँ', 'रवि ठाकुर' ने उल्लसित गीत यश के गाए।
इस समारोह में रज-कण-सी मैं क्या गाऊँ ? कैसे गाऊँ ?
इतनी विभूतियों के सम्मुख घबराती हूँ कैसे जाऊँ ?

दुनियाँ की सब आवाज़ों से जो ऊपर उठ उठ जाती है;
लोहे से लोहा बजने की आवाज़ उस तरफ़ आती है।
विज्ञान, ज्ञान की परिधि आज अब नहीं किसी बन्धन में है;
सब ओर एक ही बात एक ही चर्चा यह जन-जन में है।

कैसे लोहे में धार करें ? कैसे लोहे की मार करे ?
मानव दानव बन किस प्रकार आपस में घोर प्रहार करे ?
चल जाँय तोप जल जाय विश्व; बम लेकर निकले वायुयान,
लोहे के गोले बरस पड़े वर्षा की बूँदों के समान।

यह लोहे के युग की महिमा—श्मशान बन गए ग्राम ग्राम ;
यह लोहे के युग की क्षमता मिट गए धरा के धाम धाम।
इस लौह-पान ने क्या न किया—जीवित ग्रामों को गेड़ा दिया ;
इस लौह-ज्ञान ने क्या न किया—गिरजे से गिरजा लड़ा दिया।

उस ओर साधना है ऐसी इस ओर अशिक्षित औ अजान ;
फावड़ा कुदाली वाले ये—मज़दूर और भोले किसान।

आशा करते हैं एक रोज वह अवतारी फिर आवेगा ;
आसुरी कृत्य करके समाप्त फिर दुनिया नई बसावेगा।
पर किसे ज्ञात था जग में वह अवतरित हो चुका है ज्ञानी ;
जिसके तप-बल से फुके सभी दुनिया के ज्ञानी विज्ञानी।

वह कौन ? एक मुट्ठी भर का अध-नंगा सा बूढ़ा फकीर ;
जिसके माथे पर सत्य-तेज, जिसकी आँखों में विश्व-पीर।
जिसकी वाणी में शक्ति, भेद जो कुलिश-कपाटों को जाती ;
जिसके अन्तर का प्रेम देख असि-धारा कुंठित हो जाती।

वह गाँधी हम सबका 'बापू' वह अखिल विश्व का प्यारा है ;
वह उनमें ही से एक जिन्होंने आकर विश्व उबारा है।
हैं बुद्ध सुखी, उनमें अपने ही परम-धर्म का ज्ञान देख ;
हैं ईसा ख़ुश बलिदान देख पैग़म्बर ख़ुश ईमान देख।

वह चलीं तोप, गल चले टैंक, बन्दूकें पिघली जाती हैं ;
सुनते ही मंत्र अहिंसा का अपने मे आप समाती हैं।
पाषाण-हृदय जो थे देखो वे आज पिघल कर मोम हुए ;
मैं 'राम' बनूँ इस आशय से, 'रावण' के घर मे होम हुए।

है यही आदि गाँधी-युग का, जो बापू ने विस्तारा है ;
हैं यहीं अन्त लोहे के दिन, जिनका विज्ञान सहारा है।
विज्ञानी की है परम सिद्धि जग को लोहे से भर देना ;
है हँसी-खेल तुमको बापू! लोहे को पानी कर देना।

इस तुकबन्दी मे सार नहीं पर पूजा की दो बूँदें लो ;
इन बेंदों मे छोटा-सा कण उन पावन बूँदों का भर दो।
जो आगा खाँ के महलों मे छल छल करती, थी छलक पड़ीं ;
उन दो विभूतियों की स्मृति में बरबस आँखों से ढलक पड़ीं।

विश्ववंद्य बापू

डा० रामकुमार वर्मा, प्रयाग विश्वविद्यालय

क्रियाशील दृढ़ हाथ और मुख पर मृदुतम मुस्कान,
कठिन साधना से निकली हो जैसे सिद्धि महान!
एक तेज—जिसमें कितने सूर्यों का अभ्युत्थान,
एक मंत्र—जिससे अभिशापो से निकले वरदान,
स्वर जो विश्व-ताप की सब अनुभूति लिए है साथ,
है स्वतंत्रता के प्रदीप-सा पराधीन के हाथ!

ये सब जैसे हैं विभूतियाँ जो लेकर अनुराग,
बापू! सज्जित करने आईं आज तुम्हारा त्याग!
वही त्याग—जो वैभव के स्वप्नावसान का ज्ञान—
बनकर जाग्रत है जीवन के क्षण-क्षण में सुख मान।
विश्व-संपदा छोटी है, इतना महान है त्याग!
पद-वंदन के लिए तुच्छ लगती है स्वर्ण-पराग!!

कर्मयोग के साधक! तुम हो निर्बल के बल राम!
कितने कण्ठों में गूँजा है आज तुम्हारा नाम!
विश्ववंद्य! तुमने खोजे हैं निष्प्राणों में प्राण।
किया तुम्हीं ने जीवन में जीवन का नव-निर्माण!
छिद्रों में संगीत भरा, कर दिया उन्हें स्वर-द्वार,
तुमने लघु संकेत किया, गूँजा सारा संसार।

बापू! तुमको पाकर युग का धन्य हुआ इतिहास!
आज तुम्हारा वर्तमान ही है भविष्य की साँस!
जिस पथ पर गतिशील तुम्हारी छाया का आकार,
है उस पथ पर ही स्वतन्त्रता का मंगलमय द्वार!
सुन पड़ता है वीर-गीत सुन पड़ता है जय-नाद,
विजय सामने ही है बापू! दो तुम आशीर्वाद!

बापू !

श्री उदयशंकर भट्ट

बापू, तुम भारत के भाल की
रेखा नव, लेखा नव,
स्वधुंनी विशाल के नंदित प्रबुद्ध-पोत
ओत-प्रोत अंबर में स्फटिक निरभ्र-शुभ्र
लहरों की कल्पना से जीवन से ज्योतिपुंज।
भारतीयता के, नव-भारतीयता के
एक सद्विवेक अभिषेक; शुद्ध बुद्ध प्राणों के
पावन प्रबुद्ध जागो—जागते ही रहो, कल्प कल्पांत तक
दूर जब तक न हो—अहो,
मानव का ज्ञान शुद्ध, मानव का प्राण शुद्ध,
मानव की वाणी, कर्म, दया, क्षमायुक्त पूर्ण !
इस महाकाल की दंष्ट्रा में वज्रपुंज
शोणित के सागर समग्र व्यग्र हो बहते हैं,
बहते हैं जिनमें असंख्य प्राण प्राणियों के
चीत्कार ! हाहाकार, स्वर विकार, मन्द तार
तीव्रतर तीव्रतम, सविशेष निर्विशेष।
देश देश कुंठित किंकर्त्तव्यमूढ़।
देख रहे वे ही सब एक आस-व्यास लिये
रक्षा की दीक्षा की; भिक्षा को शिक्षा को
दोगे न क्या उन्हें नव प्राण नव ज्योति !

अंजलि

देवपुरस्कार विजेता श्री दुलारेलाल भार्गव

प्रभा प्रभाकर देत जहि, साम्राजहि दिनरात,
ताहू को हत-प्रभ कियौ, छिन गांधी-दृग-पात।
सिव गाँधी दोई भये, बाँके माँ के लाल,
उन काट्यौ हिन्दून दुख, इन जग-दृग-तम जाल।
गुरु गांधी तै ज्ञान लै, अनहद चरखा जोर,
भारत-सबद-तरंग पै, बहति मुकुति की ओर।

स्वागत खण्ड प्रलय में

श्री "दिनकर"

'जय हो', वन झंखाड़, उदासी छायी, स्वागत कौन करे ?
चरणों में अर्पित मिथिला के अश्रु-गंडकी की लहरें !
वन्दनवार सजा मुरझे किसलय, सूखे वनफूलों से,
मार्ग झाड़ती वैशाली लोहू से भरे दुकूलों से।

पथ विदीर्ण, सरसी उद्वेलित, हाय, किधर तुझको लाऊँ ?
वनवासी, गृह-हीन, कहो हे देव ! कहाँ मैं बिठलाऊँ ?
झंकृत हुआ पुण्य नभ जिसके आदि मंत्र झंकारों से,
गढ़ा गया इतिहास जहाँ लिच्छवियों की तलवारों से,

जगा कपिल का ज्ञान जहाँ, प्रकटी सीता सी कल्याणी,
जहाँ मंत्रद्रष्टा गौतम की ध्वनित हुई पावन वाणी।
उस महान भू के प्राङ्गण मे यह कैसा बलिदान हुआ ?
तज विदेह सिद्धियाँ चलीं किसका भीषण आह्वान हुआ ?

किन पापों का कुटिल शाप ? क्यों वैभव का रस भंग हुआ ?
उजड़ गया बसता सुहाग, माता का भुज निस्संग हुआ।
स्वागत, खण्ड-प्रलय-प्राङ्गण मे छिन्न-भिन्न झंकारों से,
स्वागत, शैलराज-तनया मिथिला की दीन पुकारों से।

माताओं की आह, सुहागिन का जलता सिन्दूर यहाँ,
क़ब्रों की भयपूर्ण गहनता, आज चिता का नूर यहाँ।
स्वागत, भस्मीभूत कर्णगढ़ के वैभव की धूलों से,
स्वागत, 'मीर'-चमन के मोहक उन मुर्झाये फूलों से।

झाँक रहे सुर खड़े गगन पर मानवता की जाँच हुई,
कनक कसौटी पर है यह भीषण विपत्ति की आँच हुई।
हरिश्चन्द्र, शिवि नहीं, किसी जननी ने कर्ण न पोसा है,
ओ नवयुग दधीचि ! तेरा ही हमको बड़ा भरोसा है !!

वंदना-गीत

श्रीमती तोरन देवी शुक्ल 'लली'

कितनी आशा कितनी श्रद्धा कितना विश्वास सजाने में!
कितना वैभव कितना गौरव गांधी की गरिमा गाने में!
कितना साहस उल्लास भरा आदेशों के अपनाने में,
हे देव! उसे कैसे रच दूँ शब्दो के ताने बाने में!

जग जीवन के पहले क्षण में जननी से पहला परिचय था,
परिचय भी एक अलौकिक सा, यह मन यह तन सब निर्भय था;
जब आँख खुली कुछ चेत हुआ, जननी जीवन बंधनमय था,
वेदना, विकलता, विफल रोष, मन में भय मिश्रित विस्मय था।
कितनी लज्जा संकोच व्यथा अपना परिचय बतलाने में!
हे देव! उसे कैसे रच दूँ शब्दों के ताने बाने में!

ऐसे ही में तुम मिले और सौभाग्य हमारा जाग उठा,
धन-सत्ता के मदमत्तों के प्रति एक विचित्र विराग उठा;
कुछ थकित,व्यथित कुछ,दलित पतित जनका सोया अनुराग उठा,
हृदयों के कोने कोने से फिर सत्य-अहिंसा राग उठा।
कितना गौरवान्वित हुआ राष्ट्र तुम जैसा धन अपनाने में!
हे देव! उसे कैसे रच दूँ शब्दों के ताने बाने में!

तुम हो महान्!

श्रीमती तारा पांडेय

तुम हो महान!
तुम परम पूज्य, तुम गुण-निधान!
सब कार्य तुम्हारे मनभावन, पद-चिह्न बने हैं अति पावन,
मै मन्त्र मुग्ध-सी देख रही, कैसे गाऊँ अब मधुर गान!
तुम हो महान!
जीवन में जाग्रति को भरने, सारे जग को ज्योतित करने,
'सत्याग्रह' का यह महामन्त्र है आज तुम्हारा अमर दान!
तुम हो महान!
ओ भारत माता के नन्दन! युग-युग तक होवे अभिनन्दन!
आँखों के खारे पानी से मै देती तुमको अर्घ्य-दान!
तुम हो महान!

बापू के आँसू

श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

एक क्षण, दो अश्रुकण लघु, मूक, निर्मल !
दूसरे ही क्षण उठा चुपचाप
वस्त्र का कोना, विकम्पित हाथ से,
ले गया वह पोंछ अपने साथ मानो
विन्दुओं में वेदना के सिन्धु दो !

हिल उठा आमूल क्षण-भर
अचल दृढ़ता का वही गिरि,
वज्र भी जिसको नहीं पाता हिला
क्रुद्ध पशुबल के दमन-आघात का।
देखते ही रह गए सब; दूसरे ही क्षण पुनः वह
शान्त, स्थिर, निष्कम्प था।
बाँध था जो एक, युग-युग से बँधा,
एक क्षण आया व्यथा का वेग ले,
टूटता-सा ज्ञात वह उसमें हुआ;
साथ लेकर दूसरा क्षण आ गया
आत्म-संयम का सहारा,
वह सुपरिचित, वह पुराना।
देखते ही रह गए सब,
पुनः प्रत्येक मर्यादा अखण्डित।
अर्धशताब्दि से भी अधिक जो
साथ थीं सुख-दुःख में, संघर्ष में ;
व्याप्त जिनसे अखिल जीवन ;
अमित स्मृतियाँ जुड़ चुकी थीं विविध जिनके साथ !
जो प्रथम आईं किशोरी एक बन
अपरिचित गृह में अजान किशोर के;
सत्य-पथ के पथिक पति का साथ दे श्रद्धा-सहित,
कर मूक सेवा, त्याग, तप की
साधना अति-दीर्घ,
बन गईं 'माँ' दलित-शोषित मनुजता की !

सामने, 'बा' को उठाकर, रख रहे परिजन चिता पर।
पोंछ डाले अश्रु जिनके,
देखते वे नयन अपलक।
आँसुओं से भी न पति के धुल सका शव त्यागिनी का;
अश्रु जल का भी न खुल कर
पा सकी वह अर्घ्य अन्तिम।
था सदा पति ने सिखाया—
"त्याग जीवन भर करो जग के लिए;
किन्तु, अपने हेतु तुम, कुछ न लेना, कुछ न पाना!"
स्नेह के कण तो, करोड़ों मानवों में बँट गए;
रिक्त पति की रिक्तता की रह गई थीं स्वामिनी वह।
एक क्षण चाहा—सिमटकर स्नेह वह,
अश्रु-गंगा बन, भिगो दे अन्त में
स्नेह की एकान्त उस अधिकारिणी को।
पर, विफल वह एक क्षण का यत्न था।
दूसरे ही क्षण नयन जल-हीन 'बापू' के हुए।
स्निग्ध ज्यों-के-त्यों बने ही थे हृदय
उधर अगणित मानवों के स्नेह से,
हो चुका निःशेष था जो सब,
कभी का बँटकर उन्हीं के बीच में।
था अभी खोया सहायक वह अथक,
जो सजीव प्रतीक था मानो बना
विश्व-भर के सब प्रशंसक-वर्ग के विश्वास का।
सहचरी, अर्धांगिनी भी अब गईं,
जो अकेली मूर्ति प्रतिनिधि-रूप थी
अचल श्रद्धा को अमित अनुयायियों की।
अन्त के सकरुण क्षणों में,
नाम के दो विफल 'आह्वान' उनको थे मिले;
'अश्रु' दो पोंछे गए इनके लिए।
लुट गए आधार दोनों,
हो गए स्मृति-शेष कारा-वास ही में
देखते ही रह गए लोचन चिताएँ सामने!
किन्तु, अपने आपके प्रति ही सदा
अधिक निष्ठुर हृदय बापू का रहा।

हिन्दी

पी अपनी व्यथा का सब हलाहल आप ही !
व्यक्तिगत दुख छिपा उस उच्छ्वास में,
जो करोड़ों पीड़ितों की वेदना के ज्ञान से,
उठ हृदय से, व्याप्त हो रहता उसी में।

सान्त्वना दी थी जवाहरलाल को
और बन्दी राष्ट्रपति आज़ाद को,
जो न अंतिम झलक भी थे पा सके
धैर्य का संदेश भेजा,
मौन द्वारा, प्रार्थना के मार्ग से।
पर, स्वयं तुम आज जब
हो उसी क्षति से दुखी बापू हमारे,
कौन तुमको धैर्य दे ?
कौन पोंछे अश्रु ?
और किसमें शक्ति, तुमको छोड़कर ?
तुम स्वयं दुःखी, स्वयं ही धैर्यदाता !
सिन्धु का तूफ़ान रोके कौन ?
कौन ऐसा, सिन्धु ही को छोड़कर ?
अनल-गिरि की करे ज्वाला शांत ?
कौन ऐसा शक्तिशाली है,
स्वयं गिरि के सिवा ?

तुम वचन के संयमी, आचरण के संयमी तुम,
वसन, भोजन के, विचारों के चिरन्तन संयमी तुम,
दृढ़ रहे हो !
किन्तु, दुख के संयमी तुम, अश्रुओं के संयमी,
रूप यह दृढ़तर तुम्हारा !
वेदना अवरुद्ध किससे है हुई ?
मौन रह सहना इसे क्या है सरल ?
हृदय फट जाता व्यथा-अवरोध से !

तुम सहो, तुम सहोगे ही ;
सब हिलें, पर, गिरि न हिलते !

स्वागत

श्री गोपालसिंह नैपाली

(गोलमेज परिषद् से लौटने पर)

स्वागत, ऐ मोहन, इस तट पर भारत के अभिमानों से,
हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों, ईसाई और पठानों से,
भूले-भटके गुरखों से, बंगाली वीर जवानों से,
इनसे, उनसे, सभी जनों से, जननी की संतानों से।

हिम पर्वत पर रहनेवाले शंकर के वरदानों से,
गौतम, नानक के, रहीम के, ईसा के फ़रमानों से,
गंगा के गीले आँसू से बिजली के बलिदानों से,
छप्परहीन कुटी में बसनेवाले दीन किसानों से।

हिमगिरि के ठंडे मस्तक से, विन्ध्या के ठंडे मन से,
यमुना-तट के ताजमहल से, कुचले दिल के रोदन से,
वृन्दावन की सूखी पतझड़ से, जननी के बंधन से,
पल-पल में माँ की छाती पर होनेवाले नर्तन से।

काश्मीर के सड़े फलों से, हिन्दू-मुस्लिम दंगल से,
गौरव-च्युत, उजड़े 'ढाका' के फटे-पुराने मलमल से,
स्वागत है रीते हाथों का बन्दी के कर निर्मल से,
स्वागत स्वागत होनहार भावी भारत के मंगल से।

उतर-उतर जल्दी इस तट पर, गिन माँ के दिल की धड़कन,
देख, नाचने को आँगन में आतुर है जब नव-चेतन,
बचपन बीता, मरा बुढ़ापा, आया है अब पागलपन,
बहती चारों ओर हवा है, उबली आहों की सन-सन!

बागडोर ले हाथों में अब, बलिवेदी पर रथ ले चल!
जिस पथ से गतवर्ष गये थे, हमें वही अब पथ ले चल!
जितने हैं ये नाग भयंकर, उन सबको तू नथ ले चल!
छोड़-छाड़ अब सात समुन्दर गंगा ही को मथ ले चल!

श्री गांधी जी के जन्म-दिवस पर भारतमाता की बधाई !

(जब गांधीजी विलायत में थे !)

श्री 'बच्चन'

अहा ! दो अक्तूबर है आज, जन्मदिन मोहन का है आज,
प्रकृति तू हर्षित होकर ख़ूब सजा अपना अति सुन्दर साज !
बुला ला जाकर मृदुल समीर, तीव्र गति बहे छोड़कर नाज़,
कि जिसमें हर पत्ते से आज नफ़ीरी की निकले आवाज़ !

आ गई, पहिले कर यह काम—बादलों को दे यह सन्देश—
करें नभ-नौबतख़ाने बैठ नगाड़े पीट निनादित देश !
फूलकर लायें मादक गंध प्रकृति कह दे फूलों से आज,
लताओं से कह दे, वे नृत्य करें, फूलों के सजकर साज !

विहंगों से जा कह दे आज खोलकर गले करें कल-गान,
मधुर कलरव से सारी देश - दिशायें हो जायें गुंजान !
प्रकृति जा कश्मीरी के पास, हमारी मालिन जो हुशियार,
बता आ, उसको होगा आज लगाना घर पर वंदनवार !

गगरियाँ गंगा-जमुना लिये करेंगी आकर स्वयं सिंचाव,
आज भीतर-बाहर सब ओर उन्हें करना होगा छिड़काव !
चाँद दिन में ही आये आज लिये कूची, किरणों के तार,
चाँदनी से दे दिन में पोत भीतरी घर की सब दीवार !

लगे जो फल हों मेरे बाग़, उन्हें मालीगण लायें आज,
तोड़ ताज़े, मीठे पहचान बाँस की डाल-डालियों साज !
आज मैं दीन जनों को न्योत कराऊँगी भोजन भरपूर,
शुभाशिष जिनका मेरे लाल को लगे जो बैठा जा दूर !

जन्मदिन आनंदित इस वर्ष बना मुझको न सका भरपूर,
हृदय जल-जल उठता है आज सोचकर मोहन मुझसे दूर !

किस तरह जन्म-दिवस की आज बधाई पहुँचे अति सुकुमार ?
हमारे प्राण लाल के पास किस तरह, मेरा प्यार-दुलार !

खींच लो स्नेह-सलिल हे तात हृदय के उठते तुम उच्छ्वास !
बनो बादल का टुकड़ा एक उड़ो प्यारे मोहन के पास !
दिवस में करना उसपर छाँह सलोना जहाँ हमारा लाल,
महफ़िलों में जैसे छिड़काव, बरसना उस पर सन्ध्या काल !

पहुँच उसके कानों के पास बूँद में कहना धीमे, स्नेह
विरहिणी मां का आया आज बरसने तुझ पर बनकर मेह !
तुम्हारा जन्म-दिवस है आज दूर तुम इसका दुःख महान,
भेजती हूँ आशीष स्वरूप स्नेह-जल-मुक्ताओं की माल !

पकड़ बिठलाती अपनी गोद पास यदि होते मेरे लाल,
फेरती शिर आशिष के हाथ चूमती तेरे दोनों गाल !
लगा छाती से अपनी वत्स ! तुझे कर लेती क्षण भर प्यार,
पिलाती दुह बकरी का दूध, खिलाती फल-मेवे दो-चार !

मुझे तो आती इस पर लाज, लिये अपने तुझ-सा सुकुमार,
सलोना पुत्र दिया जो भेज विलायत सात समुन्दर पार !
कामना मेरी मंगल-पूर्ण रहे हर जगह तुम्हारे साथ;
तुम्हारे ऊपर छाया रूप कोटि अस्सी हों मेरे हाथ !

हमारे अंचल का शृंगार जिये युग-युग मोहन, भगवान !
छिने मत मुझ गुदड़ी का लाल, माँगती एक यही वरदान !
ले लिया क्रूर काल ने छीन हमारा गुण, गौरव, सम्मान,
बचाना हे भगवान कृपालु, बुढ़ाई का मेरे अभिमान !

गया है तू मेरे जिस काम सफलता उसमें देगी मोद,
मुझे, पर यदि असफल हो पुत्र, किलकते आना मेरी गोद !
मुझे है इसकी क्या परवाह, मुझे क्या लाता मेरा लाल,
भरे या ख़ाली आये हाथ लगा लूँगी छाती तत्काल !

भले ही मैले, फटे कुवस्त्र ढकें यह मेरी सूखी खाल,
चमकते हों यदि तुझसे गोद जवाहर, हीरे, मोती लाल !

युगदेवता से—

श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी

कौन ? तुम युग-देवता ?
साकार—
हो उठे, सुनकर विकल भव का करुण चीत्कार !
नाश की काली अमा सा घिर रहा तम-तोम !
उडुप क्या, हैं खो गये जिसमें स्वयं रवि-सोम !!
खो गये ? हाँ, खो गये वे,
और वे घर, नगर, जन-पद,
सतत गुंजित था जहाँ पर ऐक्य का स्वर
इस तमिस्रा में, अजाने—
श्रम भरे से—
भ्रम भरे से—बेसहारे, बेठिकाने—
भूल अपना लक्ष्य, निश्चल सो गये वे।
और वे पथ—अटपटे, अनजान से पथ—
एक शुभ-संकल्प ही जिनका कि था अथ
एक चचल साध जैसे—
चले थे निर्बाध जैसे
क्या पता, किस ओर मुड़कर खो गये वे ?
किस पतन के गर्त्त में जाकर समाहित हो गये वे ?

और वे शुभ फूल
साध्य के आराध्य की शुभ अर्चना के फूल,
भरा था जिनमें कि जनहित साधना का गन्ध,
झूमता था विश्व अलि मधु-अन्ध !
इस तिमिर में आज वे शुभ साधना के फूल,
हो रहे हैं वासना के दैत्य की पद-धूल।

और वे मधु बोल—
प्राण के वे प्यार डूबे बोल,
जो विहँग से स्वरों के मृदु चंचु चंचल खोल,
स्वरित करते थे गगनवन मधुर मधु-सा घोल,

रुद्ध हैं—अवरुद्ध; अपना खो चुके हैं गान;
सिसकते हैं कण्ठ में उनके विफल आह्वान !

और जग में छा रहा है तरुण हाहाकार !
देवता, युगदेवता तब तुम हुए साकार !

मनुजता के हृदय पर जब दनुजता का नृत्य,
और शिव-साधक बना जब अशिवता का भृत्य,
यन्त्र-स्वर में खो गया जब प्राण का चिर गान,
सुर विमोहक स्वरों का जब रुक रहा संधान,
और जब है युद्ध का विकराल दानव क्रुद्ध,
देव सुत को देवमठ का द्वार है जब रुद्ध,
जबकि कंकर और पत्थर हुए नर का मोल,
स्वार्थ की वीणा बने जब वन्दना के बोल।

कौन करुणा के भवन का खोल मंगल-द्वार,
देवता, युगदेवता, तुम हो उठे साकार !

यह असीमित तिमिर, औ' सीमित तुम्हारा दीप,
ला रहा है मुक्ति की घड़ियाँ समीप—समीप !
यह तिमिर की क्रूर कारा,
और तुमने किस 'अजाने—स्नेह का लेकर सहारा,
प्राण, अपने प्राण का दीपक उजारा ?
मेह की झर, औ' भयंकर मत्त झंझावात,
यह तुम्हारी साधना औ' यह महा उत्पात !
और लो वह युद्ध का स्वर—प्रखर था; अब है प्रखरतर।
हो उठी इन बेड़ियो की क्रूरतर झंकार।
देवता, युगदेवता, साकार !

कौन कहता है तुम्हारे व्यर्थ हुए प्रयास ?
कौन कहता है तुम्हारा व्यर्थ गया प्रकाश ?
तुम अडिग, तुम ओ अकम्पित, जल रहे निस्पन्द;
आप अपनी साधना के पूत-घट में बन्द !
तुम अधूमिल, अबुझ अन्तर्ज्योति के आगार !
देवता, युगदेवता, साकार !

ये शलभ चंचल शलभ पाकर तुम्हारा स्पर्श,
जल उठे औ' जग उठा लो ज्योति का नव हर्ष।

तुम्हारे अक्षर स्वरों का अमर दीपक राग,
प्राण युग के प्राण में लो आज उठा जाग।
और यह जो क्रूरता का दीखता विस्तार,
है सुनिश्चित यह, पराजय का प्रबल चीत्कार।

देखता हूँ मैं कि तम का यह असीम प्रसार,
जल उठा है और ज्योतित हो उठा संसार।
औ' तुम्हारी ज्योति का सन्देश,
गूँज उठा; जाग उठा यह तुम्हारा देश।
लो उठी प्रत्येक कण से मुक्त यह हुंकार,
'कौन है जो रुद्ध रक्खे मुक्ति-पथ का द्वार !'
देवता, युगदेवता, साकार !

अस्थि क्या ? क्या चर्म ?
तुम तो प्राण शाश्वत प्राण—
तुम अखिल संसार के ओ मूर्तिमय कल्याण !
अहे बापू !
तुम्हारा जय-गान—
कोटि कण्ठों में जगा बन मुक्ति का आह्वान !

तुम किसी के मचलते से उमड़ते से प्यार—
चल पड़े हो आज करने विश्व एकाकार !

ये पतन से खड्ड औ' व्योम चुम्बी शृङ्ग—
सम हुए पाकर तुम्हारे प्राण की रसधार।
उधर लो, वह कूज उठा दूर मंगल गान—
आ रहा है नये युग का दिव्य स्वर्ण विहान !
हो रहा है एक संस्कृति का नया अवतार—
देवता,
वह तुम्हारी चिर-साधना का दान !

और लो श्रद्धावनत है यह अखिल संसार—
युग-पुरुष, वन्दन तुम्हारा आज सौ सौ बार !
देवता ! तुम देवता ! साकार।

तुम प्रज्वलित प्रतीक विभा के

श्री 'अंचल'

तुम प्रज्वलित प्रतीक विभा के नवजागृति निर्माता !
महादेश के महाप्राण नवयुग! नवसृष्टि विधाता !
टूट गए सदियों के बंधन जब तुम देव पधारे।
शीतल हुए तुम्हें छूकर अभिशापों के अंगारे।

किसका मस्तक नहीं तुम्हारे चरणों पर नत होता ?
किसका गौरव नहीं तुम्हारी चरण-धूलि में सोता ?
सदियों में जलती है ऐसी महाक्रांति की ज्वाला।
सदियों में पूरी होती है बलिदानों की माला।

सदियों में आते हैं तुमसे नीलकंठ वरदानी।
सदियों में पूरी होती आज़ादी की कुर्बानी!
डोल उठीं दुनिया की दीवारें—चट्टानें टूटीं
प्रतिरोधों का रोष लिए जब युग की किरणें फूटीं।

तुम नूतन बलिपंथ सृजेता! तेजवंत बलदाता!
वज्रप्रहारों तूफानों में जो रहता मुस्काता।
रुक रुक जाती श्वास दमन की सुन निर्घोष तुम्हारा,
दीप्त तुम्हारी आहुतियों से स्वतन्त्रता का तारा।

तुम सदियों की लुटी प्रजा के संघर्षों के सम्बल!
पग पग पर नवजीवन के अध्याय लिख रहे उज्वल!
आशा का उल्लास और आलोक तुम्हारा सहचर,
अविनाशी प्राणों का उद्यत दर्प तुम्हारा अनुचर।

महाकाश की जय-ध्वनि-सी दुर्दम्य तुम्हारी वाणी
शिशिर - स्निग्ध मुस्कान तुम्हारी ओ साधक! संधानी!
हे प्रबुद्ध हे मती! राष्ट्र की जनता के सेनानी!
कैसे अर्चन करें तुम्हारा? रुद्ध हमारी वाणी!

महाक्रान्ति के अग्रदूत विद्रोह शिखर—अधिनायक!
महारुद्र ओ दीप्तकंठ! भैरव गीतों के गायक।
फिर इंगित पर चले तुम्हारे विजय लुब्ध जन गण मन
पग चिह्नों पर बढे तुम्हारे क्षुब्ध देश का यौवन।

काल-पुरुष

श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' एम० ए०

विश्व के हा हा रव के बीच तुम्हारा जब गूँजा आह्वान,
तृणों के तृषित अधर को चूम दौड़-सी गई मृदुल मुस्कान,
रहा जो रक्त-पान में लीन निरंतर तर्क-शक्ति के साथ,
भरे आँखों में घृणा अपार रुधिर लिपटाये दोनों हाथ,

रहा जो रक्त-पान में लीन ध्वस्त कर जग की सारी कांति,
ध्वस्त कर धरणी का छवि-जाल ध्वस्त कर अखिल-भुवन की शांति,
हृदय उस मानव का तत्काल हुआ विस्मय से मुग्ध महान,
कि उतरा कौन भूमि पर आज प्रेम का ले पावन वरदान!

शून्य ने किया शून्य से प्रश्न,—न जाने क्यों सिहरा संसार!
कि किसके पथ पर आज अनंत अनिल उमड़ा बनकर जयकार!
कि फैला किसके तप का तेज पिघलने लगे निठुर पाषाण,
द्विधा में पड़ा द्वेष गंभीर घृणा या प्रेम—कहाँ कल्याण!

चिता-लपटों के बीच अधीर भैरवी भूल गई शृंगार,
सोचने लगी नियति निस्तब्ध कि किसने किया मरण से प्यार।
देख भूतल पर क्रांति समग्र देखकर रुका प्रलय का काण्ड,
चकित-सा देख कि तम के बीच ध्वंस से बचा खड़ा ब्रह्माण्ड।

उठीं शंकर की आँखें नाच खिंचा अधरों पर उज्ज्वल हास,
कि मानो लहरों पर रंगीन जगा हो सोते से मधुमास।
देख पति की चितवन में दिव्य नाश के बदले नव उल्लास,
पुलक-आकुल अंगों में देख अपरिचित एक नवीन हुलास।

उमा की वाणी खुली अधीर—"प्रलय के प्रभु! यह कैसा हर्ष!
रहे हग आज दृगों में देख नया पल; नया दिवस, नव-वर्ष"।
विहँसकर हँसकर फिर चुपचाप सजा धीरे से पन्नग-माल,
शिवा को कर उमंग से प्यार दिया शिव ने उत्तर तत्काल,

"स्वर्ग का सुधासिक्त अभिराम अमर मंगल-आलोक अनूप,
हुआ अवतरित धरा पर धन्य प्रिये! घर काल-पुरुष का रूप।
कि जिसने लिया द्वेष को चूम घृणा को दिया हृदय का प्यार,
कि जिसने ली श्वासों में बाँध सजल-करुणा की दीन-पुकार!"

कि जिसने दिया व्यथा को अश्रु, अश्रु को जल उठने का भाव,
कि जिसने तूफानों के बीच छोड़ दी अपनी जीवन-नाव;
कि जिसने पिया प्रेम से झूम विश्व का सकल घृणा-अपमान,
किया था जैसे मैंने देवि ! सुरों के लिए हलाहल-पान।

रूप धर काल-पुरुष का आज भूमि पर उतरा वह आलोक,
कि जिसने तनिक दृगों से देख लिया उन्मत्त प्रलय को रोक।
कि जिसके शब्दों से सुकुमार रहे मेरे ज्वाला-कण झोंक;
पुरातन का सौन्दर्य नवीन दिया जिसने कण-कण में आँक।

कि जिसकी निर्मल कीर्ति अखण्ड लिये नभ-चुम्बी गिरि-पाषाण,
कि जिसके प्रण-प्रदीप की ज्वाल रही छू मानवता के प्राण।"
हुए गौरीपति ज्यों ही मौन, किया नवयुग ने जयजयकार,
विश्व ने देखा भाव-विभोर, रहे तुम खोल मुक्ति का द्वार।

गृह-गृह हो नित नूतन अभिनंदन

श्री चन्द्रप्रकाश सिंह एम० ए०

यह हिमगिरि जिसका पौरुष है, गंगा तप की उज्ज्वल गरिमा!
है अटल सत्य-सा उदित सूर्य, आलोकित दिशि-दिशि में महिमा।
जिसके अन्तर की करुणा का वरुणालय वह लहराता है,
जिसके यश के मधु-सौरभ को आमोदित पवन लुटाता है,

जिसके नयनों से उठ उठ घन जगती का जीवन बन जाते,
सब शोषित, शापित, संतापित, जिससे हैं शीतलता पाते,
जिसके स्वप्नों में जाग रहा संसृति का मंगलमय उपक्रम,
जिसकी वाणी में व्यंजित है निज देश-धर्म का श्रेय परम,

वह गांधी नव-युग-जागृति की आँधी-सा उठता आया है,
वह मोहन जन के मन-नभ पर शुचि कर्म-चन्द्र बन छाया है।
वह अजर, अमर हो, अक्षय हो, भारत के प्राणों का प्रिय धन!
वह सहस्रायु हो, चलता हो गृह-गृह नित नूतन अभिनंदन!

गांधी गीत

प्रो० विश्वनाथप्रसाद

तुम देवों के देव बने !
मानवता के सत्य हुए सब युग-युग के सपने !
पग-स्पर्श से प्राण पा जगी पाषाणी जनता,
हथकड़ियों में आज़ादी का राग लगा बजने।
तुम देवों के देव बने !
अगणित द्रौपदियों के दुःशासन ने वसन हरे,
लगे सदय तुम चक्रपाणि अक्षय पट झट सजने।
तुम देवों के देव बने !
हिंसा-प्रतिहिंसा पिशाचिनी दनुज-नृत्य में मग्न,
चले आत्म-बलिदान-मन्त्र से मनुज-त्रास हरने।
तुम देवों के देव बने !
अग्नि अग्नि से, वैर वैर से शान्त किया किसने ?
अतः प्यार से अनाचार संहार किया तुमने।
तुम देवों के देव बने !
अस्त्र-शस्त्रमय दैत्यों से निर्भय निःशस्त्र डटे,
और लगे दुर्दानवता के अंग-अंग कटने।
तुम देवों के देव बने !
भेद-भाव मिट गए सर्ग के वर्ग-वैर बिसरे,
राजा-रंक लगे सम स्वर से तव जय-जय रटने।
तुम देवों के देव बने !
काली जल-भुन हुई सभ्यता की लाली न रही,
अब तव सुनें पुकार सभ्यता के शिशु बने-ठने।
तुम देवों के देव बने !
तृषित विश्व-हित लिए अमृत वर कब से देव खड़े ?
सर्वनाश ! आया न जगत जो दौड़ यहाँ बचने।
तुम देवों के देव बने !
हे पुरुषोत्तम ! जीवन से तम टले, ज्योति सरसे,
परम-धर्म* विलसे जग में अणु-अणु हों स्नेह-सने।
तुम देवों के देव बने !

---

* "अहिंसा परमो धर्मः।"

महामानव

श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

उस दिन बोल उठी अनजाने, नीरव-सी वन की छाया ;
जब अनन्त में महाज्योति के सागर-सा कुछ लहराया।
किरण-करों से युग-मन्दिर का खोल किसी ने द्वार किया ;
स्वागत-पथ पर दम्भी-नगपति, ने भी हृदय पसार दिया।

चकित विश्व ने कहा महामानव की छाया डोल रही ;
हिय - हिय की धड़कन में उसकी, मंगल-वाणी बोल रही।
गूँज उठा नभ बार बार जब, युग ने जय-जयकार किया ;
पुलक-पुलक युग उठा, धरा ने निज सर्वस जब वार दिया।

चूम चरण अभिवन्दनीय फिर उस मिट्टी की काया के,
श्वास श्वास में गौरव-गर्भित गीत बाँध उस छाया के।
चिनगारी बन उठी कल्पना, प्रण-प्रदीप सुलगाने को ;
आत्म-प्रलय का मंत्र फूँक, जाग्रति की ज्योति जगाने को।

खुलीं चेतना की आँखें, वाणी की ज्वाला फैल चली ;
नभ को हिला, हिला धरणी को, कम्पित कर गिरि शैल चली।
बाधा-बन्धन अपने ही लघु-तम में अन्तर्ध्यान हुए,
अश्रु महामानव के युग-वीणा के मंगल-गान हुए।

पतन—अभ्युदय-पथ के पन्थी, काँप रहे, वह जाता है,
लपटों में भी मुस्काकर, आगे ही पैर बढ़ाता है।
आसपास जो खड़े आँच से, जल जाते घबराते हैं,
किन्तु मरण के सम्मुख भी, उसके पग बढ़ते जाते हैं।

युग की सजग चेतना का, प्रतिनिधि पौरुष का ज्वार प्रबल,
त्याग और तप का प्रतीक, पीड़ित का कातर प्यार सजल।
मुट्ठी भर हड्डियाँ, ज़रा-सी मिट्टी हल्की-सी धड़कन,
आत्म-प्रलय की धुन अन्तर मे, लेश न होठों पर सिकुड़न।

दृग में शक्ति कि स्वयं रोक ले, अपनी गति से महाप्रलय।
जान हथेली पर, ख़तरो से प्रेम, महामानव की जय।

देव !!

श्री राजेश्वर गुरु

देव ! हम कैसे कहें तुमको धरा की वस्तु !
नन्हे हीन सारे बन्धनों से मुक्त
इस विस्तीर्ण लघुता भरी समता पर महान उभार हो तुम !

अहे मानव, देव ही कैसे कहें !
देवत्व की साकार तुम अविकार प्रतिमा,
किन्तु, जो उर किये प्लावित, प्यार हो तुम—
नहीं तुम श्रद्धाजनित उस इला की भावना से युक्त
जिसमें भक्ति का साहस झुलस देवत्व की महिमाग्नि में
ऊपर न उठ पाए चरण की धूलि से;

हम विनत दुर्बल सशंकित मानव हृदय
पाकर तुम्हें, खोने न देंगे,
पास हो तुम कहो कैसे मान लें हम देव तुमको
मानवोपरि प्राण ! बनकर देव
मानव ही रहो तुम देव-सा होने न देंगे।

दिव्य ! छोटे दो नयन में दूर के किस देश की आभा भरे
तुम कौन ! जो आदिम युगों से धरे नाना रूप, नाना वेश
जग के किसी घन-तम-लोम-व्यापी अंध कोने में
चिरंतन प्रज्वलित किस दीप की
सिमटी किरन के प्राणदा आलोक से ही जागते हो !

वरद-कर की शरद ज्योत्स्ना विकीरित करते हुए,
हतभाग मानव किन्तु हम !
जो जानकर भी नहीं तुमको जान पाते !!

हे ज्योतिपुञ्ज अनूप ! हे गँभीर शान्त प्रशान्त !
इस अति पाप-संकुल विश्व को जो याचना के नयन फैलाये
तुम्हारी विकीरित हर किरन का प्यासा
उसे संजीवनी दो ज्योति की, वह जी उठे !

उपचार विनय

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

बापू ! तुम वैसे बापू हो ?
कभी कभी पर भ्रम होता है—
कहीं वहीं तो नहीं आ गया, जो क्षीरोदधि में सोता है।
राशि नाम की भी वह ही है, और जागरण-वंशी वह ही
शान्ति-दूत वह कुरुक्षेत्र का अब भी भार वही ढोता है।
महारास में जैसे
श्रुति की सभी ऋचाएँ नाच रही थीं।
चीर-हरण में मुक्त-आत्मा-सम्मुख नग्न विराज रही थीं।
आज क्या नहीं वैसे ही हम नंगे भूखे साथ तुम्हारे।
दृष्टि आपकी भी वह ही है जो जब सब कुछ आँक रही थी।
कठिन जाल है हीन हाल दानों पर लाल लुटे जाते हैं, आप
रोष का दावानल पीकर चुपचाप घुटे जाते हैं,
यही अवस्था रही,
व्यवस्था तो फिर किस के लिए करोगे ?
इन्द्र कोप से बचा लिए जो, अब वह प्राण छुटे जाते हैं !

बापू के चरणों में

श्री निरंकार देव सेवक एम. ए.

भारतीय जन-मन के स्पन्दन, जीवन के ध्वनिकार,
जग की पुंजीभूत भक्ति औ' श्रद्धा के आधार।
तन से वृद्ध, प्रकृति से बालक, मन से युवक समान,
भारत के तुम एक मात्र हे आप स्वन भगवान्।
शुचिता शील दया की प्रतिमा, तुम ममता की मूर्त्ति।
नास्तिक होते हुए जगत् में तुम ईश्वर की पूर्त्ति !!
आज तुम्हारे हाथों में है राष्ट्र-धर्म की डोर,
इसकी गति-क्रम घुमा फिरा दो तुम चाहो जिस ओर।
डूब रही दुर्बल मानवता महायुद्ध-मँझधार,
कितने उत्सुक नयन रहे हैं तुमको आज निहार।
लेकर कर में सत्य अहिंसा की दोनों पतवार,
तुम्हीं करोगे इस दुखियारी के बेडे को पार।

बापू

श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, सेकसरिया कालेज, वर्धा

सत्य अहिंसा के मंदिर में, रहे सदा हो अटल पुजारी,
दलित अकिंचन अबल जनों के, चिर सेवक अनन्य हितकारी।
निज शरीर को जला-जलाकर आलोकित करते हो जग को,
सुलभ बनाते त्याग तपस्या से स्वदेश के दुर्गम मग को।
संत! तुम्हारी मानवता ने ही मुझको खींचा है।
विमल प्रेम जल से तुमने नित मनुज-हृदय को सींचा है।

भारतमाता की माला का यह सुमेरु

श्री रामनाथ गुप्त

अरे, कौन हम-सा बड़भागी, अरे कौन हम-सा पावन,
हम पद-दलितों के हित दौड़े नंगे चरण शरण-अशरण,
खूब, आज प्रत्यक्ष हो गई कण-कण-व्यापक ज्योति गहन,
बापू के प्राणों में प्रकटे निखिल जगत्-पति रमा-रमण।

भक्तों की परिपाटी का विश्वास अचल हमने देखा,
कर्मयोगियों की श्रद्धा का वास विमल हमने देखा,
ज्ञानि-जनों का शुद्ध बुद्धि-उत्कर्ष धवल हमने देखा,
'निर्बल के बल राम' अनास्था के युग में हमने देखा।

उकठ-कुकाठ देखते इसमें दाहक स्फुलिंग की ज्वाला,
अरे क्रान्तद्रष्टा महान यह फेर रहा चिर गति-माला,
दानवता के ऊपर यह मानवता की विजय-पताका,
पूर्ण अखण्ड अजेय शक्ति का गाया इसने नव साका।

युग-युग के पीड़ित मानव की आहों का यह एकमात्र बल,
दलित हृदय के अश्रुदलों का यही एक त्रिभुवन में सम्बल,
हिंसा-महाशास्त्र का कीलक, यह भैरव नटनागर शंकर,
अचल धरित्री का साधक यह, परम अहिंसा-धर्म-धुरंधर;

भारतमाता की माला का यह सुमेरु—मानव-शिर-भूषण,
युग-युग के अवतारों का यह चरम विकास—दिव्यतम पूषण;
इसके चरणों से सतयुग का देख रहे हम अभिनव उद्भव,—
खुले हृदय से गले मिलेगा जिसमें प्रति मानव से मानव।

वन्दन-गीत

श्री नरेशकुमार

काव्य के शत श्लोक का वन्दन तुम्हें!

धरणि-वैदिक श्वास पाकर, भी गगन शापित रहेगा,
वज्र शम्पा के प्रहारों को, हिमालय सह सकेगा;
कण्ठ में उलझीं ऋचायें,
सूत्रमय हों हर शिरायें;
एक ध्रुव का सूर्य ही केवल प्रलय तक चल सकेगा;
सप्त ऋषि ले मेघ-अंजलि कर रहे अर्चन तुम्हें!!

सृष्टि के सब व्यंग, मानव-कोप के अनमोल तारे,
तम मिटा पाया न ये मन्वन्तरों के लेख सारे;
तिमिर तट पर सो गया है,
दिवस किसमें खो गया है?
एक प्रतिध्वनि लिख रही चिर आदि से ही सर्ग सारे;
आज नूतन सर्जना में विश्व-अभिनन्दन तुम्हें!

चरण को छू आज युग के उपल में भी प्राण जागे,
पा अमृत उपवास से संहार ने सब कुलिश त्यागे;
सृजन का जागे सवेरा,
आज वन्दीगृह बसेरा;
शक्ति के संकेत देते, खादियों के रजत धागे;
कोटि जन के हृद्-कमल का अगरुमय चन्दन तुम्हें।

आज पश्चिम की दिशा ने, पूर्व से रवि-ग्रंथ पाया,
गूँजता पाताल-नभ तक, जो अमर सन्देश गाया;
अमर ऊषा की दिशा हो,
सरल सन्ध्या की तृषा हो;
जो न संवत् धो सकें, वह नील कुंकुम दान पाया;

सौर-मंडल कर रहा, हे विश्वगुरु! वन्दन तुम्हें!!

अर्चना

श्री रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'

तुम एक विन्दु में महासिन्धु की सत्ता!
तुम एक रश्मि में रवि की निखिल महत्ता!!

तुम वज्र सदृश, तुम कोमल कमल-कुसुम हो,
तुम हो व्यापक सर्वत्र स्वयं में गुम हो।
मानव का मन क्या मोल तुम्हारा जाने?
तुम देव-देव, तुम से तो केवल तुम हो!

तुम मरु-प्रदेश में सुधा-सरित की लहरी!
तुम सुप्त जनों के सजग सजीले प्रहरी!

तुम ज्वलित ग्रीष्म में सावन की हरियाली,
तुम पतझड़ के मधुमास, विकास-प्रणाली।
नैराश्य-क्षितिज पर तुम आशा की रेखा।
तुम भरी निशा में उदित उषा की लाली।

तुम हो अधरों के फूल दृगों के मोती,
तुम सभी सृष्टि के सजन समान सगोती।
कितना विशाल है देव! तुम्हारा अंतर!
जिसमें जीवन की व्यथा जागती सोती।

भ्रम के भावों से भ्रान्त विश्व का जीवन,
अघ-ओघ-भार से श्रान्त विश्व का जीवन,
तुम मानवता के अग्र-दूत बन आये,
जब पशुता से आक्रान्त विश्व का जीवन।

तुम साँस-साँस की गति टटोलने निकले,
तुम विश्व-व्यथा का ताप तोलने निकले।
जब महानाश लिख रहा प्रलय का लेखा,
तुम सुलभ सृजन के पृष्ठ खोलने निकले।

तुम सेनानी, तुम सहचर प्यारे बापू!
तुम दुखियों की आँखों के तारे बापू!
यह कोटि-कोटि हृदयों की प्रिय अभिलाषा,
तुम जुग-जुग जग में जियो हमारे बापू!

युग-प्रभात

श्री राजीव सक्सेना

नित तमावृत्त, तुम सत्-निवृत्त ज्योतित प्रकाम !
ओ जन-गण-जीवन के प्रदीप ! शत शत प्रणाम !
युग-युग तक तुमने सहा ताप, नत-शिर, उदास,
तुम जले अन्य जन अकर्मण्य छाया प्रकाश !

ओ जन-गन जीवन के प्रदीप ! क्या कहूँ व्यथा ?
क्या दास और सामंत - युगों की कहूँ कथा ?
तुम जले आज पूंजीवादी यंत्रों के तल,
तव आकांक्षाएँ बनी धूम्र मिल में प्रतिपल ;
तुम बने कहीं जो कृषि-प्रांगण के वंश-दीप,
प्रिय, ज्योति-दीन, तुम जले अन्त के ही समीप !

तुम दीप्त रहे आँधी तूफ़ाँ में हे अनूप !
तुम धन्य ! अमर अक्षुण्ण तुम्हारा यह स्वरूप,
विश्वास हमें तुम एक दिवस हर अंधकार,
जग में रच दोगे युग-प्रभात, शुचि, निर्विकार !

बापू और स्वांग

श्री मोहन एल० गुप्त

मुट्ठी भर हड्डी का ढाँचा, फिर भी वह फौलादी साँचा।
जो भी टकराया चूर हुआ, सम्मुख जो भी आया नाचा।
आँधी चलती आगे-आगे, तूफान बनी जिसकी छाया।
पग-पग पर है भूकम्प मचा, बस 'गान्धी की जय' की माया।

कोई कहता है शान्ति दूत, कोई कहता है क्रान्ति-दूत,
वह गले लगाता चलता है, हो शत्रु-मित्र, ब्राह्मण-अछूत।
हे भारत के बन्दी महान् ! जर्जर जीवनके महाप्राण !
किसके बन्दी, तुम ? दे सकते, जब अखिल विश्व को मुक्ति-दान।

बन्धन में ही बन्धन बनकर, लो फिर से आई वर्षगाँठ,
मानव को दानव के करसे से, अब मुक्त करो मानव विराट् !

गांधी चरवाहा

श्री रामदयाल पांडेय

तू चरवाहा, तू चरवाहा बिल्कुल चरवाहा, चरवाहा !

चरवाहे से तनिक नहीं कम, चरवाहे से तनिक न ज़्यादा,
एक छोकरा चिर-अलबेला अल्हड़, भोला, सीधा-सादा !
चंचल, फुर्तीला चरवाहा, नटखट गर्वीला चरवाहा !

छोटी-मोटी एक लँगोटी, मोटा रुखड़ा काला कंबल,
क्रूर काल के कोप-क्रोध से बस यह रक्षक, तेरा संबल ;
आगे उछल-उछलकर चलता डंडा पा तेरे कर का बल,
दिखा-दिखा निद्रित पलकों को खाई-खंदक, टीले, जल-थल ;

अजब जंगली तेरी सूरत अजब जंगली तेरा बाना,
पासी के झोपड़े सजाता तोड़ फोड़ बोतल-मयख़ाना ;
घास खिलाता, ख़ुद भी खाता सदा घास के ही गुण गाता,
अमृत को फीका बतलाता बड़े शौक़ से विष पी जाता !

लोट-पोटकर धूल चढ़ाता मिट्टी लेपे-पोते रहता,
स्वर्ण-भस्म को रोग भयानक संजीवनी कीच को कहता ;
लगा लगन जंगल-झाड़ी में कहता स्वर्ग-निवास यही है,
लेकर सिर पर बिजली-बादल कहता है मधुमास यही है !

कहता, इन शहरों को छोड़ो कहता, इन महलों को तोड़ो,
वन-पशु वन-वन से मैं खेलो कालनाग से नाता जोड़ो ;

कहता, यम से करो नहीं भय, पालो उसको पिला-पिला पय !
कहता, नरक देव का ही है नारकीय भी पूज्य वर्ग है,
उच्च स्वर्ग की घृणा नरक है पतित नरक का प्रेम स्वर्ग है ;

भय ही है विनाश का कारण, शस्त्र आत्महत्या का साधन,
कहता, यही सुसंस्कृत जग है, कहता यही मुक्ति का मग है !
ऐसा दीवाना चरवाहा, ऐसा मस्ताना चरवाहा !

इसने कभी चराये जड़ भी आज चराता केवल चेतन,
पशु के बन्धन खोल चुका, अब खोल रहा मानव के बन्धन!
अभय किया पशुओं का जीवन कभी सुनाकर मुरली का स्वन,
आज मनुज के ही स्वर से है अभय बनाता मानव-जीवन!

जन्तु-मुक्ति के लिए किया था कभी दानवों का उन्मूलन,
मनुज-मुक्ति के लिए मनुज की दानवता का आज विसर्जन;
स्वर्ग-प्राप्ति के लिए किया था कभी घोर जप-तप-आराधन,
आज धरा को स्वर्ग बनाने करता मनुष्यत्व का पूजन!

यही मुहम्मद, गौतम, ईसा गोकुल का गोपाल यही है,
कालग्रस्त बन्दी मानव की प्राणरक्षिणी ढाल यही है;
कोई सच्चा निश्छल प्राणी कहता देव, ब्रह्म, परमात्मा,
कोई कहता धुनी-मनस्वी कोई कहता सिद्ध महात्मा!

मेरा कवि कहता चरवाहा यह मानवता का चरवाहा,
जन-गणनायक का चरवाहा क्रांति-गीत गायक चरवाहा!

कहता, अजी चलो दृग मूँदे कहता अजी छलाँगें मारो,
दुर्बल दीन अंग देखो मत बढ़ो अभय जीतो या हारो!
है विश्वास कि विजय मिलेगी है विश्वास खुलेंगे बन्धन,
चरवाहा है आदि सनातन, नूतनता से भी नित नूतन!!

रहे तृणों से तुष्ट निरंतर जिसकी प्रकृति-प्रेरणा मांसल,
चले निरस्त्र, नग्न, निर्वेदन जिसे लाँघना अगम हिमाचल!
हो भी सकता है चरवाहा जीता रहे मर्त्य में शंकर,
अबुझ पहेली एक स्वयं बन करता रहे त्रिलोक निरुत्तर!

रहे जगत में यदि यह जीता देता अमिय और विष पीता,
छिन्न-भिन्न मानव के उर को सात्विक स्नेह-सूत्र से सीता!
दे सकता अजरत्व जरा को कर सकता यह स्वर्ग धरा को,
अमर बना सकता यह नर को, मर्त्य बना सकता ईश्वर को!
बना ब्रह्म से बढ़कर नर को मनुष्यत्व देगा ईश्वर को,
यह दुबला-पतला चरवाहा, हड्डी का पुतला चरवाहा!

बापू

श्री सुधीन्द्र एम० ए०

जड़-जर्जर था पड़ा सिसकता जग जीवन अनिमेष,
सुलग रहा था मानवता में महाअनल-सा द्वेष।

हुई सहसा ही "यदा यदा हि" गिरा क्षिति पर उद्भूत,
सबसे प्रथम छुए तुमने ही इतने कोटि अछूत!
हरिजन हुए आज तुमसे फिर ये अन्त्यज अवधूत!
बिखरी ग्राम-शक्ति को बाँधा कात-कातकर सूत!

आप नग्न रह-रह पहनाया नग्नों को वर वेश!
मांसल किया लोक को बनकर स्वयम् अस्थित्वक्शेष!

भरणी धरणी पर लोहित का लखकर भीष्म विलास,
घर ही के आँगन में होते निठुर नरक का हास।

पिघलकर बहा तुम्हारा प्राण हुआ विह्वल हृदेश,
'अक्रोधेन जयेत्क्रोधम्' का सुन अक्षर सन्देश।
स्नेह-अहिंसा-शांति-सत्य का लेकर मन्त्र अशेष,
देव! तुम्हारी ओर विश्व है देख रहा अनिमेष।

तुममें प्रकट प्रपीडित जग का वह विराट उल्लास!
विश्वम्भर आत्मा का तुममें शिव-सुन्दर आभास!!

अडिग तुम्हारा ध्येय, अजित बल पौरुष-शौर्य्य अगाध,
दिव्य दृष्टिमय चक्षु तुम्हारे कर्म-पन्थ निर्बाध।

अहिंसा वर्म, शांति शुचि मन्त्र, सत्य है शाश्वत ढाल,
अहो ऐन्द्रजालिक! दिखलाकर अपना तेज विशाल।
नचा रहे हो तुम इंगित पर पाशव बल विकराल!
मन्त्रमुग्धवत् काँप रहे ये शासन-यन्त्र कराल।

जीवन में, प्राणों में जाग्रत आज तुम्हारी साध,
आर्य! तुम्हारे चरण-चिह्न पर चलता चित्त अबाध।

गाया तुमने गायक! ऐसा अजर-अनश्वर गीत,
जन होकर तुम बने जनार्दन, जग के गीतातीत।

मुहम्मद, गौतम, ईसा, महावीर, मनु एकाकार !
"मानवता तो चिर-स्वतन्त्र है, पारतन्त्र्य है भार,
स्नेह (अहिंसा) से सुरपुर है यह वसुधा-परिवार।
जन की सेवा ही जन को है खुला स्वर्ग का द्वार !"

यही अमर सन्देश तुम्हारा व्रत यह परम पुनीत,
'नहीं अनृत की किन्तु सत्य की सतत जगत् में जीत !'

साध्य सत्य को और अहिंसा उसका साधन मान,
चले लुटाने कई बार तुम पावन अपने प्राण।

खोजने, ले प्राणों का दीप, अमरता का वरदान!
प्राणों के शोणित से धोने जग के कलुष-विधान।
संसृति को पीयूष पिलाने कालकूट कर पान,
ओ प्रलयंकार, शिव-शंकर ओ ! अभयंकर भगवान!

अमिट सत्य के अमर उपासक ! साधक, सुधी महान!
गाता पीड़ित जग का कण-कण ऋषे ! तुम्हारा गान।

मानवता के अमर पुजारी ! विभु की भव्य विभूति!
करुणाकर की करुणा-छाया ! करुणामय अनुभूति!
संसृति को वरदान तुम्हारी अच्युत ! पुण्य प्रसूति!
देव तुम्हारी चरणरेणु है भाल-भाल की भूति!

राष्ट्र-संवेदना

श्री 'रंग'

आज युगों के बाद हिमाचल आँसू भरकर रोया।
कर्मवीर के कर की लकुटी आज अचानक टूटी,
मोहन की मनमोहक मुरली मृदु अधरों से छूटी,
हिन्द महासागर की लहरें चीख उठीं गर्जन कर,
मानवता के मूक-रुदन से सिहर उठे भू अम्बर।
ओ हिमगिरि, अपने आँसू का ऐसा ज्वार बना दे।
जो जनमत के असंतोष का ज्वालामुखी जगा दे।
तब सूखेगा तेरा आँचल जो है आज भिगोया,
आज युगों के बाद हिमाचल आँसू भर कर रोया।

कौन है वह मुस्कराता ?

श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

कौन है वह मुस्कराता ?
रक्तरंजित क्रान्ति में भी शान्ति के है गीत गाता।
हँस रहा तूफान सम्मुख, हँस रहा वह भी मनस्वी ;
सागरों की विकट लहरों मे खड़ा निर्भय तपस्वी।
प्रलय - झंझावात प्राची में प्रतीची का भयंकर ;
जब बढ़ा, गरजा गगन मे कँप उठा तब विश्व थर थर।
प्रलय - झंझावात को वीरान ही वीरान भाया ;
प्रलय - वीणा पर किसी ने नाश के ही राग गाया।
विश्व की हर क्रान्ति में हो रक्त की सरिता बही है ;
और मानवता सदा संतप्त हो रोती रही है।
देख मानव की विकलता, स्वर्ग से वह कौन आता ?
कौन है वह मुस्कराता ?
शान्ति की ले क्रान्ति अनुपम, शान्ति का सदेश देता ;
शान्ति की ही क्रान्ति से जन-विश्व का बनता विजेता।
चकित होकर विश्व ने फिर शान्ति-संस्थापक निहारा ;
युग हँसा मन में मुदित, नवयुग प्रवर्तक देख प्यारा।
गगन गरजा, गरजकर जब आँख यों तुमने उठाई ;
विश्व ने प्रत्येक कण में वह तुम्हारी बात पाई।
जो कहा तुमने, हिमालय ने कहा सीना उठाकर ;
बह चले उनचास मारुत, मंत्र वह जग में गुँजाकर।
कौन जिसके मंत्र को है विश्व का कण कण सुनाता ?
कौन है वह मुस्कराता ?
मंत्र चर्खा का सिखाकर, स्वाभिमानी फिर बनाया ;
और खद्दर का कवच दे, विश्व में उनको उठाया।
विश्व के विस्तृत गगन में लग रहा नक्षत्र-मेला ;
शीघ्र प्राची मे उगेगा चन्द्र, आई शुभ्र वेला।
तुम हिमाचल से अटल हो, वृद्ध ओ मेरे तपस्वी !
चल बसीं 'बा' छोड़ तुमको बीच में ही हा ! यशस्वी !
हाय, मां 'बा' क्या गयीं, मातृत्व ही जग से सिधारा ;
दया, नय. वर त्याग की प्रतिमा गयी बस छोड़ कारा।
वज्र से आहत, दलित फिर भी बढ़ा जाता दिखाता।

आँख से आँसू गिरे कुछ, शीघ्र ही पर पोंछ डाले ;
देश के कल्याण हित बलिदान ये कितने निराले !
एक भारत ही नहीं ससार तुमको मानता है ;
बुद्ध, ईसा, राम-सा तुमको सभी जग जानता है।
विश्व की आँखें तुम्हीं पर लग रही हैं आज त्यागी !
कर रहा है शान्ति की वह याचना विश्वानुरागी !
विश्व के उत्थान का यह मार्ग है किसने दिखाया ?
रक्त का निर्झर मिटा, नित स्नेह का निर्झर बहाया ?
कौन वह निज तेज से जो विश्व को जगमग बनाता ?
कौन है वह मुस्कराता ?

महात्मा गांधी

श्री रामेश्वर बी० ए०, एल्-एल्० बी

ओ भारत के प्राण !
जड़-जङ्गम में चेतन जैसे,—अन्तर्हित अम्लान !
ओ भारत के प्राण !!

स्वर्ण-रश्मि सा प्यार प्रसारित, उर,—करुणा का कोमल कम्पन,
जर्जर सा तन, भोली चितवन—बना विश्व का अभिनव जीवन !
अमा निशा की अँधियारी में—दीपक की मुस्कान !
ओ भारत के प्राण !!

हिमगिरि से तुम उच्च, उच्चतर ;सागर से भी गम्भीर तरल ;
सत्य बना बल, चरखा सम्बल—बनी अहिंसा मरु में मृदु जल !
मृग तृष्णा की अमिट टोह में—जीवन के अरमान !
ओ, भारत के प्राण !!

तुम चिर मुक्त, सजग, मनमोहन, दलितों के शुचितर भाव 'अहम्',
शूल फूल सम, विषम बना सम—साकार हुए—भगवान स्वयम् !
अश्रु विचुम्बित नयन कोर मे—आशा: छवि छविमान !
ओ भारत के प्राण !!

गांधीजी

श्री विश्वम्भरनाथ

नव-भारत की संस्कृति में,
आज यह अपूर्व-तिथि,
सदियों के सकरुण, दयनीय इतिहास में,
कीर्ति की गर्व की गौरव की बेला है।

आज ही के दिन, इस दूसरी अक्तूबर को,
बीते पचहत्तर वर्ष, छाया हर्ष,
भारत के अमर-प्राण,
फिर से साकार हुये—
वज्र से कठोर किन्तु करुणा से मृदुलतम,

गांधी के रूप में।
गांधी महात्मा की हीरक जयन्ती यह—
जाग्रति की चेतना अनूपम की
जीवन की
पुण्य-तिथि बेला है;

गांधी परन्तप के,
आदर में, मान में,
महा-पर्व मेला है।

गांधी प्रशांत चित्त—
निर्बल, निःशस्त्र,
किन्तु आत्मा का सम्बल, आत्म-आहुति की शक्ति ले,
करते आवाहन,
खिन्न, म्लान विश्व-आत्मा का—
'प्रेम औ' अहिंसा में निहित श्रेय मानव का।'
यही प्रबुद्ध-पथ—
सत्य, शिव, सुन्दरतम्।
भारत की जनता का—
'सत्य पर आग्रह'
मानव-कल्याण का रुचिर प्रयोग एक!

भारत निमित्त मात्र। रचता अध्याय नया—
युद्ध-हीन, वर्गहीन,
प्रेम औ' अहिंसा की सुदृढ़ बुनियादों पर।
शोषण से मुक्त
विश्व निर्मित हो सकता है;
आज विश्व-प्राङ्गण में,
पश्चिमीय सभ्यता,
दानवी कुरूपता के बर्बर परिवेष्टन में;
हत्या औ' हिंसा में मग्न और सोल्लास
भस्म हो रही है स्वयं, अपने वरद-हस्त से।

कटुता, संघर्ष और शोषण का दैत्य जगा—
हिंसा से शान्त चलो करने है हिंसा को!
भूले प्रतिपादन,
अनुयायी बुद्ध, ईसा के—
"शान्त सदा होती है हिंसा अहिंसा से!
"वैर विजित होता है केवल निर्वैर से!
घृणा शान्त होती है—शुद्ध, बुद्ध प्रेम से!"

गर्व, अधिकार और कितनी उपेक्षा से
हँसते हैं, पशुता के स्वामी नीतिज्ञ ये—
'सत्य, आत्मबल का भी कोई प्रयोग है?'
'भारतीय जनता क्यों हारकर मौन हुई?'
किन्तु ये संभ्रम, अभिमानी, इन्हें पता नहीं—
'ये हैं विराम स्वल्प।'

हार कहीं होती है शुद्ध आत्मबल की?
विश्व की शोषित जनता जब उठेगी,
उस दिन गिरोहों का भाग्य अस्त होगा।
नूतन संहृति, औ' नूतन परिपाटी पर
रचना करेगी वह नूतन समाज की।
संस्कृति नवीन होगी,
प्रेम औ' अहिंसा की नूतन सरणि में।
गांधी उस युग के, उस स्वर्णिम विहान के
द्रष्टा हैं, स्रष्टा हैं।

मृत्युञ्जय

श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र

आज फिर सिन्धु कर्मयोग का,
लहरा रहा है, मातृ-भूमि के पुजारी में,
पुण्यभूमि भारत वसुन्धरा के वीर में,
निर्मम विरागी और रागी एक संग हैं
कूद रहे जिसमें । ये मृत्युञ्जय मृत्यु को
करने पराजित चले हैं । पुराकाल में
पूर्वपुरुषों ने पूतगंगा के पुलिन में,
विन्ध्य अटवी में था कि मानसर प्रान्त में,
जिसको पराजित किया था मृत्यु हारी थी ।
हारी मृत्यु । शोक निशा बीती सांख्य योग का
अंशुमाली आया, और आया ज्ञानलोक में ।
धन्य हुई भारत धरा थी यह गर्व से
गाया ऋषियों ने जहाँ गान कर्मयोग का ।
कर्मयोगियों की यह भूमि चिरकाल से
बन्धन विहीन । उस विगत अतीत का
द्वार-पट खोलने चला जो कवि आज है,
एकमात्र आशा से कि देख उस युग की
उज्ज्वल विभूति, ओज पायेंगे मनीषी भी
धन्य जिनसे है हुई जन्मभूमि जननी ।

अर्घ्य

श्री रामावतार यादव 'शक्र'

अस्त्र अहिंसा से लड़ करके तोप और तलवार थकी !
मरने की भावना निरखकर अनाचार की धार थकी !
अतलान्तक है शान्त और सागर प्रशान्त में ज्वार नहीं,
उसके चरणों पर जगती कब से अपने को वार चुकी !
प्रतिदिन रवि जाकर पश्चिम में—सुना रहा संदेश यही—
"मानवता का सच्चा प्रतिनिधि गाँधी से बढ़ और नहीं ।"

गांधीजी

श्री नरेन्द्र शर्मा

जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया !
श्री सम्पति, सुख, परिवार-मान की कौन कहे !
अरमानों के, निज प्रानों के भी मुक्त दान की कौन कहे !
प्रियतमा संगिनी नारी का तुमने जनहित बलिदान दिया !
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया !
जिन आदर्शों-सिद्धान्तों के तुम अटल अचल,
इस अटल अचल को हिला न पाई अहंकार की मति चंचल !
उन आदर्शों-सिद्धान्तों का तुमने जनहित अपमान किया !
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया !
तुम अमृत सत्य के अभिलाषी, निर्भीक सन्त,
पर मर्त्य-लोक कल्याण हेतु चिर आशंकित ममता अनन्त !
जनहित के लिए असत्यों से की संधि, शम्भु, विषपान किया !
जनहित के लिए, देव तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया !
सौ बार हारकर, सेनानी, तुम अपराजित !
जय और पराजय के सुख-दुख से नहीं युद्ध की गति शासित !
क्या इसीलिए मृदु पल्लव का लोहा वज्रों ने मान लिया !
जनहित के लिए, देव, तुमने—क्या नहीं सहा ! क्या नहीं किया !

गांधी महाराज

श्री गोपीकृष्ण शर्मा

गगन से बादल छँटने लगे, गगन पर आने को है चाँद,
कुमुदिनी के अधरों पर अभी-अभी मुस्काने को है चाँद !
न अब तारे रोयेंगे और, न अब अम्बर रोयेगा और,
न मानव के लोहू से हाथ मूढ़ मानव धोयेगा और !
'अहिंसा' और 'सत्य' की ज्योति दिखाता सहसा, आया कौन,
हरिजनों के ईश्वर को, दूर स्वर्ग से भू पर लाया कौन !
उठी जो वर्धा से आवाज़, गूँजती है अम्बर के पार—
हमें अपनी मिट्टी से स्नेह, हमें अपनी माता से प्यार !
नर्मदा की बजती है बीन हिमालय भी गाता है आज,
व्यथित जगती को देने शान्ति आ गए गांधीजी महराज !

गाँधीजी का सचित्र इतिहास

श्री रामनरेश त्रिपाठी

मन के मनुष्य-बीज आप ही समा गया जो,
दिखलाया अपने विराट का विकास है।
जिसकी मनुष्यता की अमर कहानी आज,
अक्षय विभूति-सी वसुन्धरा के पास है।
कौन कहे, कौन लिखे, खींचे कौन रेखा-चित्र,
ऐसा क्या किसी में बुद्धि वाणी का विलास है!
भारत स्वतंत्र होगा पीढ़ियाँ कहेंगी तब,
गाँधीजी का चित्रित यही तो इतिहास है।

युगावतार

श्री सोहनलाल द्विवेदी

चल पड़े जिधर दो डग, मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर;
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, गड़ गए कोटि दृग उसी ओर!

जिसके शिर पर निज धरा हाथ, उसके शिर रक्षक कोटि हाथ;
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गए उसी पर कोटि माथ।

हे कोटि चरण, हे कोटि बाहु! हे कोटि रूप! हे कोटि नाम!
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि, हे कोटिमूर्ति तुमको प्रणाम!

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख, युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख;
तुम अचल मेखला बन भू की, खींचते काल पर अमिट रेख।

तुम बोल उठे, युग बोल उठा, तुम मौन बने युग मौन बना;
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर, युगकर्म जगा, युगधर्म तना!

युग-परवर्तक ! युग-संस्थापक ! युग-संचालक ! हे युगाधार !
युग-निर्माता ! युग-मूर्ति ! तुम्हें, युग युग तक, युग का नमस्कार !

तुम युग युग की रूढ़ियाँ तोड़, नित रचते रहते नई सृष्टि ;
उठती नवजीवन कीं नींवें, ले नवचेतन की दिव्य दृष्टि ।

धर्माडंबर के खंडहर में, कर पद प्रहार, कर धरा ध्वस्त ;
मानवता का पावन मंदिर, निर्माण कर रहे सृजन-व्यस्त !

बढ़ते ही जाते दिग्विजयी ! गढ़ते तुम अपना राम-राज,
आत्माहुति के मणिमाणिक से, मढ़ते जननी का स्वर्ण ताज !!

तुम कालचक्र के रक्त सनें, दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़ ;
मानव को दानव के मुँह से, ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़ ।

पिसती कराहती जगती के, प्राणों में भरते अभयदान ;
अधमरे देखते हैं तुमको, किसने आकर यह किया त्राण ?

पद सुदृढ़, सुदृढ़ कर-संपुट से, तुम कालचक्र की चाल रोक ।
नित महाकाल की छाती पर, लिखते करुणा के पुण्य श्लोक !

कँपता असत्य, कँपती मिथ्या, बर्बरता कँपती है थर थर ;
कँपते सिंहासन, राजमुकुट कँपते, खिसके आते भू पर ।

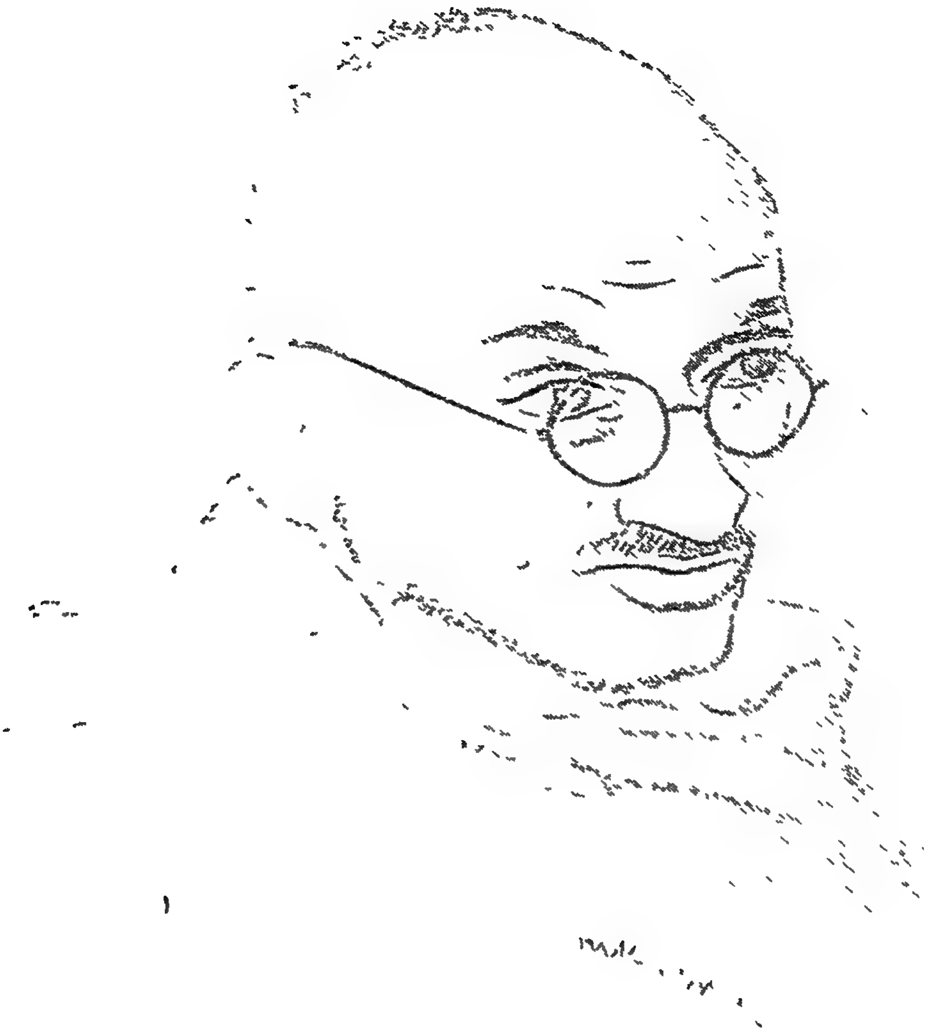
हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित, सेनायें करतीं गृह प्रयाण ।
रणभेरी बजती है तेरी, उड़ता है तेरा ध्वज निशान !

हे युग-द्रष्टा ! हे युग-स्रष्टा ! पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र ?
इस राजतंत्र के खँडहर में, उगता अभिनव भारत स्वतंत्र !



तुम कालचक्र के रक्त सने दशनो को कर से पकड़ सुदृढ ,
मानव को दानव के मुँह से, ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़ ।
पिसती कराहती जगती के प्राणों मे भरते अभयदान ;
अधमरे देखते हैं तुमको, किसने आकर यह किया त्राण !
पद सुदृढ़, सुदृढ़ कर-संपुट से तुम कालचक्र की चाल रोक ,
नित महाकाल की छाती पर, लिखते करुणा के पुण्यश्लोक ।

चित्रः श्री रविशंकर रावल के सौजन्य से } पृष्ठ—६०



गांधीजी

चीनी चित्रकार यू-पिङ्ग वोङ्ग द्वारा

(विश्ववाणी) के सौजन्य से

गांधीजी के प्रति

महाकवि 'अकबर'

मदख़ूलये गवर्मेंट अकबर अगर न होता,
उसको भी आप पाते गांधी की गोपियों में।

गांधी

श्री 'सीमाब' अकबराबादी

तसरु'फ़ सारी दुनिया के दिलों पर कर लिया तूने,
ज़माने को मोहब्बत से मुसख़्ख़र कर लिया तूने।
किया तहलील यूँ तुझको तेरी फ़ितरी लताफ़त ने,
कि आँखों से गुज़र कर रूह में घर कर लिया तूने।

तेरे क़दमों पे होते हैं निछावर सीमगूँ टुकड़े,
फ़िसूँ का याद ऐसा डेढ़ अंछर कर लिया तूने।
तमद्दुन फ़तह जिसको आज तक कर ही न सकता था,
क़िला वह सादगीये वज़ा से सर कर लिया तूने।

तेरी जय हो रही है हर तरफ़ वह कामराँ तू है,
है जितना नातवाँ उतना ही क़िस्मत का जवाँ तू है।

सिमटने को विसाते उम्र है हंगामा बरपा कर,
बढ़ा दे गरमिये महफ़िल वह सोज़े ताज़ा पैदा कर।

बदल दे वक़्त की आवाज़ से लय अपने नग़मों की,
दिलों में जज़्बये ईसारे हुर्रीयत मुहय्या कर।
झलक नाकामिये इमरोज़ की है शामे महफ़िल में,
इन्हीं आसार से पैदा फ़रोग़े सुब्ह फर्दा कर।

तजारुब अपनी सारी उम्र के सरफ़े वतन कर दे,
मुहिम्माते ग़ुलामी में जवानों को सफ़ आरा कर।
न दे अपने अज़ायम को ख़ुदारा रंगे मायूसी,
जो वादा मुल्क से तू कर चुका है उसको पूरा कर।

नवेदे दौरे आज़ादी बिदह क़ैदे दवामी रा,
दो पारा कुन ज़दस्ते ख़ेश ज़ंजीरे ग़ुलामी रा।

महात्मा

श्री अबू सईद बज़्मी एम० ए० सम्पादक 'मदीना'

ऐ सर ज़मीने हिंद तेरी बेबसी बजा,
पर ख़ाक से उठा है तेरी वह महातमा।
जिससे ग़रीब हिंद को वह हौसला मिला,
ताक़त के बुत को पाँव से जिसने कुचल दिया।

यों तो जहाँ मे और भी आये महातमा,
जिनके कमालो फ़ैज़ ने दुनिया को दी जिला।
पर, तूने जो चिराग़ जलाया जहान में,
उसके शुआये फ़ैज़ से जग जगमगा उठा।
मज़लूम को बता के अहिंसा की ताक़तें,
चिड़ियों को तूने बाज़ से जाकर लड़ा दिया।
मज़लूमियत को ज़ुल्म से बेबाक कर दिया,
सुल्तान से निडर दिले दहक़ाँ बना दिया।
तेरी फ़रोतनी में है रुईं तनों का ज़ोर,
पोशीदा ख़ामशी में तेरी आँधियों का शोर।

ताजदारे वतन-गांधी

श्री रामलाल वर्मा—संपादक रोज़ाना तेज देहली

ऐ अमीरे हुर्रियत ! और ऐ वतन के ताजदार,
तेरी हस्ती है वक़ारे हिंद की आईनावार।
शश जहत की कामरानी तेरे क़दमों पर निसार,
तेरे आगे हेच है सब ताजदारों का वक़ार।

मरहबा ! ऐ क़ौम के सालारे आज़म ! मरहबा !
मरहबा ! ऐ मुल्क के सरदारे आज़म ! मरहबा !

वलवले इनसाँ के रक़साँ हैं तेरे आग़ोश में,
ज़मज़मे आलम के ग़लताँ हैं तेरे आग़ोश में।
मसअले दुनिया के पेचाँ हैं तेरे आग़ोश में,
मुश्किलें क्या क्या पर अफशाँ हैं तेरे आग़ोश में।

तरजुमाने आदमीयत तेरा इक इक हर्फ़ है,
जिसमें इक ख़लक़त समा जाये वह तेरा ज़र्फ़ है।

तेरे दिल में गूँजता है जो अज़ल का साज़ है,
उससे पैदा पर्दा हाये ग़ैब की आवाज़ है।
तेरी अज़मत से हरेक इनसान सर अफ़राज़ है,
तेरी रफ़अत पर ज़मीं तो क्या फ़लक को नाज़ है।

हर नज़र में तेरी लुत्फ़े जल्वये सदनूर है,
तेरी चश्मे तावगीं में इक ख़ुदाई नूर है।

सादगी के पैरहन में ज़ीनते महफ़िल है तू,
मारफ़त की अंजुमन में रौनक़े कामिल है तू।
कारगाहे दह्र में इक मदरके आमिल है तू,
मंज़िले सद राह में इक रहबरे आक़िल है तू।

तू हवाओ हिर्स की आलायशों से पाक है,
तेरे आगे दौलते दुनिया भी मुश्ते ख़ाक है।

बेज़बानों की ज़बाँ, मज़लूम की आवाज़ है,
बेबसों और बेकसों का महरमो हमराज़ है।
कुश्तगाने गुर्बतो अफ़लास का दमसाज़ है,
तू जफ़ाकारों के आगे भी वफ़ापर्दाज़ है।

दिलफ़िसुर्दों के लिये तू जोश का पैग़ाम है,
ग़ाफ़िलों के वास्ते तू होश का पैग़ाम है।

हाथ में तेरे मये हुब्बे वतन का जाम है,
तुझसे बज़्मे क़ौम में पीरेमुग़ाँ का नाम है।
हिंद के इस मैकदे में तेरी बख़्शिश आम है,
कौन बादाकश है जो महरूम तिश्ना काम है!

साक़ी ओ मैख़्वार दोनों हश्र तक जीते रहें,
जाम तू देता रहे हम शौक़ से पीते रहें।

है अहिंसा दीन तेरा, सच तेरा ईमान है,
रूह आज़ादी है तेरी, उंस तेरी जान है।
कजरवी और कज ख़याली की तुझे बस आन है,
सीधी सीधी चाल में तेरे चलन की शान है।

बरबरीयत, शैतनत, सफ़्फ़ाकी ओ ग़ारतगरी,
तूने इन ऐबों से इनसाँ की तबीयत फेर दी।

तूने बतलाया सियासत और सिदाक़त एक है,
तूने दिखलाया कि ताक़त और शराफ़त एक है।
तूने समझाया जहाने रंजोराहत एक है,
तूने परचाया कि बस राहे तरीक़त एक है।

तेरी तलक़ीं है कि मुल्को क़ौम की ख़िदमत करो,
बहरे आज़ादी जियो और बहरे आज़ादी मरो।

गांधीजी

श्री गोपीनाथ 'अमन

तुझमे सुकून वह कि हिमालय की शान है,
तबए रवाँ में मौजए गंगा की आन है।
आँखों में उपनिषद के सहीफे की जान है,
गीता का फ़लसफ़ा है कि जो तेरा ध्यान है।
सीने में तेरे मारफ़ते हक़ का राज़ है,
हिन्दोस्तान को तेरी हस्ती पे नाज़ है।

तुझपर हूजूमे यासो अलम का असर नहीं,
दुनिया अगर ख़िलाफ़ हो ग़म का असर नहीं।
ग़ैरो के जौरो ज़ुल्मो सितम का असर नहीं,
वह आन है कि तेग़े दोदम का असर नहीं।
डरने से क्या ग़रज़ तुझे तूफान हों हज़ार,
मरने का ख़ौफ़ क्या उन्हें जो क़ौम पर निसार।

दुरवेश ऐसे और भी गुज़रे जहान में,
था सहर जिनकी आँख में जादू ज़बान मे।
साबित क़दम रहे जो हर एक इमतिहान में,
अकसर मिसाले मिलती हैं हिन्दोस्तान में।
लेकिन सियासयात से ईमान का यह मेल,
तेरे लिये बजा था कि दुश्वार है यह खेल।

जोशे अलम के साथ मोहब्बत सिखाई है,
दुश्मन से भी सुलूक, ये उलफ़त सिखाई है।
है बेनियाज़े तेग़ वह हिम्मत सिखाई है,
तीरो तुफ़गं हेच वह जुरअत सिखाई है।
अन्दाज़े रम्ज़ पर तेरे कहते हैं तबअबीं,
"लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।"

हाँ यह भी एक जंग है और लाजवाब है,
यक सब्र जिसमें लाख सितम का जवाब है।
कहने को कहने वाले कहें क्या जवाब है,
यह वह जवाब है कि अनोखा जवाब है।

जिनकी निगाह उलझी हुई आबोगिल मे है,
क्या जाने वह कि जंग का मरकज़ तो दिल में है।

तेरे ही दम से अहले वतन की बँधी है आस,
जब देखते हैं तुझको तो रहते नहीं उदास।
क्यों दिल में दख़ले रंज हो क्यो हो असीरे यास!
सब कुछ है अपने पास जो गांधी है अपने पास।
दुनियाँ में कौन ऐसे रतन का लगाए मोल!
बाला है तेरी ज़ात से हिन्दोस्तां का बोल।

है तेरा जन्म दिन तो हरएक अहले दिल है शाद,
वाबस्ता तेरी ज़ात से है क़ौम का इबाद।
पंजाह साल और जिए सबकी है मुराद,
हर लब पे यह सदा है कि उमरत दराज़ बाद।
अब आज हिन्द में हमें जौहर दिखाए तू,
उलफ़त का सिक्का सारे जहाँ पर बिठाए तू।

बादशाहे वतन

श्री "नसीम" अमरोहवी

वतन के ग़रीबों का ग़म खानेवाला,
ख़तरनाक रस्तों में बढ़ जानेवाला,
तड़पकर सितमगर को तड़पानेवाला,
अहिंसा की ताक़त का दिखलानेवाला,
सिपाही वो कमज़ोर हिंदोस्तॉ का,
लरज़ता है दिल जिससे हर हुक्मरॉ का।

वो आज़ादिये दिल का सच्चा मुनादी,
ग़ुलामी का दुश्मन, असीरी का आदी,
सजाये हुये है बदन पर जो खादी,
लुभाती है वह उसकी पोशाक सादी,
ये शौकत है इस सादगी की अदा में,
कि 'मोती' 'जवाहर' हैं इसकी सभा में।

दिलों पर न क्योंकर करे हुक्मरानी,
कि हुब्बुलवतन उसकी है राजधानी,
पहाड़ उसकी हिम्मत के आगे है पानी,
बुढ़ापे पे उसके निछावर जवानी,
जिन्हें ख़ौफ़े तूफ़ाँ न, आँधी की दहशत,
उन्हें खाये जाती है गाँधी की दहशत।

जो चाहे दिलेज़ार तू ज़िंदगानी,
जो है शौक़े आज़ादिए जाविदानी,
जो तेरी रगों में है ख़ूँ की रवानी,
जो कहता है अपने को हिंदोस्तानी,
जो आज़ाद भारत की तुझको लगन है,
तो गाँधी का मसलक भी हुब्बेवतन है।

अनोखा है उसकी तरक़्क़ी का ज़ीना,
कि मरने को अपने समझता है जीना,
सियासत का उसकी निराला क़रीना,
जो हँस दे, तो दुश्मन को आये पसीना,
क़यामत हो बरपा जो आँसू बहा दे,
जो सोने को ताने, तो हलचल मचा दे।

वो भारत के हर मर्दोज़न का दुलारा,
ग़रीबों फ़क़ीरो की आँखो का तारा,
हमारी ज़मीं का चमकता सितारा,
वतन की है आज़ादियों का सहारा,
ज़माने में ऐसे हैं कम नेक इनसाँ,
जो धर्म उसका पूछो तो है एक इनसाँ।

फ़क़ीरी में यों उसका सिक्का रवाँ है,
कि हुस्ने सियासत का क़ायल जहाँ है,
इरादा जो पीरी में उसका जवाँ है,
न फ़ौजें न लश्कर मगर हुक्मराँ है,
फ़िदाए वतन, ख़ैर ख्वाहे वतन है,
वो बेताज का बादशाहे वतन है।

गाँधी

श्री मेहरलाल "ज़िया" फ़तेहाबादी, एम०, ए०

दामने मशरिक़ में रोशन जिस तरह है आफ़ताब,
सुबह दम गुलशन में जैसे मुसकराता है गुलाब।
कोह पर जिस तरह रक़्साँ है शुआओं का शबाब,
जैसे नग़मारेज़ रंगीं आबशारों का रबाब।

एशिया की अंजुमन में कैफ़ बरसाता है तू,
सोने वालों की रगों में ख़ून दौड़ाता है तू।

बेसरूरो कैफ है पैमानये हिंदोस्ताँ,
तिश्ना लब हैं साक़िओ मैख़ानये हिंदोस्ताँ,
बे दरो दीवार है काशानये हिंदोस्ताँ,
अब पुराना हो चुका अफ़सानये हिंदोस्ताँ।

अहले मशरिक़ की उमीदें तुझ [illegible] ता हुईं,
अहेदे माज़ी की तबस्सुम पाशियाँ रफ़्ता हुईं।

सोने वालों को जगाया है तेरे पैग़ाम ने,
है नया मुस्तक़बिले रंगीं नज़र के सामने।
जामए नूरीं पहिन रक्खा है सुबहो शाम ने,
कर दिया है मस्त सबको बादए गुलफ़ाम ने।

यह तेरी साक़ीगरी का मोजज़ा अदना सा है,
बारिशे अबरे करम का हौसला अदना सा है।

ताज है मशरिक़ तो उसके ताज का मोती है तू,
जिसपे नाज़ाँ हैं शहे ख़ावर वही हस्ती है तू।
रूह की तसकीं है तू राहत दिलो जाँ की है तू,
ज़ीनते बज़्मे चमन, फूलों की रानाई है तू।

आम होती जा रही है कैफ़े ईजादी तेरी,
मंज़िले तकमील पर पहुँची है आज़ादी तेरी।

गांधीजी

श्री सलीम नातक़ी सेक्रेटरी जामए अदबिया कानपुर

तारीख़ के वरक़ पर दोमाने हर नज़र पर,
बिखरे हुये पड़े हैं हिन्दोस्ताँ के जौहर।
अपनी हवा में उड़कर ऐसे भरे तरारे,
ख़ाके वतन के ज़र्रे तारों में जगमगाये।
दुनियाए नौ का गाँधी आया पयाम लेकर,
आज़ादिये वतन की हर सुबह शाम लेकर।

पस्ती में भी बलन्दी का मरतबा दिखाया,
ऊँची ज़मीं बनाई, नीचा फ़लक बनाया।
नज़दीको दूर यकसाँ नज़्रें हैं कार फ़रमा,
क्या क्या बदल रहा है नक़्शा दिमाग़ो दिल का।
अफ़सानए सलासिल अहरारियों में रहकर,
आज़ादियों के चरचे ज़िन्दानियों में रहकर,

अफ़कार की भी कसरत रूहानियत भी ग़ालिब,
दिल मायले सियासत उक़बा की जान तालिब,
दरया से बढ़के देखी बिजली से बढ़के पाई,
तहरीर की रवानी तक़रीर की सफाई।
इनसाँ तलाशे हक़ में इतना तो ख़ुदनिगर हो,
'मिस्टर' महात्मा की सूरत में जल्वागर हो।

कोताह दामनी में इक शाने बेनियाज़ी,
महजूब सादगी है मलबूस इम्तियाज़ी।
बरहम किया दिलों को तकली की गर्दिशों ने,
सोतों को भी जगाया चरख़े की शोरिशों ने।
तक़सीम की मुहब्बत हर जुज़्वे ज़िन्दगी पर,
आँखों को नूर देकर दिल को सुरूर देकर,

मस्ती भरी नज़र का दिल को पयाम आया,
हुशियार बादा नोशो! गर्दिश में जाम आया।
बेसाख़्ता लबों पर आया हुआ तबस्सुम,
मीठा सा इक तकल्लुम हल्का सा इक तरन्नुम।
गर्दिश ही लेके आई आख़िर नवैदे इशरत,
आज़ाद हो रही है हिन्दोस्ताँ कि क़िसमत।

महात्मा गांधी

श्री व्रजकृष्ण गंजूर 'फ़िदा' फ़ैज़ाबादी

उठा तू बिस्तरे ग़म से कि दुनिया को उठाना था,
लड़ाई बन्द करनी थी जहालत को मिटाना था,
तुझे तो मुल्क की फिर कूवतों को आज़माना था,
करिश्मा अहले दुनिया को नया कोई दिखाना था,

तू निकला जेल से गोया कि हंगामे असल आया,
घटाएँ आसमाँ से हट गईं, सूरज निकल आया।

तू उठकर यूँ चला ज़िन्दाँ से बाहाले परेशानी,
कि जैसे बूए गुल निकले गरेबाँ चाक दीवानी,
जो देखा तिशना लब तुझको तो पत्थर हो गए पानी,
बिछाया क़ौम ने आँखों का अपनी फ़र्शे नूरानी,

सितम बरपा किया गुलशन में नरगिस के इशारों ने,
नसीमे सुबह इठलाई, क़बा चूमी बहारों ने।

क़यामत की बलाएँ हो रही थीं हिन्द पर नाज़िल,
नज़र आता था गिरदाबे फ़ना में डूबता साहिल,
वतन का क़ाफ़ला गुमराह था और दूर थी मंज़िल,
निगाहों से टपकना चाहता था जब कि ख़ूने दिल,

तेरी एक जुम्बिशे लब ने फ़ना कर दी परेशानी,
मिटाकर ज़ुल्मते शब को दिखाई सुबह नूरानी।

खुदारा हिन्दवालो ख़्वाब से बेदार हो जाओ,
बहुत कुछ सो चुके अब तो ज़रा हुशियार हो जाओ,
ज़माने की रविश देखो उठो तैयार हो जाओ,
बरंगे मौज इस बहरे फ़ना से पार हो जाओ,

तुम्हारे हर क़दम पर मुश्किलें आसान हो जायें,
तमन्नायें वतन के वास्ते क़ुरबान हो जायें।

महात्मा गांधी

श्री 'बिस्मिल' इलाहाबादी

सुना रहा हूँ तुम्हें दास्तान गाँधी की,
ज़माने भर से निराली है शान गाँधी की।
रहे रहे न रहे इसमें जान गाँधी की,
न रुक सकी न रुकेगी ज़बान गाँधी की।

यही सबब है जो वह दिल से सबको प्यारा है,
वतन का अपने चमकता हुआ सितारा है।

जो दिल में याद है तो लब पे नाम उसका है,
जो है तो ज़िक्र फ़क़त सुबहो शाम उसका है।
भलाई सबकी हो जिससे वो काम उसका है,
जहाँ भी जाओ वहीं एहतराम उसका है।

उठाए सर को कोई क्या, उठा नहीं सकता,
मुक़ाबिले के लिए आगे आ नही सकता।

किसी से उसको मुहब्बत किसी से उलफत है,
किसी को उसकी है उसको किसी की हसरत है।
वफाओ लुत्फो तराहुम की ख़ास आदत है,
ग़रज़ करम है, मदारत, है और इनायत है,

किसी को देख ही सकता नहीं है मुशकिल में,
ये बात क्यों है कि रखता है दर्द वह दिल में।

जफ़ाशआर से होता है बरसरे पैकार,
न पास तोप न गोला न क़ब्ज़े में तलवार।
ज़माना ताबए इरशाद हुक्म पर तैयार,
वह पाक शक्ल से पैदा हैं जोश के आसार।

किसी ख्याल से चरख़े के बल पे लड़ता है,
खडी है फ़ौज यह तनहा मगर अकड़ता है।

उसी को घेरे अमीरो ग़रीब रहते हैं,
नदीमो मोनिसो यारो हबीब रहते हैं।
अदब के साथ अदब से अदीब रहते हैं,
नसीबावर हैं बड़े ख़ुशनसीब रहते हैं।

कोई बताए तो यों देखभाल किसकी है,
जो उससे बात करे यह मजाल किसकी है।

रिफाहे आम से ख़ावंत है और मतलब है,
अनोखी बात निराली रविश नया ढब है।
यही ख़याल था पहले यही ख़याल अब है,
फ़क़त है दीन यही बस यही तो मज़हब है।

अगर बजा है तो 'बिस्मिल' की अर्ज़ भी सुन लो,
चमन है साम्ने दो चार फूल तुम चुन लो।

जन्मदिन पर मुबारकबाद

श्री—मोहनलाल 'क़मर' अम्बाला

दिल क़ौम का इक घर है तो महमान है गाँधी,
बे ताज मेरे हिंद का सुलतान है गाँधी।
माँगी थी हिमालय पे दुआ सुबहे अज़ल ने,
इस सुबहे कोहन का नया अरमान है गाँधी।

भारत है अगर फूल तो यह उसकी है ख़ुश्बू,
है क़ौम अगर जिस्म तो फिर जान है गाँधी।
ऐ अहले वतन कम नहीं कुछ शान हमारी,
अफ़सानए तहज़ीब का उनवान है गाँधी।

आ, इसके जनम दिन पे नए गीत सुनायें,
भारत की ग़ुलामों का निगहबान है गाँधी।
है इसकी फ़क़ीरी में भी इक शाने अमीरी,
कहने को 'क़मर' बेसरो सामान है गाँधी।

महात्मा गाँधी

श्री मनोहरलाल "शबनम"

ऐ कि तू हिंद का सरताज करमचंद गाँधी !
तेरे सर दुनिया ने दस्तारे फज़ीलत बाँधी,
आज संसार में आई है ग़ज़ब की आँधी,
किश्ती मँझधार में है और है तू ही माँझी ।

हाथ में सत्य अहिंसा का है पतवार तेरे,
ज़ुल्म की लहरें क़दम चूमेंगी हर बार तेरे ।

साबिक़ा हिंद की रफ़अत की निशानी तू है,
देश के दुखियों की हाँ, सची कहानी तू है,
हम मे जो आब है बस उसकी रवानी तू है,
इस बुढ़ापे में भी भारत की जवानी तू है ।

ख्वाबे ग़फ़लत में पड़ा देश, जगाया तू ने,
हमको सूराज का है पाठ पढ़ाया तू ने ।

राज़ आज़ादी का मुज़मिर तेरी हर बात में है,
क़ौम की फ़िक्र तुझे दिन में है और रात में है,
देश की हानि बड़ी समझी छुवाछात में है,
परत अक़वाम उठाना तेरी ख़िदमात में है ।

गाँववालों को सही राह बताई तूने,
दस्तकारी की जड़ें फिर से जमाई तू ने ।

उम्र लम्बी हो तेरी क़ौम के सच्चे हादी,
हुक्म से तेरे चले चर्ख़े, बनाई खादी,
राह आसान जो थी, तूने वही बतलादी,
रहनुमाई में तेरी पायेंगे हम आज़ादी ।

तबा वालों को दिखाता रहे यों ही जौहर,
ता अबद तेरा रहे साया हमारे सिर पर ।

मेरा गांधी

श्री अवधकिशोरप्रसाद "कुश्ता"

वतन के वास्ते धूनी रमाकर बैठनेवाला,
ज़माने के लिये ख़ुद को मिटाकर बैठनेवाला,
अज़ीअत पर अज़ीअत नित उठाकर बैठनेवाला,
इरादों पर मगर आसन जमाकर बैठनेवाला,

सुदर्शन चक्र सा जब अपना चरखा वो चलाता है,
ज़माना क्या, ज़मी क्या, चर्ख़ भी चक्कर में आता है।

इसी ने मुल्क मे सोराज का डंका बजाया है,
ज़माने की नज़र में देश का रुतबा बढ़ाया है,
अहिंसक सत्य ग्राही हिन्द बासी को बनाया है,
वतन की आबरू पर क़ौम को मरना सिखाया है।

है कहता "बुज़दिली है तोप से गोली से डर जाना,
वतन के वास्ते ज़िन्दादिली है हँसते मर जाना"।

ज़ईफ़ी मे भी रखता है कलेजा नौजवानो का,
तने लाग़र पे भी ज़ोरावरों का बस नहीं चलता,
वो बे तलवार के तलवारवालों से है यों लड़ता,
ज़मीनों आसमाँ चक्कर में हैं गर्दिश में है दुनिया।

अनोखा लड़नेवाला है निराला मिलनेवाला है,
मुक़ाबिल में न जिसके कोई गोरा है न काला है।

वतन उजड़ा हुआ आबाद करके चैन पायेगा,
हरेक नाशाद को वो शाद करके चैन पायेगा,
चमन से दाफये सैयाद करके चैन पायेगा,
यक़ीनन हिन्द को आज़ाद करके चैन पायेगा।

सितारा हिन्द का ताविन्दा कर लेगा तो दम लेगा,
वो गांधी हमको 'कुश्ता' ज़िन्दा कर लेगा तो दम लेगा।

महात्मा गांधी की वर्षगांठ

श्री जगेश्वर प्रसाद 'ख़लिश', गया

देश पर ऐसी ग़ुलामी की घटा छाई थी,
टेर आज़ादी की नक़्क़ारए रुस्वाई थी,
थी ज़बां मुँह में, कहाँ ताक़ते गोयाई थी,
आँख थी, आँख में लेकिन नहीं बीनाई थी,

सूझता था लबे साहिल न किनारा अपना,
चाँद आता था नज़र हमको न तारा अपना।

हँसके रोती हुई हस्ती को हँसाया तू ने,
रोके हँसती हुई दुनिया को रुलाया तू ने,
बादए हुब्बे वतन सबको पिलाया तू ने,
देश भक्ती का नया पाठ पढ़ाया तू ने,

रोज़ बेमौत मरा करते हैं डरने वाले,
मरके भी मरते नहीं देश पे मरने वाले।

जाये ख़ाली न कभी हाथ से वह वार है तू,
काट जिसकी न मिले कोई, वह तलवार है तू,
सर झुकाये हुये दुनिया है वह सरदार है तू,
जिसमें सब लोग समा जायें वह संसार है तू,

कोई ऊँचा नज़र आता है न नीचा तुझको,
सेज काँटों का है फूलों का ग़लीचा तुझको।

शान झुक जाये तेरे सामने वह शान है तू,
देश मुर्दा है, मगर जीती हुई जान है तू,
तुझपे क़ुर्बान ख़ुदाई है वह इन्सान है तू,
अहले ईमान ये कहते हैं कि ईमान है तू,

जीत तेरी हो, तेरा राज हो, लय हो तेरी,
तू जिये, देश हो आज़ाद, विजय हो तेरी।

गांधी

श्री साग़र निज़ामी

तूने मग़रिब पर नुमायाँ कर दिया हक़्क़े-वतन,
बाग़बाँ से खोलकर कह दी हदीसें—या—समन।

कामगारे हुर्रियत अय शहर यारे हुर्रियत,
अय रईसे हुर्रियत अय ताजदारे हुर्रियत।

हिन्दियों के जज़्बये क़ौमी की इक सूरत है तू,
चलता फिरता परचमे—रंगीने हुर्रीयत है तू।

रख दिया क़ुदरत ने कान्धे पर तेरे बारे-वतन,
कर लिया तसलीम तुझको सबने सरदारे-वतन।

अय दिमाग़े-ज़ुल्म पर इक ज़र्बे कारीये शदीद,
मुस्तबद-दुनिया के सर पर ज़ाला-बारीये-शदीद।

किस क़दर आज़ाद है कितना बहादुर दिल है तू,
ख़ुद सरों में साइ ये आज़ादिये कामिल है तू।

महफ़िले-अग़ियार तेरे ज़िक्र से आबाद है,
बज़्मे दुश्मन मे भी तू आज़ादसा आज़ाद है।

ख़ूब वाक़िफ़ इस हक़ीक़त से हैं दीवाने तेरे,
बादये-फ़ितरत से हैं लबरेज़ पैमाने तेरे।

वह तअस्सुर है तेरे इक नारये आज़ाद में,
ज़लज़ला आया हुआ है क़स्रे-इस्तब्दाद मे।

देखिये मशरिक़ को क्या मिलता है मग़रिब से ख़िराज,
कोई ज़ंजीरे ग़ुलामी या कोई काँटों का ताज।



गांधी महाराज

चिरकालेर हातकाडि जे ,
धूलाय खसे पड़ल निजे ,
लागल भाले गान्धी राजेर छाप ।

—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

पृष्ठ—७७

गान्धि महाराज

विश्वकवि श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

गान्धि महाराजेर शिष्य,
केउ बा धनी केऊ वा निःस्व,
एक जायगाय आछे मोदेर मिल;
गरिब मेरे भराइ ने पेट,
धनीर काछे हइ ने तो हेंट,
आतंके मुख हय ना कभु नील।
षण्डा जखन आसे तेड़े,
ऊँचिये घुसि डाण्डा नेड़े,
आमरा हेसे बलि जोयानटाके;
ऐ जे तोमार चोख-रांगानो
खोका बाबूर घुम-भांगानो,
भय ना पेले भय देखावे काके।
सिधे भाषाय बलि कथा,
स्वच्छ ताहार सरलता,
डिप्लमैसिर नाइको असुविधे;
गारदखानार आइनटाके,
खुँजते हय ना कथार पाके,
जेलेर द्वारे जाय से निये सिधे।
दले दले हरिण बाड़ि,
चलल् जारा गृह छाड़ि,
घूचल तादेर अपमानेर शाप;
चिर कालेर हातकाड़िजे,
धलाय खसे पड़ल निजे,
लागलभाले गान्धी राजेर छाप।

गान्धिजी

श्री सत्येन्द्रनाथ दत्त

दिने दीप ज्वालि' ओरे ओ खेयाली ! कि लिखिस् हिजिबिजि !
नगरेर पथे रोल ओठे शोन् 'गान्धिजी !' 'गान्धिजी !'
वातायने द्याख किसेर किरण ! नव ज्योतिष्क जागे
जन-समुद्रे ओठे ढेउ, कोन चन्द्रेर अनुरागे !
जगन्नाथेर रथेर सारथि के रे ओ निशान-धारी,
पथ चाय कार कातारे कातार उत्सुक नरनारी !

कृषाणेर वेशे केओ कृश-तनु—कृशानु-पुण्यछवि,—
जगतेर यागे सत्याग्रहे ढालिछे प्राणेर हवि !
कौंसुलि-कुलि करे कोलाकुलि कार से पताका घेरि',
कार मृदुवाणी छापाइया ओठे गर्व्वी गोगार भेरी !
क्रोड़ टाका कार भिक्षा-झुलिते, अनरूप् अन्नदान,
आगुलिया कारे फेरे कोटि-कोटि हिन्दु-मुसलमान !
आत्मार बले के पशु-बलेर मगजे डाकाय झिं-झिं
करे ओखर्व्व सर्व्वपूज्य !—'गान्धिजी !' 'गान्धिजी !'

महाजीवनेर छन्दे ये-जन भरिल कुलिरओ हिया,
धनी-निर्धने एक क'रे निल प्रेमेर तिलक दिया ;
आचरण यार कोटि कवितार निर्झर मनोरम,
कर्म्मे ये महाकाव्य मूर्त्त, चरिते ये अनुपम ;
देश-भाई यार गरीब बलिया सकल विलास छाड़ि'
'गड़ा'ये परे गो, फेरे खालि पाये, शोय कम्बल पाड़ि' ;
तपस्या यार देशात्मबोध छोटर ओ छोटर साथे,
दिन-मजुरेर खोराके ये खुशी तीन आना पयसाते ;
स्वेच्छाय निये दैन्य ये, काछे टानिल गरीब लोके,
भालो ये बासिल लक्ष कविर धन अनुभूति-योगे,
अहिंसा यार परम साधना हिंसा सेवित वासि,
आसन याहार बुद्धेर कोले टलष्टेयर पाशे,

दीनतम जने ये शिखाय गूढ़ आत्मार मर्य्यादा,
चित्तेर बले लङ्घिया चले पाहाड़-प्रमाण बाधा,
बीर - वैष्णव - विष्णु - तेजेते उजल ये-जन भिजि'
ओइ सेइ लोक भारत-पुलक, ओइ सेइ गान्धिजी !

काफ्रिर भिटा आफ्रिका - भूमे प्रिटोरिया - नगरीते,
बारे - बारे क्लेश सहिल ये धीर स्वदेशवासीर प्रीते,
उपनिवेशेर अपहुजुरेर ना मानि' जिजिया - कर,
मुदि मा कालिरे आत्मार बले शिखाल ये निर्भर,
बारण यादेर ओठा फुटपाये तादेरि स्वजाति ह'ये,
फुट पाये हाँटा पण ये करिल गोरार चाबुक स'ये,
मार खेये पथे मूर्च्छा गियेछे, पण ये छाड़ेनि तबु,
बारे बारे यारे जरिमाना क'रे हार मेने गोरा प्रभु
रद् क'रे बद् आइन चरमे रेहाइ पेयेछे तवे।
धीरताय वीर सेवा पृथिवीर, नाइ जोड़ा नाइ भवे !

प्लेगेर प्लावने कुलि पल्लीते निल ये सेवा-व्रत,
बुयार लड़ाइये जुहयुर युद्धे जखमी बहिल कत,
कौंसुलि-कुलि-मुदि-महाजने पल्टन ग'ड़े निये
उपनिवेशीर कथा-विश्वासे खाटिल ये प्राण दिये,
काजेर बेलाय इंगरेज यारे मेने छिल काजी ब'ले,
काज फुराइले पाजी ह'ल हाय वर्ण-बाधार गोले !
कथा राखिल ना यवे हीन-मना कथार कासानेरा,
कायेम राखिल बकेया युगेर जिजिया—क्षोभेर डेरा,
तखन ये-जन कुरिल धातुते वैष्णवी सेना सृजि'
धैर्य्य-वीर्य्ये मोहिल जगत्, एइ सेइ गान्धिजी !

सागरेर पारे स्वदेशेर मान राखिल ये प्राण पणे,
गोरा-चाषा-देशे निग्रह सहि' निग्रो-कुलेर सने,
विदेशे स्वदेशी बटेर चाराय रोपिया ये निज-हाथे
विश्वास-वारि सेचने बाँचाल वाओबाव - आओताते,

भारत प्रजारे चोरेर मतन थानाय थानाय गिये
नाम लेखाइते हबे शुने, हाय आङ्गुलेर टिप दिये,
ये विधि अविधि तारे निर्म्मूल करिबारे विधि ठेले
देश आत्माय अपमान ह'ते बाँचाते ये गेल जेले,
गेल चले जेले ज्वालाइया रेखे पुण्य-ज्योतिर ज्वाला
भय तरणेर क्षुधा-त्वरणेर उदाहरणेर माला!
चाय देशी कुलि देशी कुठियाल ना शुने काहारो माना,
देखिते देखिते उठिल भरिया यत छिल जेल खाना,
मर्द्द-मेयेते चलिल कयेदे दले दले अगणन,
स्वेच्छाय धनी ह'ल देउलिया, तबु छाड़िल ना पण!
क्षुधित शिशुर वक्षे चापिया देश प्रेमी कुलि—मेये
इंगिते यार कष्टेर कारा वरण करेछे धेये,
दीक्षाय यार निरक्षरेओ साँतारे दुःख-नदी,
बुके आँकड़िया सद्य लब्ध मर्यादा - सम्बोधि!

तामिल-युवक मरिया अमर ये परश-मणि छुँय,
चिरपदानत माथा तोले पार मन्त्र-गर्भ फुँये,
पुलके पोलक मिताालि करिल पार चारित्र्य-गुणे,
भारते विलाते आगुन ज्वलिल पार से दीपक शुने,
बाँधिल याहारे प्रीति बन्धने विदेशीर ओ राखी-सूता—
भेट पारे दिल प्रेमी अ्ए'न्डू ज अयाचित बन्धुता,
आपनार जन बलि' पारे जाने ट्रान्सवाल ह'ते फिजि,
जीर्ण खाँचार गरुड़ महान्—एइ सेइ गान्धिजी!

एशिया ये नम कुलिरइ आलय प्रमाण करिल येवा,
कुलिते जागाये महामानवता नर-नारायण-सेवा,—
धैर्य्य ओ प्रेम शिखाल ये सबे काय-मने ह'ते खाँटि,
सत्य पालिते खेल ये सरल पाठान चेलार लाठि,
विश्वधातार वहे ये पाताका उजल जिनिया हेम,
"सत्य" याहार एक-पिठे लेखा आर-पिठे "जीवे प्रेम",
सत्याग्रहे दहिया सहिया हयेछे ये खाँटि सोना,
देशेर सेवार साथे चले यार सत्येर आराधना,

अयुतकाजेर माझारे ये पारे वसिते मौन धरि'
शवरमतीर वरणीय तीरे ध्यानेर आसन करि',
अर्ज्जन यार ब्रह्मचर्य्य तपेर वृद्धि काजे,
उज्ज्वल यार प्राणेर प्रदीप तर्क-आँधार-माझे,
मेथरेर मेये कुड़ाये ये पोषे, अशुचि न माने किछु,
चाकरेर सेवा ना लय किछुते, नरे से ये करा नीचु,
क्षुद्रे महते ये देखेछे मरि आत्मार चिर-ज्योति;
दास ह'ते, दास राखिते ये माने चित्तेर अधोगति,
प्रेममंथ कोषे बसे ये देशेर, शक्ति बीजेर बीजी,
अन्तरे बैकुण्ठ याहार,—एइ सेइ गान्धिजी!

दर्पीतापन भारत-पावन एइ से वेरोर छेले,
शुचि महिमाय द्विजकुले म्लान करिल ये अवहेले—
कुण्ठा-रहित वैकुण्ठेर ज्योति जागे जार मने,
साजा निते नय कुण्ठित कर्त्तव्येर आवाहने,
नीलकर आर चाकर-चक्रे कुलिर कान्ना शुनि'
फेरे कामरूपे चम्पारण्ये अश्रुमुकुता चुनि',
कायरा-आकाले शासनेरकले शेखाले ये मर्म्मिता,
निजे भूँकि निया खाजना रुखियारायतेर चिरमिता;
राजा-गिरि नय केवलि हुकुम केवलि डिक्रिजारि,
हाल गोरु क्रोक आकालेर ओ काले करिते मालगुजारि,
ए ये अनाचार एर ठाँइ आर नाइ नाइ भूभारते,
राजाय प्रजाय एकथा प्रथम बुझाल ये विधिमते,
सातशत गाँये बाजारे अमोघ सत्याग्रह भेरी,
प्रजार नालिश बोझाते राजारे ह'ल नाको पार देरी,
अभय व्रतेर व्रती ये, सकल शङ्का ये-जन हरे,
विश्वप्रेमेर पञ्चप्रदीपे कुलिर आरति करे;
आदर्श यार सुधन्वा आर प्रह्लाद महीयान,
पितार ओ हुकुमे करे नाइ यारा आत्मार अपमान,
पूजनीया यार वैष्णवी मीरा चितोरेर वीणापाणि,—
राजाओ हुकुमे सत्येर पूजा छाड़ेनि ये राजरानी;

जयमाले यार सारा दुनियार सत्यप्रेमीर मेल,
ग्रीसेर शहीद् सक्रेटिस् आर इहुदीर दानियेल,
यार आलापने बन्दी मनेर बन्धन हय दूर,
तार आगमनी गाओ कवि आज, गाओ गान्धिर जय।

एशियार हक्, हारुणेर, स्मृति, इसलाम्-सन्मान,—
मर्म्म वीणार तीन तारे यार पीड़िया कौंदाय प्राण,
दराज बुकेत सारा एशियार व्यथा स्पन्द वहि,
सब हिन्दुर हये' ये, खोलसा खेलाफते दिल सहि,
चित्त बलर चित्र देखाये पेले ये पूर्ण साड़ा,
सत्याग्रह-छन्दे बान्धिल झडेरे छन्द-छाड़ा,
प्रीतिर राखी ये बेंधे दिल दुहुँ हिन्दु-मुसलमाने,
पञ्चनदर जालियाँर ज्वाला सदा जागे चार प्राणे,
भारत-जनेर प्राण-हरणेर हरिवारे अधिकार,
नैयुज्येर हल सेनापति य रथी दुर्निवार,
विधातार देओया धर्म्मा रोषेर तलोवार चार हाते,
सोना हये गेछे सत्याग्रह - रसायन सम्पाते;
घोषि' स्वातन्त्र्य शासन - यन्त्र आमला तन्त्र सह
अभय-मन्त्र दिये देशे देशे फिरिछे ये अहरह;
महारानी यार शकति-आधार, अनुदार कभु नहे,
लुकानो छपानो किछु नाइ थार, हाटेर माझे ये कहे—
"स्वराजप्रयासी जागो देशवासी, स्वराज स्थापिते हबे,
त्यागेर मूल्ये किनिव से धन, कायम कारिव तबे।

या' किछु स्ववशे सेइ तो स्वराज, सेइ तो सुखेर खनि,
आपनार काज आपनि ये करे,—पेयछे स्वराज गणि;
स्वपाके स्वराज, स्वराज-स्वकरे निजेर बसन बोना,
स्वराज—स्वदेशी शिल्प-पोषणे स्वाधिकारे आनागोना,
स्वराज—आपन भाषा—आलापने, स्वराज-स्वरीते चला,
स्वराज—या' किछु अशुभ ताहारे निजेर दु'पाये दला;

स्वराज—स्वयं भूल करे तारे शोधरानो निजहाते,
स्वराज—प्राणीर प्राणे अधिकार विधातार दुनियाते।

सेइ अधिकारे धाय यारा हात प्रेष्टिज-अञ्ज हाते,—
स्वराज—से नैपुण्य तेमला आमलातन्त्र साथे।
हाते हतियारे शिक्षा स्वराज, स्वप्नकाशेर पथे,
स्वराज—से निज विचार निजेरि स्वदेशी पञ्चायते।
चारित्र्यबले आने ये दखले एइ स्वराजेर माला,
कर-गत तार सारा दुनियार सब दौलतशाला,
हातेरी नागोल आछे एर चावी, आयास ये करे लभे,
अक्षम भावे आपनारे भूल कोरी ना।" कहे ये सबे;
आत्म-अविश्वासेर ये अरि, मूर्त्त ये प्रत्यय,
पराजय आजो जानेनि ये, सेइ गान्धिर गाह जय।
हेस ना हेस ना ह्रस्वदृष्टि, हेस ना विज्ञ हासि,
मूर्त्त तपेरे शेख विश्वास करिते अविश्वासी,
अविश्वसेर विष-विश्वास हय ये प्राणेर क्षय,
विश्वासे रूह विश्व-विजय, विद्रूपे कभ नय।
व्यङ्गमा! तोर व्यङ्ग एवं वङ्ग वाखान राख्,
गुञ्जने शोन् भरि' भरि' ओठे भारतेर मौचाक,
भीमरुलओ ह'ल मौमाछि आज यार पुन्येर वले,
तार कथा किछु जानिसतो बल्, मन दोले कुतहले,
जानिस् तो बल्, मोहनदासेर महाद्दुषमन् गणि,
कि फिकिर ओहे सुरा-राक्षसी पूतना बोतल्-स्तनी,
बोतल काड़िया मातालेर, गेल कोन् तेलि कारागरे,
कोन् लाट ढाके अशोकेर लाट मदेर इस्ताहारे।

जानिस् तो बल् कि ये ह'ल फल आबकारी-युद्धेर,
मद्य-जातकेर अभिनय सुरु ह'ल कि मगधे फेर।
ओरे मूढ़ तुइ आजके केवल फिरिसूने छल खुँजे,
खुँटि नाटि बोल कवे कि बलेछे ताहारि उतारे युझे,

गोकुल श्रेय कि श्रेय खानाकुल-से कलह आज देखे
भारत जुड़े ये जीवन-जोयार ने रे तुइ ताइ देखे।
पारिस यदि ता शुचि ह'ये नेरे स्नान क'रे ओइ जले,
चिने ने चिने ने महान्—आत्मा महात्मा कारे बले!
एतखानि बड़ आत्मा कखनो देखेछिस कोनो दिन?
देश यार आत्मीय प्रिय—तबु विश्वासहीन!
दूरबीन क'से विज्ञेरा घोष, 'सूर्य्येर बुक पिठे,
आछे मसी-लेखा!" आलोर ताहे कि हय कमि एक छिटे!

सेइ मसी निये हास्ये तपन विश्व भरिछे निति,
रश्मिर ऋण बाड़ाये शरीर, फूले फूले दिये प्रीति!
कुटिरे कुटिरे महाजीवनेर ज्वेलेछे ये होमशिखा,
दिन-मजुरेर जने जने सँपि' मर्य्यादा-शुचि टीका,
पौंछे देछे ये पौरुष नव चाषादेर घरे घरे,
यार वरे फिरे शिल्पीर गेह काजेर पुलके भरे,
यार आह्वाने साड़ा दिये छुटे तिरिश कोटिर मन,
देशेर खतेने यशेर अङ्क लेखे साधारण जन,
आत्मविलोपी कर्म्मी-दल यार वाणी शिरे धरि,
नीरवे करिछे व्रतेर पालन दुःसह दुख वरि';
छात्रेर त्यागे स्वार्थेर त्यागे, पुलकि वहे हाओया,
राज-भृत्येर वृत्तिर त्यागे राजपथ ह'ल छाओया,
यारे माझ पेये काजिया थामाये हिन्दु ओ मोसलेम,
'आत्मदमन स्वराज' समझि-भुञ्जे परम प्रेम,
महम्मेदर धर्म्म-शौर्य्य याहार जीवन-माझे
बुद्धदेवेर मैत्रीते मिलि' स्फुरिछे नवीन साजे;
साराटा जीवन खृष्टदेवेर क्रुशये वहिछे काँधे,
विद्युत-पदे कन्टक-पथे 'सत्य'—व्रत ये साधे;
यार कल्याणे कुड़ेमि पालाय प्रणमिया चरकोर,
भरे भारतेर पल्ली-नगरी कबीरेर 'फालूचारे';
याहार परशे खुले गेछे यत निद्महलेर खिल,
पूरा ह'ये गेछे यार आगमने तिरिश कोटिर दिल्,
तार आगमनी गारे ओ खेयाली! गोड़वङ्गमय
गाओ महात्मा पुरुषोत्तम गान्धिर गाइ जय!

महात्मा गान्धीर प्रति

श्री बुद्धदेव वसु

आमारा पतंग जन्मा, मुषिक मृत्युर
अन्धकारे पिञ्जरित दुर्भिक्षेर कराल आकाशे
चिरस्थायी नाभिश्वास नामे आर ओठे
हताशार दुःसीम घुमोटे।
दुःख नेइ, सुखनेइ, आशानेइ मनुष्यत्व नेइ,
शुधु धुँके धूके
धुक धुक बुके बेंचे थाका
शुधु शून्य भविष्यते आँका
नियतिर कालनेमि असुर अक्षरे,
तार पर अन्तिम प्रहरे
क्षीण स्वरे अनिश्चित ईश्वरेरे डाका।
जीवन्मृत जड़ताय बेंचे थाका तबू बेंचे थाका।
ए नीरन्ध्र निश्चेतने कोथाओ कि प्राण छिलो?
अवाध्य, अवध्य इतिहास,
एकि तारि आकस्मिक विराट उच्छ्वास?
एकि कोन अलौकिक अज्ञेय सत्तार
युगान्तरकारी अवतार?
एकि सत्य, एकि सत्य नय?
मने हय आमादेर जीवित मृत्युर
दुर्गम गोपन उत्से बुझि वा स्पन्दित
रक्त वह हृत्पिण्ड; बूझि वा सत्यइ
इतिहास नियतिर अलक्ष्य सारथि,
बुझि वा आमरा
अनन्त कालेर मतो नित्य म'रे तबउ अमर।
यदिता ना हवे
ताइ'ले ए असम्भव केमने सम्भवे?
आमरा तो जानि ना केमने
कोन दूर शताब्दीर पथ पार थेके
प्रति दिन विन्दु विन्दु क'रे
आमरा ढेलेछि एइ प्राणमय प्राण

भारतेर कोटि कोटि हिन्दु मुसलमान ।
तुमि आमादेर सेइ प्राण संचयन ,
आमाराइ तूमि, निरन्नेर निर्व्वलेर ,
मनुष्यत्व वंचितेर सर्व्व ग्रासी अन्धकार फेटे
कखन आगुन फोटे केउ कि ता जाने ?
आमादेर कोटि कोटि अचेतन हृदयेर अग्नेय कणिका
सेखाने पुञ्जित ह'ये जालायेछे अफुरान अनिर्वान शिखा ,
तुमि सेइ आश्चर्य्य प्रदीप, प्रदीपेर अपूर्व्व इन्धन ,
भारतेर से प्राण पुरुष आमादेर प्राण संचयन ।

महामानव

श्री मोहितलाल मजुमदार

जन्म तोमार हयेछिल कवे ऋषिर मने—
एइ भारतेर महामनीषार तपेर क्षणे ।
सर्व्वमानवे अभेद करिया देखिल यारा—
ता'राइ तोमाय देखेछे प्रथम, जेनेछे ता'रा
तार पर तुमि युगे-युगे एले मुरति धरि'—
अमृत पिया'ले मृत्यु-सागर मथित करि' !
कुरुक्षेत्रे बाजिल शङ्ख माभैः—रवे !
प्रथमप्रेमिक शाक्यसिंह उदिल भवे !
पाप-पश्चिमे भगवद्–कृपा दानिल ईशा !
आर ओ एकजन मरू सन्ताने देखा'ल दिशा ।
सेइ एकवाणी मूर्त्ति धरिया आसिले तुमि ।
हे जीव-ब्रह्म-अभेद ! तोमार चरण चुमि !

हे प्राण–सागर तोमाते सकल प्राणेर नदी
पेयेछे विराम पथेर प्लावन-विरोध बोधि'।
हे महामौनी, गहन तोमार चेतन-तले
महाबुद्धावरण तृप्ति–मन्त्र ज्वले !
धन्वन्तरि ! मन्वन्तर-मन्थ शेष—
तव करे हेरि अमृतभाण्ड–अविद्वेष !
जगत जनेर वेदना-समिध् कुड़ाये सवि—
सेइ इन्धने ढालिले आपन प्राणेर हवि ।

परिले ललाटे महावेदनार भस्म-टीका,
जीवन तोमार होम हुताशन ऊर्द्धशिखा !
शङ्काहरण अहिताग्निक पुरोधा तुमि !
यज्ञ—जीवनदेवत ! तव चरण चुमि !

निरामय देहे वहिछ सवार व्याधिर भार !
तुमि नमस्य, सवारे करिछ नमस्कार !
चिरतमिस्राहरण तोमार नयन-कूले,
अन्ध-आँखिर अन्धकारेर अश्रु दुले !
अर्द्ध-अशन विरल-वसन हे सन्यासि' !
तुमिइ सत्य संसारतले दाँड़ा' ले आसि' !
आदिकाल हते कतकाल तुमि एमनि रत—
हे महा जातक ! जातक-चक्र घुड़िबे कत ?
कतवार दिबे आपनारे बलि यागेर यूपे,
छोट-'आमि' गुलि भरिया तुलिवे तोमार रूपे !
चिनेछि तोमारे, युगे युगे अवतीर्ण तुमि !
हे बोधिसत्व ! बुद्ध ! तोमार चरण चुमि !

ध्यानीर ध्याने आसन तोमार चिरन्तन,
इतिहासे यबे धरा दाओ, से जे परमक्षण !
देशे देशे तव शुभ--आगमन--वार्त्ता रटे,
तोमार काहिनी कीर्त्तन हय देउले मठे !
परे येइ दिन तोमारे भुलिया तोमार नाम
जप करे सबे निजेरी लागिया अविश्राम—
नरे भुल गिये शुधु 'नारायण'--मन्त्र पड़े,
मनेर मतन स्वार्थ साधन मूर्त्ति गड़े—
जगत—अन्ध जगानन्दे करिया हेला
रतने-भूषणे साजाय केवलि माटीर ढेला—
जगज्जीवन-मूर्त्ति धरिया एसो गो तुमि !
मानव-पुत्र ! मैत्रेय ! तव चरण चुमि !

एसो गो महान् अतीत-साक्षी हे तथागत !
हेर ए धरणी मरण-शासने मूर्च्छाहत !
काँटार मुकुट माथाय परिया मानव राज !
गाह जय, गाह मानरे जय, गाहगो आज !
महाव्याधि-भार कर गो हरण परशि' कर-

धन्य हउक निजेरे निरखि' नारी ओ नर !
आर वार डाक' घरे घरे, 'एस आमार पिछे;
भयेर सागर हेंटे पार हओ, भय ये मिछे !'
मृत जने पुनः नाम धरे "डाक" मृतक-नाथ।
प्रेत भूमे आजि एकि हुलाहुलि रोदन साथ !
सूतिकालयेर शोभा धरे यत श्मशान भूमि-
महादेव नय-महामानवेर चरण चुमि' !

धर्म्मवीर

श्री प्रभात मोहन वंद्योपाध्याय

सुखे येते छिल दिन । धर्म कि—ता' दिव्य बूझिताम ,
श्राद्धाभरे दूर होते नित्य तारे करिते प्रणाम—
कोनो दिन भूलि नाइ । धार्म्मिकेर पदधूलि ल'ये ।
दैनन्दिन स्वार्थ द्वन्दे मग्न ह'ये छिलाम निर्भये ।
जीवन सहज छिल हेनकाले तव तीव्र ज्योति
केमने पशिल आसि' अन्धचक्षे अकस्मात् अति
को था हते ! धर्म्मवीर ! तुमि एले मत्त-झञ्झा-सम
स्वार्थेर प्राकार भाङ्गि, कोटिपति ह'ते दीनतम
गृहस्थेरे गृह हते ठेलिया फेलिले आनि पथे ।
ब'ले दिले, "धर्म्म नाइ पूँथि-पत्रे मन्दिरे-पर्व्वते ,
धर्म्म नाइ रण-क्षेत्रे पैशाचिक हत्यार गौरवे ,
देशभातृकार नामे' विदेशेर शोणित वैभवे
धर्म्म नाइ ; धर्म्म नाइ शृङ्खलित दासेर सेवाय ;
तिथि दिया, मन्त्र दिया, तीर्थ दिया राखियाछ या'य
सङ्कोचे सराये दूरे—आजि तव घरेर अङ्गते
ताहारे प्रत्यक्ष करो ; ताहार कठिन आलिङ्गने
धारा दिया धन्य हओ ; निखिलेर लाञ्छितेर लागि
निरन्नेरे अन्न दिते—अत्याचारे करिवारे रोध ।
प्रति दिवसेर काजे सहज सक्रिय धर्म्म बोध
मानुषेरे मुक्ति दिवे, विश्वेरे करिवे शान्तिमय ;
दूर ह'ते चलिबे ना आजिके गाहिते तार जय ,
जीवने लभिते ह'वे अविश्रान्त कर्म्म दिया ता'रे ।"
कहिलाम अविश्वासे "ए कभु संभव ह'ते पारे !"

बलिले, "प्रतीक्षा करो" ; देश जुड़े पड़े' रोल साड़ा ;
"धर्म्म आचरण करे—एसे छे एमन लक्ष्मी छाड़ा
स्वदेशेरे मुक्ति दिते"—पण्डिते हासिल व्यंग हासि ;
देशरे अन्तरतले स्वार्थान्धेर सुखस्वप्न नाशी
जागिल धर्म्मेर मूर्त्ति ; कोटि कोटि विक्षुब्ध विवेके
पूजारति होलो ता'र। हाय, आज बलिया दिवे के—
ये होमाग्नि ह'ल ज्वाला, ये साधना सुरु ह'ल सबे—
कबे तार पूर्णाहुति ! के बलिबे सिद्धिलाभ कबे !

महात्माजीर प्रति

श्री चपलाकान्त भट्टाचार्य्य, संपादक, आनंद-बाज़ार-पत्रिका

पञ्च नदेर वक्षे येदिन शोणितेर होलिखेला
खेलिल पिशाच पीड़ित जातिर कातरता करि हेला,
वेदनार ढेउ पड़िल भाङ्गिया तोमारि चरणमूले
येथा छिले तुमि आपन साधने साबरमतीर कूले ;
टुटिल धेयान, आश्रम छाड़ि बाहिरिया एले छुटि
येथा मूमूर्षु देशवासी तव पड़ि रय भूमे लूटि ;
सान्त्वना दिया अपमान व्यथा सब तुलि निले बुके ;
सारा भारतेर प्रतिवादध्वनि फुकारिल तव मुखे।
आपन तपेर तेज सञ्चारि सबारे करिया दान,
तिरिश कोटिर कङ्काल भरि फुत्कारि दिले प्राण।
अमर अभय आह्वान तव उठिल गगन भ'रे,
साधनलब्ध अमोघ अस्त्र दिले सबाकार करे।
सहसा तड़ित्-स्पर्श-चकित सकले उठिनु जागि,
सेइ निर्घोष आजो, मने, हय श्रवणे रयेछे लागि।
असहयोगेर रूप धरि तव रोषेर वह्निशिखा,
छाइल भारत, अत्याचारीरे देखाइल विभिषिका।
काँपिल प्रबल शासन शक्ति आपन आसन परे,
देखाले हिंसाविहीन समर कत ये शकति धरे।
इच्छाय तव पड़िल सेनानी मृत्पुत्तल ह'ते ;
शिखाले जातिरे कठोर दीक्षा लइते मुक्तिव्रते।

प्रभात-आलोक झलिल सहसा, तोमार नयने चाहि,
गौरवे भरा वन्दीर दल ओठे वन्दना गाहि।
सेदिनेर सेइ आशा—उल्लास जीवने भुलिब ताकि!
स्वपनेर मत आजो मासि ओठे स्मृतिपटेथाकि थाकि।

सहसा कखन कारार दुआर रूधिल तोमारे घिरि,
सङ्गीरा सब ये याहार कातो एके एके गेल फिरि।
फिरिले यखन व्रत गेछे भाङ्गि नीरव राष्ट्रवानी,
स्वपन विलासे घुमाइछे जाति सहि लाञ्छनाग्लानि।

दिल्ली हइते कोकनदव्यापी उपप्लवेर वेगे,
गान्धीर नाम डुबिया गियाछे नव—सहयोग-मेघे।
निस्फलतार बुकभाङ्गा श्वास नीरवे मर्म्मे दलि,
लोकहित भाबि तार पर सेइ तोमार आत्मवलि;

सब विरोधेर हलाहल ज्वाला पियिले कण्ठ भरि,
सबारे शान्ति दिया नतशिरे आश्रमे गेले सरि।
तारपर हाय, इतिहास माखा पतनेर घनमासी,
आँधार हइते तुलिते याहाय आँधारेइ गेल पशि,

नव-सहयोग—अभिसार होलो खण्डित बारे बारे,
तवओ फिरिते हय ना साहस आँकड़ि रहिछे तारे।
ये आयुध दिले करिते प्रयोग शकति नाहिल कारो,
ये जीवनवेद प्रचारिले सबे मन्त्र भुलिल तारो।

क्लान्त नयने हेरिले सकलि नीरव वेदना-भागी,
संयत-तेज रहिले धेयाने शुभक्षणेर लागि।
एखनो कि तव हयनि समय पुनराय देखादिते!
अचल राष्ट्ररथेर रश्मि दृढ़करे तुलि निते!

चालनार भार काड़ि निल यारा अबोध-दम्भेमाति,
पडे शिथिलिया; एसो, याय बुझि तव प्रियदेश जाति।
येइ पाशुपत करिया योजन तूनीरे राखिले तुलि,
मुक्ति मोदेर तारि माझे रय से कथा कि गेले भुलि!

फिरे एसो, डाके दीन देशवासी पीड़न—कातर अति,
एखनओ केन रहिछ विमुख, हे तापस सेनापति!
भेङ्गेछे शरीर तार साथे कि गो तोमारो भाङ्गिल मन!
सङ्गीरा सब छाड़िल ब'ले कि तुमिओ छाडिबे पण!

काहार नयने चाहि तवे आर लभिन्न पथेर आलो,
चारि धार घेरि घनाय यखन आँधार निकष-कालो ?
बहितेछ तुमि सवाकार भार धरार धैर्य्यभरा,
तोमार चरण द्विधाय टलिले टले ये बसुन्धरा।

वृथा से एकता तार लागि यदि सत्येरे दाओ वलि।
रसातले याक् राजनीति यदि बिपथेइ याय चलि।
मिथ्याइ येथा धर्म्म हइल, नीति ह'ल येथा छल,
वञ्चना आ उत्कोचदान ह'ल येथाकार वल,

ताहारि समुखे तुमि नतशिर—ए व्यथा केमने सहि ?
सत्येर शेषे हवे पराजय, मिथ्याइ हवे जयी ?
हेर चाहि रय तव मुखपाने पथ सन्धानी जाति,
ज्वलुक, ज्वलुक तोमार नयने सत्य-अनल-भाति।

निमिषेर माझे पुड़ि हवे छाइ मिथ्या ओ कपटता,
निशीथे याहारा छाड़े हुङ्कार लुकाइया यावे कोथा।
दाओ डाक दाओ, कण्ठे तोमार अमोघ सत्यवाणी,
विपुल प्लावने दुलिया उठुक भारतेर प्राणखानि।

मरा वाँचावार अमृत मन्त्र तोमारि से जाना आछे।
वाँचिया मरिल, दाओ डाक दाओ, पुनराय तबे बाँचे।
कोथाय पाषाणे जीवन उत्स रुद्ध से गतिहारा,
जानो सन्धान, बहाइया दाओ पुनः से मुक्तधारा।

हे महातापस सत्येरे पुनः जागाओ उच्चशिर,
धरमेर देशे धरमे आबार स्थाप'गो धरमवीर।
मन्त्रे तोमार, अभय साधक, भीरु-बुके दाओ बल,
आह्वाने तव, विश्व प्रेमिक, नामुक प्रेमेर ढल।

दाओ डाक दाओ, आसुक कमला धन, सम्भार ल'ये,
तोमार साधने सुप्त शक्ति उठुक दीप्त ह'ये।
दाओ डाक दाओ, स्वराजरथेर तोलो घर्घरनाद।
दाओ डाक दाओ, दूरे सरि याक् एइ जड़ अवसाद।

एइत सेदिन तरुन तपन पूरवेते दिल देखा
घिरिल ये मेघ काटिबे ना आर—एइ कि ललाट लेखा ?
अकाले कि शेषे नामिले सन्धा मुछिया आशार छवि ?
हाय, हाय, एइ मध्य दिवसे डुबि रय केन रवि ?

गान्धी महाराज

श्री यतीन्द्रमोहन बागची

के ऐ चले बिपुल बले समुखपाने चाहि'—
उदार धीर अति गंभीर चोखे पलक नाहि ;
सरल पथे सहज मते समान ऋजु गति,
डाने बा बामे कभु ना थामे-जाने ना लाभ-चति ;
व्यथित लोके अभावे शोके सेबिते सदा मन,
दीनेर तरे नयन झरे करे पराण पण ;
परेर लागि' सर्व्वत्यागी भुलिया भय लाज।
केबा ए जन ? हेंके पवन-गान्धी महाराज।

भारतवासी गृही ओ चाषी काहार मुख चाहि'
नवीन बले मातिया चले आशार गान गाहि';
मजुर कुलि अभाव भुलि' काहार जयगीते,
पराण मन जीवन पण चाहे बा बलि दिते ;
धनी ओ मानी, गुणी ओ ज्ञानी, गरीब गृहहीन
काहार काछे शरण यचे-शुधिते नारे ऋण ;
निखिल लोक मेलिया चोख नमिछे कोरे आज ?
देश-मातार कण्ठहार गान्धी महाराज।

परेर 'परे आशा ना धरे—निजेते निर्भर,
सुसमाहित शान्त चित, शुद्ध कलेवर ;
सरल बास, सहज भाष, सत्यपथकामी,
देशेर हित काहार चित भाविछे दिन-यामी ;
विरोधी भाये माथेर पाये मिलाये निज गेहे,
सबारे डाकि' मिलन-राखी परा'ल के बा स्नेहे ;
हिन्दु टाने मुसलमाने निज बुकेर माझ—
असाध्यके साधिल ओके-गान्धी महाराज।

अ-मिले के से मिलाय हेसे, अचले करे चल,
काहार चित् शत्रुजित अस्त्र हृद्वल ;
असहयोगे मृत्युरोगे निदान-विधि का'र
फिराये आने देशेर प्राणे बाँचार अधिकार ;—

ये बाँचा माने सकले जाने स्वाधीन यत देशे ,
नूतन पथे नूतन रथे यात्रा या'र हेसे ;
ये बाँचा माने विधाता जाने अमृतलोकमाझ—
ए वाणी के से शिखा'ल देशे !—गान्धी महाराज ।

गांधीजी

श्री सजनीकान्तदास

स्वर्गे आर मर्त्ये आज चलियाछे दड़ि टाना टानि ,
इहलोके परलोके बांधियाछे प्रचण्ड संग्राम
इकठी मानवे घिरि । प्राण पन करियाछे प्राणी ,
विचार चलिछे ऊर्ध्वे से प्राणेर कतटुकु दाम ।
युगे युगे याहादेर 'जन्म आर मृत्यु' इतिहास ,
काल वारिधिर तटे यादेर बालुका परिचय—
एल आर चले गेल, मुहूर्त्तेर बुद्बुद विलास ,
ताहारइ एकटी लागि मृत्यु दूत गनिछे सशय ।
से कि शुधू देहसार ? देहहीन आत्मा ओ से नेह ।
तार परिचय से ये मानवीर गर्भेर सन्तान ,
विश्व मानवेर धात्री धरा ताइ आसन्न विरहे
मुछिछे नयन अश्रु ; नाड़ीते पड़ेछे तार टान ।
देवता डाकिछे ऊर्ध्वे, एसो एसो हे आत्मा महान
प्रशान्त नयन मेलि जे देखे मानुषेर छेले—
चले दड़ि टानाटानी स्वर्गे मर्त्ये घुचे व्यवधान ,
धराहेसे केंदे कय, ए आत्मा माटिते शुधु मेले !
माझखाने बसे स्तब्ध ध्यान रत महान मानव ;
मुखेते माखान तॉर प्रेम आर विदायेर हासि ।
स्वर्गेर आह्वान नाइ , थेमेछे आत्मार कलरव ,
बले येते पारिबना , ए धरारे आमि भालवासि ।
देहहीन देवतारा देहीरे करेन आशीर्वाद ,
आनन्दे झरिया पड़े धरणीर स्तन्य दुग्धधारा
धराय रहिल आत्मा, स्वर्गे घुचिल विवाद—
मृत्युरे जे नाड़ा देय देह नय से आत्मार कारा

आत्मार आत्मीय गान्धी

श्री सावित्री प्रसन्न चट्टोपाध्याय

तखन दुःखस्वप्न जागे दुर्भागा ए भारतेर बुके
भय विचलित चित्ते अविराम जागिछे संशय,
पुतमान मनुष्यत्व कलंकित ऐतिह्य ताहार
गोपन गुहाय चले रात्रिदिन चक्रान्त हिंसार।

जातिर बन्धन व्यथा शृंखलेर निष्ठुर पीड़न
कुब्ज पृष्टे कशाघात, लज्जाहीन दुर्ब्बल दलन।
विक्षुब्ध मनेर कोने धुमाइछे विद्रोह अनल
हेन काले देखादिले पुण्यभूमे तपस्वीर वेशे।

विछिन्न विध्वस्त देश, चारिदिके स्वजन संग्राम
ताहारि कदर्य्य छाया घनाइल तव चित्ताकाशे।
दुश्चिन्तार वाणी रेखा भ्रुकुञ्चने उठिल फटिया
येमन गभीर दृष्टि तेमनि उदात्त कण्ठ स्वर।

नूतन करिया तुमि गड़िवारे स्वदेश समाज
अहिंसार नवमंत्र शुनाइल जने जने डाकि,
क्षुर धार तीक्ष्ण बुद्धि युक्ति तर्के पंडित प्रधान
सुदुर प्रसारी मन, करुणार्थ कोमल हृदय।

धर्मे धर्मे रेषा रेषि आचारे विचारे कोलाहल
संस्कारेर मोहजाले छुँत् मार्गे आत्म अपमान,
मन्दिरे देवता बड़ बाहिर मानषु अप्रधान
से मानुषे बुके निले प्रसारिया उदार हृदय।

मानुषेर महत् धर्म दीक्षा दिले ए महाभारते,
आपनि आचारि धर्म विलाइले प्रेम अभिनव,
अन्तरे स्वदेश लक्ष्मी, नयने उदार धरातल
सर्व्व साधनार अर्ध्वे मनुष्यत्व बोधनेर व्रत।

तोमार स्मरण सौध गड़िया तुलिछे कीर्त्ति तव
आतमार आतमीय गांधी महात्मा ए अनात्मिक देशे
अर्च्चनीय सवाकार स्मरणीय प्रभाते सन्ध्याय
कविर प्रणाम सेथा फुल हये झरिबे नियत।

महात्मा

श्री निर्मलचन्द्र चट्टोपाध्याय

तपेर तड़ित-सूत्रे ऐक्ये गॉथि श्रेय आर प्रेय
अमोघ मैत्रीर मंत्रे चाण्डाले ओ वक्षे टाने के ओ !
निष्कलुष अवनेत्रे जागे नवयुगेर मैत्रेय।
ए भारते कार दृष्टि निर्निमिख आज !
—गांधि महाराज।

अस्थि शीर्ण कृशतनु दृढ़ दीप्त कृशानु-सुन्दर—
त्यागेर सर्वस्वपने महाभिक्षु गुर्जर शङ्कर;
कटिवास मात्र साजे त्रिंशकोटि दरिद्र निर्भर।
परजीवी गृध्नुदेर के बहिछे लाज !
—गान्धि महाराज।

क्लीव-क्लिन्न लक्ष्यहीन लक्ष प्राणे अमृत वाक्य यार
तिले तिले अलक्षिते अग्नितेज करिछे सञ्चार,
शृंखल-संगीत हानि, बन्दी गाहे वन्दना ताहार
सुप्त चित्ते कार बानी समुद्यत बाज !
—गान्धि महाराज।

क्रोधेरे अक्रोधे जिनि' अप्रेमेरे प्रेमेर आग्रहे
आलिंगन दानिल ये वेदनार सर्पविष दहे,
शक्ति तार अप्रहत जीव यज्ञे अनन्त निग्रहे
मानव मूर्तिर ए की स्वमूर्त बिराज !
—गान्धि महाराज।

गांधीजी

श्री विजयलाल चट्टोपाध्याय

बर्बरता विज्ञाननेरे करिया किङ्करी—
दिगन्त व्यापिया तोले रक्तेर लहरी,
पृथिवी जुड़िया चले मृत्युर शासन
शक्ति आसि काड़ियाछे न्यायेर आसन।

आलोहीन आशाहीन शताब्दीर काने·
तुमि दिले प्रेम पत्र। तोमार आह्वाने
सेइ प्रेम—विश्वे जाहा एकान्त निर्भय,
वीर्य्येर आगुने याहा चिरदीप्तिमय।

मृत्युमंत्रे दीक्षा तुमि दिये छो जातिरे ;—
प्राण—से तो मरनेरइ आसे वक्ष चिरे।
मानुषेरे भालोवासी—साम्यवादी ताइ,
जेखाने शोषण, जानो, प्रेम सेथा नाइ।

सर्व्वहारादेर लागि तोमार स्वराज
तुमि, ताइ, भारतेर गान्धी महाराज।

महात्मा गान्धी

श्री विवेकानन्द मुखोपाध्याय

घुमन्त मानुष येन समुद्रेर शुनिल गर्ज्जन—
बहुदूर शताब्दीर-निपीड़ित आत्मार वेदना,
लक्ष लक्ष जीवनेर सञ्चित ये विपुल क्रन्दन
तारि साथे अकस्मात् अन्धकारे हलो येन चेना।
गान्धी दियेछे डाक,—सत्याग्रही वाहिरिल पथे—
लाञ्छना वरन करि लाञ्छनारे करिवे के जय।
आहुति दिवे के आज भारतेर स्वाधीनता व्रते
जेल जरिमाना आर फाँसिकाठ नय किछु नय।

मानव मुक्तिर दूत हे महात्मा गान्धी महाराज,
तोमार पताका तले भारतेर नया जागरण,
ग्रामे ग्रामे घरे घरे कोटि कोटि मानुषेर मने
नतुन युगेर लागि येन एक अव्यक्त गुञ्जन!

एइ लज्जा, अपमाने, दासत्वेर एइ ये शृङ्खल,
सहेना सहेना आर शताब्दीर शोषण निठुर,
तोमार आह्वाने ताइ प्राण पद्म हलो ये चञ्चल,
मुक्तिर आलोक बुझि रात्रि शेषे: नहे आर दूर!
सेइ आलोकेर तुमि वार्त्तावाही तापस महान,
लह तुमि भारतेर प्रेम स्निग्ध अर्घ्य-अवदान।

ए गांधी संत सुजान

कवि वरेण्य श्री अरदेशर फराम जी खबरदार,

अंधारा ना गढ मदीने आव्युं किरण अणमोल,
रण नी धगधगती रेती मां फूट्यूं अमी झरणूं रसलोल;
दश दिश नां लोचन मींचातां,
जनजननां तनमन धूघवातां,

भारत नुं उर ग्लानि रह्युं भरतुं त्यां फरी ऊतर्यो प्रभुबोल।

लाव्यो कोण परम ए वाण!
ए गांधी संत सुजाण,
ए गांधी संत सुजाण,
ए नवभारत नो प्राण!!

जीवंतां पण मूएलां खोखां अहीं-तहीं फेरतां भारत-भोम,
जाणे नहि लेवा दम पूरो, थथरे शीत पडे के धोम;
ज्यारे माना केश विंखाता,
सुत भय हिंसा मां भटकाता,

लडता भ्राता शुं प्रिय भ्राता, त्यारे सांधी धरती व्योम।

कोणे फूक्या सौमां प्राण!
ए गांधी संत सुजाण!
ए गांधी संत सुजाण!
ए नवभारत नो प्राण!!

हाल्यां चेतन मृत मट्टी मां, फाल्यां जडहृदये थी फूल,
हिमढगले थी भडका ऊठ्या, झबकी सोनारज भरधूल;

पथ्थरनी प्रतिमा त्यां चाली,
फूटी मूशलमां पण डाली,

जनजनना मन मां, नव रंगे पाछी ऊगी आश अतूल;

एवी वर्ती कोनी आण?
ए गांधी संत सुजाण,
ए गांधी संत सुजाण,
ए नवभारत नो प्राण!!

नहि वीरत्व वसे तरवारे, नहि शूरत्व वसे को बाथ,
छे वीरत्व खरूं अंतर मां, ए सौ शीख्या साची गाथ;

मृत्यु विषे नवजीवन लाध्युं,
जीवन मां नवचेतन साध्युं,

मरीने जीववानो नव मंत्र मल्यो ऐ कोने पावन हाथ?

कोणे दीधी ए रसलहाण?
ए गांधी संत सुजाण!
ए गांधी संत सुजाण!
ए नवभारत नो प्राण!!

सत्य अहिंसा स्नेह तणा मर्मो ज्यां ऊघड्या तारक पेठ,
देहबले मानव दिन दिन शिरधारे दुनियानी वधु वेठ;

कुंदन नो कस अंकावी ने,
'नवनव तावणी मां तावी ने,

त्यां आ आतम किमियुं देखाडी ने बांध्युं पशुबल भेठ;

कोणे स्पर्श्यां ए ऊंडाण?—
ए गांधी संत सुजाण,
ए गांधी संत सुजाण,
ए नवभारत नो प्राण!!

हरिजन मां हरिजन थई बेठा, सुरजन मां सुरजनना राज,
क्रोडो केरा हृदय विसामा, लाखोनी लाखेणी लाज;

जगनां पाप उठाव्यां माथे,
जग पर ढोल्यां अमृत हाथे,

अर्ध उघाडा अंगे जीवी ढांक्यो भूजतो दलित-समाज;

एना जडशे क्यां परिमाण !—
ए गांधी संत सुजाण !
ए गांधी संत सुजाण !
ए नवभारत नो प्राण !!

धीके धगधग जेनुं हैयुं निशदिन मानव बांधव माट,
पेट भरी मूठी अन्ने जे सूए टूटी फूटी खाट,

आकाशे तारकशा ऊडे,
जेना उर-तणखा दुख ऊंडे।

एवो कोन ऊभो जग सामे भारतरक्षक आत्मविराट् ?

कोनो ए अवतार प्रमाण !—
ए गांधी संत सुजाण,
ए गांधी संत सुजाण,
ए नवभारत नो प्राण !!

जुग जुग नो ए अम्मर जोगी, जुग जुग नो ए नव अवतार,
भारत जनना प्रिय बापूजी, रंको ना एकल आधार;

एनुं कीधुं कोथी थाशे,
एनुं कीधुं केम गवाशे ?

जुग जुग जीवो पुण्यपरार्थी, करता सत्यतणो टंकार !
साधो संतत जगकल्याण,
हो गांधी संत सुजाण,
हो गांधी संत सुजाण,
हो पलपलना अम प्राण !!

छेल्लो कटोरो

राष्ट्रकवि श्री झवेरचन्द्र मेघाणी

छेल्लो कटोरो झेरनो आ, पी जजो बापू!
सागर पीनारा, अंजलि नव ढोळजो बापू!

अणखूट विश्वासे वह्युं जीवन तमारूं,
धूर्तो दगलबाजो थकी पडियुं पनारूं,
शत्रु तणे खोळे ढळी मुखथी सुनारूं;
आ आखरी ओशीकडे शिर सोंपवुं, बापू!
कापे भले गर्दन, रिपु-मन मापवुं बापू!!

सुर असुरना आ नव युगी उदधि-वलोणे,
शी छे गतागम रत्नना कामी जनो ने?
तुं विना शंभु, कोण पीशे झेर दोणे?
हैया लगी गळवा गरल झट जाओ रे बापू!
ओ सौम्य-रौद्र, कराल-कोमल, जाओ रे बापू!!

कहेशे जगत, जोगी तणा शुं जोग खूट्या?
दरिया गया शोषाई, शुं घन-नीर खूट्यां?
शुं आभ सूरज-चन्द्रमा नां तेल खूट्यां?
देखी अमारां दुःख नव अटकी जजो बापू!
सहियुं घणुं, सहिशुं वधु नव थडकजो बापू!

चाबुक, जप्ती, दंड, डंडा मारनां,
जीवतां कब्रस्तान कारागारनां,
थोडा घणा छूंटकाव गोळीबारना,
ए तो बधां य झरी गयां, कोठे पड्यां बापू!
फूल समां अम हैयां तमे लोढे घड्यां बापू!

शुं थयुं त्यांथी ढीगलुं लावो न लावो,
बोसा दइशुं, भले खाली हाथ आवो!
रोपशुं तारे कंठ रस बसती भुजाओ!
दुनिया तणे मोंये जरी जई आव जो, बापू!
हमदर्दी ना संदेशड़ा दई आवजो बापू!

जग मारशे मेंणां, न आव्यो आत्म-ज्ञानी ,
ना व्यो गुमानी पोल पोतानी पिछानी ,
जगप्रेमी जोयो, दाज़ दुनियानी न जानी ।
आजार मानव-जात आकुल थई रही बापू !
तारी तबीबी काज ए तलखी रही बापू !

जा बापू, माता आखला ने नाथवा ने !
जा विश्वहत्या ऊपरे जल छांटवाने ,
जा सात सागर पार सेतु बांधवाने ,
घनघोर वननी वाटने अजवालतो, बापू !
विकराल केसरियाल ने पंपालतो बापू !

चाल्यो जजे तुज भोमियो भगवान छे, बापू !
छेल्लो कटोरो झेर नो पी आवजे, बापू !

फूल पांखडी

श्री ज्योत्स्ना शुक्ल

देवत्व अर्पी धूप दीप ना धरु ,
अेवुं लूखुं पूजन हुं नहीं करुं ;
ने वंदना अे जयघोषणा अे ,
रुचे मने ना कृति-हीण सौ अे ।
ना कृष्ण, ईशु कही गर्व पामुं ,
ना कोअीनी तुल्य, अतुल्य मानुं ;
आ लोही भूख्या धीकता जगे हुं ,
अे अेकलो मानव अेक भालुं ,
सदैव अे जाग्रत चेतना भर्यो ,
प्रकाश शो भारतमां दीपी रह्यो ;
मेलां जले, पृथ्वीतणा सरोवरे ,
प्रफुल्ल अंबुज समो रमी रह्यो ।
ना वंदना के जयगर्जनाओ ,
निन्दा, स्तुतिपुष्प, कटु प्रहारो ;
अेने न स्पर्शे, विचलित ना करे ,
अे सूर्य शो निर्मल हास्य पाथरे ।

शोणित भीना जगने वचाववा,
श्रा सृष्टिनी पाशवता मिटाववा;
ने दैत्यने मानवता शिखाववा,
श्रे भव्य योगी तप श्रुग्र श्रादरे।
विशुद्ध श्रे मानवता मने गमे,
निर्लेप श्रेनां तप श्रे मने गमे;
हुं जोश्रुं, चिंतुं, श्रुर चेतना भरूं,
श्रे मानवीने सहसा नमी पडुं।
शो चेतनानो वही धोध त्यां रह्यो,
श्रे धोधमां बिंदुरूपे भडी जश्रुं;
ने विश्वना तारणहार गांधीने
स-क्रियतानी फूल-पांखडी धरूं।

विश्वयज्ञ

श्री सुंदरजी गो० बेटाई

रही कचकचावती दशन तीव्र सी तुष्टका
अने विकृत-दर्शना अगन रोषनां वींझती

अहीं तहिं वधे घूमे सकल भान भूली समी,
महा फड़फड़ाटथीं धमती वह्नि हिंसातणी।

पिपासा रक्तनी शी आ, क्षुधा शी हाड़ मांसनी
द्वेषना वह्निनी ज्वाला आम शें विज्ववी रही!

इधर परम मंत्र एक, भड़ मातृ-स्वातंत्र्यनों
ग्रही वलि हथेली मां जीवननों पनोता ऊभा।

फुटे शिर, खड़ी पड़े कैंक अस्थि, सॉधा टूटे,
भले शिर, भले भणे शरीर-मिट्टी मिट्टी विशे

न तोय प्रतिकारवो कदीय घावने घा थकी
दे अर्पी प्राण, ते परम-प्राण पेटाववो

डगुमगु शरीर ने विपुल आत्म को मानवी
ऊभो, भडभड़ी रही, अनल उग्र हिंसा विशे।

ऊँड़ी परम सात्विकी सकलस्पर्शिणी दृष्टिथी
दशे दिश उकेलतो, तिमिर दुर्गने भेदतो,

क्षणेक्षण निहालतो सतत ज्योति चैतन्यनो
असंख्य मनुबालने अभय-प्रेरणा अर्पतो।

प्रियने, प्राणने, सौने होनी आ विश्वयज्ञ मां
पामजो विश्वशांति ने साधी आ उग्र साधना।

भय पमाड़ती मायिक भीरुता,
पणन तोय ऊठ्या भड जंपता;

कनककीर्ति विशे भली श्यामिका,
अनल उग्र महिं परिशोधता।

बंध ने मोक्षनो आ तो महाविग्रह वर्ततो।
विश्वदेव, महाकाल, आपनो अमी वर्षजो।

नाखुदा

श्री स्नेहरश्मि

वहे वेगे नौका सरल सरती सिंधु उपरे
तरंगों ने तारा शशियर मीठा गान उचरे,
रमे, खेले पेलां गभरू बटुको गम्मत करे
प्रवासी आनन्दे अहीं तहीं फरे तूतथ परे।
नहीं चिन्ता कोने स्थल समय बाधा नहिं करे
बधे हैये केवी स्मित लहरियो रम्य विलसे।
अरे! किंतु पेलां क्षितिज परथी बादल धसे
बनी गांडो अब्धि उलटी सहसा तांडव करे।
डुबी ज्योत्स्ना राणी विरमी गयुं ए हास्य उजलुं
भुजे भीरूँ सर्वे निमिष महीं शुं चित्र पलट्युं।
परन्तु पेलो त्यॉ तुतक उपरे सौम्य गिरि शो
ऊभो छे नखूदा थिर अडग गम्भीर अटुलो।
उषा संध्या एने, दिवस रजनी एक सरखां,
रह्यो जोई जाणे जग अखिल ए एक भुवमां।

ओ भव्य डोसा

श्री हरिहर प्रा० भट्ट

आज शां भाग्य आ हिन्द सौ जगत नां
विश्व ना सन्त नां वर्ष षष्टि।
जूज सन्तो तणी तप हुताशे टकी
एटला दिन लगी देहयष्टि।

जे थकी हिन्द-शिर उच्च आलम महीं
जन्म दिन थी वड़ा उत्सव शा!
हिन्द-संकष्ट-हर, वर्ष शत जीव ओ
दीन भारत तणां भव्य डोसा।

आवजो कविवरो, दिव्य गायकगणो,
सौ कलाना कलाकार आवो।
कैक सैका लगी तम कलाकाज को
ईश विण नहिं भले विषय आवो।

जेह जीवनकला सौ कला प्रेरती,
ते कला-हीन अम जीवनो शां
जीवन अम प्रेरवा वर्ष शत जीव ओ
सत्य-सौन्दर्य ना भक्त डोसा।

जगत थी दूर निज धर्मजीवन महीं
प्रेम-पथ बुद्ध महावीर बोध्यो।
जगत समुदाय मां, राज्यना कार्य मां,
एह संदेश अधूरो रह्यो तो।

किन्तु सर्वाङ्ग जीवन विषय तैं करीं
प्रेमना तत्त्व की कार्य-घोषा।
तत्व झीलाववा वर्षशत जीव ओ
प्रेम शाश्वत भर्या भव्य डोसा।

जगत ने मोकली,ती] महासंस्कृति
गौतमे बोधितरु छाँय माँथी।
मोकली,ती] इशूए महा संस्कृति
क्रौस-अधिरूढ़ निज काय माँथी।

आज सर्जे तुं भावि महासंस्कृति
साभ्र-गंगा-तटे विश्वपोषा
संस्कृति-पूर इञ्जु दर ये लाववा
वर्षशत जीव ओ विश्व-डोसा !

देहतलथी उँचे, बुद्धितलथी उँचे
आत्मबल-तल ऊपरे तूं फरे छे।
बुद्धिनी दृष्टि ना क्षितिजनी पेली गम,
सत्यनूं क्रान्तदर्शन करे छे।

मुट्ठी-भर अस्थिनी देह तुझ दूबली
आत्मनां दाखव्याँ ते बलो शाँ
शक्ति भरवा जगे वर्षशत जीव ओ
दिव्य भारत तणां भव्य डोसा।

मृत्युनो यात्री

श्री उमाशंकर जोशी

'अरे गांधी राजा,' शबद अधूरा ए रही गया,
अने कंपी वाचा कही नव शकी ते नयननी

मूँगी अश्रुवाणी रही टपकी, गाँधी चरणमाँ
पड़ी ए मूर्ति, ए हजी अण खील्या-बुद्ध-चरणो

अजाणी को जाणे लयी पड़ी सुजाता उरभीनी
हजी लोही लेखो सृजन इतिहासे नव सूझ्या,

नवुं पानुं तेवे लखवुं अमी आँके शरू कर्युं
अनेरूँ गाँधीए, गिरमिट थकी हिंदी मजूरो

बचा'वा आफ्रिका महीं लड़त सत्याग्रह तणी
लड्या पोते वेठी, हृदय पलटाव्यॉ अरितणॉ

नवेला ए युद्धे हृदय-वीर को हिन्द नवीरो
पडेलो, एनी आ तरुण विधवा अश्रु वचने

वदेः 'गांधीराजा' ! शिर चरण-धूलि पर सुहे
निसासे दाझ्यां, जे चखजलथी भीज्यां चरण, ना !

अरे ! भीज्युं, दाझ्युं हृदय ! हजी तो अंबर परे
अभो तो एवां कैं शत समरने वीर नर ए

हजी तो पोतामां शत-शत लडाई लडवी छे
लपेटी विश्वोने हजी न प्रकट्यो प्रेम अरमां

पूरो, तो ये आवी करुण कुरबानी निज कने
थती, तेना साक्षी थवुं ज्यम ! वलोवायुं उर ए

कंई एवुं एवुं पल महीं उडुं, वाणी नीतरी ;
'अरे बाई ! रो ना ! तुज पति मर्यो ना गणीश तुं ,

गयो मुक्ति काजे सहुतणी, थयो ए अमर छे,
अने गद्गद् कंठे वधु न वदवा दीध कई तो ,

परंतु अुठाडी निज कर थकी, ने अूभी करी
खभे मायालु ए कर रही गयो, ने अूभरती

घवाएली आँखों महीं डवक गांधी चख डूब्यां
अने पोतामां ए नयन जल लौव्यां भरी बधां

हती थंभी वाचा, नयन जल थंभ्यां पण तहीं
अचिंतां, गांधीना मुखथी शबदो कैं सरी पडया

अनायासे, 'बाई ! तुज सम कंई हिन्द-रमणी
थशे स्वामी-हीणी, जननी भूमि त्यारेज छूटशे

अने मारी भोली पण तुज शी ज्यारे थई हशे' ॥

त्रिमूर्ति

श्री सुन्दरम्

बुद्ध

धरी आ जन्मे थी प्रणय-रस-दीक्षा तड़फतुं ,
हतुं जे संतापे जगत दुखियुं, क्लिन्न रड़तुं ;

लई गोदे भार्युं हृदयरसनी हूँफ मही ने ,
वद्या, 'शांति, व्हालां, रुदन नहिं छुट्टी दुखतणी' ।

अने बुट्टी लेवा वन उपवनो खूंदी वलिया ,
तपश्चर्या कीधी, गुरुचरण सेव्या, व्यरथ सौ ।

निहाली, आत्मा मां करण सहु संकेली उतर्या ,
महायुद्धे जीती विषय लई बुट्टी निकलीया ।

प्रबोध्या धैर्ये ते विरल सुखमंत्रो जगतने ,
निवार्यु हिंसाथी कुटिल व्यवहारे सरलता

प्रसारी, सृष्टिना अघउदधि चूस्या सुखथकी ,
जगत् आत्मौपम्ये भरती बहवी गंगकरुणा ।

प्रभो ! तारा मंत्रों प्रगट बनता जे युग-युगे ,
अहिंसा केरो आ प्रथम प्रगट्यों मंत्र जगते ,

ईशु

महारौद्रे स्वार्थे जगत गरज्युंतुं बलतणा ,
मदे घेला लोको निरबल दरिद्रो कचडता ,

विसारी हैयाथी प्रभु, जगत सर्वस्व गणाता ,
प्रति स्थाने स्थाने बस नरक लीली ज प्रगटी ।

अहो, तेवे टाणे वचन वदतो मार्दवतणां ,
डुबेलां ने दुःखे सुख मिलन दुखेन कथतो ,

युग अवतार

श्री मस्तमयूर

भारतनी आरत भरनारा !
अमोघ चेतनना फुवारा !
विराटमां निजने वणनारा !
त्रिंशकोटितारक, ऋतज्योति
सचेत कर्म कवि तरस धार
मोहन ओ ! नवयुगग अवतार !

आप प्रताप अमाप अरुण सम,
प्रलयपति, तम गति अति दुर्दम,
नीलकण्ठ, पीधु विष विषम
सावजशूरजनोंना संगी,
नवल हिन्दना सरजनहार !
मोहन ओ ! नवयुग अवतार !

अर्पण

श्री कोलक

प्रदीप्त द्युतिस्त्रोतथी प्रगटी गांधी बापु तमे
जगावी उर उरमां धगश पूर्ण स्वातंत्र्यनी
पड्या रण-पथे, महोर्ध्व ध्वज मुक्ति-संग्रामनो
सगर्व फरकन्त राखी, चिर मुक्ति ने पामवा

पिता ! युग कलंक हिंदु धरमे समूळुं तमे
फिराव्युं, प्रीति भक्ति थी दलित भेदने टालतां।

प्रबुद्ध तम आत्मनां तप चिरंजीवी झूलशे
मनुष्य-इतिहासमां युग प्रवर्ती रे'शे नवो।

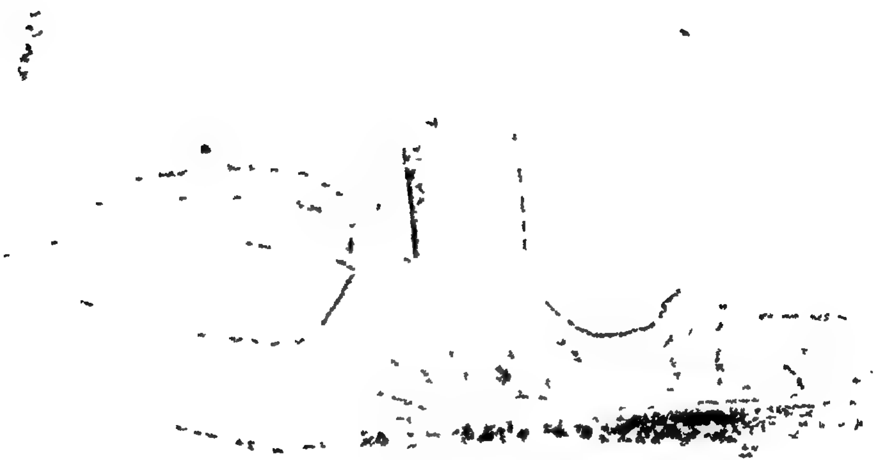
निरन्तर अनंत काल धुधवी रहेशे, अने—
समौन पृथवी नमी नमन कोटि देशे तने !
पिता ! पण नमुंय हु स्मरण-दीपना ओजसे
धरी हृदय मर्मथी तम पदे कविता कली !



राष्ट्रमाता

कस्तूर बा





महात्माजी का सबसे अभिनव चित्र

वाटलें नाथ हो !

कविवर्य श्री भास्कर रामचंद्र तांबे

वाटलें नाथ हो तुम्ही उतरतां खाली ,
दे असहकारिता हाक तुम्हां ज्या कालीं !

हंबरडा फोडी आर्त महात्मा जेव्हा
आघात झेलिले घोर उरावर तेव्हां ,
त्या यज्ञें द्रवुनी गमे धावलां देवा ,
रोकिली आर्त किंकाळीं !

वाटलें उघडिलीं द्वारें तीं स्वर्गाचीं ;
वाटलें धावली माउलि ती गरिबांची ,
वाटलें पलालीं सकल संकटें साचीं ,
गरिबांचा आला वाली !

घेतली धाव हो तुम्ही द्रौपदीसाठी ,
गरिबांस्तव धरिली तुम्ही कांबली-काठी ,
गुरगुरला, होउनि पशुहि गांजल्यापाठीं ,
ती वेळ वाटलें आली !

परि हाय ! कोणतें पाप आडवें आलें !
हा कपाल फुटलें, संचित तें ओडवलें !
परतली माउली, स्वार्थानें अडवीलें ,
आशेची माती झाली !

हा दुणावला हो घोर अता अंधार
ह्या दिशा करिति हो भयाण हाहाकार !
जखडिती पाश हो अता अधिक अनिवार ,
हा हाय गति कशी झाली !

महात्मा काय करिल एकला ?

कविवर्य 'माधव ज्यूलियन्' (डा० मा० त्रिं० पटवर्धन)

जिकडे तिकडे देशभक्त हे आणि पुढारी किती !
युक्तिने महात्म्याच जिंकिती
पैका, पदवी, राजमान्यता यांना मुकल्यावर
थोर ये देशभक्तिला भर
मानपत्र, मिरवणूक, टाळ्या, नावाचा घोष तो
पुढारी या वरती पोसतो
या कुटिलगतींचा द्विजिव्हता सद्गुण
ठेविती तृणतळीं विस्तव विस्तावुन,
मग अजाण दीनावर संकट दारुण !
आट्यापाट्या विवेकाविणें खेळे यांची कला—
महात्मा काय करिल एकला !

प्रिय एकहि नच तत्त्व जीवही घ्यावा ज्या कारणें,
नित्य परि पडती शाब्दिक रणें ;
मर्द यिती उन्मर्द-मताला म्हणुनि सनातन किती
मताचे देव्हारे मांडिती !
तत्त्व मान्य, तपशील न माने म्हणती हे धोरणी ;
नको तप-शील राजकारणीं
सौराज्यशत्रु हे स्वराज्येच्छु फाकडे
हे लोकसंग्रही जनतेशी वाकडे,
हे स्वार्थापुरते वधती धर्माकडे,
काढुन घरच्या म्हातारीचा शूरवीर येथला—
महात्मा काय करिल एकला !

व्यक्तीचे माहात्म्य घालवी असा नियम कां हवा
कुणाला लोकवटीं ! वाहवा !
नीतिकटाक्षहि फक्त लैङ्गिक क्षेत्रापुरता असे,
धर्मही मेघ शोधित वसे
भिन्न स्वांच्या स्वकीयांस या स्वतंत्रता कासया
हवी ती जैसी परक्यांस या !
विद्यार्थिदशेतवि जहाल जे ते किती !

तोंडावुनि कुलुपीं गोके जे फेकिती,
होऊनि थंड मग राज्यदास्य सेविती,
स्वस्थ होउनी शिकोप्यास परि म्हणति 'देश पेटला !'
महात्मा काय करिल एकला !

घेउनि सत्यप्रीति अहिंसा यांचा झेंडा करीं
संचरे गांधी देशवरी,
खादी पटका, त्यावर चरका; अर्धा उघडा गडी
तोंड दे जुलुमाला हरघडी
सान थोर रंजले गांजसे यांना हृदयीं धरी
योग हा अनासक्तिचा वरी
हा क्रांति कराया झटे राज्यघोरणीं
हा पुढें सरे की प्रथम मी पडो रणीं
हा हिरा न फुटणें, हाणा घण रोरणीं।
भूतदयेचा सागर अथवा म्हणा दिसे चेवला,
महात्मा काय करिल एकला !

न लगे शिष्यप्रपंच, होणें गुरु वा पैगंबर,
मानवी किती थोर अंतर।
धर्मवेड कार्धे मनास न शिवे, धन्य खरा वैष्णव,
वाढवी सत्यान्वें वैभव;
कृपण भ्याड ती क्रियाशून्यता तो न अहिंसा गणी,
पाहिजे धैर्य आणि लागणी
उद्योगी भिक्षू, शेतकरी, विणकर,
दुबळ्यांचा प्रतिनिधि, कैवारी, चाकर,
दे बलाढ्य साम्राज्याशीही टक्कर,
राज्यमान्यता, लोकमान्यता यांस न भाळे भला—'
महात्मा काय करिल एकला !'

कटू पथ्यकर सत्य बोलतां भीति न ज्या वाटते,
अंतरी प्रीति गाढ दाटते,
राजनीतिचा रामबाण हा शिकवी—सत्याग्रह—
नवीनच परन्तु न भयावह
परि अनुयायी तोंड देखले भ्याड बोलघेवडे—
संकट ओढविती केवढें।

हे प्रगतिद्रोही फंडगुंड मातले,
हे पोटपुजारी, गुलाम वंशातले,
श्रद्धालु यांहुनि अशिक्षितच चांगले!
हुल्लडहौशी मित्र दाविती अत्यचारे गळा—
महात्मा काय करिल एकला!

महात्मा जीस

श्री साने गुरुजी

विश्वाला दिधला तुम्हीच भगवन् संदेश मोठा नवा,
ज्यानें जीवन सौख्यपूर्ण करणे साधेल या मानवा,
तें वैराग्य किती! क्षमा किति! तपश्चर्या किती! थोरवीं,
कैशी एकमुखें स्तवूं! मिरवतां भास्वान् जसा तो रवी।

आशा तुम्हि अम्हां सदभ्युदयही तुम्हीच आधार हो,
तें चारित्र्य सुदिव्य पाहुनि अम्हां कर्तव्य संस्फूर्ति हो,
तुम्हीं भूषण भारता, तुमच्चिया सत्कीर्तिचीं भूषणें,
हें त्रैलोक्य धरील, धन्य तुमचे लोकार्तिहारी जिणें।

बुद्धाचे अवतार आज गमतां, येशूच किंवा नवे,
प्रेमांभोधि तुम्ही, भवद्यश मला देवा! न तें वानवे,
इच्छा एक मनीं सदा मम, भवत्पादांबुजा चिंतणें,
त्यानें उन्नति अल्प होइल अशी आशा मनी राखणें।

गीतामाझि तुम्ही श्रुतिस्मृति तुम्ही तुम्हीच सत्संस्कृति,
त्यांचा अर्थ मला विशंक शिकवी ती आपुली सत्कृती,
पुण्याई तुम्हि मूर्त आज दिसतां या भारताची शुभ,
धावे दिव्य म्हणून आज भुवनीं या भूमिचा सौरभ।

तुम्ही दीपच भारता अविचल, प्रक्षुब्ध या सागरीं,
श्रद्धा निर्मितसां तुम्हीच अमुच्या निर्जीव या अंतरीं,
तुम्ही जीवन देतसां नव तसा उत्साह आम्हां मृतां,
राष्ट्रा जागविलें तुम्ही प्रभु खरें पाजूनियां अमृता।

तुम्ही दृष्टि दिली, तुम्ही पथ दिला, आशाहि तुम्ही दिली,
राष्ट्रा तेजकला तुम्ही चढविली मार्गीं प्रजा लाविली,
त्या मार्गें जरि राष्ट्र संतत उभें सन्नद्ध हें जाइल,
भाग्याला मिळवील, भव्य विमल स्वातंत्र्य संपादिल।

विश्रांति क्षण ना तुम्ही जळतसां सूर्यापरी संतत,
आम्हांला जगवावया शिजवितां हाडें, सदा राबत,
सारें जीवन होमकुंड तुमचें तें पेटलेलें सदा,
चिंता एक तुम्हां कशी परिहरूं ही घोर दीनापदा।

होली पेटलिसे दिसे हृदयिं ती त्या आपुल्या कोमल,
देऊं पोटभरी कसा कवल मद्बंधूंस या निर्मल,
ह्याची एक अहर्निश प्रभु तुम्हां ती घोर चिंता असे,
चिंताचिंतन नित्य नूतन असे उद्योग दावीतसे।

कर्मे नित्य भवत्करीं विविध तीं होती सहस्रावधीं,
ती शांति स्मित तें न लोपत नसे आसक्ति चित्तामधीं,
शेषीं शांत हरी तसेच दिसतां तुम्ही पसाऱ्यांत या,
सिंधु क्षुब्ध वरी न शांति परि ती आंतील जाई लया।

गाभाऱ्यांत जिवाशिवाजवळ तें संगीत चाले सदा,
वीणा वाजतसे अखंड हृदयीं तो थांबतो ना कदा,
झोंपे पार्थ तरी सुरूच भजन श्रीकृष्ण श्रीकृष्णसें,
देवाचा तुमचा वियोग न कदा तो रोमरोमीं वसे।

वर्णूं मी किति काय मूल जणुं मी वेडावते मन्मती,
पायांना प्रणति प्रभो भरति हे डोळयांत अश्रू किती,
ज्या या भारतिं आपुल्यापरिं महा होती विभूती, तया,
आहे उज्ज्वल तो भविष्य, दिसते विश्वंभराची दया।

अद्भुत रण-संग्राम

श्री आनंदराव कृष्णाजी टेकाडे

१ा प्राण हिन्दभूमीचा
जयघोष स्वातंत्र्याचा
मुखिं करित चालला साचा
स्वातंत्र्य-दुर्ग घ्यावया, मुक्त व्हावया
बंधनामधुनी, जो गळां फांस, चहुंकडुनी ।

जणुं सुदाम-यष्टी ज्याची
परि मूर्ति भानु-तेजाची
तशि पूर्ण चंद्र शांतीची
शोभतो हिन्द-राउळीं, कृष्ण गोकुळीं
श्यामवर्णाचा, हा पुतळा स्वातंत्र्याचा ।

स्वतंत्र्य-समर जे झाले
आजवरी कीं घडलेले
इतिहास-पुराणीं लिहिलें
खड्गांचा खणखणाट, वाहती पाट
तप्त रुधिराचे, पण रण हें बहु नवलाचें ।

कौटिल्य रोमरोमांत
शस्त्रास्त्रे तीक्ष्ण अनंत
करिं सत्ता दृढ बलवंत
हा असा शत्रु सामोर तसा चौफेर
सागरावाणी हा तेथें टिटवीवाणी ।

स्वार्थाग्रणि जगतीं तेंवी
तामसी वृत्ति निर्दयी
पत्थरही लाजे हृदयीं
रिपु मदांध पुढतीं असा पाहिना कसा
पापपुण्यातें हा फकीर केवल तेथें ।

ह्य शत्रू-राहुच्यापाशीं
सांपडुनी भारत-शशी

सर्वथा दीन, परवशी
जो पूर्वी लक्ष्मीघर अस्थिपंजर
आजला उरला बघवे न तया हें डोळां।

कसलें न शस्त्र त्याजवळीं
द्युती नर्म ठावें मुळी
समभाव चित्तमंडली
आत्म्याचें बल एकलें हृदयिं पूजिलें
वर्धिलें ज्यास सत्याची धरुनी कांस।

दीनांचा जो सेवक
धर्माला जो धारक
जो पारतंत्र्य-भंजक
तो आत्म-बला घेउनी निघाला रणीं
धैर्य मेरूचें मुखिं हास्य बालसूर्याचें।

ट विशाल एकीकडे
तृण दुर्बल दुसरीकडे
रिपु असले दोन्हीकडे
क्रोधाग्नि एक वर्षतो दुजा फेंकितो
प्रेम-लहरींस जणुं मृदुल सुमन मानस।

नृप गाधिजाची राजता
ऋषि वशिष्ठाची सत्वता
मधिं कामधेनु भूमाता
ही कथा पुराणीं किती तीच भारतीं
दिसे अजि जगता जय कुणा?—काल ठरविता।

'पारतंत्र्य-नरकामधुन
निज राष्ट्र मुक्त करीन
नातरी मृत्यु कवलीन'
ही अमर प्रतिज्ञा करुनि जाइ तो रणी
घेइ शेवटचें दर्शन निज प्रिय कुटिराचें।

ठाकली द्वारिं रणमूर्ति
तिथें भारत-भागीरथी
द्यावया निरोपाप्रति

सारखा चालुनी गजर घुमवि अंबर
लोकगंगेचा साधूचा, स्वातंत्र्याचा।

कुणि फुलें शिरीं उधळिती
कुणि प्रेमें आलिंगिती
कुणि पदांबुजा वंदिती
कुणि ललना ओवाळिती तिलक लाविती
कुंकुमी भालीं जो सुभग सुमंगल कालीं।

हो दुभंग जन-सागर
पथ धरी धीर गंभीर
अनुचरांसवें तो वीर
तों दुःखसुखाच्या लहरि उठुनि सागरीं
भेटती गगना हालविलें साऱ्या भुवना।

हृदयींच्या आनदाचीं
प्रेमाचीं भक्तिरसाचीं
नयनिं हो गर्दि अश्रूंचीं
जलधारा ज्या वर्षती तयांची सती
निकटिंची सरिता वाटलें तेधवां चित्ता।

इतुक्यांत रवी उगवला
तोंच ये दृश्य हें डोळां
आश्चर्य वाटलें त्याला
शतकानुशतक जाहले नाहि देखिलें
अशा चित्राला जो अवश्य सुखसोहलां।

मथुरेस गोकुलांमधुनी
अक्रूरासवें वज्रमणी
मर्दिण्या निघे खलमणी
तदुपरी दृश्य हृदयिंचें पाहि भुवनिंचें
आजचें असलें म्हणुनि त्या नवल वाटलें।

सन्मनें हर्ष पावुनी
करछत्र शुभद निज तरणी
त्या भक्त-शिरावरि धरुनी
'हा अद्भुत रण संग्राम होउ सुख-धाम
हिन्द भाग्याचें !' दे आशिर्वच द्विज-वाचें।

बंडवाला

श्री नारायण केशव बेहेरे

हा नवा बंडवाला । पुढें आला ।
पाऊल जगाचे पडे यामुळें, तारक हा झाला ।

अंधार पसरला स्वैर,
देशांत माजलें वैर ।
तो वाद फेर-नाफेर
कीं नष्ट करी हा एक कटाक्षें, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढे यामुळें तारक हा झाला ।

धर्मावर झाली स्वार
रूढि पिशाची अनिवार
माजलासे अनाचार
आचार दाखवी खराखुरा हा, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुळें, तारक हा झाला ।

अस्पृश्य दूरचे ठरले
यवनही शत्रुसे गमले
परि इंग्रज हृदयीं धरले !—
पटविला मनाचा ह्रास जनाला, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें यामुळें तारक हा झाला ।

सत्यावर चढलें कीट
पसरला दंभ मोकाट
देशभक्ति हो बेछूट
पेटवी जागती ज्योत सत्यता ! बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुळे तारक हा झाला ।

जाहली स्वभाषा जेर
इंग्रजी चालवी जोर
काढितसे घरची केर
वंदनें मातृभाषेस तुष्टवी, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुळें तारक हा झाला ।

दारिद्र्य लागलें भालीं
पोटाची पेटे होली
देशास दीनता आली
उद्धार-मार्ग दाखवी जनाला, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा झाला ।

दास्यत्व कपाली जडलें
स्वातंत्र्य लयाला गेलें
कांहीं न कुणाचें चालें !
स्वर्गास सुतानें मार्ग दाखवी, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुलें तारक हा झाला ।

हा सुधारकी आगरकर
हा भाषेचा चिपलुणकर
स्वातंत्र्य-टिलक हा नरवर
हा बंड यशस्वी करी जगभरी, बंडखोर आला
पाऊल जगाचें पुढें यामुले तारक हा झाला ।

महात्मन् !

श्री विष्णु भिकाजी कोलते, एम्० ए०, एल् एल्० बी०

महात्मन् ! तुझे नाम येता मुखीं उभे मूर्त पावित्र्य राहे मनी !
गले दंभ सारा नुरे मानही मुके भाव जातात हेलावुनी !

सुखोर्मी मनामाजि येती किती उभी राहती आसवे लोचनी !
तुझी विश्वप्रीती त्रिलोकांतरी जणूं वाहते शुद्ध मंदाकिनी !

तुझा स्वार्थ संन्यास आलोकुनी हरिश्चंद्र जाईल ओशलुनी !
असो शत्रु वा मित्र सर्वासही गमे हर्ष त्वन्नाम-संकीर्तनी !

जगीं धन्य केली तुवा आर्यभू तिच्या कंठिचा दिव्य तू तन्मणी !
तुझे वंद्य चारित्र्य देवो अम्हासदा स्फूर्ति स्वातंत्र्य-संपादनी !

महात्मा गांधी

श्री प्रभाकर दिवाण

हा फाकडा फकीर । चालला नाहीं काहीं फिकीर ।

पायीं साध्यासुध्या वाहणा,
जाड कांबळें शीतवारणा,
टक्कलवाला महा शाहणा,

निःशस्त्राचा वीर ।

देहा वरतीं मुळी न मांस,
अडका नाहीं खर्चायास,
विद्वतेचा जवळ न पास,

परीं असे खंबीर ।

ऐश्या भिकारड्याच्या मागे,
चालिस कोटि जनता लागे,
बादशहाही भिउनी वागे,

नमती मत्त अमीर ।

स्वातंत्र्याचा पाइक निधडा,
गरिबांचा कैवारी उघडा,
सत्याचा मूर्तिमंत पुतळा,

घेवून हाती शीर ।

सत्ताप्रमत्त बोजड घेंडें,
आसामांतिल जैसे गेंडे,
तोडुन टाकुन आपुले शेंडें,

बनती ज्याचे कीर ।

खेडेगांवांत पिकेटिंग

श्री अज्ञात

चला समद्याजनी घरुहरसिनी गं घालवून देऊं।

गांधी बावा आला
तुम्हा सांगून गेला
"घालवा दारुडं" घालवून पाहूं। चला०

पोराविरा दुष्काल
घाटलीचा सुकाल
गुराढोरास इकून देऊं । चला०

आई बाप न्हाई
सासु सासरा काई
बायको दिली न ध्यानात राहूं। चला०

असली कसली दारूं
चला दुकान घेरूं
गांधी बा बा चा जय जय बोलं। चला०

तो पहा महात्मा आला

श्री विठ्ठलराव घाटे

[आसमांतील चहाच्या मलयांतील एक करुण कहाणी ! महात्माजींचे नांव ऐकून जीं कुली स्त्री-पुरुषें आपले काम टाकून भयंकर जंगलांतून मार्ग काढून चांदपुरास येऊन पोंचलीं, त्यांच्यांत खालील गीत गाणाऱ्या अनाथ लेकुर वाचया धष्टिचा समावेश केला आहे ।]

कां उगा विलगसी राजा ! स्तनिं दूध कुठोनी यावे !
चार दिवस झाले पुरते भाकरिचें नांव न ठावें,
चीत्कार मत्त हत्तीचे कानावर यावे जावे
चाललो परी नेटानें कीं गांधीजींस पहावें

घेउनी नांव गांधींचें,
सेविले कंद रानींचे
प्यालों पाणी ओढयांचें,

आसाम पालथा केला, तो पहा महात्मा आला!
तो मला चहाचा कसला, तो नरक याच लोकींचा,
देतात गरिब गरिबाच्या जाव जेथ बा! पापाचा,
काला वा गोरा असला भेद भाव तेथें कसचा,
श्वनलोभें आत्मा काला वाला झाला दोघांचा

धनिकांनी सुख भोगावे,
गरिबांनी कष्टी व्हावे,
हे कसें बरें चालावें,

तो काल बदलला गेला तो पहा महात्मा आला!
गरिबांची मूक तपस्या वाढली, नभाला भिडली,
जुलुमाचे आसन हललें इंद्राची मांडी चलली,
गरिबांची उष्टीं बोरें देवाला ज्या प्रिय झालीं,
तो करुणासागर द्रवला ही यज्ञमूर्ति अवतरली!

डामडौल नाहीं बा रे!
खादीचे कपडे सारे
नच वहाणही पायीं रे

गरिबांचा राजा असला तो पहा महात्मा आला
त्या कृश खांद्यावर भार तेतीस कोटि दुःखांचा!
त्या निश्चल निष्ठुर नेत्री घोर आपुल्या अन्नाचा
मानेवर डोंगर थोर हिंदूच्या गतपापांचा!
हासरा परी तो अधर हासवी द्वेष दैन्यांचा

त्या विशाल हृदयपाशीं,
आसरा गांजलेल्यांशीं
झुलु, महार वा मांगाशीं

त्या आणण्यास चल बाला! तो पहा महात्मा आला!

हे विश्वमानव !

श्री ना० ग० जोशी

प्रकृतीच्या क्षुब्ध सागरांतरीं, शेषशय्येवरी
योगनारायण योगनिद्रेमध्यें तल्लीन होतां
नाभिविवर्ती उमललेल्या,
कांचनगंगा शैलावरल्या संध्येप्रमाणें रंगीं रंगल्या,
अनंतदल कमलावरी
तुझा झाला केवी प्रथम उद्भव
हे विश्वमानव !
चैतन्याचे चार सजीव अणु—
असंख्य सूक्ष्मसे चेतनकोश—
एकांतून दोन, दोहोंतून चार, बहुत्व पावले,
"एकोऽहं बहु स्यां, प्रजायेय"—
उत्कट झाली अनंत अणूस सृजन-इच्छा,
एकांतून द्वैत निर्माण झालें—
त्यांतून तुझें विकासले द्वन्द्व गूढ अपूर्व,
हे विश्वमानव !
ज्ञानमय नी विज्ञानमय,
सत्-चित्-आनंदमय,
आदिकारण परमब्रह्म,
विश्वसर्जनाच्या उन्मादामध्यें बेहोष होतां
कल्पनाकंपाच्या लहरीमधून एक तरंग अवकाशांत तरंगला—
अन्ज सूर्यांच्या कीं ब्रह्मांडव्यापी स्वयंसंचारांत
इन्द्रगतीतून निखललेला,
परागतीतून स्वयंगतीमध्यें येऊन ठेला,
विश्वाकर्षणांचा कोणी सूक्ष्म अंश-अगम्य, अनन्त
वातावरणांत गरगरला,
इन्द्रीयविहीन सजीव अणूंत मिळून गेल,
अन् झाला तेथें "संज्ञेचा" प्रभव,
हे विश्वमानव !
सूक्ष्म बीजांतून
दण्डकारण्यांत कबीरवड भव्य जन्मले,
आमाझोनच्या विस्तीर्ण खोऱ्यात देवदारवृक्ष विस्तार पावले,

कॉंगो दरीमधें दुर्गम भयाण जंगल गुंतले;—
तैंवी संज्ञेचा रेशीमकोश
तरल, तलम, विकासमान
अगम्य तंतूंनीं गुंतगुंतला,
असंख्य युगांच्या परिवर्तनांत पूर्ण जाहला,
जनावरामधें वानर तेथून नरयोनींमध्यें विकास पावला—
जीवनसंज्ञा-समूहमति-सामर्थ्यकल्पना
ऐशा गर्तीतून प्रगत जाहलें, श्रेष्ठत्व पावलें,
विवेकरूपी तुझेंच गौरव
हे विश्वमानव !
पर्वत-पहाडीं धातू अन् पत्थर,
भीषण अरण्यीं जीव-जनावर,
बर्फाल बेटांत मत्स्य नी आस्वल
यांच्याच सांगातीं विकासे नटला तव संज्ञालव
हे विश्वमानव !
बुडबुड्यांत भव-उषेचीं पद्में उमलावीं आणि कोमेजावीं,
वाळूच्या कणांत नन्दनवनें बहरें खुलावीं आणि करपावीं,
चकमकीतून ठिणगी पडतां सूर्यमाला तेथे प्रज्वलवी नी विरून जावी
तैशा मिसर, मय, असुर, रोम, यवन,
पर्शु, सिंधु, जावा, द्रविड, चीन,
स्थलो-स्थलींच्या संस्कृति जन्मल्या, विनष्ट झाल्या !
अपार अंबरीं निर्वात जागेंत
स्वैर उल्का-ग्रह अज्ञातपणें भ्रमण करीती,
त्यांतलि काही क्षण दिसावे नि अदृश्य व्हावे
तैशा फुररल्या जीवसागरीं विस्मयकारी तरंगरेखा,
तीरास येऊन स्थिरावल्या आणि फिरून मूलांत विलीन झाल्या
संस्कृति चक्राच्या वर्तुलगतींत
अनेक आले प्रलयकाल,
सुमेरु-मंदार बुडून गेले
आन्डीज-आल्प्स नी हिमालय हो थाकुटे झाले, लोपून गेले;
त्यांच्या शिखरीं-उंच खांबाला,
बांधीली नौका
मनुमुनीने-पण्य नोआने !
प्रलयसागर ऊसळून येतां महापूर घोर विश्वांत पसरे
तयांत सारे हे उंच शैलही कंप पावले, लहाले बनले,

त्यांतही टिकून, तगून राहून,
पुन्हां तूं निर्मिलें आपुलें वैभव
हे विश्वमानव !
निसर्ग शक्तीशीं दुर्धरसंग्राम
अन्योन्य कलहीं स्वार्थी कालक्रम,
व्यक्ती तरीही जीवनासाठीं चालवी सारखा संगर सूक्ष्म,
आणि शेवटी असीम तृष्णा भयानक करी संहारकांड
तेव्हां कुठेंसा मोक्षमंत्राचा आयकूं येई अस्फुटरव
हे विश्वमानव !
जड सृष्टीमध्ये उपजे चेतन,
चेतनामधून मानवपण,
माणूसपणाला देवगण थोर आणायासाठीं
कुणी सोशीती
जीवनविकासी टाकीचे घाव
ऐके कोण परी ! उसंत कोणास !
पंचभूतांचे तांडव चालतां हिमाद्रिदरींत
बिजली चमके पिवली-नीली, कडाड करी मेघांच्या उदरीं,
तयावेली जरी गुहेतून कोणी आदेश करी योगीन्द्र-देव
काय त्या वाणीचा तेथे ना प्रभाव
हे विश्वमानव !
पंचभौतिक वासना नाचती उघड्यानागड्या बेहोष होवोनी,
तयानां झांकाया विणीली ओढणी
सुंदर, मोहक, तलम धाटणी
मानव्याच्या अन् लोकशाहीच्या मोठामोठाल्या गोड वल्गनांची !
नजरबंदी त्यांची विषारी
झांकून झांकेल केवी नाशकारी—!
परंतु नाही विवेकाची आतां उरली जाणीव
हे विश्वमानव !
असंख्य युगींचा चक्रनेमिक्रम
भिरभिर फेऱ्या अशाच करील
प्रलय पुन्हा नवसंस्कृतीना ग्रासून टाकील
परंतु शेवटीं संज्ञाशक्तीचें आत्मज्योतीशीं होईल मीलन
तेव्हांच मूलचें एकत्व तूझें दीसेल जगतीं पुन्हां अभिनव
हे विश्वमानव !

मार्क्स व गांधी

श्री प्रभाकर माचवे

दाढीचें जंगल, भयंकर तोंडाचा, यहुदी तो मासला
खादीच्या पंच्यात गुंडाललेला हा हाडांचा सांपळा!

रक्तप्रिय एक, दुजा वैष्णव अहिंसाभक्त,
फक्त वेष-देशांतर, नाहींतर कोणाला

म्हणू जास्त मी सशक्त?
दोघेही सारखेच जगता विटलेले
दोघेही सारखेच जगता चिकटलेले
मला तरी दोघेही सारखेच पटलेले

एक अश्रुपूजक, तर दुसऱ्याचा अश्रुद्वेष,
दोघांना एक वेड, दोघांना प्यार देश!

दोघांचा एक दोषः श्रम आणि आश्रम या कल्पिल्या देवता,
दोघेही पडलेत रणभूंत सत्यशोध करतांना चैतन्य-ज्योत

नित्य तेवतां!
दोघेही अद्वितीय, दोघेही एकटेच,
दोघेही अर्धसत्य, दोघांना लागे ठेंच।

दोघांना एक पेंच—
मानवमानवगत हें वैषम्य होईल कैंचे दूर
एक म्हणे 'क्रोध नको' दुसरा—तो तर 'जरूर',

'क्रूरपणा व्यर्थ कां करा सबूर',
'रणतूर्य वाजले ते, थांबणार कसे शूर!'

एक संत, सेनानी दुसरा, दोघे थकले चकले पुरे.
जगगोल तैसाच फिरत राहिला नकले कैसा अरे!

आजच्या जगांत अम्हां
दोन्ही अपुरे अगदीं
आजच्या जगांत अम्हां सत्य पाहिजे नगदीं .
ते प्रयोगशाळेंतील सत्य नको,
पाहिजे तर खण् खण् खण

वाजेल नाण्यांच्या-शस्त्रांच्या-बेड्यांच्या तालावर
माजेल जेव्हां रण;
आणि अरुण रक्ताच्या तरुणांचे
तांडे त्या वेड्यांच्या
नादांत जातील संरक्षण
करण्या निज जन्मजात हक्कांचें
जन्मजात आकर्षण !
होईल मग घर्षण
आणि जी उठेल् ठिणगी

त्यांत शेंकडों असले मार्क्स अन् गांधींचे अनुयायी होतील भस्मसात्,
जग फिनिक्स पक्ष्यासम ज्वालापूत होइल्, अहा !

सांगावें कुणी तें भविष्य निश्चयें-करुनी
तुका म्हणे 'पहा, पहा'
होईल जे कांहीं ! (जगुनी कीं मरुनी !)

गांधी-अभिनंदन

डॉ० माधव गोपाल देखमुख, एम्० ए०, पी-एच्० डी०

बहु शीण वीली काया: लोकां लावीयली माया ।
बीजफल देखावया, हो चिरायु, गांधीराया !

येशू-बुद्धां भाग्य न हें, कोण जीवन्मुक्ति पाहे !
याच देहीं याच डोळां, भोगीं कीर्तीचा सोहळा !

करूं देव कृपा थोर, येऊं दिन वारंवार ।
हाच भक्ति भाव भोळा, अर्पितो मराठमोळा !

युगावतार

श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र

दुष्कृत विनाश सन्थजन परित्राण,
कारणे धरारे अवतरि महाप्राण।
स्वर्गर बारता घेनि आहे देवदुत,
पुण्य भूमि भारतकु करि अछ पूत।

धर्म संस्थापन पाइँ युगे युगे यहिं,
अवतरि ऐशी शक्ति उश्वासइ मही।
सव्यसाची! करिअछ स्तम्भित जगत,
लभिछ तपस्यावले अस्त्र पाशुपत।

अजेय "अहिंसा" बाण—महाशक्ति धरि,
करे शत्रु संमोहन कल्याण बितरि।
भारतर येते दुःख येतेक वेदना,
येतेक आकांक्षा, आशा, कर्म ओ साधना।

येते भूत, भविष्यत, येतेक अतीत,
टुल होइ तुम्भठारे हेला रुपायित।
'बिपद' पारिनि करि चित्तकु बिकल,
'भीति' हरि नाहिं तव हृदयर बल।

छुइँनि "कल्पना" सीमा केबेहें "हताशा",
नुहेंकि व्यर्थता, भीरु, कापुरुष भाषा।
जाणिछ निःसंग कर्मे नाहिं पराजय,
रखिछ ईश्वर जेणु जीवन्त प्रत्यय।

हे मोहन कि मोहन मन्त्र देइ चालि,
भारतर बक्षेदेल अग्निशिखा ज्वालि।
जगाइल कोटि कोटि प्राणे उद्दिपना,
खेलिगला सारा देशे तत उन्मादना।

तुम्भरि साधना फले आहे भगिरथ,
प्रेम मन्दाकिनी धारा प्लाबिला भारत।
हिमाचल्लु कुमारीका अखंड मण्डले,
महा मुक्ति मन्त्र कम्पि उठिल उच्छले,

बिन्ध्यगिरि शृंगे तार मन्द्र प्रतिध्वनि,
गम्भीरे उठिला गर्जि बिज्वलि अशनि।
गहन मानव धर्म आचरि आपणे,
शिखाइल मानबर आदर्श जीबने।

सत्यर महिमा आपे करिण परीक्षा,
जगत जनंकु देल सेहि मन्त्र दीक्षा।
बिभासिला दिशि दिशि सत्यर आलोक,
अमृते उठिला पूरि द्युलोक, भूलोक।

हिंसा, द्वेष, तापक्लिष्ट मानब सन्तान,
लभिला परम शान्ति करि तहिं स्नान।
हे महर्षि, जगत्गुरु हे महामानब,
सहस्र प्रणति मोर श्रीचरणे तब।

सत्य, शिव, सुन्दर

श्री गुरुचरण परिजा

सत्य त तूमे—तूमेइतशिब—सुन्दर महीयान,
तूमे त स्रष्टा—तूमेत रुद्र—तूमेइ त भगवान।
बिप्लबी तूमे रचिल प्रलय सुप्त ए धरातटे,
तूमे त करिल संचार आशा लक्ष जीबन पटे।
तूमे त करिल रुग्ण माटिकि नवीन शक्तिदान,
उषर धरणी सबुज करिल मर्त्यर भगबान।

ओ तब चरणुँ जन्मिछि आजि ओ युगर इतिहास,
मन्त्र तूमरि करिछि धरारे लक्ष जीबन न्यास।
ओंकार तब शुभेदेशे-से ये साम्यर महागीति,
संधाने थार आगन्तुकिर सुन्दर परिणति।
ओहत तूमरि सत्य साधना ओहत अमरदान,
चिर सत्यहे—हे चिर बिजयी-नित्य हे बलीयान।

नुओँइछि मथा हिंसार युग तूमरि चरण तले,
तुहाइ तुहाइ ताहारि कलुष बक्षे जले।
आपणा हस्ते जलाइ आनणे माटिर कलुष भार,
मै त्रीर बीज माटिरे बुणिछ सत्यर अबतार।
ओइ माटि तुले उठिब तदिने मुक्तिर महागान,
हे चिर रुद्र—चिर बिप्लवी—जय तब अभियान।

ओकइ बपुरे ठुलत करिछ बुद्धर महागीति,
कल्याणकर नानकर बाणी, खीष्टर परिणति।
अंगरे तब जडाइ रखिछ राणा प्रतापर आशा,
देश मातृकार गौरब आशे, महा बेदब्यास भाषा।
गुंजरि उठे कठरे तब मन्त्रसे महागान,
नित्य हे तुमे—चिरबिप्लबी—मर्त्यर भगबान।
सत्य हे तुमे—मंगलमय—सुन्दर महीयान।

गान्धिजी

श्री नित्यानन्द महापात्र

भारत रक्त-शताब्दी गते अतीत बक्षे लिभि,
उदिछ योद्धा तब नामे बाजे डिंडिम डिम्बिडिबि।
तब नाम आसे सागर सेपारु मौसुमी सने भासि,
तब नाम गाओ हिमालय सीमा तरल तुषार राशि।

समर सज्जा नाहिं तब आजि मज्जा चरम सार,
तथापि देहर प्रति पन्जर ऋषि दधिचीर हाड।
कला मथा परे सहि सैनिक गर्बी गोरार लाठि,
तेजियाइ नाहिं उपनिवेशीर निग्रोदेशीय माटि।

देश भाई सने निग्रह नेल हषि हसिनि जे सहि,
बुझाइल बीर शीतल रक्त समरे सत्याग्रही।
दुर्बल परे पशुबलीदल-पीडन चम्पारने,
देखि अभिनव निर्माणकल निरस्त्र महारणे।

इसलाम परे आफत् देखि ये खिलाफत् कला जान,
"अेकताहिबल" अे कथारे योखि हिन्दु-मुसलमान।
पर उपकारे पेशि भारत रु योद्धाये जरमाने,
जालिआना वाला नाला मईदान ज्वाला पाइ प्रतिदाने।

तथापि घरिला अहिंस भावे अस्त्र असहयोग,
सत्यहिं तार जनम साधना कर्महिं उपभोग।
सर्कारकर अर्द्दलि येबे हाहाकार रब—
पडे, जगाइच बद्दोलि देशे सर्द्दार बल्लभ।

भारतर मोति भारत जद्दर जलि उठि तबडाके,
जड जगतर युबक जीवन जगाअे दुर्बिपाके।
आरब सागर ढेउरे ढेउरे शब भसाइबा पणे,
बद् लुणकर रद्‌कल थाइ आइन् अमान्य रणे।

सुप्त भारते लुप्त बिभब चर्खा फेराइ आणि,
स्वदेश प्रीतिर निर्देशे देशे घोषिल मन्द्रबाणी।
"भारतर येते भो की शोषि अछ्र आस आजि दले दले,
स्वदेश हिं धन, स्वदेश स्वाधीन कर स्वदेशीर बले।

हकारि कहिछ, "स्वाधीनता अटे हक दाबी मानबर,
प्राण देइ आण नाहिं तहुँ बलि पुण्य अधिकतर।
भय ठारु बलि पाप नाहिं आउ, निर्भय स्वाधीनता,
स्वाधीनता अटे स्वपथे चलन आत्मनिर्भरता।"

शिखाइछ तमे दुर्बल जने "आत्मशक्ति" बल,
शत्रु हृदय जय करिबार अभिनव कउशल।
धन्य हे आजि जगत धन्य तमर् आलोक लभि,
नब भारतर प्राची नमे तमे प्राचीन अरुण छबि।

चातुर्बर्ण्य भूलि येबे आजि अबनत भारतीय,
आदर्श तमे शुद्र, बैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रीय।
संयत यार प्रति इन्द्रिय संयमी फल त्यागी,
प्रतिष्ठा येहु जीबन करिछि भारत मुकति लागि।

अरट याहार आदरर धन खद्दड यार प्राण,
हरिजन यार बुकुर बेदना सेबायार सम्मान।
उदिछ हे तमे आदर्श ऋषि भारतरहितकारी,
गरीबर सखा गरीबर धन दीन दीन कौपीन धारी।

जगत आगरे बीर सन्यासी थोइ आजि नूआ रीति,
गंगा, यमुना योग कराइछ धर्म ओ राजनीति।
जनमिछ तमे परमहिन्दु संयमी चिर त्यागी,
जगतर आजि द्वितीय खीस्ट प्राण देइ पर लागि।

सत्य पाइँ कि करिछ लढाइ कोरान धर्म भाषि,
धन्य हे तमे शाबरमतीर नव तन सन्यासी।
सबु जाति सबुधर्मर येते भारतीय नर-नारी,
गाअ आजि सबु गान्धिर जय-नव-जीव-संचारी।

भारतर कोटि गरीब दुःखी पाइँ यिए कान्दिछि,
अत्याचारित पीडितर सखा सेहि तम गान्धिजी।
पतितोद्धार पाइँ उपबासे तिल तिल दिए प्राण,
गाअ गाअ सेहि गरीब बन्धु गान्धिर जय गान।

तेत्रिश कोटि भारतीय प्राण गाअ आजि समुदय,
गाअ गाअ सबु, उपबासी बीर गान्धिर जय जय।
भारतर कोटि गरीब दुःखी पाइँ यिए कान्दिछि,
अत्याचारित पीडितर सखा जय जय गान्धिजी।

बापू क प्रति

श्री नर्मदेश्वर झा

'मास भादर' दुर्दिन-सम 'बादर'
गरजइछल, मेटइछल 'दुःखक न
ओर'; कंसक पापसँ कपइत
छल भारत; बन्दी छल सम लोक,
भाग देशक, ग्लानि छल धर्मक;
जे दिन तन घए आएल रहथि गोपाल।

दासत्वक आतंकें जे दिन द्वीप हमर
बनि गेल, बिन प्राचीरक जेल, कैदीक
न्याय भेल बन्द सबहिं-टा द्वार; मात्र
अपमान भेटल उपहार सकल सेवाक;
जखन भादब छल संसारक
आएल रहथि बापू, आइ पचहत्तरि बीतल।

सिखने जाइ छलहुँ हम नव-नव पंथ
परक, असत्यक; बिसरल परम—
स्वधर्म। दासत्वक जञ्जीर कसने
जाइछल जीवनक कंठ
जे दिन वेणु जकाँ बाजल
चरखाक गान, गाम गाम में देशक।

उगला दिनमान, प्रकाश भेल,
चिह्लहुँ स्वदेश। अपन पथ
घएलहुँ, खोलि विदेशक बन्धन
जे सभ स्वयं बनओने घलहुँ;

विदेशी पहिरब, भाखब, सोचब
ओ सपनाएब। सभ स्मरण भेल;
के थिकहुँ ? की भेलहुँ ? की करु
आब उपाय उघारक लेल ?

बापू अहाँक पथ अनुसरि एहि
क्षुधा-क्षुब्ध जन-देवक पेट भरल,
लज्जाक निवारण भेल। मंगलक,
मन्दिरक द्वार खुजल, हरिजनक लेल।
ऐक्यक प्रसाद सभ पाओल। सत्यक,
उपवासक सभ प्रयोग अपनेक, देशकें
शुद्धि देल। मन पड़ल भाइ, जागल देहात—
सूतल जीवन ई देशक, टूटल कत जञ्जीर।

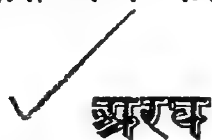
ई पुण्य पर्व; बापूक नवकला प्रकट
भेलि; बीतल पचहत्तरि बरख। बापूक लेल
की पचहत्तरि, की सए। कालक बन्धनसँ ओ
ऊपर छथि; भारतक—महाभारतक—महात्मा
चिरपुराण, छथि चिर-नूतन, चिर शाश्वत।
ओ नेता, भारत आत्मनिष्ठ, अछि
समाधिस्थ, अछि चिर-विमुक्त,
पशुबलक पहुँचिसँ ऊपर।

बापूक लेल मधु वात, सिन्धु, निशि-वासर,
रवि, तरु, व्योम; सकलमधुमय भए जाइन्हि—
अमर आशीष देथु। जीवनक सत्य ओ
पाबि जाथि। बापूकें पाबि-ईश्वरक
अमर आशीष पाबि—हम धन्य भेलहुँ,
जग धन्य भेल। आइ कए
काव्य-चरित्रक बन्दन ई अगणिता—
मैथिली धन्य भेलि।

गांधी रो गजब

श्री कविराज नाथूदान महियारिया

फौजां रोकै फिरंग री, तोकै नह तरवार।
गांधी, तैं लीधो गजब भारत रो भुज भार।



अरघ

श्री मातादीन भगेरिया

थे विदरोही छो जदी, हिवड़ां रा समराट ;
तो वाग्यां री भीड़ सूं, द्यां जेलां नै पाट।
लाजां थां पर वारतां, गज-मोत्यां रा थाळ ;
वारां थांरा त्याग पर, म्हे प्राणां री माळ।
निकलै थांरा हीव सूं, काचो सत रो तार ;
भारत-हिवड़ा-चक्र रो, तूंई सूत्राधार।
भारत-हिवड़ा स्यारखै, टूट्या हळ नै आज ;
जोतै तूंई खेत मैं, बूढ़ा हाळी-राज।
नन्दन बागां सूं अठे, परकोटां नै लांघ ;
क्यूं तू कूद्यो भूम पर, ओरै बूढा बाघ।
सुधा-देस रा पावणा ! ओ हिवड़ां रा साह ;
बागी मिनखा-लोक रा, क्रान्ति-बाल रा नाह।
बागीड़ा ! थांनै अठे, बांध घरांला जेल ;
उथल पुथल थां सूं मचै, विगड़ै म्हारो खेल।
नहीं चढावां "क्रूस" पर, घणी बड़ी या बात ;
गीत प्रात रा क्यूं सुणै, म्हांरी मीठी रात।
क्यूं विख पीवो रात-दिन, कांई थारी बाण ;
थे ना जोगी सेवड़ा, तजो न कुळरी काण।
म्हारै हिवडा गरळ रा, प्याला भर्या हजार ;
हार न जाज्यो पीवतां, करां घणी मनवार।
हिवड़ै-नीरधि सूं भरी, मधु-निधि वेसम्मार ;
कितणा खेनां छै पडी, जीवण-धार अपार।
जड़ मूल्यां रा भोड़ सूं, छै थाकेला प्राण ;
नव विहाण रा दूत तूं, थे जीवन रा गान।

साबरमतीअ जो सन्त

श्री किशनचंद तीरथदास खतरी 'बेवस'

तू करोड़ें हिन्दवासिनन जे ज़बानन जी ज़बान ;
तूहँजी ख़ामोशी बताए तेज़ तूफ़ानी ब्यान।

मुर्क तुहँजे में समायिल सरसुदरदी दास्तान ;
तहँजे पेशानीअ मंझाँ साबत सचाईअ जो निशान।

पाँग ते परला वठी पोइ की बि कहँणीअ साँ कहें ;
सो चँवण चाहें न बिए खे जो न खुद रहणीअ रहें।

वीर! कुरबानी-मन्दिर में दरद जे देवीअ अग्याँ ;
छा न छा भेटा धरी तो शौक़ ऐं पूरद्धा मंझाँ।

दिल, दिमाग़ ऐं बल, बुद्धि, जिंद, जान चादिह्य चाह साँ ;
माल मिलक्यित ऐं कुटुंब परवार मुलकी प्यार तां।

आदर्श ओडो अमुल हीरो हयातीअ जो रखी ;
सूर सेजा तॉ शहादत जी मिठी माखी चखी।

तो जडहँ जाच्यो गुलामीअ जे मुंमयल तसवीर खे ;
कारगर जातो न की शमशेर या तक़रीर खे।

माठ साँ मेटण धुरियो तदबीर साँ तक़दीर खे ;
रमज़ साँ टोड़ण धुरियो हिन ज़ुल्म जे ज़ंजीर खे।

ज़ोर जिसमानी लडे, तो राज़ रूहानी सल्यो ;
ऐं अहिंसा जो नओं हथ्यार हैरानी सल्यो।

मग़रबी दुनियां रुनी थे जग जूँ सख़्तियों सह्यो ;
लड़क नेणन मां वह्यो थे, ख़ून ज़ख़मन माँ वह्यो ।

जिन जया थी जंग खे पाणां पटँण लै पे पह्यो ;
ओचतो आवाज़ हि कन से अचि तिन जे रह्योः ।

क़ामयाबीअ लाए कीन्हें ख़ून हारिण जो ज़रूर ;
तेज़ तोवन सॉ मरण जो ऐं न मारण जो ज़रूर ।

थो तके तुहँजे तहरिक ते मथों शमसो क़मर ;
तुहँजे हलचल तें फिरे थी खास दुनिया जी नज़र ।

आहे आइन्दा ते हिनईं आज़मूदे जो असर ;
सोभ तुहँजी सहकंदण संसार ख़ातर ख़ुशख़बर ।

जंगजू तबीयत जो थ्येंणो आहे इन्मा खातमो ;
काव शाही कीन खूणॅदं। खून नाहक जो ज़िमो ।

तुहँजे हिम्मत जे अग्यों मुशकुल न पहुचण कोह काफ़ ;
तुहँजे खामोशी तरीको ख़ूनरेज़ीअ जे खिलाफ़ ।

तुहँजे पासे प्रेम, ऐं पाकीज़गी, इनसाफ़ साफ़ ;
तुहँजे साथिन जी सफाई आहे शीशे खा शफ़ाफ़ ।

चोट तुहँजी नाहि कैंभी ख़ास सांया आम सां ;
थो लड़ीं आला उसूलन ते सृष्टी खाम सां ।

पैंजे ऑडुर जो इशारो कर सँभाले गौर सां ;
आहे हि तुहँजो इशारो खास ग़ैबी ज़ोर सां ।

जे हली थ्यो हुकुम हेकर कहें मुख़ालिफ तौर सां ;
हिंदसागर ऐं हिमालय टकरंदा शह शोर सां ।

हिन इशारे डे डिसन थ्युों अज अखियों केईं करोड़ ;
हिन इशारे ते खजन बाहूं सज्यों केईं करोड़ ।

जैं जे रुहानी रहत में आहे "बेवस" सादगी ;
बैं जे चेहरे जे चिमक मां आहि ताबां ताज़गी ।

जें जे ख़लक़त में न कैंहँ लै नफरती नाराज़गी ;
आहे तैंह साबरमतीअ जे सतजी आज़ादगी।

ताजु आज़ादी धुरे भारत, ढकण तुंहजे हथॉ ;
आहे हिन्दुस्तान खे अज लाड लॉगोड्ये मथां।

गांधी-जयन्ती

श्री श्रीकृष्ण कृपालानी

जे विधाता वइल क्या भारत जे सुभाग् सॉ,
जे अज् लडे व्या राजर्षि एं सूरमा,
जे सभ् डींहँ पित्र्य् पाण खे
डंभी दे डुहाग् खे,
त बि हिक डींहुं अहड़ो आये।
जो इतिहास ग़र्क़ वरायो
एं नकुलन जे निभाग् में असुल वरी आयो।
अज् नाह् को गुमान् भारत जे भाग् जो।
तो मोटी डिनों डुहाग्यून विन्यायल सोमान्
हे भारत जा अगवान्!
हे ईश्वरी रथवान्!
हिन् सत्याग्रही युद्ध में अ ... महन्दारी!
तुहिंजे रथस्वारिय गीदी क्या अज् गाण्डीवधारी।
जे तो नाह् साण
को अरजुन धनुष बाण,
जे तो मोटी विधि म्याण में शिवाजीय तलवार,
तबि बेहथियार
तो अहिड़ी आह दहशत
जो कंबे तुहिंजे नाम ते थी शाही सुल्तनत।
अज् तुहिंजे जनम आह
ए हीणन् जा हमराह!
तुहिंजी सची जयन्ती
आह विधाता खे वेनती
त ओहे सूर सहाय जिनमां उतपन थ्यन सूरमा,—
इहो भाग् भारत जो जो सच विलोड़य् सूर मां।

गांधी

कविवर्य श्री सुब्रह्मण्य भारती

वा.घ्ह नी एम्मान इन्द वैयत्तु नाट्टिलेल्लाम
ताष्वुट्रु वरुमै मिञ्चि विडुतलै तवरिक्केट्टु
पा.ष्पट्टु निन्रदामोर भारत / देशम् तन्नै
वा.ष्विक्क वन्द गांधी महात्मा जी वा.ष्ह वा.ष्ह।

अडिमै वा.ष्वकन्निन्नाहार विडुतलैयान्दु शेल्वम्
कुडिमयिलुयर्वु, कल्वि ज्ञानमुम कूडियोङ्गि
पडुमिशैत्तलैमै एय्दम पडिक्कोरू सूष्चि सेय्ताय
मुडिविलाक्कीर्ति पेट्राय पुविक्कुलो मुदल्मै पेट्राय।

कोडिय वेन्नाग पासत्तै -माट्र मूलिगै कोण्र्न्तव नेन्गो,
इडिमिन्नल काक्कुम कुडैसेय्तानेन्गो, एनसोलिप्पुकष्वदु इंगुनैये,
विडिविलात्तुन्वम सेय्युम पराधीन वेम्पिणियहट्रिडुम वरणम
पडिमिसै पुदिताच्चालवुम एलिताम पडिक्कोरु सूष्चि नी पडैत्ताय।

तन्नुयिर पोल तनक्कषि वेण्णुम पिरन्नुयिर तन्नैयुम करुत्तल
मन्नुयिरेल्लाम कडवुलिन वडिवम् कडवुलिन मक्कल एन्रुणर्दल
इन्नमेय्ञानत्तुणिविनै मट्राङ्ग किषिपडुपोर कोलै दण्डम्
पिन्नियै किडक्कुम अरसियल तनिल पिरौच्चिडत्तुणिन्दनै पेरुमाल।

पेरुंकोलै वषियाम पोर वषि इकष्न्ताय अदनिलुम तिरन पेरिदुडैत्ताम
अरुकलैन्नाणर मेय्त्तोण्डर तंगल अर वषि एन्रु नी अरिन्दाय,
नेरुंकिय पयन सेर ओत्तुषैयामै नेरियिनाल इन्दियाविकुं
वरुदगहि कण्डु पहेत्तोषिल मरन्दु वैयहम वाष्ह नल्लरत्ते।

उत्तमन् गांधी

श्री रामलिंगम पिल्ले

उललम् उरुहुदु कल्लम् करुहुदु
उत्तमन गांधियै निनैत्तु विट्टाल
वेक्कम पेरुहिड कण्णीर वरुहुदु
वेर्क्किदु इन्बम् तेक्कुदडा ।......

चित्तम् कलिन्दुल पित्तम तेलिन्दिडुम
शीरियन गान्धियिन पेर शोन्नाल
पुत्तम् पुदियन मुट्रम इनियन
पोङ्गिडुम उणर्चिहल् येंगिरुन्दो ।......

किलर्चिकोण्डान्मा पलिच्चेन मिन्नुदु
किष्वन गांधियिनपषमै शोन्नाल
तलच्चिहल नींगिय वलर्चियिल् ओगिय
ताट्टिहम् उडलिल् कूट्टुदडा ।......

शोट्रैयुम वेरुक्कुदु काट्रैयुम मरक्कुदु
शुत्तनकांदियिन शक्ति शोन्नाल्
कूट्रैयुम मिरट्टिडुम् आट्रलैत्तिरट्टिड
कूडुदडा मनम् तेडुदडा ।......

तूक्कमुम कलैन्ददु एक्कमुम कुलैन्ददु
तुन्बक्कनवुहल् तोलैन्ददडा
वाष्क्कयुम तिरुन्दिड नोक्कमुम् विरिन्ददु
वल्लल् कांदियिन निनैप्पाले ।......

वञ्जनैनडुंगिडुम, वेञ्जिनम अडंगिडुम
वाष्मयिन गांधियिन तूय्यै शोन्नाल
अन्जिन मनिदरुम केञ्जुदल इनियिल्लै
आण्मैयुम अन्बुम् अरुलुमडा ।......

जीवर्हल् उलहुल्ल यावरुम् सममेन
शेय्हैयिल काट्टिय गान्धियडा
पावमुम पषिहलुम तीविनै वषिहलुम्
पदुंगुमडा, कण्डु ओदुंगुमडा।......

ये,षुब्रदुम नालुम् कुष् कुष् वयसिनिल्,
एन्ने गांधियिन इलमैयडा,
मुषुवदुम अदिशयप्पषुदरु वष्क्कैयिन्
मुत्तनडा पेरुम् सिद्धनडा।.......

गान्धियिन तवक्कनल् शूषन्ददु अलहिनै
कामदहनमेन येरियुदु पार
तोयन्दन शूदुहल ओयन्दन वादुहल्
दिक्कुदिशैहलेल्लाम तिहैत्तिडवे। .....

एषैहल एलियरिन् तोषन अकान्दियै
एप्पडिप्पुहषिनुम पोदादे
वाषिय अवन् पेयर ऊषियिन कालमुम्
वैयहम् मुषुब्दुम् वाषियवे।

गांधी वषि पषुक्का ?

श्री श्रीराम

कलह मेल्लाम् कै कोर्त्तु कलिकूत्ताड
करडि पुलि शिंगमेन मनिदर शीर
अलहै पट्रि आट्टुदल् पोल् अहिलम् अञ्ज
अडितडियुम कोलै कलवे अरंपोल ओङ्ग

उलहमेल्लाम् गांधियये उट्रूप्पार्तु
उय्त्रदर्कोर पुदिय वषि उरैत्तानेन्ह
पलकलैयिन् अरिञरेल्लाम पुहषप्पार्त्तुम्
परिहसित्ताय नी अवनै पाविनेञ्जे।

अच्चमिक्क इरुट्टैयिल अडैपट्ट ंगे
अषुवदर्कुम जीवनट्रकिडन्द अन्नै
मिच्चमुळ्ळ मून्चुमट्रप्पोहुमुन्नालू
मीट्टणैत्तु मेनिशेय्दुविट्टान गांधी !

इच्चहत्तिल अरिविरन्दोर एन्रुम वाषूत्ति
इन्बमिहुम गांधिवषि पषुशामेन्राल
पच्चइलंकाय पुदियदेन्रु कोण्डु
पषुत्तपषम पषुशेन्नुम पान्मैयाहुम् !

महात्मा

श्री मंगिपूरि पुरुषोत्तम शर्मा

अपुडु नी सत्य तपमु महाद्भुतमुग
पूचि पलियिंचे नोक्क अपूर्व फलमु
भारतुले काडु आशान्त प्रजलु हर्ष
मेचि निनु किरिटिंचि कीर्तिञ्चिनारु

इपुडु नी सत्य दोक्षा परीक्ष सुरले
नी पराजित लज्जित निंदितमगु
शिलुव गोट्टिन नेत्तुटि शरिमु पैन
सेसलनु जल्लि म्रोक्कि याशीर्वदिन्त्रु

एदि जयमु ! पराजयमेदि नीकु !
मेदिनि गलंचु पशु बलोन्मादमेदिरि
देबुनकु धर्मवनकुनु देशमुनकुनु
आत्म बलि इच्चु पूत सत्यावहमुन।

मा गांधी

श्री वसवरराजु अप्पाराव

कोल्लाइ गट्टिते नेमी—मा गान्धी
कोमटै पुट्टिते नेमी
वेन्नपूसा मनसु, कन्न तल्ली प्रेम
पंडटि मोमुपै ब्रह्म देजस्सु

नालुगु परकल पिलक नाय्य माडे पिलक
नालुगू वेदाल नाय्य मेरिगिन पिलक
बोसिनोर्विप्पिते मुत्याल तोलकरी
चिरुनव्वु नव्विते बरहाल वर्षमे

चकचका नडिस्तेनु जगति कंपिचेनु
पलुकु पलिकितेनु ब्रह्म वाक्केनु
कौशिकुड्डु क्षत्रिमुड्डु कालेद ब्रह्मर्षि
नेडु कोमटि बिड्डु कूड ब्रह्मर्षये

गांधी महात्मा

श्री ऊ० कोंडय्या

रम्मंदि राट्नम
मिम्मल्नि मिम्मल्नि चेरा रम्मंदि सेवाग्राम

रम्मंदि राट्नम
ई जन्म मी ब्रतुकु लिवियै कावंदि

पोदामु रम्मंदि एन्नोन्न बेंटो, रम्मंदि राट्नम
तातय्य ब्रतुके तलपोयमंदि

मनिषि देवुडुगा मारिनाडंदि रम्मंदि राट्नम।

पिच्चि बाबू

श्री सीतारामांजनेय शास्त्री

आयन गायत्रिनि ओदिलिन कर्मिष्ठी
वांछलु तीरनि स्वेच्छा ज्ञानी
गुल्लोकन्ना वेल्लनि भक्तुड्डु
आयनलो अद्वैतपु चिटारुकोम्मन
अनेकत्वपु अभासं
ब्रह्मचर्यपु गार्हस्थ्यं
वानप्रस्थमू लो सन्यासं
कुलालन्निटि कलगापुलगं

आयनदि आवुनि चंपिन अहिंसा
स्वराज्यंतेलेनि, सत्यवाक्कु
आयन उद्देशं अंतर्वाणि आत्मदर्शनमनि
अरुणारुण रुधिर ज्योतिलो
अमृतकांतुलु चूद्दामनि
अयनकि शत्रुवुकानि मित्रुडु लेडु
अयिना, आयन अजातशत्रु
अंदुकने मनुषुलिकि कावालि मा पिच्चि बाबू।

जन्मदिनोत्सव गीति

श्री श्री

मरचि पोयिन साम्राज्यालकु
चिरिगिपोयिन जेंडा चिन्हं
मायमैन महासमुद्रालनु
मरुभूमिलोनि अनुगु जाड स्मरिस्तुंदि
शिथिलमैन नगरान्नि सूचिस्तुंदि
शिलाशासनम् मौनंगा
इंद्रधनस्सुनु पील्चे इवालटि मन नेत्रं
सांद्र तमस्सुनु चील्चे रेपटि मिनुगुरु पुरुगु
करपूर धूम धूपलांटि
कालं कालुतूने उंटुंदि
एक्कडो एव्वडो पाडिन पाट
एप्पुडो एंदुको नव्वे पाप
बांबुल वर्षालु वेलिसिपोयाक
बाकुल नाट्यालु अलसिपोयाक
गड्डि पुव्वुलु हेलनगा नव्वुतायी
गालि जालिगा निश्वसिस्तुंदि
पोलंलो हलंतो रैतु
निलुस्ताडिव्वाल
प्रपंचान्नि पीडिंचिन पाडु कलनि
प्रभात नीरजातंलो वेदककु

उत्पातं वेनुकंज वेसिदि
उत्साहं उत्सवं नेडु
अवनीमात पूर्णं गर्भेला
आशियाखंडं मुप्पोगिन्दि
नवप्रपंचयोनि द्वारं
भारतं मेलुकुंटोदि
नेस्तं मन दुखालकु वाड्दावेदां
अशौकर्यालु मूटकट्टि अवतल पारेद्दां
इंकोमाट्ट वाग्वादं इंकोनाडु कोट्लाट
इव्वालमात्रं आह्लादं इवाल तुरुफाडु ।

गुरुदेव

श्री नारायणराव वल्लतोल

लोक में, तरवाडु तनिक्की चेटिकलुं,
पुल्कलुम्, पुलुक्कलुम् कुडित्तन कुटुं बक्कार्
त्यागमेन्नते नेट्टम् तालमता-नभ्युन्नति,
योग विस्तेवं जयिक्कु-न्नितेन गुरु देवन ।

तारका मणिमाल चार्त्तिया-लतुम् कोल्लाम्
कारणि च्चलि नीते पुरण्डा-लतुम कोल्लाम्
इल्लिह च्चेराम् लोप मेन्निव सम स्वच्छ
मल्लयो विह्वायस्स-व्वण्ण मेन् गुरु नाथन्

दुर्जन्तु विहीनमाम् दुर्लभ तीर्थ ह्रदम्
कज्ज-लोलूगम मिल्लात्तोरू मंगल दीपम्
पाम्पुकल तींण्टीडात्त माणिक्य महानिधि
पालनिलाउंडाक्कान्त पूनिला वेन्नार्चार्यन्

शस्त्र मेन्निये धर्म संगरम् नटत्तुन्नोन्
पुस्तक मेन्न्ये पुण्याध्यापनम् पुलर्त्तुन्नोन्
औषध मेन्न्ये रोगम् शमिपिपवन हिंसा
दोष मेन्निये यज्ञम् चेयूववनेन्नाचार्यन्



दुर्जन्तु विहीनमाम् दुर्लभ तीर्थ हृदम् ,
कज्ज-लोलुगम मिल्लात्तोरू मगल दीपम् ,
पाम्पुकल तीण्टीडात्त माणिक्य महानिधि ,
पालनिलाउडाक्कान्त पूनिला वेन्नाचार्यन् ।

श्री वल्लतोल नारायण मेनन

शाश्वत-मर्हिंसया - णम्महिमाविन् ´ व्रतम्
शांतियाणविटुन्नु पूजिक्कुम् परदैवम्
ओतुमारूण्टद्देहमहिसामणिच्चट्ट—
येतुटवालिन् कटुवायतल मटक्कात्तु ।

भार्य्ये कण्डेत्तिय धर्मत्तिन् सल्लापङ्ङल्
आर्य्य सत्यत्तिन सदस्सिकले स्संगीतङ्ङल्
मुक्तितन मणिमय कालूतल किलुक्कड्डल्
मट्टु मेन् गुरुविन्टे शोभन वचनङ्ङल

प्रणयत्ताले लोकम् वेल्लुमी योद्धाविन्नो
प्रणवम् धनुस्सात्मशासनम् ब्रह्मम् लक्ष्यम्
ओम् मारत्तेयुक क्षमालालियिच्चलियिच्चु
तान् कैकोल्लुन्नू तुलोम् सूक्ष्ममा मंशमात्रम्

क्रिस्तु देवन्टे परित्याग शीलवुम् साक्षाद्
कृष्णनाम भगवान्टे धर्म रक्षोपायवुम्
बुद्धन्टे अहिंसयुम् शंकराचार्य रूटे
बुद्धिशक्तियुम् रन्ति देवन्टे दयावायपुम्

श्री हरिश्चन्द्र नुल्ल सत्यवुम् मुहम्मदिन
स्थैर्य्यवुम् भोरालिल् चेर्न्नोत्तु काणण मेंकिल
चेल्लुविन भवान्मारेन गुरुविन निकटत्ति—
लल्लेंकिलविटुत्ते चरित्रम् वायिक्कुविन्

हा ! तत्र भवत्पाद भोरिक्कल दुर्शिच्चेन्नाल्
कातरनतिधीरन कर्कशन् कृपावशन्
शिशुन् प्रदानोत्कन् पिशुनन् सुवचन
नशुद्धन् परिशुद्धनलसन सदायसन्

आततप्रशमना मत्तपस्वितन्मुन्नि—
लाततायितन कैवाल करिङ्कूवल माल्यम्
कूर्त्त दम्प्ट्रङ्ङल् चेर्न्न केसरियोरू मान् कुञ्ञा
तेर्न्ति तटम् तल्लुम् वन्कटल कलिप्योयिक

कार्यं चिन्तन चेय्युम् न्नेरमन्नेताविन्नु
कानन प्रदेशवुम् कांचन समातलमू
न्वट्टू समाधियि लेर्पेट्ट मायोगिक्कु
प ट्टण नट्टुत्तट्ट्रुम् पर्वत गुहान्तरम्

शुद्धमाम् तंकत्तेत्तानल्लयो विलयिप्प
तद्धर्म कर्षकन्टे सत्कर्ममम् वयलू तोरूम्
सिद्धना मविटुत्ते तृक्करणो कनकत्ते
यिद्धरित्रितन् वेरूम मंज मन्नायि काष्मू
चामर चलनत्ता लिलिन्चु काट्ट्रुम् पिशा—
चा महाविरक्तन्नु पूज्य साम्राज्य श्रीयुम्

चेरुपूं कुललिन्नु मल्लल् तोन्नाऽवानारी
स्वातन्त्र्य दुर्गा ध्वाविल पट्टुकल विरिक्कुन्नु
अत्तिरूवटि वल्ल वलल्कलत्तुंटुमुटु
त्तर्धनग्नायल्लो मेवुन्नु सदा कालम्

गीतक्कु मातावाय भूमिये द्दढ मित्तु
मातिरि योरू कर्मयोगिने प्रसविक्कू
हिमवद्विन्ध्याचल मध्यदेशत्ते काणू
शममे शोलिन्चेलु मित्तरम् सिहत्तिने

गंगयारोलुकुन्न नाट्टिले शरिक्कित्र
मंगलम् वायूकुम् कल्प पादप मुण्डायवरू
नमस्ते गतवर्ष ! नमस्ते दुरा धर्ष
नमस्ते सुमहात्मन ! नमस्ते जगद्गुरो ।

महात्मा गांधी

श्री पाला नारायण नायर

मडलुम् मालिन्यवुम् तट्टाते महनीय-
रंगमायुत्तुंगमाय् निलकुमा हिमाचलम
नक्षत्र लोकत्तोटु नर्म सल्लापम् चेय्यु-
मक्षय ज्योतिरसामेन् जन्म भू कुयिक्कुन्न

मोक्षवुम् निर्वाणवुम् तोट्टिडुम् वृन्दावन-
मोहनम् कुलीन मेन जन्म भू जयिक्कुन्नु,
मानवन्नुणरवेका निन्निता पेच्चुम् गीता-
माधुरी मनोज्ञमां पूमधु वेषुन्नेल्लि

अंषिके भारतोर्वि निंकल निन्नु दिच्चुल्लो-
रिम्महात्मावा लेन्नुम् धन्यसू वायल्लोनी।
अज्ञता द्रारिद्रियान्धकारत्ते निहनिच्चु
प्रज्ञतन् विलकेन्ति निलकुन्नु तवांत्यजन्

अन्नयुम् द्ररिद्रना मीयोरू पुमा नन्ने,
वृद्धियुम् समृद्धियुम् नीलवे विलम्बुन्नु
अर्द्धनग्ननाय निल्कुमिस्साधु सत्यान्वेषि
यत्र मेल पुतप्पिच्चु नाटिने प्रयत्नत्तिन्न

शक्तिहीनमी रण्डु कैकलालुलकिन्टे-
हृत्तिने चलिप्पिप्प तिप्पोलुम् विवेकत्तिल
वार्द्धक क्षीणम् वटि कुत्तिक्कु मिक्कालत्तु-
मार्त्तरेत्तांङ्ङुण्डा मायिर कण्क्किनाय
अनुमल्ल हो तप शुष्कनी नेताविल्नि-
न्नहिंसा धर्मत्तिन्टे कम्र काहलम् केलप्पु।

नम्म गांधिजि

कविवरेण्य मारा शामण्ण

भारताबेयल्लि जनसि
पारतंत्र्यदणक सहिसि
सार स्वाऽतंत्र्य बयसि
होरुतिर्पनार् !
धीरनागि मार्गवनु
तोरुतिरपनार् !—नम्म गांधिजि !

भोग भाग्यदासे तोरेदु
रागद्वेष मोहवल्दिु

योगियंते बाळुतिर्द
त्यागवीरनार् !
लोगरळि त्यागदोळुमे
बीर्द वीरनार !—नम्म बापुजि !

हीरियरल्लि हिरियनागि
किरियरल्लि किरियनागि
तिरेगे मार्गदर्शियागि
चरिसुतिर्पनार् !
परम चरितेयात्मवन्नु
हरिसुतिर्पनार् !—नम्म गांधिजि !

देशसेवेगागि बंदि-
वास हलवु सहिसि कुंदि
कूसिनंते बाळुतिर्द
देशबंधुवार् !
देशसेवेगाद्यस्थान-
वित्त बंधुवार् !—नम्म बापजि !

निराहारव्रतव हिडिदु
सरि अहिंसेयल्लि नडेदु
धरेयनेल्ल नडुगिसिरुव
पुरुषश्रेष्ठनार् !
धरेय नयन तन्न कडेगे
सेळेद हिरियनार् !—नम्म गांधिजि !

ज्ञान मधुवनरसि सुळिव
मानवाळियासे कळेव
ज्ञानमधुव निरुत सुरिव
पुष्पराजनार् !
दीन तुंबिगळनु करेव
कल्प वृक्षवार् !—नम्म बापुजि !

सामसुधेय बयसि बरुव
प्रेमिगळिगे बलवनीव

क्षेमसुधेय सतत करेव
    कामधेनुवार् !
भूमिगेल्ल क्षेम कोर्व
    सामसचिवनार् !—नम्म गांधिजि !

कांतियल्लि सूर्यनंते
शांतियल्लि चन्द्रनंते
क्रांतियल्लि संतनंते
    मेरेयुतिर्पनार् !
शांतियन्ने सर्वरल्लि
    कोरुतिर्पनार् !—नम्म बापुजि !

भारतांबेयात्मपुत्र
भारतांबेयात्मनेत्र
भारतीयरोलमेपात्र
    नाद मित्रनार् !
भारतांबेयणुगरल्लि
    अग्र्यगण्यनार् !—नम्म गांधिजि !

गांधी महात्मनु

श्री ईश्वर सणकल्ल

निन्न हेसरनु केळि मैयुब्बुतिहुदु,
सन्नुतने चैतन्यनिधिये नी गांधि !
निन्न चित्रव नोडि कंवनियु तुंबि,
निन्न पदकेरगिदेनु मनदोळगे नंबि !

नोडिदोडे भूलेगल हंदरद मैयु,
ओळगिनात्मद गुडुगिगदरुतिदे महियु !
विश्ववनु हुरुपलिप विलयाग्नियन्नु,
दुल्लिनोळ गडगिसिद कड्डु धीर नीनु !

मैयल्लि सोतरू सोल सोलिसिदे,
कैयु बरिदिद्दरू हगिव हिंगिसिदे !

तिरुकनंतिद्दरू तिरेयरसनादे
वरि मैयनिद्दरू जगव होदेयिसिदे !

निन्न बिगियुव सेरेये बिड्डुगडेयदाय्तु,
निन्न शायिप शावे सायुवंताय्तु !
मोगदलिह बेळगिनंतिह मुगुळुनगेगे,
मुगिविद्द दुगुडदिरुळोडुतिदे केळगे !

नीनु होदल्लेल्ल अज्जुगद वेळेयु,
नीनिरुव तळदि सुखदशांतिगळ मळेयु !
कनसिनेच्चरविंदु निन्निंदे धीरा,
अेच्चरदे कनसाय्तु भारतद वीरा !

कनस बिडुगडेयिदु निन्निदे तंदे,
बिडुगडेय कनसाय्तु दीन जन बंधु !
निन्नने अिडि जगके कारिकेयनित्ते,
अदरिंदलेल्लेल्लु काणुतिहेयल्ते !

अिनितेल्ल बरेयुतलि निन्नेडेगे बंदे,
मनदलिह तवकवदु हिडिसदेये निंदे !
नोडुनोडुतलिरलु नोट मंकाय्तु,
नुडिनुडियुतिरे कोनेगे नुडि मूकावाय्तु !

द्वंद्वमय जगवेल्ल निन्न बलि तंदे,
ओंदागि हरियुतिह अनुभवव कंडे !
निन्निंदे भारतवु पुण्यमयवाय्तु,
निन्न नोडिद कण्णु सार्थकवदाय्तु !

निःस्व

श्री गोविन्द पाई

तट्टने दधीचि सुररिगे नीडिदं डुरिय
तन्न मांसवनित्तु खगव शिवि कादं
शिखिकेतनं पदेदनेरेवरं मेय्यरेव ·
मृगशिशुव साके भरतर्षि भवियादं ,

चरिगेवोदं बुद्ध, सुरिगेगादं तेग,
बेन्द्लम्भोजिनि चितोरवं काये—
निःस्वनेनेन्नीग ! निःस्वनिन्देनाग !
इलेये, निःस्वने, परार्थके नोये, साये।

इले नोन्दे बालु, निःस्वं नोन्दु हेब्बाळु-
बरडदातन नोववन साबु, कारण।
नोन्दु निःस्वं लोक मुन्दरियुतिरे, हालु
गेडेयदातन गोत्तु, कडेगोलदे माण।
इदो, मात्म, कैगूडुतिदे निन्न निःस्व
दिन्देम्म भारतद भाग्य सर्वस्व।

उपवास

श्री गोविन्द

मञ्जिनेकान्तदलि श्री हरिय हम्बलिसि
हृदय क्षुधेयन्नूडुतोडल हसिविन्दं,
मनद कम्मेय गेद्दु शुकनातनन्नोलिसि
भक्तिगगेय भारतदे तृषेगे तन्दं।

उरुवेलेयरलियडियलि चिरं हसिदरेदु,
मारनं मुरिदु, सम्बुद्धनेमगग्गं
निब्बाणमोन्दे तरहेयरण्यमं तरिदु
तोर्दनरियट्टुज्झिकद धम्ममग्गं।

कट्टलेय कुरुडिनलि बेलकिनोडेयन सोसु
बेम्मेदेय परेय हेरेदेम्मोलगे निसर्द
नेलसिरुव स्वाराज्यवेमगे तोरिसे येसु
योर्दनिन बनदि नलवत्तु दिन हसिर्द।

अरबरेदेयरबिन्द नोन्दु, नवजीवनव
नुपवासदिन्दरसि हिरेय कन्दरियिं
देवरल्लदे देवरिल्लेम्म कावनव
नेम्ब सत्यदि कण्डनदनरबरेरेयं।

गुरुवे, इप्पत्तोन्दु दिनदुपोष्यव नोन्तु
धिल्लियिं नी चेल्लिदी प्रेमबीजं
भारतद भाग्यलतेयापि मडलिडदेन्तु !
बेलसदेन्तमर सोन्दर्यमिदु साजं !

युगे युगे

श्री सुरकुन्द अण्णाजी राव

अंदु त्रेतायुगदि दशरथ,
नंदननु कपि सेनेयोंदिगे,
बंदिरलु रावणन लंका नगरदेडेयल्लि ।
चन्द्रवदनेय कद्द आ दश,
कंदरन निज राजधानिय,
संधिसुत दुःखिसिद नीतेर अश्रुविलिसुत्ता ।

हर हरा ई सोगसुपट्टण
बरिदे आहा हाल गेडेवुदैतले
निरत नागलु युद्धदलि दशशिरन यदुराणि ।
अरियलाररु सुररु ई तेर
सरि समानद नगर कट्टलु
हर हरा ना नेंतु कांबुदु नगर नाशवनु ।

इन्दु कलियुग मद्यदलि वर,
गांधिजीयवरोन्दु दिन ता,
संधिसिरे वर देहलि नगरदि राजप्रतिनिधिय ।
रामचंद्रन तेर महात्मनु,
समर दलि आंग्लेय पुरगलु,
जमीन समवागुक्वेनु त्तलि अश्रुविलिसिदनु ।

शत्रु मित्ररोल एक नडतेयु ।
व्यत्यास वेल्लिदे गांधी रामरोल ।
सत्यापालनेगागि इवरवतार वेंत्तिहरु ।
उत्तमनु सज्जनरोल गांधीयु,
उत्तमनु नृपरल्लि रामनु,
उत्तमोऽत्तमगांधी रामरु ई धरित्रियलि ।

षा मो चुङ् ती ल्यू चउ

श्री उ—शिऔ-लिङ् "दिवाकर" उपाध्याय

कान्—ती,
षा मो चुङ् ती ल्यू चउ,
चिङ् थाव् शिआ ती ई हुङ् छिङ् छयूआन्,
लङ् खु, पिङ् इए स ती,
ली मिआन्, पाय् रुओ चाय् रान् षाव्।
छि षउ निआन्, चुआङ् मान् लिआव् इअउ हुआन्,

उओमन् थिङ् ताव् ती छयूए ष ऋु थुङ् ती—
थिआन् चन् ती छिङ् छुअइ शिआव् षङ्।
रन् मन् छुङ् ना ऋु नङ् थि हुअइ ई तिआन्—
ती चन् ती रन् ती षङ हुओ नी!
चो ऋु।

कान्-ती ती उअइ

श्री चुआङ्-यूङ

रान्-मन् चङ्-चिङ् यू स-ता-लिन्-को-लो छान्-खु ती चङ्-तुङ्,

शिङ्—रुङ् था, सुओ था ष "ती-चङ्-ती-चुङ्-शिङ्",

चिए फाङ् लिआव् ती स-ता-लिन्-को-ओ-इआ।
छुङ् नी षङ्-ली ती सुआन्-हु ली।
उओ थिङ्-तालिआव् ती-शिन् ती थिआव्-ताङ्,
च इअउ ना को साव् शिङ् ती लाव् कान्-ती,
चाय् ष रान्-मन् खाय् ष छिङ्-चु ती ष-हाव्,
था खाय्-ष पु-छ-तुङ्-शि,

शिआङ् चाय् रो लिए इअउ शिङ् ती चिए ष ती,
ता चिए षाङ्
ई को लाव् छि-काय् चाय् शिआङ् खउ खु-छी।
शिआङ् स-ता-लिन-छाङ् ष ती छिअउ ती शिन् चाङ् ई इआङ्,
कान् ती ती उअइ इए ताय् पिआव् लिआव् ती छिअउ ती शिआव्
हुआ छी।
उओ-मन् चान् नङ्-कउ चान् छि लाय् नी!
उओ मन् ती शिन् सुअइ रान् थिआव् तुङ् लिआव,
उओ मन् ती उअइ सुआन् ष चाव् रो हो फ़ान् लुआन्
रान् षाव् चुओ ती खुङ् श्यू।

ऋ छुङ् ना-शिए "ष-चिए-चुअइ ना" ती
तिआन् थाय् ती कुआङ् पो,
च-इअउ हो चङ्-ई, चुआङ्-इआन् मइ-ली—
ती शी-उआङ्,
इए-च ष छ़ान् चाय् ताय सुअइ ली ती ई
तिआन् कुङ च ऋ।
मिआन् शिआङ् चुओ कुआङ् मिङ् लाय् च ती शी-फ़ाङ्
फु-ष-चिन् ती छ़ाव् यूआन् पाय् लुन् स्यूए—
लाय्-ती-हाय्-इआङ्।
उओ रो छिए ती निङ् ष,
उओ शि उआङ्!
उओ ती चुओ-इआन् नङ् कउ हो इओउ इमान् ई इआङ्
फ़ा-लिआङ्।*

---

* अनुलेखन के लिये विश्वभारती पत्रिका, वर्ष ३ अंक २ में प्रकाशित "नागरी में चीनी ध्वनियों के संकेत" की पद्धति बर्ती गई है। पर चँ, छँ, र के स्थान पर च, छ, र नये सङ्केत प्रयोग में लाये गये हैं।

Gandhi Maharaj

Sri Rabindranath Tagore

We, who follow Gandhi Maharaj's lead,
Have one thing in common among us;
We never fill our purses with spoils from the poor
Nor bend our knees the rich.

When they come bullying to us
With raised fist and menacing stick,
We smile to them, and say,
Your reddening stare
May startle babies out of sleep
But how frighten those who refuse to fear ?

Our speeches are straight and simple,
No diplomatic turns to twist their meaning!
Confounding Penal Code,
They guide with perfect ease the victims
To the border of jail.

And when these crowd the path of the prison gate
Their stains of insult are washed clean,
Their age-long shackles drop to the dust,
And on their forehead are stamped
Gandhiji's blessings.

Eternal India

Srimati Sarojini Naidu

Thou whose unaging eyes have gazed upon
The visions of Time's glory and decay,
Round thee have flowere-like centuries rolled away.
Into the silence of primeval dawn,
Thou hast out-lived Earth's empires and outshone
The fabled grace and grandeur of their sway,
The far-famed rivals of thine yesterday
Iran and Egypt, Greece and Babylon,

Sealed in Tomorrow's vast abysmal womb.
What do thy grave prophetic eyes foresee
Of swift or strange world-destiny and doom?
What sudden kingdoms that shall rise and fall,
While thou dost still survive, surpass them all,
Secure, surpreme, in ageless ecstacy?

Gandhi

Sri Humayun Kabir

Across vast spaces and vast times he strode
buoyed upon the hopes of ancient race,
achieving courage out of dark despair.
Like a huge serpent resting coil on coil
slept the vast country in involuted sloth,
but a breath of life stirs every vein,
for Gandhi breaks the charm of magic sleep,
brings back life till age long lassitude
drops like old dead skin from frozen limbs.

A puny figure strides upon the scene
of vast and elemental suffering : Strides
against the back-ground where slow death
paints in dull phantasmagoral grey
the end of all endeavours, hope and faith.
What secret magic transforms the scene ?
Whence springs forth a deep abiding force
that thrills the landscape with abundant life
till the puny figure dominates the scene,
over vast and elemental suffering triumphs,
and with new birth's pain and radiance shoots
the landscape's dull phantasmagoral grey ?

The static, dead and slothful continent,
thrills to a new song of hope, of forward move.
The momentum gathers, the masses shake,
and strain and quiver for the onward march
from slow-decaying death to resplendent life.

A lone figure stands upon the sands of time,
stands upon the shores of India's timeless space,
draws upon its vast and primeval wells
of granite suffering and immortal hopes :
Launches India's resistless caravan
into adventures new, a perilous path
where out of life's substance must be carved
new values, new directions, order new—
GANDHI, Mahatma, India's Leader, India's soul.

Gandhi

Mary Siegrist

Who is it walks across the world today,
A Christ or Buddha on the common way
This man of peace through whom all India draws
Breathlessly near to the eternal will ?
Hush, what if on our earth is born again
A leader who shall conquer by the sign
Of one who went strange ways in Nazareth ?
Who is it sits within his prison cell
The while his spirit goes astride the world ?
This age—fulfilling one through whom speak out
The Vedas and the Upanishads—who went
Naked and hungry forth to find the place
Where human woe is deepest and to feel
The bitterest grief of India's tragic land ?
Whose is this place that challenges the world,
That calls divine resistance to a will
No man upholds ? Whose is this voice
Through whom the orient comes articulate ?
Whose love is this that is an unsheathed sword
To pierce the body of hypocrisy ?
Whose silence this that calls across the world ?
In this strange leader are all races met ;
In his heart East and West are one immortally,
Through him love sounds her clarion endlessly
To millions prostrate who have lain age long

Beneath the oppressor's heel, unwearied saint
Who gives them back the ancient memory
Of a great dawn, a lot inheritance ?

In his deep prison there in India
Somehow abreast with sun and sky he waits.
What is again, a Christ is crucified
By some reluctant pilate-if again
The blind enact their old Gethsemane ?

Tread softly, world, perhaps a christ leads on
To-day in India.

Gandhi

Sri Benjamin Collins Woodbury

When shall there be again revealed a Saint,
A holy man, a Saviour of his race,
When shall the Christ once more rivals His face ?
Gautama left his bode without complaint,
Till weary, hungered, desolate and faint
He sank beneath the Bo-Tree with his load,
As on the path of solitude he stood;
And Jesus died to still the sinner's plaint.

Lives there a man as faithful to his vow ?
Mahatma to a bonded race of men ?
Aye, Gandhi seeks his nation's soul to free :
Upto the least, ye do it unto Me !
Hath Buddha found in peace Nirvana now,
Or doth a Christ walk on the earth again ?

To Democracy

Sri Harindranath Chattopadhyaya

He is the symbol of the world's white peace,
His light no tpranny dare touch or dim
The country now behind the bars with him
Will find release only with his release.

Democracy ! Is it not more than odd
That you should gag the one who stands for you ?
We are to wrath now even to cry · '*O God !*
Forgive them for they know not what they do'

Release him—'now'... History cannot wait,
Release him for the hour is red with strife;
Release him for the hour is full of fate;
Democracy ! it shall decide your life.

Let not Humanity's relentless pen
Dipped in his blood pronounce you but a lie,
Which it shall do if now the man of men
Behind the bars should bid the world good-bye

Ring the Temple Bells

Sri S. K. Dongre

There's jubilation o'er the country wide,
Because her patriot saint, her greatest son,
Hath, through a fiery ordeal sorely tried,
By force of soul alone a victory won.
When he proclaimed his fast, a death-like gloom
Spread like a depending shadow through the land
And many thought it was the crack of doom,
And dread disasters seemed to be at hand
And prayers went forth to God from hearth and home
All o'er the world, in near and distant parts :
The spreading sky became a temple dome
Beneath which millions knelt with throbbing hearts......
Rejoice and ring the temple bells aloud,
For now he smiles and waves Truth's banner proud

Mahatma Gandhi

Sri Jeannete Tompkins

"But what was'nt ye out for to see ?
A reed shaken by the wind ?"
There was this man ,
Who strove to see
    Truth, veiled within
    Mortality.
His flesh he scorned,
And fleshly bonds ;
    Yet saw his brother's
    Bleeding wounds.
In love, he turned
His soul, to find
    Freedom from pain
    For humankind.
And found an Empire
In his path—
    He seized a weápon—
    Love, not wrath.
Even his enemies
He loved
    Stones, blows, nor jail,
    His kindness moved.
The Empire rides
Its bloody way ;
    His kingdom not
    Of this brief day.
Love knows no bondage
Kings have thrown,
    But claims the universe
    Its own.
Across the world
Ten watching wait
    Before that humble
    Home of fate,
Where love is reigning
Over power
    And coming into
    Its own hour.

The Old Man

Sri L. N. Sahu

Gandhi, the old man, Gandhi, the old man,
Oh, how strong is he, oh wonderful, indeed,
He dies not, kill him if you will, he dies not.
He is immortal, he is a Satyagrahi, he is an
Undying hero.

Gandhi, the old man,
Is built after many a Sadhna,
He fought with the fire of youth,
He fought with the flames of desire,
He killed all ignoble impulse, he rose high,
He played with the wind, he played with the fire
in the company of high stars,
He crosses past them, he sees the Mahamaheswari,
the mother of the universe.
He walks over the earth, walks over another,
yet another,
Every place is his, nothing strange.
He is power, being one with the Mahamaya.
This is Gandhi, the old man.
He lives, as the embodiment of the ache and anger
of Hindustan.
He is all fire, he is all beauty.
For over twenty years he passes through what fire!
He pulls the whole of Hindustan with him through
power, through deliverance.
The enemy is all round, the war-drums are
beating high,
But Gandhi, the old man, who has crossed the
youth safely,
A great Sadhak, all ascetic in mind,
He is India's living voice and symbol.

The Martyred Man

Sri Sadhu T. L. Vaswani

I woke this morn with a song in my heart
Like the breeze in yon tree ;
It said : "The Dream will yet come true ;
For God's dreams are Deeds ;
And India's Dream of Liberty is His."
"Where is the way to victory ?" I asked ;
And my lute answered :
"They who suffer win."

Walled and sentinelled to-day
Is the great-souled Gandhi ;
But when did walls and prison bars
Sunder soul from soul ?
The saint in suffering has to-day,
His mystic throne in a million hearts ;
And round the world the rumour runs ,
"Might battles with Right once."

Imprisoned,—they say ,
I say : his soul goes marching on ,
And even in the dark,
His faith, springing up as the light,

Speeds from heart to heart;
And still his meek spirit leads
The struggle which has one only end:
For freedom cannot die.

Homage to him :—
The Apostle of Unity and Love;
I see his vision pass
Into the Nation-Life,
Over us still the blessings of heroes
And the gods and *rishis* of old;
And still our Gandhi leads us on.

Comrades, at this dark hour of our Destiny,
I yet believe in this belief,
I yet have faith that something Beautiful
Will be the final end of India's ills;
And every morning sun
I worship with a wounded heart,
Brings the healing message of the Martyred Man :
A suffering nation still shall win.

Mahatma Gandhi

Sri Yone Noguchi

Not a king in agony,
But a saintly little goat smiling on his bare legs,
Cricket-lean, steel-stiff.
(Gandhi is lying down ill in a tent pitched on the roof of a house
Where the love of the sunlight falls like rain.)
Pointing at a cotton bag on his head, he says:
"Sprang I from the earth,—'tis Indian earth that crowns me!'
Feeling safer to be paid by God what the world owes him,
A warrior in combat near Heaven with a prospect of unseen victory,
Blowing a bugle that rings to the last gulf of Hell,
A lonely hero challenging the future for response,
Withered and thin,
But with a mammoth soul shaking the world in fear;
Through this man love, profaned and ignored,
Through this man life's independence, shattered and fallen,
Through this man, body—labour thrown from honour and prize,

Cry rebel-call against tyranny. May God's justice
assent and praise!

A sad chanter of life close to the mother-earth,

(Where is there a more burning patriot than this
man?)

A lone seeker of truth denying the night and self-
pleasure,

(Where is there a more prophetic soul than this
man's?)

A pilgrim along the endless road of hunger and
sorrow.

In joy of seeking a man in the form nature first
fashioned,

A man worshipping God through serving the poor,

A man feeling lighter because of his possesions
all lost,

("Who but the poor can save other poor?")

I left Gandhi's tent, descending the staircase,

Into the outward yard where nature, unknown to
caste and censure,—

Birds and trees are magnanimous in peaceful song.

Under the shade of tree, three goats are playing,–

I pass by them, the symbol of toleration and love



Tread softly, world, perhaps a Christ lead:

Today in India.

P. 161.

महात्मा

श्री विधुशेखर भट्टाचार्य

तुम उदार-चेता होने के नाते 'महात्मा' हो इसमें संशय ही क्या ? वरंच हमारी दृष्टि में तो मन, वाणी और कर्म का जो अविच्छिन्न एकत्व तुममें प्रतिष्ठित है, उस कारण ही तुम सच्चे 'महात्मा' हो।

शास्त्रों में वर्णित 'स्थित-प्रज्ञ' की चर्चा तो सभी जानते हैं पर क्या सच्चा 'स्थित-प्रज्ञ' इस जगतीतल पर तुम्हारे सदृश कोई दूसरा भी है ?

'बोधिसत्त्व' की लोकपावनी कथा सर्वत्र बहुश्रुत है। वर्तमान काल में तुम्हीं बोधिसत्त्व की अभिनव मूर्त्ति हो।

इस पौराणिक सत्य को सभी जानते हैं कि 'तप की महिमा अद्वितीय है, उसके प्रभाव से देवराज इन्द्र का भी सिंहासन हिल उठता है।' तप की इस शक्तिमत्ता में जिसे सन्देह हो वह इस महापुरुष के दर्शन कर अपने को निःसंशय बना ले।

कहाँ तो लँगोटी पहने हुए यह मुट्ठी भर अस्थियों की देह और कहाँ वह असख्य शस्त्रास्त्रों से सन्नद्ध आंग्ल सम्राट्! किन्तु फिर भी वह सर्वथा सुरक्षित सम्राट् इस महात्मा से पग-पग पर काँपता है।

जिसमें विश्व का अनन्त मङ्गल प्रतिष्ठित है वह महात्मा युग-युग तक जिये और विजयी हो।

कुसुमाञ्जलि

पंडित महादेव शास्त्री

जिस समय भारतीय जनवर्ग कुटिल काल-चक्र से निष्पीड़ित है, निष्ठुर शासन-शक्तियों से निगडित है, अनवरत विषपान कराये जाने से मूर्च्छित है, अस्थिर चित्त, निर्बल मति, आकुल और विलुलित है, उस दुष्काल में भारतवर्ष की प्रताड़ित राजलक्ष्मी तुम्हे छोड़कर और किस महापुरुष को आशान्वित दृष्टि से देखे ?

जिसके सिर से लेकर पैर तक बँधी हुई कठोर लौहशृङ्खलाएँ चारो ओर झनझना रही हैं वह भारतवर्ष की राजलक्ष्मी इस समय तुम्हारे अतिरिक्त और किसकी शरण में जाय ?

महाभारत के अवसर पर भगवान् श्रीकृष्ण भी जिस प्रशस्त नीति का अवलम्बन न कर सके, उस अहिंसा रूपी अस्त्र का तुमने आविर्भाव किया है।

जब सत्य अवसन्न हो रहा है, धर्म को अधर्म ने आच्छादित कर रखा है, पृथ्वी युद्ध-ज्वालाओं में भस्म हो रही है, मनुष्य-जीवन प्रतिपद संशयाक्रान्त है, उस वेला में तुम्हारे अतिरिक्त भूमण्डल पर अहिंसारूपी दिव्य शक्ति को कौन धारण करता ?

वह सत्याग्रह दिग्दिगन्त में अभिवन्दित हो जो चिरन्तनी सफलता का प्रतीक, प्रशस्त पराक्रमशालियों का अद्भुत शस्त्र, और साम्राज्यवाद को कँपा देनेवाला तेजपुञ्ज है।

वह अहिंसा सर्वत्र विजयिनी हो जिसकी हिंसा किसी भी प्रकार नहीं हो सकती और जो जागर्त्ति एवं शक्ति की पूर्वपीठिका है।

हे अँगरेज़ शासक! 'भारत छोड़कर चले जाओ' के नारे से तुम घबड़ाओ मत। अपने दर्पमार्ग को छोड़ दो और देखो कि 'मोहन' के इस उच्चाटन मन्त्र में तुम्हारा भी कल्याण निहित है।

जो सत्याग्रह का व्रत धारण किये है (पक्षे-सत्यभामा के परिग्रहण के लिये प्रतिज्ञाबद्ध है), प्रशस्तचक्र-रेखा जिसके हाथ में है (पक्षे—चक्र नामक अस्त्र धारण किये है); जो पूर्ण तपस्वी है, परदुःख-दुःखित है, शक्तिशाली सम्राटों पर भी प्रभाव रखनेवाला है (पक्षे—राजा बलि को छलनेवाला है) उस 'मोहन' (महात्मा गांधी तथा श्रीकृष्ण) के प्रति सबकी भक्ति बढ़े।

सत्य में आसक्त (सत्यभामा में अनुरक्त), पवित्र-आत्मा, महापुरुषों के समान सदाचार में निपुण, गोरक्षा के कार्य में यशस्वी (गोवर्धन धारण द्वारा यशस्वी), चक्ररेखा से युक्त पाणिवाले (हाथ में चक्र धारण किये), जनवर्ग के पथ प्रदर्शक; अपने युग के अद्वितीय कर्मयोगी, प्राणिमात्र की हितकामना में तत्पर, परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाले (शिव के पूजक), मानवकुलश्रेष्ठ, अव्याजभव्य, 'मोहन' (भगवान् श्रीकृष्ण) इस भारत भूमि की रक्षा करें।

शुभाभिनन्दन

पंडित गोपाल शास्त्री

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से कहा था कि जो जो विभूतिमान् सत्त्व हैं उन्हे निश्चय ही मेरे महातेज का अंश समझो। हे मोहन! इसीलिये गुणिजन तुम्हारा अभिनन्दन करते हैं; तुम्हारी पूजा वस्तुतः सगुण परमेश्वर की पूजा है।

इस कलिकाल में अस्पृश्यता-निवारण आदि चौदह रत्नों को तुमने आविर्भूत किया है अतः हे महात्मा तुम सच्चे अर्थ में 'रत्नाकर' हो।

पश्चिमीय शासन-प्रणाली द्वारा शोषित होने से जो अकाल महामारी आदि सङ्कटों से परित्रस्त है, उस भारतवर्ष को छोड़ देने के लिये (क्विट इण्डिया) तुम इन लोलुप शासकों से आग्रह करते हो, अतः हे समयज्ञ तुम्हीं पूजनीय हो।

तुम अपने ही प्रभाव से विश्व का नेतृत्व कर रहे हो। संसार के विज्ञ पुरुष तुम्हारी नीति का स्वागत करते हैं। वह समय दूर नहीं जब समस्त संसार तुम्हारे निर्दिष्ट पथ पर अग्रसर होगा।

सत्याग्रह रूपी चक्र तुम्हारे हाथ में है, अहिंसा के कवच से तुम आनद्ध हो,

और राष्ट्रीय महासभा रूपी रथ के तुम सारथी हो, फिर तुम्हें किस बात में भगवान् श्रीकृष्ण से कम समझें ?

हे महात्मन् ! तुम चिरजीवी रहो। जनता को अपने प्रशस्त पथ पर अग्रसर करते रहो। इस भूमण्डल को पश्चिमीय-शासकों के बन्धन से मुक्त करो। समस्त देशवासी स्वतंत्र और उद्यमपरायण हों। कोई भी देश किसी परदेशीय राजा के शासन में निगडित न रहे। यही मेरी मङ्गल कामना है।

गांधी-गुणगौरव

श्री भट्ट मथुरानाथ शास्त्री

दक्ष कर्णधार की भाँति जो राजनीति-नौका के भीषण घर्घर को शान्त कर देता है, भारत के अभ्युदय के लिये सत्याग्रह-रूपी धार्मिक युद्ध में जो युधिष्ठिर के सदृश अनधीर चेता है, एवं कौरवों के समूह की भाँति वर्तमान विरोधी दल को अपने वश में कर लेता है; महामना होने के नाते जो सदा माननीय रहा है तथा दृढ़ता मे पौरव-नरेश के सदृश जिसकी प्रशंसा हो रही है, उस महात्मा गांधी के गुणगौरव का गान आज जगतीतल के समस्त महापुरुष कर रहे हैं।

गान्धिस्तव

श्री हरिदत्त शर्मा शास्त्री

जो जगन्मङ्गलकारी हैं, परम दीनबन्धु हैं, करुणा के समुद्र हैं, पाण्डित्य के निधि हैं और तपस्विकुल-चन्द्रमा हैं, ऐसे महात्मा गांधी सैकड़ों वर्ष तक अमर रहे।

'जिसका मुखकमल, स्वर्गङ्गा की तरङ्गों के सदृश तापहारी, पवित्र, निर्मल एवं अमृतवर्षी वचनों का लास्यगृह है उस लोकोपकार-व्रती महात्मा का हार्दिक सम्मान कौन न करेगा ? घने अन्धकार-पटल को ध्वस्त करनेवाले भगवान् भास्कर की अभिवन्दना कौन नहीं करता ?'

जिसने अपने जीवन के अमूल्य ७५ वर्ष जन-कल्याण के लिये दान दे दिये, उस महात्मा को भगवान् महेश्वर सौ वर्ष की आयु और प्रदान करें।

नमस्कृति

श्री लक्ष्मीकान्त शास्त्री

कहाँ तो वह साम्राज्यवाद का भीषण स्वरूप जो नर-शोणित का आचामक है तथा जिसे कृपाणों के कठोर मस्तकों से अनन्त अनुराग है; और कहाँ यह अहिंसाप्राण, कौपीनधारी, दुर्बलकाय महात्मा जिसने संसार की स्वतन्त्रता के लिये अपने को कारा में आबद्ध कर रखा है ! पर समस्त राजचक्र उस महापुरुष की शक्ति से काँपता है, इन्द्र भी उसके तेज के आगे नत-मस्तक हो जाते हैं। उसे हमारी नमस्कृति।

जिसका प्रशस्त यश, विशालकाय दिक्पटों पर स्वर्णतूलिका चला रहा है; निःशस्त्र होते हुए भी जो शस्त्रधारियों का विजेता है; जनता जिसकी पूजा अपने मनोलोक में अनवरत कर रही है, भगवान् बुद्ध की पवित्रतम सिद्धि का जो नवीन अवतार है और सत्य की अभिनव समृद्धि है उस महापुरुष के आगे हमारी नमस्कृति।

पुष्पाञ्जलि

श्री ारायण शास्त्री

सामन्तशाही के प्रति अत्यन्त निर्भीक रहनेवाले जिस व्यक्ति ने देश के कष्टों को पराजित किया उस भारत-भूतिलक रूप सौभाग्यशील महापुरुष का अभिनन्दन कौन न करेगा ?

'महात्मा' शब्द जिस महापुरुष का पर्याय हो गया है, जो नवयुग का निर्माता है और अपने हाथ में चक्र (रेखा विशेष एवं अस्त्र विशेष) धारण किये है वह मोहक स्वरूपवाला 'मोहन' (गांधी तथा कृष्ण) सर्वदा विजयी हो।

जो साख्यपुरुष के समान अपनी अजा प्रकृति (जनता एवं प्रधान) को अपनी उपासना (समीप आनयन एवं मतानुसरण) द्वारा कृतार्थ करता है, जो शान्त, स्व-रतिशील तथा तटस्थ है उस 'मोहन' स्वरूपवाले महामुनि को हमारा प्रणाम।

अभिनन्दन

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद शास्त्री

सत्यव्रतधारी, राजनीति में परिपक्व बुद्धिशाली, अनुराग और द्वेष से विहीन, शुभ्र मतिमान्, अपने लोकोपकारी गुणों से महापुरुषों को मुग्ध कर देनेवाले, मातृभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक, कर्मवीर, यतिराज, श्रीमोहनदास कर्मचन्द्र गांधी युग-युग तक विजयी हों।

महापुरुष तुम्हारे विषय में यह निश्चय नही कर पाते कि तुम हिरण्यकशिपु के दुर्नीति-कानन को भस्म कर देने के लिये उत्पन्न प्रह्लाद हो ! या लोकोपकार के लिये अपनी अस्थियों तक को दे डालनेवाले महर्षि-दधीचि हो ! अथवा करुणावतार भगवान् बुद्ध हो ! अथच अपने शत्रुओं के परममित्र एवं शान्ति-महोदधि ईसामसीह हो !

इस ससार मे कुछ महापुरुष सत्य के धनी, कुछ प्रशस्त परोपकारी, कुछ देशसेवा के अग्रदूत, कुछ करुणा के महासागर, कुछ महान् तत्त्ववेत्ता, और कुछ शिक्षा-विशारद हो चुके हैं तथा हैं; पर तुम्हारे ऐसा सर्वगुणनिधान महा-पुरुषरत्न संसार मे किसी भी जननी ने पैदा नहीं किया।

समुद्र के अन्तस्तल में निलीन असंख्य रत्नों और आकाशमण्डल में भरी तारिकाओं के गिनने में भले ही कोई समर्थ हो जाय पर तुम्हारे गुणों की

गणना नहीं हो सकती, सहस्रमुख शेषनाग भी इस कार्य में अशक्त होंगे, फिर हमारे ऐसे व्यक्तियों की बात ही क्या ? हमारी भगवान् से यही प्रार्थना है कि वह तुम्हे चिरायु और धार्मिक-दृढ़ता प्रदान करे।

भगवान् अवतीर्ण

श्रीमती पडिता क्षमाराव विदुषी

दीन-दुखियों के सहायक और किसानों के परम मित्र ने स्वदेश के लिये अनवरत रूप से महान् कार्य किये हैं।

चतुर्दिक्-व्यापिनी कीर्त्ति, निर्ममता और निरहङ्कारता ने उसकी महत्ता को चक्रवर्त्तियों के वैभव से भी सहस्र गुणित बढ़ा रखा है।

उस दूरदर्शी ने बहुत पहले से बता रखा है कि हम लोग अँगरेजों के शासन-काल में स्वतन्त्र होने के अतिरिक्त उलटे परतन्त्रता में अधिकाधिक जकड़ते चले जायँगे।

उसने मोहग्रस्त भारतीयों के कान मे यह महामन्त्र फूँका कि 'स्वधर्म' को बड़ी से बड़ी विपत्ति पड़ने पर भी नहीं छोड़ना चाहिये।

किसानों की वर्तमान दुर्दशा जानने के लिये और उसके मुख्य कारण की खोज के लिये उसने समस्त ऐश्वर्य का परित्याग कर कष्टों से अपनी मैत्री की और भारतवर्ष के गाँव गाँव का पर्यटन किया।

उसने समझाया कि 'परतन्त्रता मत्यु से अधिक दुःख-दायिनी है। दासों का जीवित रहना मरे के ही समान है।'

उसकी अद्भुत महत्ता भारत पर अपना निर्बन्ध शासन कर रही है। वह वस्तुतः कोई स्वर्गीय विभूति है—मानुषी शक्ति नहीं।

स्रष्टा ने इस अन्धकारावृत भारतभूमि को प्रकाशित करने के लिये उस महात्मा में अद्भुत तेज निहित किया है।

तो क्या इस भू-लोक पर फैले अधर्म को नष्ट करने और शान्ति को स्थापित करने के लिये स्वयं भगवान् ही गान्धी के रूप में अवतीर्ण हुए हैं ?

भारत वसुन्धरा के अमूल्य रत्न और गान्धिकुल के अक्षय प्रदीप उस सिद्ध तुल्य महात्मा को मेरी यह गीति समर्पित है।

जय जय

श्री ईशदत्त शास्त्री 'श्रीश'

हे युग के जागरण दूत ! तुम विजयी बनो।

भारत के व्यक्त स्वाभिमान ! कोटि कोटि जनवर्ग के नेता ! मृदुल ! मधुर ! मङ्गलमय ! मदमत्सर विरहित ! अभिनव अजातशत्रु ! वशीकरण के मधुर निर्झर ! तुम विजयी बनो।

मधुर मुसकान के मेघ ! जगदाभूषण ! गीता के उपदेष्टा ! अग्नि में कूदने-वालों के लिये विजय-संजीवन ! जन-भय-भंजन ! तेजोमय ! जगत्प्राण ! जगद्-वन्द्य ! जनरञ्जन ! समस्त लोकों के एकमात्र प्राण ! भू पर अवतीर्ण परमेश्वर के अंश ! आर्यधर्मपरित्रायक ! तुम जन-कल्याण के लिये शत वर्ष पर्यन्त जीवित रहो ।

हे युग के जागरण दूत ! तुम विजयी बनो ।

स्वागत

श्री बादरायण

हे महात्मन् ! तुम्हारा अभिनव शान्तिमन्त्र सुनकर यह उच्छृङ्खल जगत् शान्त हो रहा है । मानवमात्र इस तत्त्व को समझ गया कि संहारक अस्त्र-शस्त्र वस्तुतः शान्तिस्थापना के लिये वृथा हैं । तुम इस लोक के देव हो और तुम्हीं इस लोक के सबसे बड़े सेवक हो । तुम्हारी वाणी में जो अक्षय शक्ति भरी है वह भारत को स्वतन्त्रता देनेवाली हो, यही हमारी कामना है ।

यह दिवस धन्य है जब कि बम्बई के समुद्रतट पर असंख्य नर-नारी तथा बालक स्वागत के लिये एकत्र हैं क्योंकि हिंसा-गर्त से संसार का उद्धार करने-वाले जगद्गुरु इंगलैंड की राउण्डटेबिल कान्फ्रेंस से वापस आ रहे हैं ।

भारत पारिजात

स्वामी श्री भगवदाचार्य

जो भारतवर्ष की परतन्त्रता को सर्वदा के लिये नष्ट कर देने में प्रयत्न-शील है, अतएव जिसने कारागार को अपना वासस्थल चुना है, वह भारत-कल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

जिसके दर्शन से मानवमात्र के हृदय में शान्तिसागर उमड़ पड़ता है तथा जो महामना केवल कौपीन धारण करता है, वह भारत-कल्पद्रुम चिर-जीवी हो ।

जिसके पवित्र आत्मबल, अटूट धैर्य, सर्वश्रेष्ठ बुद्धि, अविचल दृढ़ता और परम शान्ति का आश्रय प्राप्त कर यह भारतभूमि ऐश्वर्यशालिनी बन सकी है वह भारतकल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

जिसके ज्ञानबल का अवलम्बन कर भारतीय जनता परतन्त्रता-सागर के पार उतर सकती है, एवं जो अजातशत्रु संसार में सर्वत्र वन्दनीय हो रहा है, वह भारत-कल्पद्रुम चिरजीवी हो ।

गांधी सोऽयं जयतु भुवने

श्री भदन्त शान्ति भिक्षु

धूर्त-दुःशासन के द्वारा अपमानित द्रौपदी की भाँति यह भारतभूमि अन्य

किसी को भी अपना शरण न पाकर जिस 'मोहन' का आश्रय ले रही है वह चिरजीवी हो

बौद्ध लोग सर्व-निर्वैर-भाव को ही धर्म बताते हैं। तथोक्त सर्वनिर्वैरभाव को ही मुख्य आधार मानकर जो अपना कर्त्तव्य-पथ निश्चित करता है एवं प्राणि-मात्र के समस्त दुःख को हर लेना चाहता है, भगवान् बोधिसत्त्व का अनुगमन करनेवाला वह परम-कारुणिक गान्धी जगतीतल पर विजयी हो।

गांधी महाराज

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गांधी महाराज के धनी औ' दीन शिष्य अनेक;
पर एक ऐसी बात है जिसमें सभी हैं एक,
हम पेट के हित दीन - पीड़न में नहीं अभ्यस्त,
झुकते न धनियों से कभी होते न भय से त्रस्त।
होते मुसण्डे जब जमा
मुक्के उठा, डण्डे घुमा,
हम उन मुसण्डों से विहँस कहते यही ललकार,
ये लाल आँखें देखकर
बालक भले ही जायँ डर,
डरते नहीं हम, डर दिखाते हो किसे बेकार!
बेबाक सीधी औ' सरल,
हम बोलते भाषा विमल,
उस डिप्लोमेसी के नहीं इसमें कहीं कुछ पेंच,
जिसकी पकड़ को अतिघना
कानून पड़ता छानना,
यह बात सीधे जेल में लेती हमें है खेंच।
दल बाँध कर जो मनचले
घर-बार अपना तज चले
फिर मिट गया उनके सकल अपमान का अभिशाप,
चिर काल की वह हथकड़ी
खुद खिसक भूपर गिर पड़ी
औ' भाल पर लग गई गांधीराज की चिर छाप।

दिन के उजाले ने भी दीपक जलाकर अरे ओ मौजी ! तू यह कौन-सा आड़ा-टेढ़ा लेख लिख रहा है ? सुन, नगर के पथ पर कोलाहल उठ रहा है—'गांधीजी' 'गांधीजी' !! गवाक्ष से यह किसकी किरण-रेखा किस नवीन ज्योतिष्क से विकीर्ण होकर चली आ रही है ? किस चंद्र के अनुराग से जन-समुद्र में आज तरंगें उठ रही हैं ? जगन्नाथ के निशानधारी रथ का वह कौन सारथी है जिसके लिये क़तार की क़तार उत्सुक नर-नारी राह देख रहे हैं ! किसान के वेश में कृशदेह—अग्नि की लय छवि के समान—वह कौन जगत् के यज्ञ में सत्याग्रह के द्वारा प्राणों की हवि अर्पण कर रहा है ? किसकी पताका को घेरकर वकील और मज़दूर परस्पर प्रेमालिंगन कर रहे हैं, किसकी मृदुवाणी में गर्वी गोरों की भेरी का शब्द आज डूब गया है ? किसकी भिक्षा की झोली में कोटि-कोटि मुद्रा आ समाती हैं, किसकी कीर्ति ऐसी महा-सुंदरी है, किसकी अँगुलियों के इशारे पर कोटि-कोटि हिंदू-मुसलमान आज संकल्प-तत्पर हैं ! आत्मा के जल से पशुबल के मस्तिष्क में किसने सनसनी फैला दी है ? वह कौन है जो इतना सा है फिर भी सर्वपूज्य है !—'गांधीजी' ! 'गांधीजी' !

साधारण श्रमिक के हृदय को भी जिसने महाजीवन के छंद से भरपूर कर दिया है, प्रेम की तिलक-छाप देकर धनी-निर्धन को जिसने एक कर लिया है; जिसका आचरण कोटि-कोटि कविताओं का मनोरम निर्झर है, जो अपने कर्म में मानो मूर्त्त महाकाव्य है, चरित्र में अनुपम है; जिसके देशभाई दैन्य के कारण सारे विलास त्यागकर गाढ़ा पहनते हैं, नंगे पाँव फिरते हैं, कमली फैला-कर सोते हैं; जिसकी तपस्या छोटे से छोटे के साथ भी देशात्मबोध है; रोज़न्दार मज़दूर की तीन आने पैसे की खुराक से भी जो खुश है; अपनी ही इच्छा से जिसने दीनता अख्तियार की है, ग़रीबों को हृदय के निकट खींचा है, लाख-लाख कवियों की सघन अनुभूति लेकर जिसने प्यार किया है; हिंसा-क्षोभित आवास में भी अहिंसा ही जिसकी परम साधना है, जिसका आसन बुद्ध के क्रोड़ में, टाल्सटाय के पार्श्व में है; दीनतम व्यक्ति को भी जिसने गूढ़ आत्म-सम्मान सिखलाया है; जो आत्मा की शक्ति से ही पर्वत-प्रमाण बाधाओं को उल्लंघन कर चलता है, वीर-वैष्णव है जो, विष्णु के तेज की उज्ज्वलता से भीना जो व्यक्ति है वही भारतवर्ष की पुलक के समान गांधीजी हैं, गांधीजी हैं।

काफिरों के देश अफ्रीका भूमि में—विक्टोरिया नगरी में—जिस धीर ने बार-बार स्वदेशवासियों के प्रेम के अर्थ क्लेश सहा, उपनिवेश के कुशासकों ने जजिया कर को अग्राह्य करके बनिया-मोदियों को आत्मशक्ति पर निर्भर होना सिखलाया, जिनका फ़ुटपाथ पर चलना भी निषिद्ध था उनका सजातीय बनकर

जिस वीर ने गोरो के चाबुक सहकर भी अपने इस सामान्य अधिकार के प्रयोग का संकल्प किया, मार खा-खाकर जो बेहोश हो गया फिर भी संकल्प नहीं त्यागा, बार-बार जिसका जुरमाना करके अंत में गौराग प्रभु ने हारकर बंद-क़ानून को रद करके ही चरम रिहाई पाई। धीरज में वह वीर पृथिवी में अग्रणी है, अद्वितीय है। प्लेग-प्लावित मजदूरों की बस्ती में उसने सेवा का व्रत लिया, बोअर युद्ध के जूलू युद्ध में जख्मियो को ढोता फिरा। वकील-मजदूर-मोदी-महाजनों को लेकर पल्टन खड़ी कर दी, उपनिवेशों की बात पर विश्वास करके अपने प्राण होम दिये। काम के समय अंग्रेजों ने जिसे 'काजी' (कर्मठ) माना था, काम निकल जाने पर वही पाजी हो गया! हाय री वर्णबाधा! बातों के हीनमना कप्तानों ने जब अपनी बात नहीं रखी, बीते युग के क्षुब्ध करने-वाले जजिया-कर को अक्षुण्ण रखा, तब जिस व्यक्ति ने कुलियों की मज्जा में वैष्णव-सेना सघटित करके धैर्य और वीर्य द्वारा जगत् को मुग्ध कर दिया—वही ये गाधीजी हैं।

जिसने सागर पार स्वदेश का सम्मान प्राणपण से जीवित रख छोड़ा, गोरे किसानों के देश में निग्रह सहकर नीग्रो-कुलियों का साथ दिया, विदेश में स्वदेशी वट का पौधा रोपकर अपने ही हाथों से विश्वास का पानी सींच-सींच जिसने उसे सँजो-सँजोकर बचा रखा; भारतीय प्रजा को चोर की तरह थाने-थाने नाम लिखाते फिरना होगा—समाचार सुनकर अँगुली की छाप देकर जिस विधि से उस अविधि को निर्मूल करने की विधि निकाली; देशात्मा को अपमान से बचाने जाकर जो कारावासी हुआ—पुण्य ज्योति की ज्वाला जलाकर जो जेल का अधिवासी हुआ, भय-तरण के सुधा-क्षरण की जो उदाहरण माला के समान है। देशी कुली, देशी कोठी वाला कोई किसी का निषेध नहीं सुनता, देखते-देखते सारे जेलखाने भर उठे! झुंड-के-झुंड अनगिनती स्त्री-पुरुष कैद हो चले, धनीमानी स्वेच्छा से दिवालिए हो गए—तब भी प्रण नही त्यागा। क्षुधित शिशु को छाती से लगाए देश की प्रेमिका मजदूर नारी जिसके इशारे पर कष्ट-कारा वरण करने दौड़ पड़ी; जिसकी दीक्षा पाकर निरक्षर भी दुःख की नदी में सतरण कर पाया—छाती से सद्य पाई हुई मर्यादा को चिपटाए! चिरपदानत तामिल-युवक जिसकी मत्र-गर्भ फूँक के निश्वास से ही अमर पारस छूकर जाग उठा! जिसके चारित्र्यगुण से मुग्ध होकर पुलकित पोलक मित्रता करने आए, जिसके दीपक से आज भारत और विलायत में सबने आग जलाई और जिसकी यह कीर्ति सुनकर विदेशियों ने भी जिसे अपने प्रेम-पाश में—अपनी राखी में—बाँधा, प्रेमी एन्ड्रूज ने जिसके लिये अयाचित मित्रता का उपहार सँजोया; ट्रान्सवाल से फिजी तक सभी जिसे अपना ही मानते हैं, वही जीर्ण पिंजर के अधिवासी, महान् गरुड, गांधीजी हैं।

एशिया निरा मजदूरों का ही घर नहीं है, इसे जिसने प्रमाणित किया; नरनारायण की सेवा का आदर्श, महामानवता, जिसने श्रमिकों में भी संचरमाण कर दी; धैर्य और प्रेम का पाठ, देह और मन द्वारा विशुद्ध सत्य का पालन जिसने सिखाया, इस पथ पर जिसने पठानों के चेलों की लाठियाँ खाईं, जो विधाता की उस स्वर्णोज्ज्वल पताका को लिये हुए है जिसके एक ओर "सत्य" और दूसरी ओर "जीवमात्र पर प्रेम" का मंत्र अंकित है; सत्याग्रह की दाह में गलकर जो विशुद्ध कांचन प्रमाणित हुआ है; देश की सेवा के साथ ही साथ जिसकी सत्याराधना भी चलती है; अटूट काम की धारावाहिकता के बीच भी जो साबरमती के वरणीय तट पर ध्यानासन से मौन बैठ पाता है; तपस्या की वृद्धि के लिये ब्रह्मचर्य ही जिसका उपार्जन है: तर्कजाल के घटाटोप में जिसके प्राणों का दीपक उज्ज्वल रहता है; मेहतर की कन्या को भी उठाकर जो पालता है, अशुचि नहीं अनुभव करता; नौकर की सेवा जिसे क़ुबूल नहीं—क्योंकि वह मानव को छोटा करना है; छोटे-बड़े के अन्तर में जिसने आत्मा की शाश्वत ज्योति लाभ की है; दास बनने और दास बनाने—दोनों को ही जो चित्त की अधोगति मानता है; जो देश के प्रेममय कोष में आसीन है, शक्तिबीज का बीज है, जिसके अन्तर में वैकुण्ठ है; वह गांधीजी यही हैं !

दर्पी का दर्पनाशक, भारत को पवित्र करनेवाला है यह वणिक्-पुत्र ! शुचि-महिमा में जो सहज अवहेलासहित द्विजकुल को भी लज्जित किए है; कुंठा-हीन वैकुण्ठ की ज्योति जिसके मन में जाग्रत् है; कर्त्तव्य के आह्वान पर कभी दंड झेलते जो कुंठित नहीं है; नील की खेती और चाय के काण्डकारियों के राज्य में मजदूरों का क्रंदन सुनकर कामरूप और चंपारन के अरण्यों में आँसुओं के मोती चुनता फिरता है; शासन-पीड़ित अकाल कायरों को जिसने मार्मिकता सिखाई; प्रजा का सदा का मीत—जो स्वयं बीड़ा उठाकर लगान-बन्दी करने जुट गया; जिसने पहली बार विधिवत् राजा और प्रजा को यह समझाया कि राज करना केवल हुकुम चलाना और डिगरी जारी करना नहीं है; बीज-बखर कुर्क करना, अकाल के समय मालगुज़ारी हाँकना—यह सब अत्याचार है, यह हमारी भारत-भूमि में और नहीं टिकेगा—नहीं चलेगा; सात-सात सौ गाँवों में जिसने अमोघ सत्याग्रह की भेरी निनादित की; राजा के दरबार में निःशंक होकर प्रजा की शिकायत पहुँचाते जिसे विलंब नहीं होता; जो अभय व्रत का व्रती है; सम्पूर्ण शंकाएँ हरण करता है; विश्वप्रेम के प्रपंचप्रदीप द्वारा मज़दूरों-श्रमिकों की आरती करता है; सुधन्वा और प्रह्लाद जिसके महीयान् आदर्श हैं—जिन्होंने पिता की आज्ञा पर भी आत्मा का अपमान नहीं किया; चित्तौर की वीणापाणि वैष्णवी मीरा जिसका आदर्श है, जिसने राजा के आदेश पर

राजरानी होकर भी सत्य की पूजा नहीं छोड़ी; जिसके जप की माला में सारी दुनिया के सत्य के पुजारियों का मेल है—यूनान के शहीद सुकरात के यहूदियों के दानियाल तक—जिसकी बातचीत से ही बन्दी मन के बंधन छिन्न होते हैं, हे कवि, आज उसी की आगमनी गाओ, गाधी का जयगान करो !!

एशिया के अधिकार, हारूँ की स्मृति, इस्लाम के सम्मान में जिसकी मर्मवीणा के तारों में पीड़ा से प्राण काँप उठे, उदार छाती लेकर समग्र एशिया व्यथा का स्पंदन वहन करते हुए सब हिंदुओं की ओर से जिसने प्रत्यक्ष खिलाफ़त पर हस्ताक्षर किए; चित्तबल की झाँकी दिखाकर जिसने आह्वान का संवेदन पाया; तूफ़ान की विशृंखलता को जिसने सत्याग्रह के छंद में बाँधा, प्रीति की राखी से जिसने हिंदू-मुसलमान दोनों को अनायास बाँध दिया; पञ्चनद के जलियाँवाले की ज्वाला जिसके प्राणों में सदा जाग्रत् रहती है, भारतीयों के प्राण-हरण का अपना अधिकार समझनेवालों अन्यथा करने के लिये जो दुर्निवार रथी भारतीयों का सेनापति हुआ; दैवदत्त धर्म्म-रोष की तलवार जिसके हाथों सत्याग्रह के रसायन-संपात से सोना हो गई; वर्त्तमान शासन के साथ स्वतंत्र शासनतंत्र की लड़ाई ठानकर जो सदा देश-देशान्तरों में अभय मंत्र देते घूमा-फिरा; जिसकी महावाणी शक्ति का आधार है ; जो कभी लेश भी अनुदार नहीं; जिसका कुछ भी लुका-छिपा नहीं—जो सरेबाजार यह घोषित करता है: "स्वराज्यप्रयासी देशवासी ! जागो; स्वराज्य स्थापन करना होगा; त्याग की क़ीमत देकर ही हम वह धन खरीदेंगे, तपस्या से उसे स्थायी बनाएँगे। जो कुछ अपने वश में है, वही तो स्वराज्य है, वही तो सुख की खानि है; अपने कर्म के लिये जो दूसरों का मोहताज नहीं, उसी को स्वराज्य पाया मानना। स्वपाक में स्वराज्य है; अपने ही हाथों अपने वस्त्र बुन लेने में स्वराज्य है; देश के शिष्य-पोषण पर अपना ही सहज अधिकार स्वराज्य है; अपनी ही भाषा बोलने—अपनी ही रीति से चलने में स्वराज्य है; अशुभ को दोनों पावों से कुचलते चलने में स्वराज्य है; अपनी भूलो का स्वय ही संशोधन कर डालने में स्वराज्य है—इसे अनुभव करने में कि विधाता की सृष्टि में प्राणी का अपने प्राणों पर अपना ही अधिकार है, स्वराज्य है। उस अधिकार में जो व्यक्ति 'प्रेस्टिज' की वजह दिखाकर हस्तक्षेप करता है, उस समय स्वराज्य का अर्थ अमला—तंत्र के साथ जूझ जाना है। अपने हाथों अपनी हो शिक्षा का हथियार स्वराज्य है—स्वप्रकाश के पथ पर चलना स्वराज्य है, अपनी ही देशी पंचायत में अपना फैसला करना स्वराज्य है। ऐसे स्वराज्य की माला को जो अपने चारित्र्यबल से स्वायत्त करता है, उसीके करगत संसार की सारी दौलत होती है; हाथों के भीतर ही इसकी चाबी है, प्रयत्न करते ही पाओगे। अपने को अक्षम समझने की भूल न करना।" जो

सबके निकट यह महामंत्र घोषित करता है, आत्म-अविश्वास का जो अरि है, जो मूर्तिमान विश्वास है, जिसने आज तक पराजय नहीं जानी, हे कवि, आज उन्हीं गांधी का जयगान करो !

हँसो मत, हे ह्रस्वदृष्टि ! हँसोमत ! विज्ञ की तरह मत हँसो, अविश्वासी, मूर्त्त तपस्या पर श्रद्धा रखना सीखो; अविश्वास के विष-निश्वास से प्राण छीजते हैं, विश्वास से विश्व पर विजय होती है— विद्रूप से नहीं। व्यंग-माँ, तू अपना व्यंग-चंग बखान बंद कर; दुक देख, भारत का मधुचक्र किस तरह गुंजन से मुखरित है; भौंरा भी आज मधुमक्खी हो उठा है जिसके पुण्यबल से, उसकी बात यदि कुछ जानती हो तो कह। मन कुतूहल से आन्दोलित है। यदि मालूम हो तो सुना कि मोहनदास की महादुश्मन सुराराक्षसी—बोतलस्तनी पूतना—किस कौशल से अपना मतलब सिद्ध कर रही थी; मतवाले के हाथ से बोतल छीनकर कौन तैलिक कारावास चला गया; कौन लाट अशोक की लाट को मदिरा के इश्तिहार से ढक रखता है ! यदि मुझे पता हो तो बतला कि आबकारी-युद्ध का क्या फल हुआ; मद्य-जातक का क्या फिर मगध में अभिनय शुरू हो गया ? अरे ओ मूढ़ ! तू आज केवल छल अन्वेषण करता मत भटक। छोटी-मोटी कौनसी बात कब-क्या कह दी थी, उसी का जवाब देते मत फिर। 'गोकुल' श्रेय है अथवा 'खानाकुल', इस कलह को आज रहने दे, देशव्यापी जो जीवन का ज्वार आज उमड़ रहा है उसी को देख ले। यदि बन सके तो पवित्र होकर उसी जल में अवगाहन कर ले, महान्-आत्मा महात्मा किसे कहते हैं, तनिक देख ले, पहचान ले !

इतना बड़ा विराट् आत्मा क्या कभी तूने देखा है ?—देश जिसका प्रिय आत्मीय है, तब भी जो विश्वासहीन है ? दूरबीन लगाकर विज्ञ लोग घोषणा करते हैं कि सूर्य के हृदयपट पर कालिमा अंकित है ! क्या इससे उसके भास्वर प्रकाश का एक कण भी कम होता है ? उसी कलंक को छाती में वहन करके सूर्य प्रतिदिन जगत् को आलोक से परिपूर्ण किए हुए है, प्रति देह, प्रति पुष्प में रश्मि का ऋण बढ़ाता जा रहा है, उसे प्रीति से भरे दे रहा है। हर झोपड़ी में जिसने होम-शिखा प्रज्वलित की है, हर मजदूर-किसान को जिसने सम्मान-मर्यादा के पावन तिलक से सम्मानित किया है, कृषकों के घर-घर जिसने नव-पौरुष पहुँचा दिया है; जिसके वरदानस्वरूप शिल्पी का घर आज कर्म की पुलक से ओतप्रोत है, जिसके आह्वान पर तीस कोटि चित्त ने आज संवेदना दी है; देश की खतौनी में आज साधारण आदमी भी यश का अंक लिखे जा रहा है; जिसकी वाणी शिरोधार्य करके आत्मविलोपी कर्मासत्र आज दुःसह दुःख का वरण करके चुपचाप व्रत का पालन किए जा रहा है; छात्रों के त्याग से, स्वार्थ के त्याग से, आज वायु पुलकित होकर

बह रही है; राजभृत्य की वृत्ति के त्याग से राजपथ छायान्वित है; जिसे अपने बीच पाकर हिन्दू और मुसलमानों ने वैषम्य लुप्त कर दिया है; 'आत्मसंयम' ही 'स्वराज्य' है—ऐसा समझकर परम प्रेम का उपभोग किया है; जिसके जीवन में हजरत मोहम्मद का धर्म-शौर्य जाग्रत् है, और बुद्धदेव की मैत्री-भावना से मिलकर जो आज नवीन सजा से स्फुटित है; जिसने सारे जीवन ईसा का क्रूस कंधों पर ढोया है; काँटों से भरी राह में जो विक्षत पैरों से 'सत्य'-व्रत की साधना किए जा रहा है; जिसके कल्याण से आलस्य आज चरखे को प्रणाम करके पलायमान् होता है—कबीर की संस्कृति से भारत के नगर और देहात को जो परिपूर्ण किए हुए है, जिसके स्पर्श से हर निद्रालोक की अर्गला विच्छिन्न हो गई है; तीस कोटि प्राणियों के दिल जिसके आगमन से भर उठे हैं। ओ मौजी, आज उसी का स्वागत-गान उसी की आगमनी गा, गौड़-वंग देश, आज महात्मा पुरुषोत्तम गांधी का जयगान करो—जयगान करो !!

महात्मा गांधी के प्रति

श्री बुद्धदेव वसु

हम लोग पतंग-जन्मा हैं मूषिक हैं मृत्यु के
अंधकार में, पिंजरित; दुर्भिक्ष के कराल आकाश में
(हमारा) चिरस्थायी नाभि-श्वास उतरता है और चढ़ता है
हताशा की दुःसीम गुमसुम में
न दुःख है, न सुख है, न आशा है, न मनुष्यत्व है
केवल धक्-धक्
धुकुर-पुकुर चलते हुए किसी प्रकार बच रहना
केवल शून्य भविष्यत् में अंकित करना
नियति काल-नेमि को अश्रु के अक्षरों में,
इसके बाद अंतिम प्रहर में
क्षीण आवाज में अनिश्चित ईश्वर को पुकारना।
जीवन मृत जड़ता में जीते रहना—और फिर भी जीते रहना।
इस निरन्ध्र निश्चेतनता में क्या कहीं प्राण रह गया था ?—
अबाध्य, अवध्य, इतिहास,
यह क्या उसी का आकस्मिक विराट् उच्छ्वास है ?
यह क्या किसी अलौकिक अज्ञेय सत्ता का युगान्तरकारी अवतार है ?
यह क्या सत्य है ? यह क्या सत्य नहीं है ?
जान पड़ता है हमारे जीवित मृत्यु के
दुर्गम गोपन उत्स से स्पन्दित
रक्त वहनकारी हृत्पिंड हो; या सचमुच ही

इतिहास नियति का अलक्ष्य सारथी है
या शायद हम लोग
अनंत काल के समान नित्य मरकर भी अमर हैं।
यदि ऐसा न होता
तो यह असंभव कैसे संभव होता
हम तो जानते नहीं किस प्रकार
किस दूर शताब्दी के उस पार से
प्रति दिन बूंद-बूंद करके
हमने ढाला है इस प्राणमय प्राण को,
(हम) भारत के कोटि-कोटि हिन्दू मुसलमान।
तुम हमारे वही प्राण-संचयन हो,
हमीं तुम हैं। निरन्न की, निर्बल की, मनुष्यत्व-वंचित की
सर्वग्रासी अंधकार फटकर
कब अग्नि फूट उठती है क्या कोई उसे जानता है ?
हम कोटि-कोटि अचेतन हृदयों की आग्नेय कणिका
जहां पुंजित होकर जलाए है असमाप्य, अनिर्वाण शिखा को,
तुम वही आश्चर्य प्रदीप हो, प्रदीप के अपूर्व ईंधन हो,
भारत के हे प्राण-पुरुष, हमारे प्राण-संचयन हो !

महामानव

श्री मोहितलाल मजुमदार

न जाने कब ऋषि के मन में तुम्हारा जन्म हुआ था—इस भारत की महा-मनीषा की तपस्या-काल में। जिन लोगों ने मानव मात्र में अभेद करके देखा था उन्होंने ही तुम्हें प्रथम बार देखा और जाना। इसके बाद तुम नाना युगों में मूर्ति धारण करके आए, मृत्यु का समुद्र मथित करके अमृतपान कराया ! कुरुक्षेत्र में 'मा भैः' (मत डरो) की ध्वनि के साथ शंख बजा। प्रथम प्रेमी शाक्यसिंह का संसार में उदय हुआ ! पापलिप्त पश्चिम में भगवत् कृपा ने ईसा का दान दिया ! और और भी एक मरु-संतान को (उचित) दिशा दिखाई ! उसी एक वाणी मूर्ति को धारण करके तुम आए ! हे जीव और ब्रह्म के अभेदद्रष्टा, तुम्हारा चरण चूमता हूँ।

हे प्राणसागर, तुममें प्राणों की समस्त नदियों ने पथ के प्लावन-विरोध को नमस्कर विराम पाया है। हे महामौनी, तुम्हारे गहन चेतन तल में महाबुभुक्षा को तृप्त करनेवाला मंत्र जल रहा है। हे धन्वन्तरि, मन्वन्तरकालीन महानंध से निकला हुआ अविद्वेष रूप अमृत भांड देख रहा हूँ। जगत् जन की समस्त वेदना रूपी समिधा का आहरण करके उसी ईंधन में अपने प्राणों की हवि डाल

दी है। ललाट पर तुमने महावेदना की भस्म टीका धारण की है, तुम्हारा जीवन होम हुताशन की ऊर्द्धव शिखा है। शंका को हरण करनेवाले तुम आहिताग्नि के पुरोधा हो! हे यज्ञ-जीवन देवता! मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ।

अपने निरामय देह में सबकी व्याधियों का भार ढो रहे हो। नमस्य होकर भी तुम सबको नमस्कार कर रहे हो! चिर अंधकार को दूर करनेवाले तुम्हारे नयन प्रान्त में अधी आँखों के अंधकार का अश्रु ढल रहा है। हे अर्द्ध-भोजन-कारी विरल वसन सन्यासी तुम सत्य संसार के नीचे आकर खड़े हो। आदि काल से लेकर अब तुम इसी प्रकार मगन रहे हो। हे महाजातक, यह जातक-चक्र कितना घूमेगा? अपने को कितनी बार यज्ञ के यूप पर बलिदान करेगा—छोटे 'मैं'-समूहों को तुम्हारे रूप से भर देगा। मैंने तुम्हे पहचाना है, तुमने युग-युग में अवतार धारण किया है। हे बोधिसत्त्व, हे बुद्ध मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ!

ध्यानी के ध्यान में तुम्हारा अपना आसन चिरंतन है, जिस समय तुम इतिहास मे पकड़ाई देते हो वह महान् क्षण होता है। देश-देश में तुम्हारे शुभागमन की वार्ता फैल जाती है; तुम्हारी कहानी देवालयों और मठों मे कीर्तित होती है। बाद में जिस दिन भूलकर अपने ही लिये तुम्हारे नाम का जप करने लगते हैं—नर को भूलकर केवल 'नारायण' का मन्त्र पढ़ने लगते हैं, अपने मन की स्वार्थसाधना की मूर्ति गढ़ने लगते हैं—दुनियादारी के अन्धे जगत् के आनंद की अवहेला करके रत्न और भूषणों के द्वारा मिट्टी के ढेले सजाया करते हैं—जगज्जीवन मूर्ति धारण करके, हे मानवपुत्र मैत्रेय, आओ, मैं तुम्हारा चरण चूमता हूँ।

हे महान् अतीत के साक्षी, हे तथागत आओ! इस मरण शासन की मूर्च्छा से आहत पृथ्वी को देखो। हे मानवराज, काँटे का मुकुट सिर पर धारण करके आज मनुष्य का जयगान करो। हाथ के स्पर्श से महाव्याधि के भार को हरण करो—अपने आपको देखकर पुरुष और स्त्री धन्य हो जायँ। और बार तुम घर-घर पुकारते हो, 'मेरे पीछे चले आओ, भय का समुद्र पैदल ही पार कर जाओ, क्योंकि भय मिथ्या है।' हे मृतकनाथ, मरे हुओं को फिर से नाम लेकर पुकारो। इस प्रेत-भूमि में रोदन के साथ यह कैसी काटा काटी चल रही है? जितनी स्मशान भूमियाँ हैं, वे सूतिकालयों की शोभा धारण कर रही हैं—आज महादेव का नहीं—महामानव का—तुम्हारा—चरण चूमता हूँ।

धर्मवीर

श्री प्रभातमोहन वन्द्योपाध्याय

दिन सुख से ही कट रहे थे। धर्म क्या है सो अच्छी तरह ही तो समझता था, श्रद्धा सहित नित्य उसे दूर से प्रणाम निवेदन करते किसी दिन भूल नहीं

हुई। धार्मिक व्यक्तियों की चरणरेणु लेकर प्रतिदिन के स्वार्थ-द्वन्द्व म निःशंक होकर निमग्न था। जीवन आसान था।—

कि ऐसे ही समय तुम्हारी तीव्र ज्योति न जाने कैसे मेरी अंधी आँखों में अकस्मात् कहीं से आ समाई! हे धर्मवीर, तुम स्वार्थ की प्राचीर भग्न करके मत्त-झंझा के समान आ पहुँचे। करोड़-पति से लेकर दीनतम गृहस्थ को तुमने घर से ठेलकर पथ पर ला खड़ा किया। कहा : "धर्म पोथी-पत्रा, मन्दिर और तपोवन में नहीं है, रणक्षेत्र की पैशाचिक हत्या के गौरव मे भी नहीं है; देशमाता के नाम पर विदेश के शोषित वैभव में भी धर्म का निवास नहीं और न शृंखलित दासत्व में ही धर्म का आवास है। मंत्र, तिथि, तीर्थ आदि साधनों द्वारा जिसे सकोच से तुमने दूर हटा रखा है, आज अपने घर के आँगन में उसे ही प्रत्यक्ष करो; उसके निविड़ आलिङ्गन में घिरकर आज धन्य होओ। अखिल विश्व के लाञ्छितों के लिये धर्म अभय का संदेशा लाया है, आज निरन्न को अन्न देने में, अत्याचार का अवरोध करने में धर्म जाग उठा है। प्रतिदिन के कामकाज में यह सहज और सक्रिय धर्मबोध मनुष्य को मुक्ति देगा, विश्व को शातिमय करेगा; आज उसी धर्म का दूर ही से जयगान करके नहीं चलेगा; 'जीवन में अविश्रांत कर्म के भीतर से उसे उपलब्ध करना होगा।"

मैंने अविश्वास से कहा; 'कभी यह भी संभव हुआ है' उत्तर मिला 'परीक्षा कर देखो न।'

सारे देश में संवेदन जाग उठा। पंडितों ने व्यंग्य की हँसी हँसकर कहाः "ऐसा भी हतभागा आया है जो धर्माचरण-द्वारा देश को मुक्ति देने चला है।" किन्तु देश के अंतस्तल में स्वार्थान्ध के सुख-सपनों का नाश करनेवाली धर्म-मूर्त्ति जाग उठी। कोटि-कोटि विक्षुब्ध-विवेक से उसकी पूजा-आरती हुई!!

हाय, आज कौन बताएगा कि जो होमाग्नि प्रज्वलित की गई, जो साधना अभी शुरू हुई है, उसकी पूर्णाहुति कब होगी? कौन कहेगा कि सिद्धिलाभ कब होगा??

महात्माजी के प्रति

श्री चपलाकांत भट्टाचार्य

जिस दिन पंजाब की भूमि में पिशाच ने रक्त की होली खेली उस दिन साबरमती के आश्रम में तुम्हारा ध्यान भंग हुआ, तुम वहाँ से बाहर आए और देशवासियों का अपमान अपने वक्षःस्थल में ले लिया, तीस कोटि प्राणहीन कंकालों में जीवन भर दिया। उस दिन जिस निर्घोष को सुनकर हम सहसा जाग उठे थे वह अब भी कानों में लगा हुआ-सा लग रहा है।

असहयोग का रूप धारण करके तुम्हारे रोष की वह्नि-शिखा भारत में छा गई, उससे प्रबल शासन-शक्ति काँप उठी। तुमने दिखा दिया कि हिंसा-विहीन युद्ध में कितनी शक्ति है। जाति को तुमने कठोर व्रत की दीक्षा दी—वह दिन क्या भूल सकते हैं?

सहसा तुम्हे कारागार की दीवारों ने रुद्ध कर दिया, संगी साथी अपने अपने कामों पर लौट गए। जब तुम बाहर आए तो देखा कि जाति लाञ्छना और अपमान को सहती हुई सो गई है। दिल्ली से लेकर कोकनद तक के उपप्लव के वेग से गाधी का नाम डूब गया है। निष्फलता की हताशा को दलन करके सब विरोधों का जहर पीकर, सबको शान्ति देकर तुम चुपचाप अपने आश्रम को लौट गए।

हाय, इसके बाद का इतिहास पतन की कालिमा से पुता है। नवीन सहयोग का अभिसार बार बार खंडित हुआ है, तो भी वे लोग उससे चिपटे पड़े हैं, लौटने का उनमें साहस ही नहीं है। तुमने जो जीवन का वेद सिखाया था उसे वे भूल गए हैं। तुमने क्लान्त नयनों से उन लोगों की ओर देखा जो अबोध दम्भ से मत्त होकर राष्ट्र चालना का भार लिए हुए हैं। हे तापस सेनापति, आओ तुम्हारी देश और जाति डूबने जा रही है, क्या अब भी तुम्हारे नेतृत्व ग्रहण करने का समय नहीं आया?

तुम्हारा शरीर टूट गया है। पर उसी के साथ क्या तुम्हारा मन भी टूट गया है? क्या सब साथियों ने प्रण छोड़ दिया तो तुम भी छोड़ दोगे? फिर हम किसकी आँखों की ओर देखकर पथ का आलोक पाएँगे—विशेषकर उस समय जब चारों ओर काला अंधकार घुमड़ आया है? तुम धरणी के भार को वहन कर रहे हो, यदि द्विविधा में पड़कर तुम्हारा चरण टल गया तो वसुंधरा टलमला जाएगी।

गान्धी महाराज

श्री यतीन्द्रमोहन बागची

सम्मुख पथ पर विपुल बल लेकर वह कौन जा रहा है—उदार, धीर, अत्यत गंभीर—जिसकी पलकें नहीं झिपतीं; सरल पथ पर, सहज भाव से—समान ऋजुगति से चलता हुआ—वह न दाएँ रुकता है न बाएँ—न लाभ गिनता है न हानि। व्यथित जनों के शोक और अभाव में, उनकी सेवा में ही जिसका मन नियोजित है; दीनों के लिये झरती आँखों से आँसू बरसाता हुआ जो प्राणों की बाजी लगा देता है, दूसरों के लिये सर्वस्व त्यागकर जो भय और लाज भुलाए हुए है,—

वह कौन है?

पवन हाँकती हुई कहती फिर रही है; गाधी महाराज!

भारतवासी—वही और किसान किसका मुँह देखकर नवीन बल से मत्त होकर आशा का गान गाते हुए चल पड़ते हैं; कुली और मज़दूर अभाव को भूलकर किसके जयगीत को सुनकर मन-प्राण-जीवन बलि देने का संकल्प दृढ़ करते हैं; धनी-मानी, गुणी-ज्ञानी, दरिद्र और गृहहीन सभी किसके निकट शरण माँगते हैं—दुःख को शोध नहीं पाते—नेत्र उठाकर निखिल जगत् किसे नमस्कार कर रहा है?

देशमाता के कण्ठहार—गांधी महाराज को।

जो दूसरों से आशा नहीं करता—अपने ही पर निर्भर है; चित्त जिसका शांत सुसमाहित है, शुद्ध जिसका कलेवर है, सरल-वास, सरलभाषा, सत्यपथगामी—वह कौन है, जिसका चित्त अहर्निश देश की हित-चिंता में ही सन्निविष्ट है?

विरोधी भाइयों को माता के चरणों के निकट अपने ही घर बुलाकर, सबका आह्वान करके मिलन की राखी, अशेष ममता के साथ किसने बाँधी है?—हिन्दू आज मुसलमान को अपनी छाती से लगाता है, असाध्य आज किसके संकल्प से साधित हुआ है?—गांधी महाराज के। वह कौन है जो बेमेल को हँसते-हँसते मेल के छंद में बाँध देता है, अचल को चलमान कर देता है: किसका चित्त शत्रु को जीतनेवाला है, अज्ञ हृदय का बल है; मृत्यु की व्याधि में असहयोग की निदान-विधि किसकी है जो देश के प्राणों में अस्तित्व का अधिकार लौटा लाती है;—जिस अस्तित्व का अर्थ सभी स्वाधीन देशों का जाना हुआ है, नवीन पथ पर नवीन रथ में जिसकी यात्रा हँसते-खेलते संपन्न होती है: जिस अस्तित्व का अर्थ, विधाता को मालूम है, अमृत लोक में ही प्रतिष्ठित है। यह वाणी मंत्र हमें किसने सिखाया?—गांधी महाराज ने!

गांधीजी का मृत्यु-प्रण

श्री सजनीकान्त दास

स्वर्ग और मर्त्य में आज रस्साकशी चली है। इस लोक और परलोक में एक मनुष्य को केन्द्र करके प्रचंड संग्राम छिड़ गया है। प्राणवान् प्राणी ने प्राण की बाजी लगा दी है, विचार चला है ऊर्द्ध्व लोक में कि उस प्राण का दाम कितना है। युग-युग में जिनका इतिहास 'जन्म और मृत्यु' है काल-वारिधि के तट पर जिनका अस्तित्व बालुका के समान है—आए और चल पड़े, मुहूर्त भर के जो बुद्बुद् विलास हैं उन्हीं में से एक के लिये मृत्युदूत आज संशय के चक्कर में पड़ गया है! वह क्या केवल देहमात्र है? वह देह-हीन आत्मा भी नहीं है! उसका परिचय सिर्फ़ यह है कि वह मानवी के गर्भ का संतान है इसीलिये विश्व-मानव की धात्री धरणी आसन्न विरह से आँसू पोंछ रही है: उसकी नाड़ी में एक खिन्चाव आ गया है। देवता ऊपर पुकार रहे हैं,

आओ आओ हे महान् आत्मा, प्रशान्त नयनों को बद करके जो देख रहा है मनुष्य के बालक को—रस्साकशी चल रही है; स्वर्ग और मर्त्य का व्यवधान घट रहा है, पृथ्वी हँसकर और रोकर कहती है कि यह आत्मा सिर्फ़ मिट्टी ही में मिलती है। बीच में बैठा हुआ है स्तब्ध ध्यानरत महामानव; उसके मुख में प्रेम और विदाई की हँसी लगी हुई है, स्वर्ग की पुकार नही है, रुक गया है आत्मा का कलरव, यह कहकर नही जा सकूंगा कि इस पृथ्वी को मैं प्यार करता हूँ। देहहीन देवता लोग देही को आशीर्वाद कर रहे हैं, आनन्द से त्वरित हो रही है धरणी की स्तन्य दुग्ध-धारा—आत्मा पृथ्वी पर ही रह गई; स्वर्ग और मर्त्य का विवाद मिट गया, मृत्यु को जो झकझोर दे वह देह नहीं, आत्मा का कारागार है।

आत्मा का आत्मीय गांधी

श्री सावित्रीप्रसन्न चट्टोपाध्याय

उस समय इस दुर्भाग्य-ग्रस्त भारत के वक्षस्थल में दुःस्वप्न जाग्रत हुआ था, भयविचलित चित्त में अविराम संशय जग रहा था, उसका मनुष्यत्व का मान हत हो गया था, इतिहास कलंकित था, गोपन गुहा में दिन रात हिंसा का षड्यन्त्र चल रहा था। जाति की बधन-व्यथा, बंधन-शृंखला का निष्ठुर पीड़न, कुबड़ी पीठ पर कोड़े की मार, लज्जाहीन दुर्बल-दलन चल रहा था, विक्षुब्ध मन के कोने में विद्रोहाग्नि सोई हुई थी। ऐसे ही समय में इस पुण्य-भूमि में तुम तपस्वी वेष में दिखाई पड़े। देश विच्छिन्न विध्वस्त था, चारोओर अपने ही आदमियों में संग्राम छिड़ा हुआ था, उसी की कदर्य छाया तुम्हारे चिन्ता-आकाश में आ जमी, दुश्चिन्ता की वाणी रेखा भ्रू कुंचन मात्र के कट गई। जैसी ही तुम्हारी गभीर दृष्टि थी वैसा ही उदात्त था कठ-स्वर। नूतन करके तुमने स्वदेश समाज को गढ़ने के लिये एक एक व्यक्ति को पुकार कर अहिंसा का नवीन मंत्र सुनाया, क्षुर-धार के समान तीक्ष्ण है तुम्हारी बुद्धि; युक्ति और तर्क के तुम बड़े पंडित हो, सुदूर प्रसारी है तुम्हारा मन, करुणा से कोमल है तुम्हारा हृदय। धर्म-धर्म में मारामारी, आचार-विचार का झगड़ा, संस्कार का मोहजाल, छूतछात का मान-अपमान, मंदिर का देवता बड़ा है और वाहर का मनुष्य छोटा, उसी मनुष्य को तुमने अपना उदार हृदय फैलाकर छाती से लगा लिया। मनुष्य के महत् धर्म मे इस महाभारत को तुमने दीक्षा दी, स्वयं धर्माचरण करके अभिनव प्रेम का प्रचार किया, तुम्हारे हृदय में स्वदेश-लक्ष्मी का निवास है, नयनों में उदार धरातल है, समस्त साधनाओं के ऊपर मनुष्यत्व के जगाने का व्रत है। तुम्हारी कीर्ति ने तुम्हारा स्मरण-सौध निर्माण किया है। इस अनात्मिक देश मे हे महात्मा गाधी, तुम आत्मा के आत्मीय हो।

सबके अर्चनीय और प्रातःकाल और संध्या समय स्मरणीय हो, मैं तुमको प्रणाम करूँगा वहाँ, जहाँ नियति फूल होकर झड़ा करती है।

महातपा—

श्री निर्मलचंद्र चट्टोपाध्याय

तप के तड़ित्-सूत्र से श्रेय और प्रेम को किसने एक में बाँध दिया है? किसने अमोघ मित्रता के मंत्र से वक्ष में चाडाल को लगा लिया है? किसके निर्मल ध्रुव नेत्र मे निर्मल मित्रता जग रही है? निर्निमेष दृष्टि से आज भारत को कौन देख रहा है?—गाधी महाराज।

किसके अस्थिशीर्ण शरीर में दृढ़दीप्ति चमक रही है? और अपनी कृशता से कौन सुंदर लग रहा है? सर्वस्व त्याग के प्रण मे कौन गुजरात का शंकर कटि में वस्त्र मात्र धारण करके दरिद्रों का पोषण कर रहा है? परजीवी श्रमिकों की लाज कौन रखे हुए है?—गांधी महाराज!

क्लीव और लक्ष्यहीन प्राणों में किसकी वाणी तिल तिल में अग्नितेज का संचार कर रही है? आज श्रृंखला की कड़ियों में बंदीगण किसकी वंदना गा रहे हैं?—सोये हुए चित्त में किसकी वाणी आज ऊँचे स्वर से बज रही है?—गांधी महाराज की!

'क्रोध को अक्रोध से जीतो, अप्रेम को प्रेम से जीतो' यह कहकर वेदना के विष से दग्ध मानव को किसने हृदय से लगा लिया है? अनन्त निग्रह और मानवों के कल्याण के यज्ञ में उसकी शक्ति अप्रहत है। मानव की मूर्ति जो धारण किए है वह गांधी महाराज हैं।

गांधीजी—

श्री विजयलाल

वर्बरता ने विज्ञान को दासी बनाकर रक्त की धारा दिगन्त में फैला दी है। मृत्यु का शासन पृथ्वी को आच्छन्न कर चल रहा है। न्याय के आसन को शक्ति ने आकर छीन लिया है।

प्रकाशहीन, आशाहीन, शताब्दी के कानों में तुमने प्रेम पत्र दिया। तुम्हारे आह्वान में वही प्रेम—संसार में जो बिलकुल निर्भय, वीर्य की अग्नि में जो चिर दीप्तिमय।

तुमने जाति को मृत्युमंत्र से दीक्षा दी है—प्राण—वह तो मरने के ही लिए हृदय फाड़कर आता है। मनुष्य को प्यार करते हो, तभी तो साम्य-वादी हो।

जहाँ शोषण है, तुम जानते हो, प्रेम वहाँ नहीं। तुम्हारा स्वराज सर्वहाराओं के लिए है; तभी तुम गाधी महाराज हो।

महात्मा गांधी

श्री विवेकानन्द मुखोपाध्याय

सोते हुए मनुष्य ने मानो समुद्र का गर्जन सुना—बहुत दूर की शताब्दी निपीड़ित आत्मा की वेदना, लाख लाख जीवन का संचित विपुल क्रन्दन, उसी के साथ मानों अकस्मात् अंधकार में पहचान हुई।

गांधीजी ने आह्वान किया है—सत्याग्रही रास्ते पर निकल पड़े—कौन है जो लाछना का वरण करके लांछना को जीतेगा ? कौन है जो आज भारत की स्वाधीनता के व्रत में अपनी आहुति देगा ? जेल, जुर्माना फाँसी का तख्ता कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं है।

हे मानव मुक्ति के दूत, महात्मा गाधी महाराज तुम्हारी पताका के नीचे भारत का नया जागरण हुआ है। गाँव-गाँव, घर-घर में कोटि-कोटि मनुष्यों के चित्त में नवीन युग के लिये एक अव्यक्त गुंजन (आरभ हुआ है)!

यह लज्जा, अपमान, दासत्व का यह जो स्खलन है, शताब्दी से चला आता हुआ यह जो निष्ठुर शोषण है, वह अब सहा नही जाता, इसीलिये तुम्हारे आह्वान से प्राण-पद्म चंचल हो उठा है। ऐसा लगता है कि मुक्ति का आलोक अब अधिक दूर नहीं है। तुम उसी आलोक के वार्त्तावाही महान् तापस हो, भारतवर्ष का यह प्रेमस्निग्ध अर्घ्य ग्रहण करो।

ये संत सुजान गांधी जी !

श्री अरदेशर फराम जी खबरदार

अन्धकार के दुर्ग को तोड़कर एक अमूल्य उज्ज्वल किरण आई है। मरुस्थली की धधकती हुई बालुका से भी रस से ललित अमृत-निर्झर फूट पड़ा है। दशों दिशाओं के लोचन मिचे जा रहे हैं। मनुष्यों के तन और मन अंदर अंदर कलप रहे थे, भारत का हृदय ग्लानि में डूबा जा रहा था, इसी समय में प्रभु की वाणी अवतीर्ण हुई। इस परम वाणी को कौन लाया ? उसे तो यह सुजान संत गाधीजी लाए हैं, गाधीजी लाए हैं, जो कि नवभारत के प्राण हैं !

जीते हुए भी मृत-समान देहपजर भारतभूमि में यत्र तत्र घूम रहे थे, जिनमें पूरी श्वास लेने की भी शक्ति नही थी। शीत में उनके गात थर-थर काँपते थे। जब माँ के केश खींचे जाते थे, तब उसके पुत्र हिंसा के भय से भटकते फिरते थे। भाई भाई लड़ रहे थे ! ऐसे विषम समय में व्योम और वसुधा का संधान किसने किया—किसने जमीन आसमान एक कर दिखाया ? किसने सबमें प्राणों का सचार किया ? वे तो सुजान संत गाधीजी हैं, बापूजी हैं, नवभारत के प्राण गाधीजी हैं !

मरी हुई मिट्टी में चैतन्य का संचार हो उठा ! पाषाण- हृदयों में फूल खिल उठे। हिम-सतति में ज्वालाएँ जाग उठीं और धूलि में सुवर्णरज

चमक उठी। प्रस्तर की प्रतिमा भी चलने लगी। स्थाणु (ठूँठ) में पल्लवों की डाली फूट निकली। प्रत्येक जन के मन में फिर से नव आशा उदित हो उठी। यह सब किसका चमत्कार है ? यह तो संत सुजान गाधीजी का प्रभाव है, प्यारे बापूजी की महिमा है, जो कि नवभारत के प्राण हैं !

वीरता का वास तलवार में नहीं होता, न शूरों के समूह में बसती है। सच्चा वीरत्व तो हृदय में वास करता है—इस सच्ची गाथा को सब सीख गए हैं—हृदयङ्गम कर पाए हैं। मृत्यु में नव-जीवन का संचार हुआ। जीवन ने नवचैतन्य पाया है। किसके पावन हाथ से मरकर जीने का यह नवीन मत्र प्राप्त हुआ ? जीवन-रस का यह उपहार किसने प्रदान किया ? सत सुजान गांधीजी ने यह रस उपहार दिया है, जो कि नवीन भारत के जीवनप्राण हैं !

आकाश में तारकावली की तरह सत्य, अहिंसा और स्नेह के मर्म प्रकट हुए और मानव अपने देहबल से समस्त ससार के सकटों को वहन करने के लिए तैयार हो उठा है। हे बापू, तुमने कुंदन को नई नई भट्ठियों में तपा तपा कर तेजोदीप्त बना दिया है, उसका सच्चा मूल्याङ्कन करवाया है। अपने आत्म-बल का चमत्कार दिखाकर तुमने पशुबल को तिरस्कृत कर दिया है। वस्तु को इस गहराई तक किसने निहारा है ? सुजान सत गांधीजी ने, संत बापूजी ने, जो कि नूतन भारत के प्राण हैं !

हरिजनों में जाकर हरिजन बन गए और सुरजनों में सुरजनों के राजा हो गए। कोटि-कोटि हृदयों के आप विश्रामदाता हैं ! लाखों की लाज के रखवारे आप हैं। जगती के पाप-तापों को तुमने अपने माथे पर उठाया है, और ससार पर अपने हाथों से तुमने अमृत का अभिषेक किया है। स्वयं आधे अग नग्न रहकर काँपते हुए दलित-समाज को तुमने ढाँक दिया है। ऐसे प्यारे बापू के कार्यों का माप कहाँ मिलेगा ? जो कि संत और सुजान हैं और नवीन भारत के प्राण हैं !

मुट्ठी भर अन्न से पेट भरकर जो टूटी फूटी खटिया पर सो रहते हैं, ऐसे मानव बान्धवों के हित के लिए जिसका हृदय सदा धक्धक् करके जलता रहता है। गहरी वेदना के कारण जिसके हृदय की चिनगारियाँ, आकाश की तारि-काओं की तरह उड़ती रहती हैं। जगत् के सामने भारत-रक्षक बनकर यह कौन विराट् आत्मा खड़ा है ? यह किसका अवतार है ? ये तो सुजान सत गाधीजी हैं, नवभारत के प्राण रूप बापूजी हैं !

यह तो युग-युग का अमर योगी है। यह युग-युग का नव अवतार है। ये तो भारतजनों के प्यारे बापूजी हैं, रकों के एकमात्र आश्रय गाधीजी हैं। इनका किया हुआ कौन कर सकेगा ? इनका किया हुआ कैसे गाया जा सकेगा। हे पुण्य परार्थी, सत्य का टंकार करते हुए युग-युग तक जीते रहो। सदा विश्व का मंगल साधते रहो। तुम संत और सुजान हो, हमारे पल-पल के प्राण हो, हे बापूजी !

वाईस *गुजराती*

अन्तिम कटोरा

श्री झवेरचन्द्र मेघाणी

हे बापू, विष का यह अंतिम कटोरा है, इसे पी जाओ, । सागर पी जाने-वाले हे बापू, इस अंजलि को ढुलका मत देना !

हे बापू, अब तक तुम अपने जीवन को अक्षय विश्वास के साथ वहन करते आए हो। तुम्हारा जीवन धूर्तों और प्रपंचियों का भी साथ देता रहा है। वह जीवन शत्रु की गोद में जाकर भी सुख से सोता रहा है। हे बापू, अब इस अंतिम तकिए पर अपना सिर सौंप दो। शत्रु भले ही तुम्हारी ग्रीवा काट ले। हे बापू, शत्रु के मन की थाह अवश्य मापकर आना !

सुर और असुर मिलकर नवयुग के सागर का मंथन कर रहे हैं। रत्न के लोभी जनो को विवेक नहीं है। हे बापू, तुम्हारे बिना ऐसा कौन है जो शंभु बनकर विष पान कर जाए। गरल को हृदय तक निगल जाने के लिए हे बापू, शीघ्र प्रयाण करो। हे सौम्य-रौद्र, और हे कोमल--कराल बापू, जाओ।

ससार पूछेगा, क्या जोगी के योग खुट गए ? क्या समुद्र सूख गए और मेघ का नीर समाप्त हो गया ? क्या व्योम के सूर्य और चन्द्रमा का तेल समाप्त हो गया ? हे बापू, हमारे दुःखों को देखकर अटक मत जाना। आज तक बहुत सहा है, आगे और अधिक सहेंगे। पर हे बापू, विचलित मत होना !

चाबुकों के प्रहार, जब्तियाँ, जुर्माने, लाठियों की मार, कारागारों के जीवित-से कब्रस्तान, और गोलियो की वर्षाएँ—ये सब तो समाप्त हो गए। इन सबको हमने पी लिया है। हे बापू, तुमने हमारे फूल-से कोमल हृदयों को लोहे से बढ़कर सुदृढ़ बना दिया है !

कोई हर्ज नहीं। यदि तुम वहाँ से गुड़िया भी लाओ या न लाओ। भले ही तुम खाली हाथ आओ। तो भी हम तुम्हारे हाथ का चुम्बन करेंगे। तुम्हारी ग्रीवा में हम अपनी प्यारी भुजाएँ डाल देंगे। हे बापू, जरा दुनियाँ के द्वार पर ही आओ। और समवेदना के संदेशे देकर आओ हे बापू !

हे बापू, यदि तुम वहाँ न गए तो संसार उपालम्भ देगा कि आत्मज्ञानी नहीं आया। वह कहेगा कि अभिमानी अपनी पोल जान गया है, अतः आया नहीं। वह कहेगा कि देख लिया हमने उसका विश्वप्रेम। वह विश्वप्रेम नही जानता है।

हे बापू, मानव जाति रोगी होकर आकुल व्याकुल हो रही है। हे बापू, वह तुम्हारे समान वैद्य की चिकित्सा पाने के लिए तरस रही है।

हे बापू, मस्त साँड को नाथ डालने के लिए जाओ। विश्वहत्या पर जल छिड़कने के लिए हे बापू, जाओ। सात सागर पार सेतु रचने के लिए हे बापू, प्रयाण करो। हे बापू, घनघोर वन की राह को प्रकाशित करते हुए जाओ !

विकराल केसरी की थपकियाँ देते हुए चलते जाओ ! हे बापू, प्रयाण करो, भगवान् तुम्हारे पथप्रदर्शक हैं। विष का अन्तिम प्याला पीकर प्यारे बापू, आ जाओ।

फूल पाँखड़ी

श्री ज्योत्स्ना शुक्ल

इस उदात्तचेता महापुरुष गांधी में देवत्व का आरोपण करके इसके आगे धूप-दीप रखना मुझे पसंद नहीं है। ऐसा शुष्क पूजन मैं नहीं करूँगी। वंदन और जय-घोषणाएँ भी मुझे रुचिकर नहीं हैं, ये सब कृतिहीन हैं।

कृष्ण और ईसा मसीह से इसकी क्या तुलना करूँ ? यह तो अतुल है, अनुपम है। रक्तप्यासे इस विश्व में अकेला यही मानव मेरी पूजा का अधिकारी है !

सदा जागरूक रहनेवाला यह प्रेरणा से परिपूर्ण होकर, भारतभूमि में प्रदीप्त हो रहा है। पृथ्वीरूपी सरोवर के मलिन जल में प्रफुल्लित कमल की तरह यह शोभित हो रहा है।

वन्दनाएँ, जप निनाद, निंदा, स्तुतिपुष्प और कटु-प्रहार इसको स्पर्श नहीं कर पाते हैं। यह दिव्यात्मा उनसे विचलित होनेवाला नहीं है। इनको सुनकर भी वह तो सूर्य का सा निर्मल हास्य बिखेरता रहता है।

शोणित से सने हुए जगत् को बचाने के लिए, इस सृष्टि की पशुता को मिटाने के लिए, और दानव को मानवता सिखाने के लिए, यह भव्य योगी उग्र तपश्चर्या कर रहा है।

इसकी यह विमल मानवता मुझे प्यारी लगती है। इसकी निर्लेप तपस्या मुझे पसंद आती है। मैं चाहती हूँ इसे निहारती रहूँ, इसका चिंतन करती रहूँ। अपने प्राणों में उसे बसा लूँ। इस मानव के सामने नम्र हो जाऊँ।

चेतना का क्या सुंदर निर्झर झर रहा है। इस निर्झर में बिन्दुरूप होकर मिल जाने की मेरी अभिलाषा होती है। विश्व के उद्धारकर्त्ता इन गांधीजी को सक्रियता की पुष्प पंखुड़ी अर्पित करना मुझे अभीष्ट है !!

विश्वयज्ञ

श्री सुंदर गो० बेटाई

हिंसा की अग्नि ताड़का राक्षसी की तरह अपने तीखे दाँत कटकटा रही है। विकृत आकृति बनाकर क्रोधाग्नि को प्रज्वलित कर रही है। अपना भान भूलकर वह यत्र तत्र सर्वत्र घूमती फिरती है। अहो, उसे रक्त की कैसी पिपासा है ? हाड़-मास की कैसी अद्भुत क्षुधा उसे लगी हुई है ! परन्तु क्या द्वेषाग्नि की ज्वाला इस प्रकार शांत हो सकती है ?

मातृ-स्वातन्त्र्य का पवित्र मंत्र लेकर अनेक वीर पवित्र जीवन का उपहार हथेली में लिए खड़े हुए हैं। युद्ध में उनके मस्तक, हाथ-पॉव, सधि-बन्ध और अस्थियाँ टूट रही हैं। इनकी उन्हे कुछ चिन्ता नही। सिर भले ही चला जाय। देह की मिट्टी भले ही मिट्टी मे मिल जाय परन्तु घाव का प्रतिकार घात से नहीं करना, यही उनकी टेक है। अपने प्राणों को अर्पण करते हुए परम प्राण की ज्योति का जगाना ही उनका ध्येय है।

वह देखो, उग्र हिंसा की अग्नि भड़क रही है और वहीं पर दुर्बल देहयष्टि-वाला परंतु विपुल आत्मशक्तिवाला एक मानव खड़ा है।

वह अपनी परम सात्विक, सकलस्पर्शी और गहरी दृष्टि से दशों दिशाओं को निहार रहा है और अंधकार के दुर्ग को तोड़ता हुआ चला जा रहा है।

प्रतिक्षण चैतन्य की सतत ज्योति को निहारता हुआ वह असंख्य मानवों को अभय दान दे रहा है।

बंधुओ, इस विश्वयज्ञ मे प्रिय की प्राण की और सर्वस्व की आहुति देकर ऐसी उग्र साधना को साधकर, विश्वशाति को प्राप्त करना!

माया, ममता और भीरुता अनेक प्रकार के भय दिखाती है। परन्तु एक बार कमर कसकर उठे हुए वीर विश्राम नही लिया करते! कीर्ति के कांचन में मिली हुई श्यामता को वे तीव्र आँच मे तपा तपाकर परिशुद्ध करते हैं।

यह तो बंधन और मोक्ष का महाविग्रह प्रवर्तित हो रहा है। विश्वदेव, हे महाकाल, उस पर आप अपने अमृत का अभिषेक करना!!

नाखुदा

श्री स्नेहरश्मि

सागर की सपाटी पर नौका वेग से बहती जा रही है। लहरो की मधुर ध्वनि आ रही है। ऊपर चन्द्रतारिकाएँ मधुर गान गा रही हैं। नन्हे-नन्हे बाल-वृन्द खेल कूद मचा रहे हैं। जहाज के फर्श पर यात्रीजन भी आनन्दपूर्वक इधर उधर घूम रहे हैं। किसी के मन में कोई चिन्ता नहीं है। सभी के हृदयो में सुरम्य स्मित लहरियाँ विलस रही हैं।

परन्तु जरा उस क्षितिज की ओर निहारो। वह देखो एक श्यामल घटा उमड़ती आ रही है। समुद्र पागल सा होकर सहसा ताण्डव नर्तन करने लगा। ज्योत्स्ना रानी विलीन हो गई! वे उज्ज्वल हास्य विनोद शान्त हो गए! एक पलक भर में सारा दृश्य बदल गया। भीरु जन काँपने लगे! सर्वत्र भय का राज्य छा गया!

परन्तु वह देखो, पतवार के पास वह माँझी सौम्यरूप मे पर्वत सा अचल खड़ा है। अकेला, धीर गंभीर, स्थिर और अडिग वह कर्णधार खड़ा है। सदा समस्वर रहनेवाला वह अविचल है। उषा-सध्या और अहोरात्र उसके लिए समान है।

वह सदा जागरूक है, मानो समस्त विश्व को वह एक ध्रुव में ही निहार रहा है।

हे भव्य वृद्ध बापू

श्री हरिहर प्रा० भट्ट

भारतभूमि के लिए—नही नहीं समस्त संसार के लिए—आज का दिन कितने सौभाग्य और आनंद का है। आज विश्ववंद्य संत गाधीजी की जन्म-जयंती है। संसार के इतिहास में इतने सुदीर्घ समय तक इने गिने संतजनों की देह-यष्टि टिक सकी है। जिस संत के कारण विश्व मे भारत का मस्तक उन्नत बना हुआ है, उसकी आज जयंती है। दीन भारतवर्ष के कष्ट-हर्त्ता हे वृद्ध बापू, आप शतवर्ष तक जीवित रहो।

कविवरो आओ, हे दिव्य गायको पधारो, हे कलाकारो पधारो! कई सदियो तक तुम्हे अपनी कला को सँवारने के लिए ईश्वर के अतिरिक्त ऐसा उत्तम अन्य कोई विषय मिलनेवाला नहीं है। हमारे कला-विहीन जीवन किस काम के हैं? जिस बापू की जीवनकला समस्त कलाओं को प्रेरणा देती है उसकी वंदना करो। सत्य-सौंदर्य के भक्त हे वृद्ध बापू, हमारे जीवनों को प्रेरणा देने के लिए आप शत संवत्सर तक जीते रहो।

भगवान् बुद्ध और महावीर स्वामी ने जगत् से दूर रहकर अपने धर्मजीवन में प्रेमपंथ का प्रदर्शन किया था। जगत्-समुदाय में और राज्य के कार्य मे उनका वह संदेश अधूरा रहा था। परन्तु हे वृद्ध बापू, तुमने जीवन के समग्र अगो में प्रेमतत्व की कार्य-घोषणा कर दिखाई है। इस उदात्त तत्व को हमें सिखाने के लिए, शाश्वत प्रेम से परिपूर्ण हे भव्य वृद्ध बापू, तुम शतवर्ष जीते रहो।

महात्मा गौतम बुद्ध ने बोधिवृक्ष की छाया में विश्व के लिए महासंस्कृति भेजी थी। इसीप्रकार ईसामसीह ने क्रौस पर चढ़कर अपनी माया द्वारा एक महासस्कृति भेजी थी। आज साबरमती नदी ने पावनतीर पर हे बापू, आप भविष्य के लिए एक विश्वपोषा महासंस्कृति का नवसर्जन कर रहे हो। उस संस्कृति का प्रवाहपूर अभी दूर है। उसे लाने के लिए हे विश्व के प्यारे बूढ़े बापू, सौ वर्ष तक जीवित रहो।

हे बापू, तुम भौतिक देह की भूमिका से ऊँचे हो, बौद्धिक धरातल से भी ऊँचे हो। तुम आत्म-बल के धरातल पर भ्रमण करते हो। तुम बौद्धिक-दृष्टि के क्षितिज से परे सत्य का क्रान्त दर्शन करते हो। आपकी दुर्बल देह मुट्ठी भर अस्थियो पर टिकी हुई है। आत्म'बल के न जाने कितने अद्भुत चमत्कार अपने दिखाए हैं। विश्व मे उस आत्मशक्ति को भरने के लिए, दिव्य भारत के हे भव्य वृद्ध पुरुष बापू, तुम शतवर्ष तक जीते रहो।

मृत्यु का यात्री

श्री उमाशंकर जोशी

गिरगिट प्रथा को दूर करने के लिये दक्षिण आफ्रिका मे गाधी जी ने सत्याग्रह किया था। उसमें आठ मजदूरों पर गोलियाँ चलाई गई थी। उनमें से एक मजदूर की विधवा स्त्री 'गाधी राजा' के चरणो में गिर-कर विलाप करती है। इस प्रसग को इस काव्य में चित्रित किया गया है। वह वेचारी गाधी राजा से अपनी करुण कहानी कहने आई थी। उसके दिल पर न मालूम क्या गुजर रही थी कि वह 'अरे ! गाधी राजा !' के सिवा कुछ भी नही बोल सकी। उसकी वाचा कॉप उठी, गला भर आया। उसकी आँखो से मूक वाणी के रूप मे टप टप आँसू टपकने लगे। गाधी के चरणों में उसने अपना सिर रख दिया। गांधीजी की आँखे मूँदी हुई थी। उनके दिल में भी एक बड़ी भारी हलचल मची हुई थी। इस वक्त का दृश्य मानों, भगवान् बुद्ध, अर्ध विकसित आँखों से चरणों में गिरी हुई प्रेमार्द्र सुजाता को देख रहे हों, ऐसा लगता था। अभी इतिहास के पृष्ठो पर लिखे हुए रक्त के लेख सूखने भी नही पाये थे कि गाधीजी ने अहिंसा रूपी अमृत से सींचे हुए शब्दों से एक नया पृष्ठ लिखना शुरू किया। गिरगिट प्रथा से भारतीय मज़दूरों की रक्षा करने के लिये उन्होने आफ्रिका मे सत्याग्रह शुरू किया। अनेक कष्टों को सहन कर, शत्रु का हृदय परिवर्तन किया। गाधी के उस नये युद्ध ने एक वीर हृदय युवक की बलि ली। उस युवक की तरुण विधवा आँखों में आँसू भरकर गाधी के चरणों में गिर पड़ी। उसके मुख से केवल इतने ही शब्द निकले, "अरे ! गाधी राजा"। गाधी के चरणों की धूलि पर उसका सिर सुहाने लगा। उसकी आह से उनके पैर जलने लगे तथा वे आँसू से भींगने लगे। इतना ही नही, उनका हृदय भी द्रवित हो गया। अभी तो वह वीर नर-जीवन में खेले जानेवाले सैकड़ो युद्धो के द्वार पर खड़ा था। अभी उनके दिल में न मालूम कितनी लड़ाइयाँ लडने की तीव्र अभिलाषाएँ थीं, अभी उनके हृदय में सारे ससार को आवृत कर देनेवाला प्रेमपूर्ण रूप से प्रकट भी नही हो पाया था कि ऐसी एक करुण कुरबानी उनके समक्ष हो गई। उनके दिल में एक बड़ी भारी उथल पुथल मच गई। सारे हृदय के गहरे मंथन के बाद उसके मुँह से निखरी हुई वाणी निकलने लगी। "अरे बहन ! तू रो मत। तू अपने पति को मरा हुआ न मान। वह तो सब लोगो की आजादी के लिये मरा है। वह अमर हो गया।" इतना कहते कहते गाधी जी का गला भर आया। उन्होने अपने हाथ से उसे उठाया। उसके कंधों पर उस महापुरुष का स्नेहार्द्र कर आ गया। गाधीजी की वेदनापूर्ण आँखो में आँसू आ गये, मानो दुनिया के दुःख का सारा जल इन दो नयनो मे आकर इकट्ठा हो गया हो। वाचा स्थिर थी।

आँसू भी स्थिर हो गये थे। सहसा गांधीजी के मुँह से ये शब्द निकल पड़े—"हे बहन ! तेरे समान ही हिन्द की कितनी ही स्त्रियाँ पति हीन होंगी तब मातृभूमि स्वतंत्र होगी। मेरी भोलीभाली पत्नी की भी तेरी ही जैसी दशा होगी तब भारत को स्वातंत्र्य मिलेगा।"

त्रिमूर्ति

श्री सुन्दरम्

बुद्ध

जन्म से ही प्रणय रस की दीक्षा पाया हुआ यह संसार सताप से सतप्त और खिन्न हो रहा था, रुदन कर रहा था। हे तथागत, तुमने उस संतप्त विश्व को अपनी गोद में उठा लिया। अपने हृदय की प्रेम-ऊष्मा देकर तुमने उससे कहा—"शान्त हो प्यारे, दुःख की दवा रुदन नहीं है !"

उसकी बूटी को खोजने के लिए आपने वन उपवन छान डाले ! तपश्चर्या की और गुरुओं की चरण-सेवा की। उन सबकी व्यर्थता निहारकर अपने अन्तःकरण के समस्त तत्वों को समाहित किया। उस आन्तरिक महासमर में विषय-वासनाओं पर विजय पाकर और दुःखविनाशक बूटी को खोजकर आप बाहर आए।

धैर्यपूर्वक आपने उन विरल सुख-मंत्रों का जगत् को उपदेश किया। विश्व को हिंसा से हटाया, कुटिलता से हटाकर सरलता की ओर प्रवृत्त किया ! सृष्टि के पाप-सागर को आपने अपने मुख से पी लिया। विश्व की फुलवारी को आत्मौपम्य के सलिल से सींचनेवाली करुणा-गगा आपने प्रवाहित की।

हे प्रभो, आपके मंत्र युग-युग में प्रकट होते रहे हैं। तुम्हारे द्वारा अहिंसा के मंत्र जगत् में प्रथम बार प्रबुद्ध हुए।

ईसा

यह ससार स्वार्थ और शक्ति के मद में डूबा जा रहा था। उन्मत्त शक्तिमान् लोग निर्बल दरिद्रों को पीसते जा रहे थे ! लोग हृदय से प्रभु को भुला चुके थे। दुनिया की भौतिकता को ही सर्वस्व मान रहे थे ! सर्वत्र नरक लीला का विस्तार हो रहा था !

ऐसे विषम समय में मृदुवचन बोलते हुए प्रभुपुत्र ईसामसीह अवतीर्ण हुए ! उन्होंने कहा—दुःख भोगकर ही सुख का मिलन होगा ! बिना कष्ट सुख की प्राप्ति नहीं होती ! वह प्रभु का बालक संसार के संताप को शीतल करने के लिए अमृत की सुराही लेकर विश्व मे घूमता रहा !

अत्याचारियों के आसन डोल उठे ! शक्ति-मद से भरे ताज सरक गए ! उसी समय प्रभुविरोधी लोगो की क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठी। उस कोपाग्नि में तुमने अपनी आहुति देकर विश्ववेदना को भस्म कर दिया !

तभी वहाँ बलिदान के जलों से उफनती हुई शाति-सरिता प्रकट हुई। उसी के करुणास्नान द्वारा धक्-धक् जलता हुआ जगत् शीतल हो गया

गांधी

पृथ्वीतल पर पुनः पशु-बल का युग उदित हुआ। ससार के समर्थ मनुष्यों ने विद्युत्, वायु, जल और स्थल को अपनी मुट्ठी मे कर लिया। शक्ति के उन्माद में पागल पुरुषों ने निर्बलों का शिकार शुरू किया और वहाँ पर जनरुधिर से रँगे हुए अनेक प्रासाद खड़े हुए !

वसुंधरा काँप उठी। ससार पर मलिन दुःख की छाया आ गई। उसी समय धरती का समस्त रुदन गाधी के रूप में प्रकट हुआ। चट्टानो के भयानक मार्ग में बहनेवाली वह धारा प्रथम तो अतिप्रगल्भा हो उठी, बाद को प्रसन्न और सरल होकर कहने लगी—"पापी का घात मत करो, उससे तो जगत् के पाप द्विगुणित हो जायँगे। अपने आत्मा के गुप्त बल के साहाय्य से तुम पाप के साथ युद्ध करो। अपने हृदयमंदिर में प्रभु को साक्षी रक्खो ! शात मन से प्रतिद्वेषी का हित चाहते हुए युद्ध करो। इस प्रकार पाप विनष्ट हो जायगा।

हे प्रभो, तुमने पृथ्वी के उदर मे विश्वप्रेम के बीज बोए थे। उन बीजो के वृक्ष आज फूल फल रहे हैं।

मनमोहन गांधी

श्री ललित

हे गाधी ! तू ही सच्चा भारतीय है। तू ही हम सबका कुशल कर्णधार बन। हम भारतीयों की अस्थिर जीवन नौका अस्तव्यस्त दशा में इधर उधर टकरा रही है। उसका योग्य एव समर्थ कर्णधार एक मात्र तू ही है। राजा एवं प्रजा के हितों का देशव्यापी मथन हो रहा है। हे कर्णधार ! उसमें से नवनीत निकाल लेने की सामर्थ्य एकमात्र तुझमे ही है। जनता ने संसार रूपी महाराज्य में भारतीय स्वतंत्रता की आवाज को हे कर्णधार ! तू ही बुलंद कर सकेगा।

तूने ही भारतीय नामक जाति को जन्म दिया है और उसे विश्व विख्यात किया है। हे कर्णधार ! तू ही आज सत्याग्रह में अग्रसर हो रहा है। तू उदात्त भावों सहित वीरता के अनेकों मनमोहक प्रसंग सामने लाता है। हे मृग ! तू ही भारत के लिए कस्तूरी अपने अंदर धारण करता है। हे सुदामापुरी के उज्वल

दीप ! कृष्ण-स्मारक को अक्षुण्ण रखनेवाले वीर भारत नाविक ! तू ही एक मात्र कर्णधार है। हे गांधी ! हम समस्त हिन्द-सन्तति पग मिलाकर आपका अनुगमन करें। हमें ईश्वर शांति एवं जय प्रदान करें। आप ही हमारे कर्णधार बनें।

युग-अवतार

श्री मस्तमयूर

हे भारत के दुःखो में सहायता देनेवाले, चेतना के अचूक निर्झर ! विराट् मे अपने को लीन करनेवाले, तीस करोड़ के तारनेवाले !

सत्य के प्रकाश ! जाग्रत् ! कर्म रूपी कविता के रसस्रोत ! हे मोहन ! हे नवयुग अवतार ! आप का प्रताप अतुल एवं प्रभात के समान जाज्वल्यमान् है। हे प्रलयपति ! आपकी गति को कोई रोकनेवाला नही है। हे नीलकंठ ! आपने विषम विष का पान किया है। हे सिंह के समान बली जनो के साथ रहनेवाले ! नूतन हिंद के सृजन करनेवाले। हे मोहन ! हे नवयुग अवतार।

अर्पण

श्री कोलक

हे गांधी ! प्रज्वलित प्रकाश स्रोत से प्रकट होकर तुमने प्रति भारतीय हृदय में पूर्ण स्वातन्त्र्य की ज्योति जगा दी है और चिर मुक्ति की प्राप्ति के लिये लहराते हुये स्वतंत्रता के झंडे को सगर्व धारण करके समर-पथ की राह ली है। बापू प्रेमपूर्वक दलित भेद को मिटाकर तुमने हिंदूधर्म का कलंक समूल धो दिया है। आपकी जाग्रत आत्मा के तप मानवीय इतिहास में नित नवीन बने रहेगे और नवयुग का निर्माण करने में समर्थ होंगे।

अनंत काल सदैव गर्जना करता रहेगा, और मौन रूप से पृथ्वी तुम्हे कोटि कोटि नमन करती रहेगी।

हे पिता ! आपके स्मारक-दीप को चिरकाल तक प्रज्वलित रखने के लिये भावपूर्ण कविता द्वारा मैं स्वयं आपके चरणों में नमन करता हूँ।

महात्मा

श्री भास्कर रामचन्द्र तांबे

असहकारिता ने जब तुम्हे पुकारा तो ऐसा लगा कि तुम नीचे आ रहे हो। महात्मा ने जब आर्तनाद किया तो हृदय पर आपने आघात झेले। उसी यज्ञ से द्रवित होकर देव आप दौड़े आते ज्ञात हुए। ऐसा लगा जैसे स्वर्ग के द्वार खुल गये, गरीबों की माँ दौड़ पड़ी, सारे संकट भाग गये।

द्रौपदी के लिए तुम दौड़े थे, गरीबों के लिए कमरी-डंडा तुमने लिया था, लगा जैसे वह समय आ गया। पर हाय! कौनसा पाप बीच मे आया। भाग्य बिगड़ गया, माता लौट पड़ी। अन्धकार अब दूना हो गया, दिशाएँ भीषण हाहाकार करने लगीं, कैसी गति हो गयी!

महात्मा अकेला क्या करेगा?

श्री माधव ज्यूलियन्

इधर उधर के देशभक्त और नेता महात्मा को जीत रहे हैं। धन, उपाधियाँ, आदि होने पर ये देशभक्त बन जाते है। नेता, मानपत्र जुलूस, करतल ध्वनि और जयजयकारों से पोसा जाता है। इनकी कला खेल खेलती है, अज्ञानी गरीबों पर संकट आता है। महात्मा अकेला क्या करेगा?

एक भी सिद्धात के लिए प्राण देने की तत्परता नही, पर उनके लिए शाब्दिक लड़ाई नित्य लड़ेंगे। ये केवल स्वार्थ के लिए धर्म की ओर देखते हैं, ये शूरवीर घर की बूढ़ी का जरूर बलिदान लेंगे। महात्मा बेचारा अकेला क्या करेगा?

छात्रावस्था में जो उग्र दल के थे, मुँह से तोप के गोले फेंकते थे, वे ठंढे होकर सरकारी नौकरी करते, फिर आराम कुर्सी पर लेटकर कहेंगे—देश में आग लगी है। महात्मा बेचारा अकेला क्या करेगा?

सत्य-अहिंसा का झंडा लेकर गांधी देशभर मे शक्ति का संचार करते हैं। चरखे के चित्रवाला खादी का झडा लेकर अर्ध नग्न यह अन्याय का सदैव विरोध करता है। अनासक्तियोग का वरण कर यह शोषितों-पीड़ितों की सदा सहायता करता है। यह क्राति करने निकला है, मैदान में पहले अपना सिर देने के लिए तैयार है, यह हीरा कसौटी पर घन लगाने से भी नहीं फूटेगा, पर महात्मा अकेला क्या करेगा?

न शिष्यों का प्रपंच है, न गुरु या पैगंबर हुआ है, सच्चा वैष्णव यही है, भीरुता और क्रियाशून्यता को वह अहिंसा नही मानता, दुर्बल का संरक्षक यह बलवान् साम्राज्यवाद से लोहा लेता है, न इसे लोकमान्यता की चिन्ता है न राजमान्यता की, पर महात्मा अकेला क्या करेगा?

कटु, पर सत्य बोलने मे जिसे डर नही लगता, राजनीति में सत्याग्रह की नयी चीज जिसने सिखायी, पर उसके मुंह पर मीठी बात करनेवाले, भीरु हैं और सकट मोल लेते हैं। ये लोभी और गला काटनेवाले हैं, इसीलिए महात्मा अकेला क्या करेगा?

महात्माजी

श्री साने गुरुजी

भगवन् तूने विश्व को बड़ा शुभ संदेश दिया। मानव इससे अपना जीवन सुखपूर्ण कर सकेगा। वैराग्य, क्षमा, तपश्चर्या, मैं एक मुख से इन सबका स्तवन कैसे करूँ !

तुम हमारे आशा और आधार हो, तुम्हारे चरित्र से हमें स्फूर्ति प्राप्त होती है। तुम भारत-भूषण हो। तुम्हारी सत्कीर्ति के भूषण त्रैलोक्य धारण करेगा। लोकहित के लिए तुम्हारा जीवन धन्य है।

तुम बुद्धावतार हो, नये ईसामसीह हो, तुम्हारे पद की मे पूजा करूँ ताकि अल्प भी उन्नति की आशा मन में हो जाय।

मेरी गीता, श्रुति स्मृति, सत्संस्कृति तुम्हीं हो। आपके जीवन से मुझे उन सबके अर्थ मालूम हो जाते हैं। पुण्य तो तुम मूर्तिमान हो।

इस प्रक्षुब्ध सागर मे तुम भारत के लिए दीप हो। हमारे निर्जीव अंतर में तुम श्रद्धा का निर्माण करते हो। हम मृतोंको तुम जीवन और उत्साह देते हो। अमृत पिलाकर तुमने राष्ट्र को जगा दिया है।

तुमने दृष्टि, पथ और आशा दी, राष्ट्र को तेज दिया, प्रजा को मार्ग दिखाया। इसी मार्ग से यदि वह जायगी तो स्वातंत्र्य प्राप्ति निश्चय है।

तुमको विश्राम नहीं, सूर्य की तरह तुम जलते रहते हो। हमें जगाने के लिए अपन हड्डियाँ घिस जाने देते हो। तुम्हारा सारा जीवन दग्ध होम-कुंड है। तुम्हारी चिंता मैं कैसे हरण करूँ ?

तुम्हारे कोमल हृदय में होली जल रही है। चिंता यह सताती है कि देश-बंधुओं को पेट भर खाना कैसे मिले। इसी चिंता का चिंतन तुमको नित्य-प्रति नये मार्ग दिखाता है।

हजारों कर्म हाथ से करते हो, पर शांति और मुसकान बनी रहती है। हृदय मे कोई आसक्ति नहीं। शेष पर विराजमान हरि के समान तुम दिखाई देते हो, जो समुद्र ऊपर से क्षुब्ध होने पर भी भीतर से जिस प्रकार शांत रहता है।

तुमसे ईश्वर का वियोग कभी नहीं होता। मैं तुम्हारा कितना वर्णन करूँ। मैं पागल बालक हूँ। अश्रुओ से आँखें भर आई हैं। जिस भारत में तुम्हारी जैसी महाविभूति का जन्म हुआ उसका भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा।

अद्भुत रणसंग्राम

श्री आनंदराव कृष्णाजी टेकाडे

भारतवर्ष मुख और प्राण से स्वातंत्र्य का जयघोष करते हुए स्वातंत्र्य दुर्ग लेने और गले में लगी फाँसी के बंधन से मुक्त होने के लिए आगे बढ़ रहा है।

इसका शरीर सुदामा जैसा है पर मूर्ति सूर्य के तेज और मयंक की शांति जैसी है। गोकुल के कृष्ण की तरह श्याम वर्ण का यह स्वतंत्रता का पुतला शोभा देता है।

आज तक जितने स्वाधीनता-संग्राम हुए उन सबमें खड्गों की झनकार होती और रुधिर की नदियाँ बहती रहीं, पर यह नया रण आश्चर्यजनक है।

शत्रु बड़ा कुटिल है, उसके पास अनंत शस्त्रास्त्र हैं, जहाँ वह सागर है वहाँ यह क्षुद्र झील। वह स्वार्थियों मे अग्रणी, तामसी, निर्दय, पत्थर को भी लजानेवाला मदांध है। इधर केवल यह फकीर है।

इस राहु रूपी शत्रु के पाश में भारत शशि पड़ गया है। यह पहले लक्ष्मी-धर था, परवश हो अब अस्थिपंजर रह गया है।

इसके पास कोई शस्त्र नहीं, हृदय में समभाव, आत्मबल और सत्य है।

दीन सेवक, धर्मधारक, पारतंत्र्यभंजक, मेरु का धीरज और बाल-सूर्य का हास्य ले, आत्मबल के साथ संग्राम के लिए चला है।

एक ओर विशाल तट है तो दूसरी ओर दुर्बल तृण। दोनों ओर ऐसे शत्रु हैं। एक क्रोधाग्नि की वर्षा करता है तो दूसरा मृदुल सुमन मानस से प्रेम लहरी फेंकता है।

गाधित्र की राजता, वशिष्ठ की सत्वता, कामधेनु आदि की कथाएँ आज फिर दिखाई देती हैं।

पारतंत्र्य-नरक से राष्ट्र को मुक्त करेंगे या मृत्यु का आलिंगन करेंगे—यह अमर प्रतिज्ञा कर अपनी प्रिय कुटी का अंतिम दर्शन कर वह रण की ओर जाता है।

द्वार पर रणमूर्ति भारत-भागीरथी विदाई देने खड़ी होती है। जयजयकारों से आकाश निनादित होता है। कोई फूल बरसाता है, कोई प्रेमालिंगन करता है, कोई पद वंदन करता है कोई ललना तिलक लगाकर आरती करती है।

संसार सागर में ज्वार उठता है और धीर-गंभीर वीर अपने अनुचरों के बीच से जाता है। सुख-दुख की कहानियाँ सागर मे उठकर आकाश में जा मिलती हैं।

हृदय के आनंद, प्रेम, भक्ति-रस के अश्रुओं की आँखों में भीड़ होती है और जलधारा की वर्षा होती है।

इतने में रवि का उदय हुआ। उसने यह सदियो का अभूतपूर्व दृश्य देखा और आश्चर्यचकित हो गया।

मथुरा गोकुल से अक्रूर के साथ वज्रमणि जब खलमणि का मर्दन करने निकला था वैसा ही फिर दृश्य देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

वह हर्षित हो आशीर्वाद देता है कि इस अद्भुत रणसंग्राम के फलस्वरूप हिंदभू सुखधाम हो जाय।

विद्रोही

श्री नारायण केशव बेहेरे

यह नया विद्रोही आगे आया है, दुनिया इसके कारण आगे जा रही है, यह तारक है।

अँधेरा फैला है, झगड़े हो रहे हैं। यह विद्रोही एक कटाक्ष से उन सबको नष्ट करता है।

धर्मपर रूढ़ि पिशाची सवार हो गई है, अनाचार फैला है, सच्चा आचार यही विद्रोही दिखाता है।

अछूत दूर के हो गये थे, यवन शत्रु बन गये थे, पर अंग्रेज़ हृदय में समा गये थे।

सत्य पर मैल जम गया था, दंभ फैल गया था। देशभक्ति बेलगाम हो गयी थी। इसने सत्य की ज्योति जगा दी।

अंग्रेजी के आगे स्वभाषा हार मान रही थी। इसने मातृभाषा की वदना कर उसे संतुष्ट किया।

दरिद्रता ने पेट में होली जला दी थी, देश दीन हो गया था, इसने जनता को उद्धार का मार्ग दिखाया।

स्वतन्त्रता चली गई थी, दासता आ गयी थी, किसी की भी नही चल रही थी। इसने स्वर्ग का मार्ग दिखा दिया।

सुधारकों का आगरकर, भाषा का चिपळुनकर, स्वातंत्र्य का तिलक यह नरवर दुनिया भर में विद्रोह को सफल बना रहा है।

महात्मन्!

श्री विष्णु भिकाजी कोलते

हे महात्मा, तुम्हारा नाम मुँह पर आते ही मन मे पावित्र्य मूर्तमान हो जाता है। दंभ नष्ट हो जाता है, चेतना विलीन हो जाती है, मूक भाव जग जाते हैं।

मन में सुख की ऊर्मियाँ उठती हैं, नयनों में आँसू भर जाते हैं, तुम्हारी विश्व-प्रीति त्रिलोक में शुद्ध मंदाकिनी की भाँति बहती है।

तुम्हारा स्वार्थ-संन्यास देखकर हरिश्चन्द्र भी लजित हो जायगा। शत्रु-मित्र सबको तुम्हारे नाम-संकीर्तन से आनंद मिलता है।

विश्व में तुमने आर्यभू को धन्य किया, तुम उसके कंठ का दिव्य मणि हो। तुम्हारा वंदनीय चरित्र हमें सदा स्वातंत्र्य-संपादन में स्फूर्ति दे।

महात्मा गांधी

श्री प्रभाकर दिवाण

यह फकीर चला, इसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। पैर में सीधी सादी चप्पल, सर्दी से बचने के लिए मोटा कबल, निःशस्त्र यह वीर है।

शरीर पर मांस बिलकुल नही है, खर्चने को एक पैसा नही, न पास में विद्वत्ता का कोई 'पास' है, पर है दबंग।

ऐसे भिखमंगे के पीछे चालीस करोड़ जनता लगी है। सम्राट् भी इससे डरता है। मत्त धनी भी नत होते हैं।

स्वातंत्र्य का यह नेता ग़रीबों का हिमायती, सत्य का मूर्तिमान् पुतला, शिर को हथेली में लिए खड़ा है।

सत्ता से प्रमत्त बड़े बड़े गर्ववाले लोग भी इसके दास बन जाते हैं।

देहात में पिकेटिंग

श्री अज्ञात

चलो सब जन मिलकर शराब को भगा दे। गाधी बाबा आया, कह गया, शराब को भगाओ, चलो भगावे। शराब आती है तो दुष्काल आता है, बोतल की बन आती है, गाय बैल बिक जाते हैं। माँ, बाप, सास, ससुर, बीबी किसी की परवाह नही रहती। कैसी यह शराब है। चलो दूकान घेर ले गाधी जी की जय जय बोले।

वह देखो महात्मा आया

श्री विठ्ठलराव घाटे

आसाम के चाय के बगीचे की एक कहानी। गांधीजी का नाम सुनकर कुली स्त्री-पुरुष अपना अपना काम छोड़कर भीषण जंगलों से पैदल चलकर चाँदपुर पहुँचे ! उन्हीं में नीचे लिखा गीत गानेवाली एक बच्चेवाली अनाथ स्त्री है।

राजा, क्यों फिजूल चिपकतेहो, स्तन मे दूध कहाँ है। चार दिन पूरेहो गये, रोटी का नाम नहीं मालूम। मत्त हाथियो का चीत्कार कान पर आता जाता है, फिर भी हम गाधीजी को देखने जा रही हैं। गांधीजी का नाम लेकर जगल के कंदो का सेवन किया, झरने का पानी पिया। आसाम रौद डाला। वह देखो महात्मा आया।

वह चाय का बगीचा कैसा, वह तो इस लोक पर नरक है। जहाँ ग़रीब ग़रीबो के पाप का ही जवाब देता है, जहाँ काले-गोरे का भेद है। धन लोभ से उनकी आत्मा काली हो गई है। धनिक सुख भोगे, ग़रीब कष्ट भोगे, यह कैसे चलेगा ? वह समय बदल गया। वह देखो महात्मा आया।

गरीबों की मूक तपस्या फलित होकर आकाश तक पहुँच गई। जुल्म की गद्दी हिली, इन्द्र का आसन डोला। ग़रीब के जूठे बेर जिस देवना ने खाये वह करुणासागर पिघल गया और यह यज्ञमूर्ति अवतरित हुई। इसमे वैभवविभूति नही, खादी के कपड़े पहनता है, पैर में चप्पल भी नहीं। गरीबों का ऐसा राजा है। वह देखो महात्मा आया।

उसके दुर्बल कंधों पर तेतीस करोड़ दुःखो का भार है। उसके निश्चल निष्ठुर नेत्र में अन्न की समस्या भरी हुई है। हिंदुओं के पिछले पापों का पहाड़ उसकी गर्दन पर है। उसका हँसमुख दीनों के द्वेष को भी हँसाता है। उसके विशाल हृदय मे शोषितों और हरिजनो को आश्रय मिलता है। उसी को लाने चलो बिटिया। वह देखो महात्मा आया।

हे विश्वमानव !

श्री ना० ग० जोशी

प्रकृति के क्षुब्ध सागर के अंतर पर शेषशय्या पर योगनारायण योग निद्रा में तल्लीन थे। अनंतदल कमल पर हे विश्वमानव तुम्हारा उद्भव कैसे हुआ ?

चैतन्य के चार सजीव अणु असंख्य सूक्ष्म चेतनकोश—एक से दो, दो से चार, चार से बहुत्व को प्राप्त हुए। "एकोऽहं बहुस्या, प्रजाजेय"—अनंत अणु को उत्कट सृजन की इच्छा हुई। एक से द्वैत का निर्माण हुआ, हे विश्व-मानव उसी से तुम्हारा गूढ अपूर्व द्वंद्व विकसित हुआ।

ज्ञानमय और विज्ञानमय, सत-चित-आनंदमय, आदिकारण परब्रह्म विश्वसर्जन के उन्माद में बेहोश होकर कल्पनाकंप की लहर से एक तरंग अवकाश में तरंगित हुई—अब्ज सूर्य के ब्रह्मांडव्यापी स्वयं संचार में इंद्र-गति से गिरा हुआ परागति से स्वयं गति मे आया हुआ, विश्वकर्षण के कोण में सूक्ष्म अंश अगम्य अनंत वातावरण में घूमा और इन्द्रियविहीन सजीव अणु में मिल गया और तब हे विश्वमानव 'संज्ञा' का प्रादुर्भाव हुआ।

सूक्ष्म बीज से दंडकारण्य में भव्य वट का उद्भव हुआ। आमासोन की विस्तृत घाटी में साखू के वृक्ष बड़े हुए। कांगो की घाटी मे दुर्गम भीषण जंगल का निर्माण हुआ। तब 'संज्ञा' का रेशमी कोश, तरल, तलय, अगम्य तंतुओं से बना असंख्य युग के परिवर्तन से पूर्ण हुआ। जानवर का वानर और वानर का नरयोनि में विकास हुआ। जीवन संज्ञा समूह-मति सामर्थ्य कल्पना इस गति से प्रगत होती हुई श्रेष्ठता को प्राप्त हुई है। हे विश्वमानव यह विवेक और सभी गौरव तुम्हारा ही है।

पर्वत-पहाड़, धातु और पत्थर, भीषण जगल, जीव-जानवर, बर्फीले टापुओं में मत्स्य और भालू, हे मानव ! इन्ही के साथ साथ तुम्हारा संज्ञाभव परिवेष्ठित और विकसित हुआ। ऊषा मे कमल पैदा हों और कुम्हला जायँ, वालू के कण में नंदन वन बने और जल जायँ, चकमक पत्थर की चिनगारी निकलकर वहाँ सूर्यमाला प्रज्वलित हो और लय हो जाय। उसी प्रकार मिस्र, भय, असुर, रोम, यवन, पर्शु, सिंधु, जावा, द्रविड़, चीन, आदि स्थल-जल की संस्कृतियों का जन्म हुआ और वे नष्ट हुईं। अपार अंबर की

निर्वात स्थान में सौर उल्का ग्रह अज्ञात रूप से भ्रमण करते हैं। उनमें कुछ क्षण भर दिखाई देते हैं और अदृश्य हो जाते हैं। उसी प्रकार जीवन-सागर मे आश्चर्यजनक तरंग रेखाएँ उधर आती हैं, तट पर टकराकर रुक जाती हैं, और फिर मूल मे विलीन हो जाती हैं। संस्कृति-चक्र की वर्तुल गति में अनेक प्रलय-काल आये—सुमेरु मंदार डूब गये, आण्डीज, आल्प और हिमालय भी छोटे हो गये, विलीन हो गये, उनके शिखर पर—ऊँचे खंभे में मनु ने अपनी नौका बाँधी। प्रलय सागर में तूफान आने पर विश्व में भीषण बाढ़ आ गयी। उसमें ये सब ऊँचे शैल भी कंपित हुए। उसमें भी टिककर हे विश्वमानव! तूने अपना वैभव फिर से निर्माण किया।

निसर्ग शक्ति के साथ दुर्धर संग्राम, अन्योन्य कलह में स्वार्थी कालक्रम, फिर भी, व्यक्ति जीवन के लिए सूक्ष्म सग्राम करता रहता है, और अंत में असीम तृष्णा भयानक संहारकाड करती है, तब कही हे विश्वमानव! मोक्षमंत्र का अस्फुट रव सुनाई देता है।

सृष्टि से चेतन उत्पन्न होता है और चेतन से मानवपन। मानवपन को देवपन लाने के लिए कोई जीवन विकास मे कसौटी के घाव सहता है, पर कौन सुनता है, अवकाश किसे है? हिमाद्रिदरी में पंचभूत का ताडव चलता है, पीली-नीली बिजली चमकती है और मेघ के उदर में कड़कती है। उस समय यदि कोई योगीन्द्र देव भी गुफा से आदेश करता है, हे विश्वमानव, उस वाणी का क्या तब प्रभाव नही पड़ता?

पंचभौतिक वासनाएँ नग्न होकर बेहोश नाचती हैं। उनको ढकने के लिये सुंदर, मोहन, महीन अवगुंठन बनाया गया है। मानव और लोकसत्ता की बड़ी बड़ी कल्पनाओं की विषैली नजरबंदी कब तक छिपाये छिपी रहेगी? हे विश्वमानव! पर अब विवेक की चेतनता नही रही।

असंख्य युग का चक्र-क्रम इसी तरह फेरे करता रहेगा। नवसंस्कृति को प्रलय फिर ग्रसित कर लेगा, पर अंत मे संज्ञाशक्ति का आत्मज्योति से मिलन होगा, तभी हे विश्वमानव, तुम्हारे मूल का एकत्व ससार के नये रूप में दिखाई देगा।

मार्क्स और गांधी

श्री प्रभाकर माचवे

दाढ़ी का जंगल, भयानक मुख, यह उस यहूदी का नमूना—यह खाद के गमछे में लपेटा हड्डियों का ढाँचा।

एक रक्तप्रिय, दूसरा अहिंसाभक्त वैष्णव। अधिक शक्तिवाला मैं किसे कहूँ? दोनों समान रूप से दुनियादारी से उकताए हुए और समान रूप से दुनियादारी में चिपके हुए—मुझे तो दोनो समान ही मालूम होते हैं।

एक अश्रुपूजक तो दूसरे को अश्रुओं से द्वेष। दोनों में एक ही पागलपन—अपने अपने देश का प्यार। सत्यशोध करने के लिए दोनो रणभूमि में उतरे हैं। चैतन्य ज्योति नित्य जलते जलते दोनों ही अद्वितीय, दोनों अकेले, दोनों अर्द्धसत्य, दोनो को ठोकर लगती है।

दोनो के सामने एक समस्या—मानव-मानव के बीच की विषमता कैसे दूर होगी। एक कहता है कि क्रोध बुरा है तो दूसरा उसे आवश्यक बताता है। व्यर्थ क्रूरता क्यों, धैर्य रखो, रणतूर्य बजा, शूर कैसे रुके ! एक संत, दूसरा सेनापति, दोनों थके, धोखा खा गये। भूगोल उसी तरह कैसे घूम रहा है, नहीं मालूम।

आज की दुनिया के लिए हमें दोनों अपूर्ण हैं। आज की दुनिया में हमें नक़द सत्य चाहिये। अन्वेषणशाला का सत्य नहीं, खन खन खन नक़द सत्य चाहिये।

जब लड़ाई छिड़ेगी, सिक्कों, शास्त्रों, बेड़ियों के ताल पर शब्द होगा और नवरक्त के युवकों के जत्थे उस पागल के पीछे पीछे अपने जन्मजात अधिकार की रक्षा करने के लिए जायँगे। फिर संघर्ष होगा और जो चनगारी उठेगी उसमें ऐसे मार्क्स के सैकड़ों अनुयायी भस्मीभूत हो जायँगे।

दुनिया फिनिक्स पक्षी की तरह ज्वालाभूत होगी। पर वह भविष्य निश्चयपूर्वक कौन बता सकता है ? देखें क्या क्या होता है !

गांधी-अभिनंदन

डाक्टर माधव गोपाल देशमुख

अपना शरीर बहुत घिसवाया, लोगों को माया लगवायी बीजफल देखने के लिए हे गांधी तू चिरायु हो।

ईसा-बुद्ध को भी यह भाग्य नही मिला—किसने जीवन्मुक्ति देखी ? इसी देह से इन्ही आँखों से कीर्तिका उत्सव किसने देखा ?

देव यही बड़ी कृपा करें। ऐसा दिन बार बार आवे। मैं ग़रीब मराठा यही भक्तिभाव अर्पण करता हूँ।

युगावतार गांधी।

श्री लक्ष्मीकान्त महापात्र

हे महाप्राण, तुम दुष्कृत का विनाश करके साधुओं की रक्षा के लिए आज इस धरा में अवतीर्ण हुए हो। हे देवदूत, तुमने स्वर्गीय संदेश लाकर इस पुण्य भूमि भारत को पूत किया है, जहाँ युग युग से ऐसी शक्ति अवतीर्ण होकर धर्मस्थापन करने के लिये पृथ्वी का भार दूर करती रही है।

हे सव्यसाची, तपस्या के बल से तुमने पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया है और सारे संसार को स्तंभित कर दिया है। तुम अजेय "अहिंसा रूपी बाण—महा-शक्ति को धारण करके शत्रु को भी मुग्ध कर देते हो और ससार का कल्याण-साधन करते हो।"

भारत का जितना दुःख, जितनी वेदना, जितनी आकाक्षा, आशा, कर्म और साधना और जितना भूत, भविष्य तथा वर्तमान सर्व मूर्तिमान होकर तुममें संकलित हुए हैं। तुम्हारे चित्त को विपद् कभी व्याकुल नही कर सकी। भीति तुम्हारे मन का बल कभी दूर नहीं कर सकी। नैराश्य तुम्हारी कल्पना की सीमा तक छू नही सका। अतएव "व्यर्थता" कापुरुषो की भाषा नहीं है क्या? तुमको अच्छी तरह ज्ञात है कि निःसंग कर्म में कभी पराजय नहीं है? इसलिये, तुमने ईश्वर के पास जीवनपर्यंत असीम श्रद्धा रखी है।

हे मोहन, तुमने ऐसा कौनसा मोहन मंत्र चला दिया है? भारत मे अग्नि-शिखा जलाकर करोड़ों प्राणो में उद्दीपना जगा दी है, जिससे देश भर में तप्त उन्मादना फैल गयी है?

हे भगीरथ, तुम्हारी साधना के फलस्वरूप भारत की छाती पर प्रेमरूपी मन्दाकिनी-धारा प्रवाहित होने लगी। हिमाचल से कुमारिका तक फैले इस अखंड देश में महामुक्ति-मंत्र व्याप्त हो गूँज उठा और उसकी मंत्र प्रतिध्वनि ने विंध्यगिरि के शिखरप्रदेश में भी टकराकर अशान्ति-वज्राग्नि पैदा कर दी। अतीव महान् तथा दुर्गम्य मानव धर्म का आचरण करके मानवों को आदर्श-मनुष्यता की शिक्षा दी है। क्षुद्र सत्य की महिमा की परीक्षा करके जगत् को उसी मंत्र की दीक्षा दी है। इसके द्वारा संसार के कोने-कोने में सत्यका आलोक प्रकाशित हो उठा। उसी सत्यामृत के द्वारा द्युलोक तथा भूलोक भर पूर हो गया और हिंसा, द्वेष, तापक्लिष्ट मानव उसमें स्नान करके परम शांतिलाभ कर सका।

हे महर्षि, हे जगद्गुरु, हे महामानव, तुम्हारे श्रीचरणो में मेरी सहस्र प्रणति है, स्वीकार करो।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

श्री गुरुचरण परिजा

बापूजी,

तुम महीयान् सत्य, शिव और सुन्दर हो। तुम स्रष्टा, रुद्र और भगवान् भी हो। हे विप्लवी, तुमने इस सुप्त धरा के तट में प्रलय की रचना की है। फिर तुम्हींने लाखो प्राणियो के जीवन-पट मे आशा का संचार किया है। तुम्हीं ने इस रुग्णभूमि में नवीन शक्ति का प्रदान किया है। हे मर्त्य के भगवान्, तुम्हीं ने इस उजड़ी हुई भूमि को हरा भरा कर दिया है।

इस युग का इतिहास तुम्हारे इन चरणो से जन्मा है। तुम्हारा मंत्र इस धरा में लाखो जीवनो में न्यस्त है। तुम्हारा साम्य-महागीत ओंकार देश-विदेशों में गूंज रहा है, हे चिर सत्य, हे चिर विजयी, हे नित्य वलीयान् ये सब तुम्हारे सत्य की साधना और अमर दान का फल हैं।

इसलिये, आज हिंसायुग ने तुम्हारे चरणो मे सिर झुकाया है।

हिंसा का पाप आज उसी के वक्षस्थल पर धीरे-धीरे जल रहा है। तुमने उसके हाथों संसार का पाप-भार जलाया है। हे सत्य के अवतार, तुमने पृथ्वी में मैत्री का बीज बो दिया है। इस मिट्टी से किसी-न-किसी दिन मुक्ति का महागान मुखरित हो उठेगा। हे चिर रुद्र, हे चिर विप्लवी, जय जय अभियान !

तुम्हारी इस देह मे बुद्ध की महा गति, नानक की कल्याणकर वाणी और—ईसामसीह की परिणति इकट्ठी हुई है। देशमाता के गौरव की प्राप्ति के लिये तुमने अपने अंगो में राणाप्रताप की आशा छिपा रखी है। तुम्हारे कठ से महावेदव्यास की भाषा और मंत्रका महागान ध्वनित हो उठता है।

नित्य हो तुम—हे चिर विप्लवी
मर्त्य के भगवान्,
सत्य हो तुम, मंगलमय,
सुन्दर-महीयान्।

बापू के प्रति

श्री नर्मदेश्वर झा

भादों का महीना। दुर्दिन के बादल गरज रहे थे। दुःख का छोर नहीं मिल रहा था। कंस के पाप से भारत कॉप रहा था। सब लोग बंदी हो रहे थे। देश का भाग्य बंदी था। गर्भ की ग्लानि उपस्थित थी, उस दिन शरीर धारण कर गोपाल आए थे।

दासत्व के आतंक से जिस दिन हमारा द्वीप (जम्बूद्वीपभारतवर्ष) बिना दीवालों का एक जेल बन गया, क़ैदी न्याय से हमारे जब सब दरवाजे बन्द होगए, अपमान मात्र ही अपनी सारी सेवाओं के बदले हमें उपहार दिया जाने लगा, जिस दिन संसार के लिए भादो-जैसा समय बीत रहा था, उस दिन बापू तुम आए थे।

हम नए-नए पंथ सीखते जा रहे थे। दूसरों के—असत्य के पथ अपना रहे थे। परम-स्वधर्म भूल गया था। दासत्व की शृंखला जीवन का कठ कस रही थी। उसी दिन वेणु-सा चरखा का गान देश के गॉव-गॉव मे गूॅज उठा।

सूर्योदय हुआ, प्रकाश हुआ, स्वदेश को पहचाना। अपना पथ पकड़ा।

स्वय बनाए वे सब विदेशी बंधन खोल दिए। विदेशी पहनना, विदेशी बोलना, विदेशी सोचना, विदेशी अपनाना सब स्मरण हो आया। कौन हैं हम ? क्या हो गए ? अब उद्धार के लिए क्या उपाय किया जाय ?

बापू, आपके पथ का अनुसरण कर इस क्षुधा-भुक्त जन-देव का पेट भरा, उसकी लज्जा का निवारण हुआ। हरिजनों के लिए मंदिर का द्वार खुला। आपके सत्य के और उपवास के प्रयोगों ने देश को शुद्धि दी। भाइयों का हमें स्मरण हो आया। देहात जग उठा। इस देश का सोया जीवन भी उठ बैठा। कितने बंधन टूट गए।

यह पुण्यपर्व है। बापू की नई कला प्रकट हुई है। पचहत्तर वर्ष बीत गए। बापू के लिए क्या पचहत्तर, क्या सौ ? वे तो काल के बंधन से ऊपर हैं। भारत-महाभारत—की महान् आत्मा हैं, वे चिर-पुराण हैं चिर-नूतन, चिर शाश्वत। यदि वे नेता हैं, तो भारत आत्मनिष्ठ है, समाधिस्थ है, चिर-विमुक्त है, पशु-बल की पहुँच से ऊपर है।

बापू के लिए, वात, सिंधु, निशि-वासर, रवि, तरु, व्योम सब मधुमय हो जायँ। अमर आशीष दे। जीवन का सत्य वह पा जॉय। बापू को पाकर—ईश्वर का अमर आशीष पाकर हम धन्य हुए, जगत् धन्य हुआ। आज काव्य-चरित्र की वंदना कर यह अ-गणिता-मैथिली धन्य हुई।

गांधी-जयन्ती

श्री कृष्ण कृपलानी

यद्यपि विधाता ने भारत के सौभाग्य के साथ संकट का खेल खेला है, यद्यपि आज भारत से राजर्षि और सूरमा विदा हो चुके हैं, यद्यपि हमारे सब दिन अभिशप्त भाग्य को कोसते, दुर्भाग्य को ठोकते बीतते हैं, तब भी एक दिन ऐसा आया जिसमें इतिहास ने करवट ली, और अनुकरण के भाग्य में सत्य का पुनः आविर्भाव हुआ। आज भारत के भाग्य में सदेह को स्थान नहीं है। तुम हतभागों का खोया हुआ सम्मान लौटा लाए, हे भारत के अग्रणी ! हे ईश्वरी रथवान् ! इस सत्याग्रह-संग्राम मे आज तुम्हारे नेतृत्व—तुम्हारे सारथीत्व ने कापुरुष को भी गाण्डीवधारी बना दिया है। यद्यपि तुम्हारे साथ किसी अर्जुन के धनुष-बाण नहीं हैं, यद्यपि शिवाजी की तलवार तुमने म्यान में ही लौटा दी है, तब भी विना शस्त्र, तुम्हारा ऐसा ही प्रताप है कि साम्राज्य तुम्हारे नाम से कापता है।

आज तुम्हारा जन्मदिन है, हे असहायों के हमराह ! विधाता से यह विनती करना ही तुम्हारी सच्ची जयंती है—कि हमें ऐसी पीड़ा सहन करने दो जो शूरवीरों को जन्म दे सके; भारत का भाग्य ही ऐसा है कि व्यथा के मंथन में हमने सत्य को पाया है।

धन्य बापू !

श्री सुब्रह्मण्य भारती

धन्य हैं गान्धी जी, धन्य हैं आप, आपने उस भारतवर्ष के उद्धार के लिए अवतार ग्रहण किया है, जहाँ दरिद्रता का आज भी तांडव हो रहा है, जो अपनी स्वतंत्रता से वंचित है, जो पतन के गर्त में समा गया है।

पराधीनता से मुक्त होकर, भारतीय पुनः धन धान्य एवं विद्यावैभव से संपन्न होकर संसार में प्रथम श्रेणी के वन कर रहे, वह तपस्या आपने की है। आपकी कीर्ति असीम है ! आप संसार में सर्व-प्रथम हैं।

मूर्च्छित लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करनेवाले महावीर के समान आप हैं यह कहे, या इन्द्रके कोप से उँगली पर गोवर्धन धारण करने वाले, गोकुल की रक्षा करने वाले गोपाल कहे ? क्या कह कर आपकी प्रशंसा करे ? असीम दुःख देने वाली परतंत्रता की व्यथा को दूर करने के लिए आपने ऐसी औषधि आविष्कार की, जो संसार के लिए अभिनव ही नहीं, अपितु सुलभ भी है।

अपने प्राणों पर जैसी ममता सबको होती है, वैसी ही ममता शत्रु के प्राणों पर भी करना चाहिए, यह आपने हमें बताया है संसार के सभी मानवों को ईश्वर के संतान—समझना आपने हमें सिखाया है। जिस राजनीति में अधर्म, युद्ध, हत्या आदि सम्मिलित हैं, उसमें ऐसे आध्यात्म-तत्व को प्रतिष्ठित करने का सत्साहस आपने ही किया है, अतः आप सर्वश्रेष्ठ हैं।

हिंसा की नीति को परित्याग करके आपने परमात्मा के पुत्रों की सेवा के व्रत को ही सबसे बड़ा धर्म माना है, और उसे आपने अपना लिया है। परस्पर का वैमनस्य भूलकर संसार सत्पथ पर चले और सुख शान्ति प्राप्त करे, यही आपकी साधना है।

महात्मा गांधी

श्री रामलिंगम पिल्ले

महात्मा गांधी का नाम लेते ही हृदय पिघल जाता है, दुराव छिपाव मिट जाते हैं, आँखों से आँसू की वाढ़ आती है, अग स्वेद से भीग जाता है, सुख का झरना उमड़ पड़ता है।

उनका नाम सुनते ही मन शीतल होता है, मोक्ष मिल जाता है, पूर्णतः नये और मधुर भाव कहीं से उभर आते हैं।

वृद्ध गाधी जी के जरा के संबंध में बोलते समय आत्मा स्फूर्ति में आकर चमक उठती है, दुर्बलता और शिथिलता दूर हो जाती है, शरीर में उत्साह और शक्ति पैदा होती है।

उन पवित्र गांधीजी की शक्ति की बात करते ही हम आहार और हवा भूल

जाते हैं, हमारा हृदय काल को भी भगा देनेवाली शक्ति पैदा करने के लिये उठ खड़ा हो जाता है।

उदार गाधीजी की बात सुनने से नीद टूट गई है, चिन्ता चली गई है, दुख और कष्ट के स्वप्न टल गये हैं, जीवन सुधर गया है, और दृष्टि विशाल हो गई है।

सत्याग्रही गांधीजी का पावन नाम लेते ही कपट कांप उठेगा, भयंकर क्रोध भस्म होजायगा, भीरु भी दूसरों के समाने पीठ तक नहीं दिखायेगा। साहस दया प्रेम सभी जाग्रत होंगे।

श्रेष्ठ गांधीजी ने व्यवहार में यह दिखाया है कि संसार के सब जीव-जन्तु समान हैं। ऐसे महात्मा को देखते ही पाप, निन्दा, कुकर्म, सब नष्ट हो जायेंगे,

ओह, ७५ वर्ष की ढली आयु में भी उनमें कैसी तरुणता है! वे बड़े ज्ञानी हैं, साधु हैं, आश्चर्य करने योग्य पवित्र जीवन बिताने वाले हैं।

आज गांधीजी के तप की शक्ति ने संसार को आक्रान्त किया है उसे जला रही है। छल और कपट राख हो गये हैं। वाद-विवाद ठंडा पड़ गया है, सारी दिशायें स्तंभित रह गई हैं।

दीन दुखियों के बंधु उन गांधीजी की जितनी भी प्रशंसा करें, कम ही है। उनका नाम अमर हो जिनसे त्रिकाल और समस्त विश्व जी उठे।

भोले भाले बापू

श्री सीतारामांजनेय

आप कर्मिष्ठि हैं जिन्होंने गायत्री को छोड़ दिया है, स्वेच्छापूर्ण ज्ञानी हैं जिनकी वाञ्छाएं पूरी नहीं हुई, भक्त हैं जो कभी मंदिर में भी नहीं जाते। आप में कर्म ज्ञान तथा भक्ति तीनों का संयोग है।

आप अपने जीवन में आश्रम चतुष्टय तथा चातुर्वर्णों के धर्मों का अनुष्ठान करते हैं।

अत्याचारी के भी हृदय के परिवर्तन मे आपका विश्वास है।

आपका ऐसा कोई मित्र नही है, जो आपको शत्रु नही मानता हो, फिर भी, आप अजातशत्रु हैं। अतएव, मनुष्य समुदाय को हमारे भोलेभाले बापू अवश्य चाहिये।

आपके किसी भी मित्र की भूलचूक आपकी कड़ी दृष्टि से बच नहीं सकती, अतः आपके मित्र भी आप से अप्रसन्न होते हैं।

गांधी महात्मा

श्री उ० कोंडय्या

चरखा तुमको बुलाता है तुम को बुलाता है सेवागाव, चरखा तुमको बुलाता है।

कहता है यह जन्म, यह जीवन यही नहीं सच्चा, जीवन अलग है, कहता है, चलो किसी पथ पर, चरखा तुमको बुलाता है। कहता है कि बापू के जीवन पर दृष्टि डालो। कहता है, नर भी नारायण होगया है, चरखा तुमको बुलाता है।

महात्मा

श्री मंगपूरि शर्मा

तब तुम्हारे सत्य के तप से पैदा हुए अद्‌भुत फल से भारतीय ही नहीं, अखिल विश्व के लोग तुमको मुकुट पहना कर तुम्हारी कीर्ति को गा रहे थे, अब तुम्हारी सत्य-दीक्षा की परीक्षा में देवता लोग भी पराजित होकर लज्जित हो कर तुम्हारे पीडित शिर पर अक्षत डालते हैं आशीर्वाद देते हैं। पवित्र सत्य की खोज में तुम देव! धर्म तथा देश के लिये आत्मा को समर्पित करते हो, तुम्हारे लिये जय क्या है, पराजय क्या है?

गांधीजी

श्री वसबरजु अप्पाराव

अंगोछा पहने तो क्या! हमारे गान्धी जी "हमारे गांधी" बनिया हो कर जनमे तो क्या! मन माखन जैसा, प्रेम माता जैसा, परिपक्व मुख पर ब्रह्मतेज, चार बालो की नाचनेवाली चुटिया, चारों वेदों के निचोड़ की जाननेवाली चुटिया, पोपला मुंह, खोलने पर मोतियों की झड़ी बरसती है, मुस्कराने पर सोने की वर्षा होती है।

खट खट करते हुए चलते हो तो सारी दुनिया थर्रा उठती है, इनकी बाते वेद वाक्य।

कौशिक क्षत्रिय होकर ब्रह्मर्षि नही बने! आज वाणिक-पुत्र भी ब्रह्मर्षि हुआ।

मेरे गुरुदेव

श्री वल्लतोल नारायण मेनन

मेरे गुरुदेव के लिए सकल वसुधा ही कुटुम्ब है, उसके पेड़-पौधे, घास-फूस और कोड़े-मकोड़े भी कुटुम्बी हैं। त्याग ही आपकी निजी संपत्ति है। नम्रता ही आप का अभ्युदय है। आप योग के पारगामी हैं और इस प्रकार विजयी हो रहे हैं।

चाहे तारों की मणिमाला से सजा दो, चाहे काली घटा रूपी कीचड़ से, पर आकाश के लिए दोनों बराबर हैं। वह तो इसमे न लिप्त रहता है, न पृथक्‌ ही। उसीप्रकार मेरे पूज्य गुरुदेव भी स्वच्छ हैं, सम हैं और निर्मल हैं।

आप वह अगाध पवित्र तीर्थ ह्रद हैं, जिसमें क्रूर जन्तुओं का निवास नहीं है, और आप वह मंगल दीपशिखा हैं, जिसमे काजल की कालिमा छू तक नहीं गई। आप वह माणिक्य महानिधि हैं, जिसे सर्प ने स्पर्श तक नही किया है। आप ऐसी चाँदनी है जिसमें परछाईं नहीं पड़ती।

आप निरस्त्र होकर भी धर्म-संग्राम करनेवाले रणशूर हैं। बिना धर्मग्रन्थों के पुण्य का पाठ सिखानेवाले सतगुरु हैं। आप ऐसे प्रवीण वैद्य हैं, जिनके पास औषधि न रहने पर भी, सब रोगों की जड़ उखाड़ फेंकने की शक्ति है, और आप हिंसा-दोष के बिना ही यज्ञ करनेवाले महायाज्ञिक हैं।

अहिंसा ही आपका अटल व्रत है। आपकी उपासनादेवी चिर शांति है। आप इस महान् तत्त्व के घोषणा करनेवाले हैं कि 'तलवार चाहे कितनी ही तेज क्यों न हो, अहिंसा के कवच से टकराने पर अवश्य चूर चूर हो जायगी।

अपनी प्रेयसी (अहिंसा) के साथ धर्म के नर्म-संलाप वचन ही आपकी अनमोल उक्ति है, सनातन सत्य की सभा के सुमधुर गान हैं, और मुक्ति के मणिमय चरणों की नूपुर-ध्वनि है।

आप प्रेम के बल पर संसार को जीतनेवाले सैनिक हैं। प्रणव के धनुष पर आत्मा का तीर चढ़ाकर ब्रह्म को ही लक्ष्य बनानेवाले हैं। ओंकार को भी क्रम से पिघला-पिघलाकर उसका केवल सूक्ष्मांशमात्र ही धारण किये हुए हैं।

सब महात्माओं की महत्ता—ईसा की त्याग-बुद्धि, कृष्ण परमात्मा के धर्म-रक्षणपात्र, गौतम बुद्ध की अहिंसा, श्री शंकराचार्य की बुद्धिमत्ता, रतिदेव की कृपालुता, हरिश्चन्द्र की सत्यप्रियता और हजरत मुहम्मद की स्थिरता, एक ही साथ एक व्यक्ति पर देखना चाहे तो आप लोग मेरे गुरु के पास जाइये अथवा उनके पावन चरित्र को पढ़िये।

आपके पावन चरणों का एकबार दर्शन कर लेने पर कायर शूर-वीर हो जाता है, निर्दयी पुरुष दयासागर हो जाता है, कृपण महादानी हो जाता है, कटुभाषी के मुँह से मधुरवर्णन हो जाता है, अशुद्ध हो तो परिशुद्ध हो जाता है और अकर्मण्य कर्मठ बन जाता है।

आप पूर्ण शान्ति से घिरे हुए महान् तपस्वी हैं। आपके शरीर पर शत्रु की तेज तलवार भी नीलोत्पल के समान है। आपके सामने पैने दाँतोंवाला सिंह हरिण का बच्चा है और किनारों पर टकरानेवाली गभीर लहरोंवाला बड़ा सागर भी क्रीड़ा का सरोवर है।

भले ही जंगल हो, जब आप कार्य-चिन्तन करने लगते हैं तब वह भी आपके लिए सुवर्ण सभास्थल है, और गहरी समाधि में लग जाने पर तरह तरह के कोलाहलों से भरा हुआ नगर भी गिरि-कन्दरा है।

अपने सत्कर्मों के बल से प्रत्येक क्षेत्र में शुद्ध स्वर्ण को ही उपजानेवाले धर्म प्रवर्तक हैं। आपकी दृष्टि में सुवर्ण इस पृथ्वी की पीली मिट्टी के समान है। छत्र चामर युक्त साम्राज्य के ऐश्वर्य भी आपके लिए भयंकर दंष्ट्राये दिखानेवाले पिशाच हैं। आप इतने विरक्त हैं कि विश्व का वैभव आपको लुभा नहीं सका।

दूसरों के कोमल पैरों में पीड़ा न पहुँचाने के लिए स्वतंत्रता के दुर्गम पथ पर आप रेशम बिछा रहे हैं, लेकिन आप तो स्वयं वल्कल के टुकड़े पहने अपना जीवन बिता रहे हैं।

इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि गीता की जन्मभूमि को छोड़ और भूमि इस तरह के कर्मयोगी को जन्म नहीं दे सकती; सिवा हिमालय तथा विन्ध्याचल के मध्यप्रदेश के और कहाँ इस तरह का शमशील सिंह दिखाई पड़ेगा ? गंगा नदी की प्रवाह-भूमि में ही ऐसे मंगल फल देनेवाले अमर-तरु का जन्म हो सकता है। हे जगद्गुरो ! दुर्द्धर्ष महात्मन् ! मैं आपको बार-बार प्रणाम करता हूँ।

महात्मा गांधी

श्री पालानारायण नायर

अक्षय ज्योति स्वरूपाणि मेरी जन्मभूमि जीती है, जिसमें नक्षत्रलोक के साथ केलि संलाप करनेवाले, निर्दोष तथा निष्कल्मष महान ऊँचा हिमालय गंभीर होकर खड़ा रहता है।

सर्वांग सुन्दरी कुलीना मेरी जन्मभूमि जीती है, जिसमें सन्तोष तथा निर्वाण के फूल खिलनेवाले नन्दन वन सुशोभित हैं, मानव को फिर भी अज्ञानान्धकार से उबारने के लिए गीता की सुरीली वाणी गूँजने लगी है।

अंबिके भारतमाता ! तूने इस महान पुत्र को जन्म देकर अपना नाम सदैव के लिए वीर प्रसविनी रख लिया। अज्ञान तथा दरिद्रता के अंधकार को दूर करके ज्ञान की जलती हुई मशाल हाथ में लेकर तेरा पुत्र खड़ा रहता है।

आपका पुत्र इतना ग़रीब है कि उसकी उपमा कोई नहीं है, पर संसार भर में बुद्धि तथा समृद्धि बाँट रहा है।

आप सत्यान्वेषी साधु अर्द्धनग्न होकर ही खड़ा रहता है; किन्तु परिश्रम से देश भर के लोगों को वस्त्रों से सजा दिया है।

इसके दुर्बल दोनों हाथ विवेक का धक्का देकर विश्व के हृदय को कँपा रहे हैं। बुढ़ापे के कारण लाठी के सहारे खड़े होने पर भी, करोड़ों लोगों को सहारा दे रहा है। इतना ही नहीं, तप से शुष्क इस नेता के मुख से अहिंसा की बाँसुरी की वाणी गूँज रही है।

हमारे गांधीजी

श्री मारा शामएण

भारतमाता की कोख मे जन्म लेकर, परतंत्रता की पीड़ा सहकर, सुख देने-वाली स्वतंत्रता की महान इच्छा को मन मे रखकर, हमारा पथ प्रदर्शक कौन हैं ? हमारे गाधीजी !

भोग और भाग्य की कामना तथा राग, द्वेष, मोह की माया छोड़कर योगी की भाँति जीवन बितानेवाले जनता में त्याग का बीज बोनेवाले कौन हैं— हमारे बापूजी !

बड़ों में बड़े और छोटों में छोटे होकर संसार के मार्गदर्शक बनकर— विचरनेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

देश के लिये कठिन कारावास को भी सहनकर अनेक कठिनाइयों को सहते हुए अबोध शिशु के समान दिन बितानेवाले और देशसेवा को ही अपना प्रथम कर्तव्य समझकर सर्वस्व समर्पण कर देनेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

उपवास करते हुए सच्ची अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए समस्त ससार को कँपानेवाले और अपनी ओर आकर्षित करनेवाले पुरुषोत्तम कौन हैं ? हमारे बापूजी !

ज्ञान रूपी मधु को ढूँढते फिरनेवाले मानव मधुप को सर्वदा मधु से सतृप्त करनेवाले और दीन मधुपों को अपनी ओर आकर्षित करनेवाले कौन हैं ? हमारे गाधीजी !

प्रेमसुधा की इच्छा कर आनेवाले प्रेमियो को बल देनेवाले, क्षेमसुधा चाहनेवालों को क्षेमसुधा सदैव वितरण करनेवाले कामधेनु से सौम्य कौन हैं ? हमारे गाधीजी !

काति में सूर्य के समान, शान्ति मे चन्द्र के समान, क्षाति में साधु के समान तेज दिखानेवाले कौन हैं ? हमारे गांधीजी !

भारत जननी के प्रिय पुत्र, उनके पुत्रों में अग्रगण्य हैं, और आँखो के तारे कौन हैं ?—हमारे बापूजी !

गांधी महात्मा

श्री ईश्वर सणकल्ल

हे चैतन्य-निधि ! तुम्हारा नाम सुनकर रोमाच हो रहा है। तुम्हारा चित्र देखकर अश्रुपात हो रहा है, और मौन मन में ही हमने बारबार नमस्कार किया। देखने को अस्थिपंजर मात्र हो ! किन्तु अंतरतम के आत्मा से संसार को कँपानेवाला हुंकार भर रहे हो। जिस प्रकार तृण रूपी विश्व को भस्मसात् करने-वाली प्रचंड अग्नि छिपी रहती है, उसी प्रकार तुम्हारे आत्मा में एक अदृश्य शक्ति है। शरीर से हार जाने पर भी अपराजितों को तुमने पराजित कर दिया।

खाली हाथ से ही भूक को मिटा दिया। भिखमंगे रहते हुए भी जगत् के सम्राट् बन गये। दिगंबर रहते हुए भी संसार को वस्त्र पहना दिया। तुमको बाँधनेवाले बंधन दूसरों की मुक्ति का साधन बन गये, और तुमको मारनेवाली मृत्यु स्वयं मर गई।

तुम्हारे मुख पर खेलनेवाली मंद मुसकान दूसरो की मूर्च्छा को हटा देती है। तुम जहाँ जहाँ जाते हो वहाँ वहाँ सुख शांति नृत्य करती है। जहाँ जहाँ वास करते हो वहाँ वहाँ शांति की वर्षा होती है। जो भारतवासियों के लिये एक सपना था वह तुमसे ही सत्य बन गया। हे भारत के वीर, आज तुम्हारे संकेत पर समस्त संसार वीरता के पथ पर चल रहा है। तुमने स्वयं उपहार बनकर आत्मार्पण कर दिया। यह सब देखकर मैं विवश हो गया, इसीलिए मैं तुम्हारी ओर खिंच आया। मैं तो तुम्हें देखते देखते अंधा बन गया और सुनते सुनते मूक बन गया। द्वन्द्वमय संसार ने तुम्हारी ओर देखकर सचमुच बड़ा अनुभव पाया है, तुमसे ही पूत हो गया है।

उपवास

श्री गोविन्द पाई

महर्षि शुक ने भगवान को देखना चाहा, इसलिए हिमालय के हिमावृत एकांत में अपने हृदय की भूख मिटाने के लिए अपने शरीर का आहार दे देकर लबे उपवासों द्वारा अपने मन रूपी रंभा (कामना) को जीतकर भगवान् को प्रसन्न किया और भक्ति-रूपी गंगा को भारत की प्यास बुझाने ले आए।

अश्वत्थ वृक्ष के नीचे दीर्घ उपवासों द्वारा भगवान् बुद्ध ने मार (मन्मथ) को जीता और इच्छा-रूपी जंगलों को पार कर उन्होंने हमें अष्टांगिक धर्म-मार्ग के द्वारा "निब्बाण" निर्वाण-प्राप्ति का मार्ग बतलाया।

रूढ़ियों के अंधकार में जिसे हम धर्म मान बैठे हैं, हम उस सर्वव्यापी भगवान् के प्रकाश की खोज करते हैं। फिलस्तीन के जंगलों में बहनेवाली प्रसिद्ध नदी जोर्दन के तट पर महात्मा ईसा ने चालीस दिनों का लम्बा उपवास करके स्वर्गराज्य का दृश्य देखा।

अरबों के असंस्कृत और अज्ञान से भरे हुए जीवन को देखकर अत्यंत दुखी होकर अरब को नवजीवन देने के ही लिए हीरा पहाड़ की गुफ़ा में लंबे लंबे रतजगे और उपवास कर अन्त में एक भगवान् के सर्वरक्षकत्व की घोषणा की और एक सर्वरक्षक भगवान् के महत्व को बतलाकर अरबों के अज्ञान को दूर किया।

हे गुरुवर महात्मा गांधी ! आपने देहली में इक्कीस दिनों का उपवास कर भारतीयों के ही क्यों, संसार के हृदय मे विश्वप्रेम का बीज वो दिया है। क्या उस बीज से अंकुर कभी नहीं निकलेगा ? अवश्य निकलेगा और वह प्रेमलता भारत की भाग्यलता बनकर हमें अमर बना देगी।

निःस्व

श्री गोविंद पाई

दधीचि महर्षि ने आगापीछा किये बिना ही देवताओं की सहायता के लिए अपनी अस्थियाँ निकालकर दे दी। एक पक्षी कबूतर को बचाने के लिए राजा शिवि ने अपने ही शरीर का मास दे दिया। राजा मयूरध्वज (शिखिकेतन) ने अपने शरीर का आधा भाग उन श्रीकृष्ण और अर्जुन के लिए दिया जो दूसरा आधा भी माँगने से न चूके। राजा भरत ऋषि होने पर भी एक अनाथ मृग-शावक की रक्षा के लिए संसार के बन्धन में आबद्ध हुए।

भगवान बुद्ध ने अपना सब कुछ त्यागकर उस परम सत्य के प्रचार के लिए जिसका उन्हे साक्षात्कार हुआ था देश-विदेशो मे भ्रमण किया, गुरु तेगबहादुर ने अपने को तलवार की धार मे अर्पण किया, राजपूत की महारानी पद्मिनी ने चित्तौड़ के गौरव की तथा स्वधर्म की रक्षा के लिए अपने को अग्निकुंड में समर्पित किया।

एक निःस्वार्थी क्या नहीं त्याग सकता और क्या नहीं पा सकता ? पृथ्वी के हित एक निःस्वार्थी ही कष्ट झेल सकता है, और दूसरो के लिए मर सकता है।

जीव संसार की यातनाओं को भोगने ही के लिए है, और यातनाओं का भोगना ही जीव की महानता है। एक निःस्वार्थी के कष्ट झेलने से ही मानव जीवन महत्व को प्राप्त होता है। कष्ट का सहना कभी निष्फल नही होता। दुनिया प्रगति को पाती है, इसीलिए कि निःस्वार्थी का त्याग उस प्रगति मे निहित है। इसीलिए, उसका कष्ट झेलना कभी निरर्थक या व्यर्थ नहीं होता।

हे पूज्य महात्मा ! सचमुच हम मानते हैं कि भारत का भाग्य आप ही की निःस्वार्थता पर निर्भर है, और आपका निःस्वार्थ ही हमारा पथप्रदर्शक है।

युगे-युगे

श्री मुकुंद अण्णाजी राव

त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्रजी कपि-सेना लेकर लंकाधीश से जब युद्ध करने गये, तब सुन्दर नगर देखकर उन्हे बहुत दुख हुआ। उनके मनमें आया कि जब मैं दशमुख से युद्ध कर उसे परास्त करूँगा, तब यह सुन्दर

राजधानी, यहाँ के गगनचुम्बी भव्य भवन और कला की साक्ष्य देनेवाली अट्टालिकाएँ, सब कुछ मिट्टी में मिल जायेगी। हाय! ऐसा नाश मुझसे देखा न जायगा। यह कहकर उन्होंने छल छल आँसू बहाये थे।

महात्माजी जब देहली नगर के राज-प्रतिनिधि से मिलने गये, तब यह विचार मन में आते ही कि आंग्ल-देश में इस घोर लड़ाई के कारण सत्यानाश होगा, वहाँ के सुन्दर भवन धूलि में मिल जायेंगे, कला का नाम भी न रहेगा, उन्हें भी श्रीरामचन्द्रजी के समान दुख हुआ।

शत्रुओं का नगर हो या मित्रों का हो, उसका नाश होते देख ये दोनों महापुरुष दुख-विह्वल हो गये। ये महापुरुष सत्य की रक्षा के लिए अवतार लेकर इस मृत्यु-भूमि पर आये हैं। जैसे राजाओं में रामचन्द्रजी श्रेष्ठ माने जाते हैं, वैसे ही महात्माजी भरत-देश में श्रेष्ठ और पूज्य हैं।

गांधीजी का पेट

श्री चुआङ्-युङ्

जन भीत-भीत अति
स्तालिन-पुरी पर—
कम्पिता धरित्री के हृदय पर—
हो रहा है, क्रूर घात-प्रतिघात!
स्तालिन-पुरी स्वतंत्र,
जय-घोष से तुम्हारे मैंने सुना, कि
है इस धरती का हृदय धड़कने लगा।
बूढ़ा वह गांधी एक दुःख में,
लोग करते थे जब उत्सव का समारम्भ,
किया उसने था तब निज उपवासारम्भ।
उत्सवोत्साह का प्रदर्शन सड़क पर,
मुँह ढाँप रोता बूढ़ा रंक गली-मुख पर।
स्तालिन-पुरी है यदि हृदय धरित्री का
गांधी का तब तो उदर पाक-यंत्र है।
खड़े होंगे कैसे हम?
उछले हृदय क्यों न—कितना ही
जब जलता है पेट खाली शुष्क-ज्वाला से—क्लेश से
और (हाय,) न्याय की स्वतंत्रता की, मान की मनोज्ञ आशा
जग के महान् उन रेडियो के केन्द्रों से—
घोषित हैं केवल दो चार बूँद नीबूरस—

कोरे जलबीच, (जिसे गाधी हाय पीता है।)
पश्चिम की ओर मुँह किए हम ताकते हैं
उठता जहाँ से है प्रकाश !
हरे खेत पुश्किन के, शेली और बायरन के जलधि दुरवगाह
निर्निमेष देखता हूँ होकर समुत्सुक मैं
आशा हूँ लगाए कि
हमारी इस प्राची की निगाह में प्रतीची सा प्रकाश हो।

मरुभूमि में हरियाली

श्री 'उ-शिऔलिङ्' श्री दिवाकर उपाध्याय

गाधी,
मरुभूमि में हरियाली।
उत्ताल तरंगे ऊपर नीचे निर्मल-जलधारा।
हिम-क्रूर शीत बाहर है,
भीतर जलती है ज्वाला।
बीती हैं शरत् पछत्तर,
जीवन कठिनाई वाला।
पर सुना फूटती मुँह से शिशु दिव्य हँसी की धारा।
कुछ सत्य मनुज जीवन का
पा सकते स्वाद कहाँ से ?
(केवल बस बन्धु !) यहाँ से।

महात्मा गांधी

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद पृष्ठ ७ में देखिए।

चिरन्तन भारत

श्रीमती सरोजिनी नायडू

तुम्हारी परिवर्तनहीन आँखो ने युगान्तों के दृश्य, उत्थान और पतन देखा है।

शताब्दियों फूलों ने तुम्हारी परिक्रमा की है। आरम्भ के उषःकाल की शान्ति मे संसार के साम्राज्यों से तुम्हारी आयु बड़ी रही है, और उनके पौराणिक तेज और श्री से कही अधिक तुम्हारा प्रकाश रहा है। काल के दिगन्त-व्यापी कीर्तिवाले तुम्हारे प्रतिद्वन्दी ईरान, मिस्र, यूनान और बेबीलोन अतल के विवर में विलीन हो गये।

तुम्हारी यह गंभीर भविष्यदर्शी आँखें भविष्य का क्या रूप देख रही हैं ! उसमें संहार की स्थिति और लय कितनी तीव्र और कितनी अभूतपूर्व है !

कौन से राज्य अकस्मात् उठे और गिरेंगे जब तक कि तुम जरारहित, सुरक्षित, सर्वोच्च, सीमा और कालहीन स्थिरता में उन सबको पार करते रहोगे !

गांधी

श्री हुमायूँ कबीर

विस्तृत भूखण्ड और सीमाहीन काल को पारकर, उसने इस प्राचीन जाति की आशाओं में जीवन के स्पर्श से निराशा के गहन अन्धकार में भी शक्ति फूँक दी। अजगर की कुण्डली पर कुण्डली मारकर यह देश, मोह-मुग्ध-सा सो रहा था। किन्तु उसके स्नायुजाल में साँस की गति का संचार हो रहा है। गांधी ने सम्मोहन की तन्द्रा भंग कर दी, उसमें जीवन-बल पैदा किया और अब उन जड़ीभूत अंगों से केंचुल छूट रही है।

भौतिक दुःखों के इस व्यापक दृश्य में भी वह निर्बल स्वरूप अग्रसर हो रहा है, जहाँ मृत्यु धीरे धीरे सारी लोकस्थिति, आशा, विश्वास और कर्म को भूरे रंग में रँगकर निर्जीव करती रही है। यह क्या रहस्य है जो इस सारे दृश्य को ही बदल रहा है ! यह गहरी तीव्र धारा कहाँ से फूट निकली जो इस भूमिपट को जीवन के वेग से हिला रही है। यह सुकुमार मूर्ति इस दृश्य में प्रतिष्ठित होकर सारे भौतिक दुःखों पर विजय प्राप्त कर रही है और नवजीवन की पीड़ा और प्रभा से मृत्यु के इस भूरे दृश्यपट को चीर रही है।

यह मृतक, गतिहीन और विकृतकाय महाद्वीप आशा की नई रागिनी में पुलकित आगे बढ़ चला है। प्रेरणा संचित हो रही है, जनता हिल उठी है और आगे बढ़ने के लिए अधीर होकर ज़ोर मार रही है। धीमी और ह्रास-मयी मृत्यु के आसन पर जीवन की उत्तेजना प्रतिष्ठित हो रही है।

काल की रेतीली भूमि और भारतीय सीमा के छोर पर यह अकेली मूर्ति खड़ी है और इसके अतल से कठोर विषाद और अमर आशाएँ खींच रही है।

हिन्दुस्तान के अशान्त कारवाँ को यह साहस और संकट के नये पथ पर लगा रही है, जहाँ जीवन के तत्वों से ही नये विधान, नये उपदेश और नये आदेश लेने हैं। वह मूर्ति कौन है ? गाधी, महात्मा, भारत के नेता और इस देश की आत्मा।

गांधी

मेरी सीग्रीस्ट

यह कौन है, जो जगत के बीच से उस ओर चला जा रहा है ! ईसा या

बुद्ध। इस साधारण मार्ग पर यह शान्ति का अवतार, जिसके माध्यम से विश्राम हीन भारत चरम चेतन की ओर आकर्षित है ?

चुप! क्या विस्मय है यदि हमारी इस धरती पर फिर उसी कोटि का नेता पैदा हुआ हो, जिसमें विजय के वे ही लक्षण हैं जो उसमें थे, जिसने नजारेथ में विस्मयजनक मार्ग का अवलम्बन किया था।

कौन है यह जो कारागार की बन्द कोठरी से अपनी आत्मा को विश्व का अतिक्रमण करने के लिए भेज रहा है ? इस युग में व्याप्त हो उठनेवाला, जिसके भीतर से वेद और उपनिषद् बोल रहे हैं, जो नंगी और भूखी स्थिति में उस स्थान की खोज में जहाँ मनुष्य का दुःख सबसे गहरा है—भारत की विषाद-मयी भूमि में भीषण शोक की अनुभूति के लिए चल पड़नेवाला यह कौन है ?

यह किसका आसन है जो ससार को ललकार रहा है, जो प्रतिरोध का वह दैवी आत्मबल दिखा रहा है, जहाँ किसी भी अन्य मनुष्य की गति नहीं ? यह किसकी ध्वनि है जिसमें पूर्व की रागिनी गूँज रही है, यह किसका प्रेम है जो छल और दम्भ के शरीर छेदन के लिए खुली हुई तलवार है ? यह किसका मौन है जो ससार के एक छोर से दूसरे छोर तक पुकार रहा है ?

इस विस्मय-विभूति उन्नायक में सारी जातियाँ मिलकर एक हो रही हैं, इसके हृदय में पूर्व और पश्चिम का एक ही चिरन्तन रूप है और इसके हृदय से प्रेम की अविराम रागिनी निकल रही है ! उन कोटि कोटि पददलितों के लिए जो युगों से अत्याचार के चक्रों के नीचे पिस रहे हैं—वह अविश्रान्त महा-पुरुष उन्हें अतीत की स्मृति में किसी महान् उषःकाल और परम्परा का सत्य सन्देश दे रहा है।

अपने एकान्त कारागार में, भारत के किसी कोने में वह आकाश और सूर्य की संगति में प्रतीक्षा कर रहा है। क्या है यदि फिर भी कोई ईसा उन्मत्त शक्ति के द्वारा सूली पर चढ़ा दिया जाय ! अन्धे अपना स्वभाव नहीं बदलते।

इस पृथ्वी पर पैर धीरे से रक्खो, कदाचित् भारतवर्ष में फिर कोई ईसा पथ-प्रदर्शन कर रहा है।

गांधी

श्री बेन्जमिन कालिन्स उडबरी

अब कोई सन्त फिर कब प्रकट होगा जो पवित्रात्मा अपनी जाति का उद्धारक होगा ! ईसा फिर कब एक बार और अपना दर्शन देंगे ?

गौतम ने स्वेच्छा ही से तो राजप्रासाद छोड़ा था। और वे जब अपने अज्ञात पथ पर बढ़े थे, श्रान्ति, क्षुधा, असहाय और संज्ञाहीन के जब उस वट-वृक्ष के नीचे अपने ही भार से दब गये। ईसा ने तो पापियों की मुक्ति के लिए मृत्यु स्वीकार किया।

अपने व्रत का ऐसा ही निष्ठावान एक व्यक्ति अवतरित हुआ है, जो पराधीन मानवों की एक जाति का महात्मा है।

याद आया। गाधी अपने राष्ट्र की आत्मा का बन्धन काट रहा है। आत्मा की मुक्ति यह उसकी माँग है।

क्या बुद्ध को शान्तिपूर्ण निर्वाण मिल गया या ईसा फिर इस धरती पर चल पड़े हैं।

प्रजातंत्र के प्रति

श्री हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

वह विश्वशान्ति का प्रतीक है। कोई भी अत्याचार उसकी ज्योति को न स्पर्श कर सकता है न मंद कर सकता है। उसके बंदी होने में समस्त देश बंदी है और उसके स्वतंत्र होते ही समस्त देश स्वतंत्र होगा।

प्रजातंत्र ! क्या यह तुम्हारे लिए उपहासास्पद नहीं है कि जो तुम्हारे लिए जीवित है, उसी को तुम बंदी बनाये हो। हमें इस समय तो रोषोन्मेष सा हो रहा है—हे परमात्मा उन्हे क्षमा करो जो यह भी नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।

उसे मुक्त करो, क्योंकि इतिहास प्रतीक्षा नहीं कर सकता ! उसे मुक्त करो, क्योंकि वर्तमान युद्ध के रक्त से लाल हो रहा है। उसे मुक्त करो क्योंकि हमारे भाग्य का निर्णय होने जा रहा है। प्रजातंत्र ! इससे तुम्हारे जीवन को निश्चित दिशा मिलेगी।

मानवता की लेखनी को उसके रक्त बिन्दुओं में डूबकर यह घोषणा न करने दो कि तुम मिथ्या कह रहे हो—क्योंकि यदि यह मानवों के बंदीगृह से सदैव के लिए विदा हो गया, तो क्या उत्तर दोगे ?

मन्दिर के घंटे बजे

श्री एस० के० डूंगरकर

देश में उत्साह और आनन्द व्याप्त हो रहा है। उसके देशभक्त ऋषि, उसके सबसे महान् पुत्र ने एकमात्र आत्मबल से, भीषण अग्निपरीक्षा में विजय प्राप्त कर ली है। उसने जब अपने उपवास की घोषणा की, मृत्यु जैसी निराशा देश में छाया की तरह छा गई। बहुतों ने समझा बस यह अब प्रलय की सूचना है, सर्वनाश और ध्वंस निकट आ गया है। घर-घर से, हृदय-हृदय से संसार के कोने कोने से, निकट और दूर से प्रार्थनाएँ की गईं। अनन्त आकाश मन्दिर का घेरा बन गया, जिसके नीचे कोटि कोटि मानव धड़कते हुए हृदय से घुटनों पर बैठ गये।

आनन्द मनाओ ! और मन्दिर के घंटों को गंभीर ध्वनि में बजने दो, क्योंकि अब वह मुस्करा रहा है और सत्य के सर्वोन्नत झण्डे को फहरा रहा है।

महात्मा गांधी

श्री ज्याने टाम्पकिन्स

किन्तु, तुम क्या देखने गये थे ? वायु से प्रताड़ित तिनके को ? उसकी करुणा हिल उठी।

वह भी मनुष्य है, जिसने मृत्यु के आवरण के भीतर से अमरत्व की प्रतिष्ठा के लिए सतत प्रयत्न किया।

अपने मांस और मांस के बन्धनों से तो वह मुक्त हो गया; किन्तु उस पर भी उसने अपने बन्धु के घावों से रक्त बहते देखा।

मानवता की पीड़ा से मुक्त करने के लिए प्रेम की ओर उसने अपनी आत्मा को झुका दिया है।

साम्राज्य उसके पथ का अवरोधक बना। उसके प्रतिकार के लिए उसने अपना शस्त्र उठाया—रोष का नहीं—प्रेम का।

शत्रुओं के लिये भी उसके पास केवल प्रेम है। पत्थर, घूँसे और कारागार उसकी समता को विचलित न कर सके।

साम्राज्य अपने रक्त रंजित पथ पर दौड़ता जा रहा है। किन्तु उसका राज्य चन्द दिनों का नही है।

प्रेम बन्धन नही मानता। सम्राटो से त्यक्त किये गये इस विश्व पर प्रेम का अधिकार है।

नियति के उस विनम्र गृह के सामने संसार के उसपार उत्सुक मानवता प्रतीक्षा कर रही है जहाँ एकमात्र प्रेम की अनन्त शक्ति है जो आपने शुद्ध काल में आ रही है।

वृद्ध गांधी

श्री एल० एन० साहू

गाधी, वृद्ध गाधी, वह कितना सशक्त है, आश्चर्यजनक ? वह मरता नहीं, इच्छा हो तो उसे मारकर देखिए, वह नही मर सकता। वह अमर महापुरुष है।

वृद्ध गाधी का निर्माण अनेक साधनाओं से हुआ है। उसने यौवन की अग्नि तथा इच्छाओ की ज्वाला से मोर्चा लिया है। उसने सभी कुत्सित भावनाओं का दमन किया है। वह ऊँचा उठा। वह उच्च नक्षत्रो के साथ प्रलय तथा अग्नि से खेल खेला है। उनको पारकर उसने विश्व-माता महामहेश्वरी के दर्शन किए हैं। उसने पृथ्वी को पदाक्रान्त किया है।

सभी स्थान उसके हैं। कोई भी नवीन नहीं। महामहा में लीन होने के कारण वह शक्तिमान् है। यह है गांधी, वृद्ध पुरुष। वह भारतवर्ष की वेदना तथा क्रोध का मूर्तिमान स्वरूप है।

वह संपूर्ण अग्नि तथा संपूर्ण सौंदर्य है। गत बीस वर्षो से अधिक काल से वह किस अग्नि-परीक्षा में लीन है? वह सारे भारतवर्ष को अपने साथ शक्ति तथा मुक्ति की ओर ले चल रहा है। शत्रु चारों ओर हैं। युद्ध की भेरी उच्च घोष कर रही है। परन्तु वृद्ध पुरुष गांधी ने यौवन को सफलतापूर्वक ग्रहण किया है। महान साधक, मनसा पूर्ण संन्यासी, वह भारत की जीवित वाणी तथा प्रतीक है।

बलि-पुरुष

श्री साधु टी० एल० वासवानी

आज मैं अपने हृदय में संगीत लेकर उठा जैसे कि अशोक के वृक्ष में वायु की लहरे उठती हैं।

उसने कहा "वह स्वप्न अभी सत्य होगा, क्योंकि भगवान् के स्वप्न कर्म हैं और भारतीय स्वतन्त्रता का स्वप्न उसी का स्वप्न है।"

मैंने पूछा 'विजय का मार्ग कहाँ है?'

मेरी मूर्छना ने उत्तर दिया 'जो कष्ट सहन करते हैं, उन्हीं की जीत होती है।

दीवालों और पहरे के भीतर आज महान् आत्मा गांधी बन्द हैं। किन्तु, दीवालों और कारागारों ने कब आत्मा को आत्मा से पृथक् किया है? कष्ट और संकट की इस स्थिति में उस मुक्तात्मा का रहस्य-सिंहासन आज कोटि-कोटि' हृदयों में स्थापित है और संसार के चारो ओर यह निनाद घूम रहा है कि शक्ति न्याय से फिर लड़ रही है।

वह कहते हैं—कैद किया। मैं कहता हूँ उसकी आत्मा तो सनासन तीर चलाकर लक्ष्यवेध करती जा रही है। अन्धकार मे भी उसका प्रकाश फूटकर हृदय-हृदय मे गति प्रदान कर रहा है और उसकी विनीत आत्मा उस संघर्ष का नेतृत्व कर रही है जिसका चरम लक्ष्य स्वतन्त्रता है क्योकि वह अमर है।

उस एकता और प्रेम के ऋषि को प्रणाम है। राष्ट्र के जीवन मे उसका स्वप्न प्रवेश कर रहा है।

हमारे ऊपर चिरन्तन आकाश है, हमारे ऊपर अब भी वीरो की, प्राचीन देवों और ऋषियों की मंगल कामनाये हैं और गांधी अभी भी हमारा नेता है।

साथियो! दुर्भाग्य की इस निराश घड़ी में मुझे अभी भी विश्वास है कि भारत के दुःखों का अन्त चरम मोहक और सुन्दर होगा। नित्य के प्रातःकाल का सूर्य, जब मैं उसकी पूजा आहत हृदय से करता हूँ उस बलि पुरुष के जीवन और श्री का सन्देश लाता है और वह यह है कि "पीड़ित राष्ट्र की विजय होगी।"

विपत्ति-ग्रस्त कोई सम्राट् नही, केवल एक निरीह छोटी बकरी, अपने नगे पैरों पर मुस्कराती हुई, जो अपने झुकने में भी लौह-कठोर है।

गाधी एक छत पर लगाये गये शिविर में बीमार हैं, जहाँ सूर्य की किरणों के प्रेम की वर्षा हो रही है।

अपने सिर पर रक्खे गये रुई के गद्दे की ओर संकेत कर वह कहते हैं—

'मैं इस पृथ्वी से पैदा हुआ। यह भारत की मिट्टी है जो मेरा मुकुट बन रही है।"

संसार पर उनका जो ऋण है, वह उन्हे ईश्वर से मिलेगा, उन्हे इसका विश्वास है।

उनका सघर्ष स्वर्ग के निकट हो रहा है और उन्हे विश्वास है कि उन्हे अलक्षित विजय मिलेगी। उनकी वह रणभेरी बज रही है जो नरक की अन्तिम परिखा में भी गूँज रही है।

एकान्तवासी वीर जो झिलमिल भविष्य को ललकार कर अपनी ओर खीच रहा है।

किन्तु, उसकी विराट् आत्मा विश्व को भय से प्रकम्पित कर रही है।

इस पुरुष के भीतर से मनुष्य का पतित और तिरस्कृत प्रेम, जीवन की ध्वस्त और भूमिसात् स्वतन्त्रता, शारीरिक श्रम जो सम्मान और पुरस्कार से वंचित रक्खा गया है, चीत्कार कर अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह की पुकार कर रहे हैं।

ईश्वरीय न्याय की प्रतिष्ठा और यशःस्तुति हो। लोकजीवन के विषाद का गायक जो धरती माता के निकट है।

सत्य का एकान्त अन्वेषक जिसके लिये न तो रात है और न निजी सुख, इस पुरुष से बढकर ज्वलन्त देशभक्त और कहाँ है?

इस पुरुष से बढकर भविष्यदर्शी आत्मरूप और कहाँ है?

भूख और पीड़ा के अन्तहीन पथ पर चलनेवाला अकेला तीर्थ-यात्री, जो प्रकृति से उद्भत प्रथम मनुष्य का रूप देखने के आनन्द में लीन है। वह पुरुष जो दरिद्रनारायण की सेवा को भक्ति कहता है, वह पुरुष जो अपने अधिकार की सम्पत्ति खोकर लघुता का अनुभव करता है।

कौन, केवल दरिद्र ही दूसरे दरिद्र की रक्षा कर सकता है, मै गांधी के शिविर से निकलकर सीढियों से उतरने लगा। बाहरी सहन में सुन्दर प्रकृति व्यंग्य कर रही है। पक्षी और वृक्ष शान्ति-सगीत मे मग्न हैं। एक वृक्ष की छाया में तीन बकरियाँ खेल रही है। मै उनके निकट से जा रहा हूँ जो सहिष्णुता और प्रेम की प्रतीक हैं।

प्रकाशक
पं० भृगुराज भार्गव
अवध-पब्लिशिंग-हाउस, लाटूश रोड, लखनऊ

मूल्य दस रुपया

मुद्रक
पं० भृगुराज भार्गव
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स, लाटूश रोड, लखनऊ